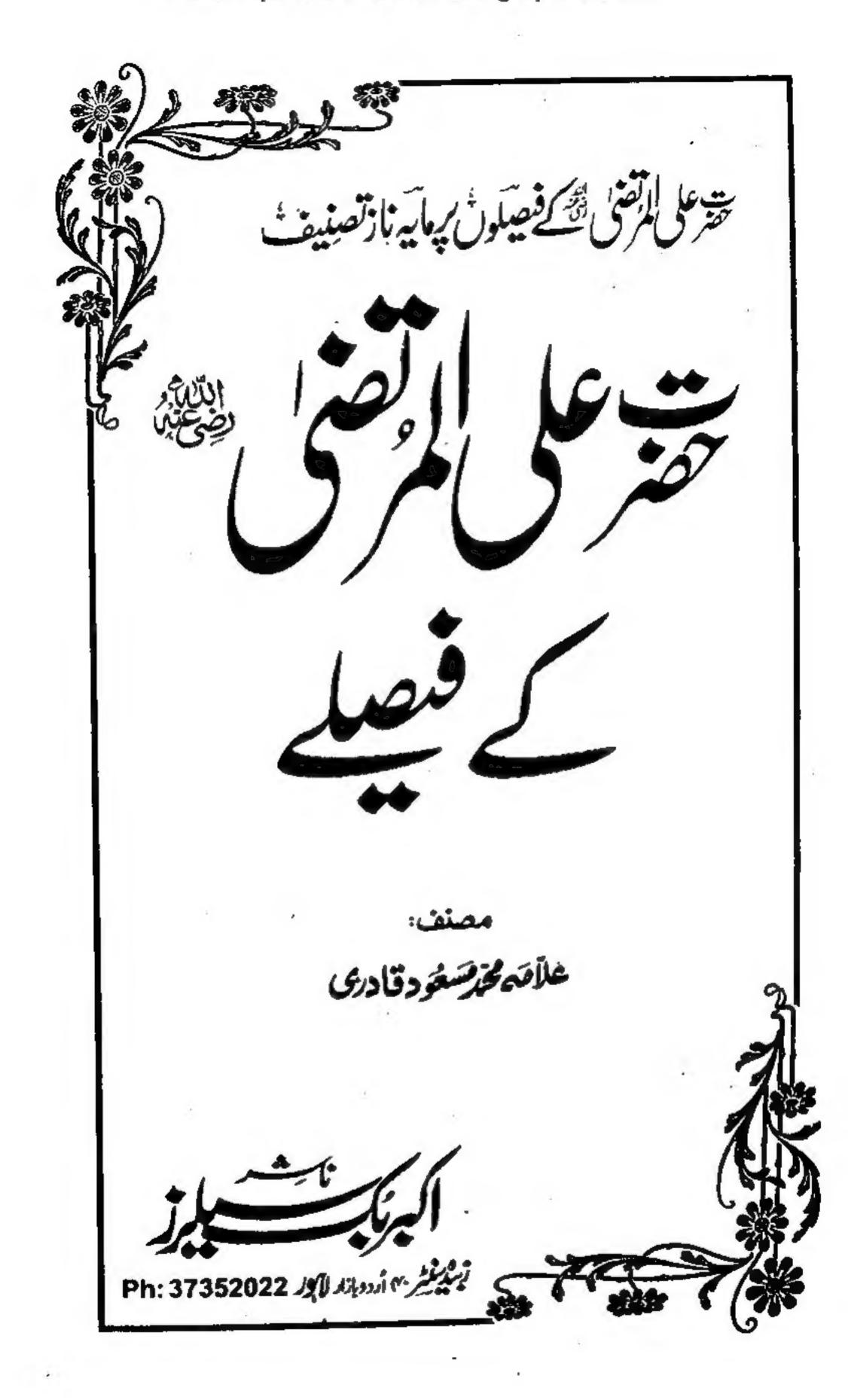


مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com



جمله حقوق تجق ناشر محفوظ مبي

نام كتاب مسعود قادرى مسعود قادرى بالنفذ كر فيصلے مستفد: مسعود قادرى بالنفذ كر فيصلے ببلشرز: اكبر نكب سيلرز تعداد: 600 قيمت: -/300

البرار المسلمة المسلمة

Ph: 042 - 7352022 Mob: 0300-4477371



انتساب:

امام اعظم امام ابوحنیفہ طالعہ کے نام جن کی دین کے لئے بے پناہ خدمات ہیں





فهرسنت

| صفيتبر | عزانات المناف ال |
|--------|--|
| 15 | حرف ابتداء |
| | يہلا باب:حضرت على المرتضى خالفنا كے ابتدائی حالات |
| 19 | ولادت بإسعادت |
| 19 | مشرم بن وعیب عابد کی پیشگوئی: |
| 22 | نام ونسب |
| 23 | كنيت ابوتر اب كي وجه تشميه: |
| 26 | والدين |
| 26 | جناب ابوطالب: |
| 38 | حصرت فاطمه ذلي فجها بنت اسد: |
| 42 | اسلام قبول كرنا |
| 42 | حضور تی کریم مضایقاتے زیرسایہ پرورش یانا: |
| 43 | والدجناب ابوطالب ہے مشورہ کرنے کا فیصلہ: |
| 44 | والد بزرگوار کی نصیحت: |
| 46 | اسلام قبول كرنے والے اولين لوگوں ميں سے بيں: |
| 47 | حضور ني كريم يضي عيد كي قريش كو دعوت اسلام: |
| 48 | حضور ني كريم في الله كل مدد كا فيصله: |
| • | دوسرا باب: ہجرت اور مدنی زندگی کے اہم فیصلے |
| 53 | بجرت مدينه |

| 6 | الانت ترفع بالتنوير فيعلى المنافقة كرفيعلى |
|----------|--|
| 55 | بستر رسول الله يضي يَقِينهم لينت كا فيصله: |
| 58 | تم د نیا اور آخرت میں میرے بھائی ہو: |
| 59 | مسجد نبوی مطاعین کی تعمیر میں شمولیت: |
| 60 | وخر رسول الله يضاعين عناح |
| 64 | حضور نبي كريم مضايقاً كي بمسائيكي كاشرف: |
| 65 | از دواجي زندگي: |
| 68 | غزوات مین شمولیت |
| 68 | غزوهٔ بدر میں شمولیت: |
| 71 | غزوهٔ احد مین شمولیت: |
| 77 | غزوهٔ بدرالموعود میں شمولیت: |
| 78 | غزوهٔ بنی مصطلق: |
| 79 | غزوهٔ خندق: |
| 81 | غزوهٔ بنوقر بظه: |
| 82 | بنوسعد کی سرکونی کے لئے کشکر کا سالا رمقرر کیا جانا: |
| 83 | رسول الله يضفي ولله كانام ندمثان كافيصله: |
| 87 | فالتح خيبر: |
| 90 | ابوسفیان (را الفین) کی مدد نه کرنے کا فیصله: |
| 91 | تاریخ اسلام کے سنبری دور کا آغاز: |
| 93 | مهمبیں جو کام کہا گیا ہےتم وہ کرو: |
| 95 | حضور ني كريم شفي علم جموث نبيل يولت: |
| 96 | حنين من رسول الله مطاعين كاساته نه جهور في كا فيصله: |
| 99 | |
| 10 | |
| 10 | غزوهٔ تبوک: |

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

| • | |
|-------|---|
| 7 | المناسبة على المنافظة كرفيعلى |
| 104 | تبلیغ اسلام کے لئے یمن روائلی |
| 106 | نقيب اسلام |
| 109 | ججة الوداع مين شموليت |
| 111 | مدنی زندگی کے اہم واقعات |
| 111 | الله عزوجل كاوعذه: |
| 112 | سورج واليس لوث آيا: |
| 113 | بخشش وعطا كامعامليه: |
| 113 | تيرى رقم كا ضامن كون بوگا؟: |
| 115 | رسول الله يضيَّعَيْدَ كساته وعوت توحيد كے لكے تكانا: |
| 117 | حضرت عمر فاروق طِالْغَيْرُ كَيْ مَشْكُلِ آسان كرنا: |
| 119 | حضور ني كريم يضيئة كاظامري وصال |
| 129 | حضرت على الرئضني والنفط كاغم: |
| . 130 | حيات رسول الله يضايطه من فقهي واجهتها دي فضلے |
| 130 | عمير (دائنيز) کے دعویٰ امانت کے متعلق فيصلہ: |
| 132 | يمن ميں آيک عجيب وغريب مقدمه كا فيصله: |
| 133 | ديت كي رقم كافيصله: |
| 134 | على (واللغظ) ظلم نهيس كرسك : |
| 135 | نجران کے نصاری کے متعلق فیصلہ: |
| 136 | محجورون كي تقسيم مين عدل: |
| | تميسرا باب: خلافت صديق اكبر رِنْالِفَيْزُ اورعلى الرَّتَفِنَى بِنَالِفِيْرُ |
| 139 | حضرت ابو بمرصدیق خالفیهٔ کی بیعت کا فیصله ت |
| 141 | بیعت میں تاخیر کی وجہ: |
| 143 | خلافت صديقي ملافقة برحجه اعتراض ندتها: |
| 145 | دورٍ صد لقى رَبِي عَنْهُ مِن اجتهادي ونقهي فيضلے |
| | |

| (| 8 | المناسبة على المالية المناسبة على المناسبة على المناسبة على المناسبة على المناسبة على المناسبة المناسب |
|---|-----|--|
| | 145 | حضرت ابو بمرصد بق بنائنز کے وظیفہ کے متعلق فیصلہ: |
| | 146 | حضرت ابو بمرصد بق بنائلة كوجهاد برجانے ہے روكنا: |
| | 147 | ایک اعرانی کے سوالون کے جواب دینا: |
| | 149 | الك شخص كے شراب پينے كا واقعہ: |
| | 150 | لواطت کے متعلق فیصلہ: |
| | 151 | خواب کی حقیقت مثل ساہیے ہے: |
| | 152 | حضرت سيده فاطمه الزهرا فالنفنا كاوصال |
| | 158 | حضرت ابوبكرصديق شالفيز كاوصال |
| | 158 | حضرت عمر فاروق وطالفته كوخليفه مقرر كرنا: |
| | 159 | حضرت عمر فاروق وللغيَّؤ كوخليفه بنانے كے لئے قائل كرنا: |
| | 159 | حضرت ابو بمرصديق مِنْ النِّينَةُ كا وصال: |
| | 161 | حضرت على المرتضلي طالفين كاغم: |
| | 162 | وصال صديق اكبر بنائنية پرخطاب كافيصله: |
| | 168 | فضيلت صديق اكبر رثائفة بزبان على المرتضى مثانفة |
| | | چوتھا باب: خلا فت عمر فاروق خلافیْهٔ اور علی الرتضی بٹائٹیُز |
| | 173 | · حضرت عمر فاروق بناتعنز کی بیعت کا فیصله |
| | 179 | دور فاروقی بٹائٹیز میں اجتہادی وفقهی فیصلے |
| | 180 | حضرت عمر فاروق رِنْ اللَّهُ فَيْ مَنْ عَلَيْهِ عَلَى اصْافِ كَا فِيصِلَهِ: |
| | 180 | |
| | 181 | ان ججری کے آغاز کامشورہ دینا: |
| | 182 | ~ 4 - 50, 50,0 - 7 |
| | 183 | |
| | 183 | |
| | 184 | ایک عورت کے مقدمہ کا فیصلہ: |
| | | |

| (1 | 9 | |
|----|-----|--|
| | 185 | ایک مجنون عورت برحد جاری نه کرنے کا فیصلہ: |
| | 186 | میں غمر (بنائنڈ) کے فیصلے کوئیں بدلوں گا: |
| | 186 | عثمان غنی بالغنظ مصبوط، قوی اور امین میں: |
| | 187 | ایک عورت اور اس کے بیٹے کے مابین فیصلہ: |
| | 190 | ا يك امانت كا فيصله: |
| | 191 | ایک حاملہ عورت کے قعل بد میں مبتلا ہونے کے متعلق فیصلہ: |
| | 192 | دورانِ عدت نكاح كا فيصله: |
| | 193 | آپ رائنن پرروز ہ کی قضا واجب ہے: |
| | 193 | ہاتھ اور یاؤں کئے ہونے تخص کا چوری کرنا: |
| | 194 | بنی کی شادی فاروق اعظم رٹائٹیز سے کرنے کا فیصلہ: |
| | 195 | حضرت عمرهاروق بنائنی کی خلافت کے لئے جید نامزدگیاں |
| | 200 | حضرت عمر فاروق بنائفنة كى شهادت |
| | 202 | حضرت على المرتضلي خالفية كاغم: |
| | 203 | فضيلت فاروق اعظم طالنيز بزبان على المرتضى خالفيز: |
| | | يا نچوال باب: خلافت عثمان عنى طالعنيهٔ اور على الرئضني طالعنهٔ |
| | 207 | |
| | 211 | وورِعثانی بنائفیٰ میں اجتہادی وفقهی فیصلے |
| | 211 | هرمزان کی ویت کامقدمه: پیشر میرون میرون میرون |
| | 213 | |
| | 215 | |
| | 215 | |
| | 217 | |
| | 231 | · |
| | 232 | فضيلت عثمان غنى وللنفيذ بزبان على الرتضلي وللتغذ |
| | | |

النستة عسل المسترضي الأنتوزك فيعلى

| | چھٹا باب: حضرت علی المرتضٰی خ ^{القی} ز کامنصب خلافت پر فائز ہونا |
|-----|---|
| 237 | منصب خلافت برِ فائز ہونا |
| 241 | خلیفہ بننے کے بعد خطبہ ارشاد فرمانا |
| 243 | حضرت عثان غنی مناسخهٔ کے قصاص کا مطالبہ |
| 244 | مغيره بن شعبه طالفية كالمشورة: |
| 245 | حضرت عبدالله بن عباس خانغجنا كالمشورة: |
| 247 | حضرت عثمان غني مِنْ لِنَعَدُ كَ مقرره كورنرول كي معزوني: |
| 250 | . ام المونين حصرت سيّده عا نَشه صعد يقيّه رَانَعْهَا كار دِمَل: |
| 256 | جنگ جمل |
| 263 | جنگ صفین . |
| 263 | كوفه كو دارالخلافه بنائے كا فيصله: |
| 264 | حضرت امير معاويه رئالننو كي تشويش: |
| 265 | حضرت قبیس بن سعد بنائنیز کی معزولی: |
| 267 | حضرت عمرو بن العاص طِلْنَهُ وَ كَا اقتدام: |
| 268 | حضرت نا مکه ذانفهٔ کا حضرت امیر معاویه رنافغهٔ کومکتوب: |
| 269 | حضرت امير معاويه ولانفيز كومكتوب تحريركرنا: |
| 270 | حضرت امير معاويد بنافذ كاجواب: |
| 271 | حضرت امير معاديه منافغذ كي سياسي بصيرت: |
| 272 | شام کی جانب کپیش قدمی کا فیصلہ: |
| 273 | سفارتی وند تبییج کا فیصله: |
| 275 | سفارتی وفدکی ناکامی: |
| 276 | جنگ صفیمن: |
| 278 | امن معامده تحرير كميا جانا: |
| 281 | منصفین کا اجتماع: |
| | |

| 11 | المناسة عمل المنافئة كريميل |
|-----|--|
| 286 | خلافت دوحصول میں تقسیم ہوگئی: |
| 287 | فتنه خوارج كو تحلينا |
| 295 | دور خلافت کے اہم واقعات |
| 295 | مصر پرحضرت امير معاويه رڻائن کا قبضه: |
| 296 | اہل بھرہ کی بغاوت: |
| 297 | اہل امران کی بغاوت: |
| 298 | حضرت امیر معاویه رئائنز کے سیاس حربے: |
| 299 | خلافت على المرتضى مِنْ النِّينُ بِرِ اجمالي جائزه: |
| | ساتواں باب:حضرت علی المرتضی طائنیز کے فضائل ومنا قب ر |
| 303 | فضائل ومناقب المستعملة |
| 319 | خلافت کی تائیدا حادیث ہے |
| 321 | سیرت مبارکہ کے درختاں پہلو |
| 321 | ساری زندگی رزق حلال کمایا: |
| 322 | میں اس چیز کو گوارانہیں کرتا: مناب سے اور میں مناب |
| 322 | خلیفہ کے لئے کیا طلال ہے؟: |
| 323 | اگر جار در ہم ہوئے تو میں ازار بندخرید لیتا: بر سیر برنفیہ |
| 323 | ایک در جم کا نفع: معرب مین مین مین در در مین |
| 323 | میں صرف دو کپڑے پہنتا ہوں: معرب دور |
| 324 | معمولی غذا: " |
| 325 | وه به کھانانہیں کھاتے: مالی شار محل میں نفر تخر |
| 325 | عانی شان محلوں سے شدید نفرت تھی: جماعت اہل حق کے اجتماع کا نام ہے: |
| 326 | بما حت اہل کی تقدیم میں سے اجہاری کا نام ہے: مال کی تقدیم میں مساوات کو محوظ رکھنا: |
| 326 | مان ما سام بین مبسادات و توظرهما. اس بات کا انہیں اختیار نہیں: |
| 327 | |

| 12 | المناسة عمل المراق المالية الم |
|-----|--|
| 327 | رونی ئے سات ککڑے: |
| 327 | دیا ہے ہے رشیق : |
| 328 | بهل لی کو بیش نظر رکھو: |
| 328 | حمانا كحلاانا: |
| 328 | سال میں تین مرتبہ مال تشیم کرتے ہتھے: |
| 329 | تجھے تیری مال مم کرے: |
| 330 | عمرُ وضائع كرينے والا توب كى تمنا كرے گا: |
| 330 | مجھے تمہارے مال غنیمت ہے ایک شیشی کے سوالیجھ بیس ملا: |
| 330 | برُ انَّى اورفضيلت: |
| 331 | عمر فاروق بنالنیز کے بعد ہم فتنوں میں مبتلا ہو گئے: |
| 331 | عبادت میں خشوع وخصوع: |
| 333 | حَكَمت و دانا كَي: - |
| 333 | الحچنی اور خراب زمین: |
| 334 | مهمان نوازی: |
| 334 | مسلمان کی عزت و تو قیر کرنا: |
| 334 | ستر بنرار فرشتے: |
| 335 | . تواضع: |
| 336 | ناپ تول بورا کرو: |
| 336 | الله كاحق: |
| 337 | سورج داپس لوث آیا: مرد مرد مرد سرای می فقی دندا |
| 338 | دورخلافت میں کئے گئے اجتہادی وقفہی فیصلے |
| 339 | ذميوں کوحقوق دينے کا فيصلہ: پر فيار فير مين کا ب |
| 339 | حدود کا فیصله خود بی کرنیا کرد: منته مرکزفیدان |
| 340 | رو نیوں کا فیصلہ: |

| الناست على المراق المن المن المن المن المن المن المن المن | 13 |
|---|-----|
| خواب برحد قائم كرنا: | 342 |
| او ًوں كاحق إورا ادا كرو: | 342 |
| قاضی شریخ کے فیصلے کو قبول کرنا: | 343 |
| گاؤل کوآگ لگانے کا فیصلہ: | 343 |
| س مال میں اس کا بھی حصہ ہے: | 344 |
| یہ تیری جراُت کی سزاہے: | 344 |
| یہ مجنون نہیں بلکہ نازک ہے: م | 344 |
| · · | 349 |
| | 351 |
| And the second | 351 |
| , | 352 |
| | 352 |
| غاوند نهیں بیٹا: | 353 |
| | 355 |
| · | 356 |
| | 356 |
| ر ندول کی اطاعت: | 356 |
| | 357 |
| آتھواں باب:حضرت علی الرتضلی دلائنٹھ کی شہادت | |
| | 361 |
| قاتل کے متعلق فیصلہ: | 364 |
| | 365 |
| -4 | 365 |
| حضرت على المرتضى ذالنينة كاخواب: | 365 |
| | |

| 14 | المستفى ينمنين كي فيصل المستفى ينمنين كي فيصل المستفى المناسبة المستفى المناسبة المن |
|-----|--|
| 366 | حضرت سيدنا امام حسن بنامينهٔ كونصيحت: |
| 367 | صاحبز ادول کو وصیت: |
| 368 | حضرت على المرتضلي طالبنيَّة كا وصال: |
| 368 | تجهيز وتكفين: |
| 369 | طيدمباركه |
| 370 | حضرت على المرتضى منابعين كاخاندان |
| 370 | حضرت سيّده فاطمه الزهرا مِنْ فَهُنّا: |
| 385 | حضرت ام البنين مُنْ يَجُهَا بنت حرام كلابيه: |
| 386 | حضرت ليكي منافعها بنت مسعود: |
| 386 | حضرت اساء خانفها بنت عميس: |
| 387 | حضرت سيده امامه منافختا: |
| 387 | حضرت خوله ذي فنها بنت جعفر: . |
| 388 | حضرت صهميا مُنْ فَهُمَا بِنْت ربيعيه تغلبيد : |
| 388 | حضرت ام سعيد منافخهًا بنت عروه بن مسعود تقفی : |
| 388 | حضرت محياة ذلينجنا بنت امراء القيس: |
| 388 | خاتونِ جنت طِاللَّهُ كَى اولا د كالتَّذِكره |
| 389 | حصرت سيّد نا امام حسن ملائفته: |
| 396 | حضرت سيّدنا امام حسين منافقة: |
| 406 | حضرت سيّده زينب ذائفها: |
| 410 | حضرت سيّده أم كلتُوم ذالنَّهُ: |
| 412 | حضرت سندنا امام حسن دلائنية كامنصب خلافت ير فائز ہونا سن |
| 415 | کتابیات است است است است است است است است است است |



حرف إبتداء

، الله عزوجل كے نام سے شروع جو برا مبر بان اور انتہائی رخم والا ہے اور حضرت محمد مصطفیٰ مصلیٰ مصلیٰ مصطفیٰ مصلیٰ مصلیٰ

فلیفہ چہارم، حیدر کرار، شیر خدا، ابوتر اب و ابوائحن، پروردہ آغوش رسالت ماب مضابیقا حضرت علی المرتضلی و النفیٰ علوم ظاہری و باطنی کا منبع ہیں۔ آپ والنفیٰ سابق الاسلام ہیں اور رشتہ میں حضور نبی کریم مضابیقا کے چچیرے بھائی اور داماد ہیں۔ آپ والنفیٰ کی جرائت و بہادری بے مثل ہے اور آپ والنفیٰ نے حضور نبی کریم مضابقا کے شانہ بشانہ غروات میں شمولیت اختیاری اور جرائت و بہادری کی بےمثل ماستانیں رقم کیں۔

حضرت علی المرتضی برائیڈ کو بیشرف بھی عاصل ہے کہ حضور نبی کریم مطابقہ نے شب بجرت آپ برائیڈ کو اپنے بستر پر لٹایا۔ آپ بڑائیڈ فر ماتے ہیں اس رات مجھے جو پرسکون نیندمیسر آئی وہ پھر بھی میسر نہیں آئی کیونکہ میں نہیں جانتا کہ کیا خبر میں سوؤں اور پھر دوبارہ نہ اٹھوں گر بجرت کے موقع پر حضور نبی کریم مطابقہ نے میں سوؤں اور پھر دوبارہ نہ اٹھوں گر بجرت کے موقع پر حضور نبی کریم مطابقہ والیس مجھ سے فر مایا کہ علی (برائیڈ) تم میرے بستر پرسو جاؤ اور میں لوگوں کی امانتیں والیس کر کے مجھ سے آن ملنا چنا نچہ میں جان گیا کہ آج کی نیند کے بعد میں ضرور بیدار ہوں گا اور مجھے موت نہیں آئے گی۔



حضرت جنید بغدادی جیسیه فرمائتے ہیں حضرت علی المرتضی و الترجنگوں میں مصروف ندر ہے تو وہ جمارے لئے ایسی ہا تیں جھوڑتے جوتصوف کے لئے بہت ضروری جیں کیونکہ آپ والین کو علم لدنی حاصل تھا۔ آپ جالتی نے ایک مرتبہ اپنے سید کی جانب اشارہ کرتے ہوئے فرمایا تھا اس کے اندر ایک ایساعلم بھی ہے کاش میں اس کا حامل یا تا اور اس علم کواس کی جانب منتقل فرما تا۔

زیر نظر کتاب " حضرت علی المرتضی بڑائیڈ کے فیطے" کی تالیف کا مقصد یہ کے قارئین کو آپ بڑائیڈ کی حیات طیبہ بیں آنے والے وہ امور جن کو کرنے کا بروقت فیصلہ آپ بڑائیڈ کو دیگر صحابہ کرام بڑائیڈ کے سے متاز کرتا ہے اور آپ بڑائیڈ کے وہ فیصلہ جنہوں نے تاریخ رقم کی اور ان فیصلوں کی بدولت دین اسلام اور مسلمانوں کا سراخر سے بلند ہوا انہیں ایک کتابی صورت بیں یجا کیا جائے۔ قارئین کے ذوق کا سراخر سے بلند ہوا انہیں آپ بڑائیڈ کی سیرت پاک کے کئی پہلوؤں کو بھی اجا گرکیا گیا ہے تاکہ قارئین کے ذوق کا باعث بنیں۔ بارگاہ خداوندی میں عاجز انہ التماس ہے وہ میری اس کاوش کو قبول فرمائے اور ہمیں صحیح معنوں میں وین اسلام کی تعلیمات پرعمل پیرا ہونے کی تو فیق عطافرمائے۔ آمین

مسعود قادري



يهلا باب:

حضرت على المرتضلي والأثنة كابتدائي حالات

حضرت على المرتضى طالفية كى بيدائش، نام ونسب، والدين كابيان، اسلام قبول كرنا

O___O



زب عز و جلال ابو ترابی فخر انسانی ولی حق وصی مصطفے مصفے مصفے مصفی دریائے فیضانی علی مرتضی مرافعی مشکل کشائی شیر بردانی امام دو جہانی قبلۂ دینی و ایمانی



ولادت بإسعادت

اس کا تو علم نہیں چہ دین است چہ دنیا

بس اتی خبر ہے مری دنیا مرادیں آپ ہیں
حضرت علی المرتفئی رائٹی کی ولادت عام الفیل کے نمیں برس بعد ۱۳ ارجب
المرجب کو خانہ کعبہ میں ہوئی جبکہ حضور نبی کریم مضابقیا کی ولادت باسعادت عام
الفیل کے برس ہوئی چنانچہ اس اعتبار ہے آپ رٹائٹی ،حضور نبی کریم مضابقیا ہے تمیں
الفیل کے برس ہوئی چنانچہ اس اعتبار ہے آپ رٹائٹی ،حضور نبی کریم مضابقیا ہے تمیں
اور آپ رٹائٹی کے منہ میں اپنالعاب دبن ڈالا حضور نبی کریم مضابقیا نے جب اعلانِ
اور آپ رٹائٹی کے منہ میں اپنالعاب دبن ڈالا حضور نبی کریم مضابقیا نے جب اعلانِ

حضرت شاہ ولی اللہ محدث دہلوی دالنی فرماتے ہیں حضرت علی الرتضیٰ دلالنین فرماتے ہیں حضرت علی الرتضیٰ دلالنین کی پیدائش خانہ کعبہ میں ہوئی اور بیآب دلائنی کی بزرگ کی علامت ہے اور بیا شرف کسی اور کو حاصل نہیں ہوا۔

مشرم بن وعيب عابد كي پيشگوني:

منقول ہے یمن میں ایک عابد جس کا نام مشرم بن وعیب تھا رہتا تھا اور به عابد اپنی عبادت کی بناء پرشہرت رکھتا تھا۔ اس عابد کی عمر ۱۹۰ برس تھی اور وہ اکثر بارگاہِ خداوندی میں بیدعا کرتا تھا۔

الانتستر على المنظمة ا

''اے اللہ! اینے حرم سے کسی متعق شخص کو میرے پاس بھیج کہ میں اس کی زیارت کروں۔''

التدعر وجل نے اس عابد کی دعا کوشرف قبولیت عطافر مائی اور حضرت علی المرتضی بیاتی دالد جناب ابوطالب بغرض تجارت یمن پہنچ۔ جناب ابوطالب کی اس عابد سے ملاقات ہوئی تو وہ عابد آپ کے ساتھ نہایت عزت واحترام سے پیش آیا۔ اس عابد نے جناب ابوطالب سے بوچھا آپ کہاں سے تشریف لائے بین؟ جناب ابوطالب نے کہا کہ میں حرم پاک سے آیا ہوں۔ اس عابد نے بوچھا آپ کس قبیلہ سے تعلق رکھتے ہیں؟ جناب ابوطالب نے کہا میں قریش سے تعلق رکھتا ہوں اور قریش کی شاخ بی ہاشم سے ہوں۔

مؤرضین لکھتے ہیں جب اس عابد نے جناب ابوطالب کی بات کی تو اپنی نشست سے اٹھا اور آپ کے ہاتھ چوم لئے اور کہا اللہ عزوجل نے میری دعا کو شرف قبولیت عطا فرمایا اور جھے حرم پاک کے خادم سے ملا دیا۔ پھراس عابد نے آپ سے بوچھا کہ آپ کا نام کیا ہے؟ جناب ابوطالب نے کہا میرا نام ابوطالب ہے۔ اس عابد نے کہا آپ کے باپ کا نام کیا ہے؟ جناب ابوطالب نے کہا میرا نام ابوطالب ہے۔ اس عابد نے کہا آپ کے باپ کا نام کیا ہے؟ جناب ابوطالب نے کہا میرے ہا ہیرے ہا ہیرے باپ کا نام عبدالمطلب ہے۔

اس عابد نے جب جناب عبدالمطلب كا نام سنا تو كہنے لگا میں نے الہامی كتب میں پڑھا ہے كہ جناب عبدالمطلب كے دو پوتے ہوں گے اور ان كا ایک پوتا رسول وقت ہوگا جس كے باپ عبداللہ (در اللہ اللہ اللہ ہوگا و میں سے اور ان كا دوسرا پوتا ولی اللہ ہوگا اور اس كے باپ كا نام ابوطالب ہوگا۔ جب اس رسول كی ظاہرى عرقمیں اللہ ہوگا اور اس كے باپ كا نام ابوطالب ہوگا۔ جب اس رسول كی ظاہرى عرقمیں برس ہوگا و اس وقت اس ولی كی بیترائش ہوگا۔ چراس عابد نے جناب ابوطالب

المناسبة عمل المنافعة كي فيعل المنافعة كي فيعل المنافعة كي فيعل المنافعة كي فيعل المنافعة الم

۔ ہے بوچھا کیارسولِ وقت کاظہور ہو چکا ہے؟ جناب ابوطالب نے کہا مجھے اس کے متعلق کچھا کیا رسولِ وقت کاظہور ہو چکا ہے؟ جناب ابوطالب نے کہا مجھے اس کا متعلق کچھا کم نہیں البتہ میر نے بھائی عبداللہ (طالفہٰ) جو وصال فرما جکے ہیں ان کا ایک فرزند ہے جس کا نام محمد (مینے کو تیجہ) ہے اور اس وقت وہ ۲۹ برس کا ہے۔

اس عابد نے جب جناب ابوطالب کی بات سی تو کہا آپ جب واپس لو میں تو نہیں میراسلام کئے اور ان سے کئے گا کہ میں انہیں دوست رکھتا ہوں اور پھر جب رسول وقت اس ونیا سے ظاہری پردہ فرما کیں گے تو اس وقت آپ کے بیٹے کی ولایت کا ظہور ہوگا۔

جناب ابوطالب نے کہا میں تمہاری باتوں کو درست کیے جان سکتا ہوں جبکہ میں تمہیں نہیں جان؟ اس عابد نے کہا میں آپ کے لئے کیا کروں جس سے آپ کوعلم ہو کہ میری بات سے ہے؟ جناب ابوطالب نے اردگر دنگاہ دوڑائی تو انہیں ایک خشک درخت و کھائی دیا۔ جناب ابوطالب نے اس درخت کی جانب اشارہ کیا اور فرمایا کہ مجھے اس خشک درخت سے تازہ انار جا بہیں؟ اس عابد نے بارگاہ اللی میں یوں دعا کی۔

"الی ! بین نے تیرے رسول اور تیرے ولی کی منقبت بیان کی ہے تیرے دانارعطا کی ہے تیرے دانارعطا کی ہے تازہ انارعطا فرمادے۔"

اس عابد نے جیسے ہی ہید دعا مانگی وہ خشک درخت اسی وقت ہرا بھرا ہو گیا اور پھراس عابد نے ہاتھ بڑھا کراس سے تازہ انارا تارے اور جناب ابوطالب کو دے دیئے۔

O___O



نام ونسب

آب رظائفیٰ کا اسم مبارک علی (وظائفیٰ) ہے اور آپ رظائفیٰ کا اسم مبارک علی (وظائفیٰ) ہے اور آپ رظائفیٰ کا اسم مبارک علی (وظائفیٰ) ، حضور نبی کریم مضائفیٰ کا تجویز کردہ ہے۔ آپ رظائفیٰ کے والد بزرگوار کا اسم بناب ابوطالب ہے جبکہ والدہ کا اسم مبارکہ فاطمہ وظائفیٰ بنت اسد ہے۔ حضرت علی الرفضٰی وظائفیٰ کی کنیت ابوالحن اور ابوتر اب بیں جبکہ آپ رظائفیٰ حیدر کرار کے لقب سے ملقب ہیں۔

حضريت على المرتضى مالفنوا كاشجره نسب يدرى ذيل ہے۔

ا - حضرت على المرتضلي والنفظ

۲۔ بن ابوطالب

۳ بن عبدالمطلب

سم_ بن باشم

۵۔ بن عبد مناف

۲۔ بن قصیٰ

ے۔ بن کلاب

۸ ین مره

م بن كعب ^م

الانتستام الله المن المانة كر فيعل المنافقة كر فيعل المنافقة كر فيعل المنافقة كر فيعل

•ا_ ين لوي

حضرت على المرتضلي مِنْ اللَّهُ فَا كَاشْجِره نسب مادري وبل ہے۔

ا_ حضرت على المرتضلي شالفند

٣- بن حضرت فاطمه والفينا

۳۔ بنت اسد

سم بن باشم

۵۔ بن عبد مناف

۲ بن قصلی

ے۔ بن کلاب

۸_ بن مره

عب بن *كعب*

ا۔ بن لوی

حضرت علی الرتضی والنین رشته میں حضور نبی کریم مضر فیل کے بچازاد بھائی اور داماد ہیں۔ آپ والد جناب ابوطالب اور حضور نبی کریم مضر کی النین کے والد جناب ابوطالب اور حضور نبی کریم مضر کی النین کے والد جناب ابوطالب اور حضور نبی کریم مضر کی النین کے والد برا گوار حضرت سیدنا عبدالله والنین شکے بھائی ہے اور جناب عبدالمطلب کے فرزند

تے۔۔ کنیت ابوتر اب کی وجہ تشمیہ:

حضرت علی الرتضی طالفیٰ کا لقب حیدر کرار آپ طالفیٰ کی بہادری اور شجاعت کی بناء پر معروف ہے اور آپ طالفیٰ کی کنیت ابوالحن ، آپ طالفیٰ کے فرزند حضرت سیدنا امام حسن طالفیٰ کے اسم مبارک پر ابوالحسن ہے جبکہ آپ طالفیٰ کی کنیت



ابوتر اب کے متعلق کئی روایات بیان کی جاتی ہیں۔

حضرت علی المرتضلی رٹائٹنڈ کی کنیت ابوتر اب کے متعلق منقول ہے کہ ایک مرتبه آب رظائفيذ اين زوجه شنرادي رسول الله طفي يقل حضرت سيده فاطمه الزهرا والتخبا ے کسی بات پر ناراض ہو گئے اور مسجد نبوی مطابق میں تشریف لے گئے۔ آپ بنائن مسجد نبوی مضاری الم من جا کرفرش پر لیث گئے اور سو گئے۔ آپ رظافیز کے جسم پرفرش كى منى لگ كئى۔ اس دوران حضور نبي كريم مِينْ الله كسى كام كى وجه سے حضرت سيده كبال بين؟ حضرت سيده فاطمه الزبرا والنافظ في حضور ني كريم منظ كالم كوآب والنفظ کی ناراصکی کے متعلق بتایا۔حضور نبی کریم مین کونیا مسجد نبوی مین کوئیم میں تشریف لائے تو اس وفت آپ طالفیٰ سور ہے تھے اورجسم اقدس پرمٹی لگی ہوئی تھی۔حضور نبی کریم یض کیا آپ بٹائٹ کے جسم اقدی سے مٹی صاف کرنے لگے اور فرمانے لگے اے ابوتراب! لینی مٹی کے باب اٹھ۔ آب بنائنز نے جب حضور نبی کریم من کے آواز سنی تو آپ مظالفنو فوراً بیدار ہو گئے۔ اس واقعہ کے بعد آپ مظالفو کی کنیت ابوتر اب مشہور ہوگئی اور آپ مٹائنڈ بھی خود کو اس کئیت سے بیکارے جائے پر بے حد

حضرت علی المرتضی من النفی کی کنیت ابوتر اب کے متعلق یہ بھی روایت بیان کی جاتی ہے کہ ایک مرتبہ غزوہ کے دوران جب لشکر اسلام کا گزر ایک نخلستان سے ہوا تو حضور نبی کریم مین بھی ہے محابہ کرام بنی آئیز کو تھم دیا کہ وہ اس نخلستان میں بچھ دیر تیام کر لیس۔حضرت علی المرتضی من النفی بھی حضور نبی کریم مین بھی ہے اس فرمان کے بعد ایک مجور کے درخت کے نیچ تشریف لے گئے اور آرام فرما ہوئے۔ آپ

ون المستري المالي المال

بنائین کے جسم پر نخلیتان کی مٹی لگ گئی۔ پھر حضور نبی کریم سے بھتا جب آپ بنائین کے باس تشریف لائے تو آپ بنائین کے جسم اقدس پر مٹی دیکھ کر فر مایا اے ابوتر اب!

اٹھو۔ آپ بٹائین نے حضور نبی کریم مضر بھتا کی آ وازئ تو نیند سے بیدار ہو گئے۔ اس موقع پر حضور نبی کریم مضر بھتا نے آپ بٹائین سے فر مایا اے ابوتر اب! کیا میں تہہیں سیب سے زیادہ بد بخت کے متعلق نہ بتاؤں؟ آپ بٹائین نے عرض کیا یارسول اللہ مضر بین کریم مضر نبی کریم مضر بھتا ہے نے فر مایا۔

''سب سے بد بخت وہ شخص ہے جس نے حصرت صالح غلیائل کی اوٹنی کی کونچیں کا ٹی تھیں اور ایک سب سے زیادہ بد بخت وہ شخص ہوگا جو تیری داڑھی اور چبرے کوخون آلود کرے گا۔''

وہ میں ہو کا جو بیری دار ی اور پہرے وحون الود کرے وہ میں مو کا جو بیری دار ی اور پہرے وحون الود کرے وہ مو کی کنیت مورضین لکھتے ہیں اس داقعہ کے بعد حضرت علی المرتضلی وظائفو کی کنیت البوتر اب مشہور ہوئی اور آپ وظائفو اپنی اس کنیت پر فخر کیا کرتے ہتھے۔۔
وہ ہادگ شریعت ، وہ سالک طریقت وہ وہ واقف حقیقت ، نور البدی علی وٹائنو ہے۔۔

O.....O......O



والدين

جیسا کہ گذشتہ سطور میں بیان ہوا حضرت علی المرتضی والنیز کے والد بزرگوار جناب ابوطالب ہیں جبکہ والدہ حضرت فاطمہ والنیز بنت اسد ہیں۔ ذیل میں آپ والدین کا مختصر احوال بیان کیا جا رہاہے تا کہ قار کین کے لئے ذوق کا باعث ہو۔

جناب ابوطالب:

حضرت علی المرتضی بنائیز کے والد برزگوار جناب ابوطالب کا اسم گرامی "عبدمناف" ہے اور جناب ابوطالب کے والد جناب عبدالمطلب ہیں۔ جیسا کہ گذشتہ اوراق میں بیان ہوا جناب ابوطالب رشتہ میں حضور نبی کریم مضرک ہیں۔ کے اور حضرت سیّد ناعبداللہ برائیز کے بھائی ہیں۔

حضور نی کریم مضاعینا کی پیدائش سے قبل ہی حفرت سیّدنا عبدالله والناؤا الله والناؤال الله والله والناؤال الله والناؤال الله والناؤال الله والناؤال الله والناؤال الله والناؤال الله والله والناؤال الله والله و

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن ہی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

المناسة على المنافئة كرفيها كالمنافئة كرفيها كالمنافئة كالمنافئة كرفيها كالمنافئة كالمنافئة كالمنافظة المنافظة كالمنافظة كالمن

ناتواں کدھوں پر آن پڑی تھی جو پہلے ہی اپنے ہردلعزیز بینے حضرت سیّدنا عبداللہ بڑائیڈ کے وصال پر اکثر رخ وغم میں مبتلا رہتے ہے اور لہب ان کے ہردلعزیز بینے کی بیوی ان کے پوتے کو تنہا چھوڑ کر اس جہانِ فانی ہے کوچ کر چکی تھیں۔ جناب عبدالمطلب نے حضور نبی کریم سے کھیا کی تربیت میں کوئی کسر باتی ندر کھی مگر قضائے خداوندی سے ان کی بھی موت کا پروانہ جاری ہو گیا اور جب حضور نبی کریم سے بھیا کی عمر مبارک محف آٹھ برس تھی وہ مرضِ الموت میں جنال ہوئے۔ جناب عبدالمطلب نے مرض الموت میں جنال ہوئے۔ جناب عبدالمطلب نے مرض الموت میں جنالے اور حضور نبی کریم سے بھیا کی اس میں اپنے فرزند جناب ابوطالب کو بلایا اور حضور نبی کریم سے بھیا کا باتھ ان کے سپرد کرتے ہوئے فیزند جناب ابوطالب کو بلایا اور حضور نبی کریم سے بھیا کی کہ وہ اپنے بھینیج کی تربیت میں کوئی کسر باتی نہ چھوڑیں گے۔ یہ فرما کر جناب عبدالمطلب نے اپنی روح ما لک حقیق کے بیرد کردی۔

جناب ابوطالب نے اپنے والد کی نصیحت پر حضور نبی کریم مضافیۃ کو اپنی آئے انٹی محبت میں لے لیا اور حضور نبی کریم مضافیۃ کی نگہداشت اور پرورش میں کسی مقتم کی کوئی کسر باتی ندر ہے دی۔ حضور نبی کریم مضافیۃ کی عمر مبارک اس وقت آٹھ برس تھی جب حضور نبی کریم مضافیۃ ، جناب ابوطالب کے آغوش شفقت میں آئے اور جب جناب ابوطالب کا وصال ہوا اس وقت حضور نبی کریم مضافیۃ کی عمر مبارک پیاس برس تھی۔ پیاس برس تھی۔

کتب سیر میں منقول ہے جناب ابوطالب بغرض تجارت ملک شام کی جانب عازم سفر ہوئے تو اس سفر ہیں حضور نبی کریم منفوقی اپنے ساتھ لے جانب عازم سفر ہوئے تو اس سفر ہیں حضور نبی کریم منفوقی گئے اور جناب ابوطالب کو حضور نبی کریم منفوقی تھا ہے جدائی گوارا نہ تھی۔ اس وقت حضور نبی کریم منفوقی کی عمر مبارک محض دس برس تھی۔ جب یہ قافلہ ملک شام کی

الانت ترسيل المسترضي الأنتؤكر فيصل

صدود میں پہنچا تو اس قافلے نے ملک شام کے نواح میں ایک جگہ قیام کیا۔ اس جگہ جناب ابوطائب کی ملاقات ایک راہب جس کا نام بحیرہ تھا اس سے ہوئی۔ اس راہب نے جب حضور نبی کریم مین ایک راہب جس کا نام بحیرہ تھا اس سے ہوئی۔ اس راہب نے جب حضور نبی کریم مین ایجائے کو دیکھا تو بہجان گیا کہ بیعنظریب منصب رسالت پر فائز ہوں گے چنا نچاس نے جناب ابوطائب سے کہا اس نبچ کو لے کر فوراً واپس لوٹ جا کیں اور اس بچ کو یہود و نصاری سے جی الوسع بچا کیں کہ اگر وہ اس بچ کو یہود و نصاری سے جی الوسع بچا کیں کہ اگر وہ اس بچ کو یہود و نصاری سے جی الوسع بچا کیں کہ اگر وہ اس بچ کو نقصان پہنچانے کے در پے ہوں گے۔ جناب ابوطائب نے اس راہب کی بات سی تو اپنا سامانِ تجارت ویگر قافلے والوں کے سپر دکر کے خود واپس مکہ محرمہ لوٹ گئے۔

حضور نی کریم بین ہوتے ہرامور میں جناب ابوطالب سے مشورہ کیا کرتے سے اور جب ام المونین حضرت سیّدہ خدیجہ خالیجیا نے حضور نی کریم بین ہوئے کے صادق اور امین ہونے کے متعلق سنا تو اپنا سامان سجارت حضور نی کریم بین ہوئے کے صادق اور امین ہونے کے متعلق سنا تو اپنا سامان سجارت حضور نی کریم بین ہوئے کے ما ارادہ کیا۔ حضور نی کریم بین ہوئے کے متعلق بھی جناب الدول الب سے مشورہ کیا اور جناب ابوطالب کے کہنے پر بی سامان سجارت ملک شام لے جانے کے متعلق بھی جناب الدول الب سے مشورہ کیا اور جناب ابوطالب کے کہنے پر بی سامان سجارت ملک شام لے جانے کے کیا تیار ہوئے۔ پھر جب ام المونین حضرت سیّدہ خدیجہ بڑا ہوئے اس بیغام سے متعلق سے بین کی جانب ابوطالب کی ترغیب پر بی ام المونین حضرت سیّدہ خدیجہ بڑا ہونا کے خطبہ جناب ابوطالب کی ترغیب پر بی ام المونین حضرت سیّدہ خدیجہ بڑا ہونا کے فات کا کیا۔ حضور نی کریم بین پڑھایا ہورام المونین حضرت سیّدہ خدیجہ بڑا ہونا کی خطبہ جناب ابوطالب نے بی پڑھایا ہوا ما المونین حضرت سیّدہ خدیجہ بڑا ہوائی سے بی اہل مکہ میں صادق اور امین کے لقب سیّدہ خدیجہ بڑا ہوائی سے بی اہل مکہ میں صادق اور امین کے لقب

المناسبة عمل المنافعة كي يعلى المنافعة كي يعلى المنافعة كي يعلى المنافعة كي يعلى المنافعة المنافعة كالمنافعة المنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة كلا المنافعة كالمنافعة كالمن

حضور نی کریم مضائل بیلی وی کے ساتھ لرزہ طاری ہو گیا۔ حضور نی کریم مطابق اس حالت میں گھرتشریف لائے اور ام المومنین حضرت سیّدہ خدیجہ دلائے اسے فرمایا۔

'' مجھے کمبل اوڑ ھا دو۔''

ام المومنین حضرت سیده خدیجه ذانیجهٔ نے حضور نبی کریم منظر کیکمبل اور ها دیا۔ پچھ در بعد جب حضور نبی کریم منظر کیکی ختم ہوئی تو آب زائیجهٔ نے اور ها دیا۔ پچھ دریا بعد جب حضور نبی کریم منظر کیکی ختم ہوئی تو آب زائیجهٔ نے ان سے وجہ دریا فت کی حضور نبی کریم منظر کی انداز کر کیا اور فر مایا۔

ان سے وجہ دریا فت کی حضور نبی کریم منظر کی انداز کر کیا اور فر مایا۔

"جھے اپنی جان کا خوف ہے۔"

ام المومنین حضرت سیّدہ خدیجہ ذالیجۂا نے حضور نبی کریم مِشْفِیکا کی بات رکہا۔

الناسة على المن النائلة كي فيعلى المنائلة المنائ

"آپ سے اللہ کو خوفزدہ ہونے کی ضرورت نہیں ہے۔ اللہ کی قشم! آپ سے اللہ کا اللہ کا آپ سے اللہ کا اللہ کے آپ سے اللہ کا اللہ کا اللہ کے ساتھ بہترین سلوک کرنے والے ہیں، آپ سے اللہ دمرول کا بوجہ خود الله اتے ہیں، آپ سے اللہ خیار اللہ کا بوجہ خود الله اتے ہیں، آپ سے اللہ کی اللہ کا کہ کا اللہ کا کہ کا اللہ کا کہ کی کے لیے کہ کا کہ ک

ابن الحق كى روايت ہے كدام المونين حضرت سيدہ خديج في الله الله الله منين حضرت سيدہ خديج في الله الله الله عنور ني كريم مضاعة لم الله ويت ہوئے كہا۔

'' من ہے اس ذات کی جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے میں امیدر کھتی ہوں کہ آپ مضائط آس امت کے نبی ہوں سے میں امیدر کھتی ہوں کہ آپ مضائط آس امت کے نبی ہوں سے ''

حضور نبی کریم بین بین نبوت کا اعلان کیا تو جناب ابوطالب جو که مکه مرمه کے معززین میں شار ہوتے تھے انہوں نے حضور نبی کریم بین بین آئی کھر پور حمایت کی اور ہر مشکل گھڑی میں حضور نبی کریم بین بین کا ماتھ ویتے رہے۔ مشرکیان کہ نے جب حضور نبی کریم بین بین کی کہ نے جب حضور نبی کریم بین بین کا ماتھ ویت رہے۔ مشرکیان کہ نے جب حضور نبی کریم بین بین کا ماتھ ویت ہو جناب ابوطالب بھی ان مظالم کا نشانہ ہے۔ جناب ابوطالب نے اگر چہ اسلام قبول نہ کیا تھا مگر ہر موقع پر اپنے بیتم جیتیج کے شانہ بشانہ کھڑے تھے۔ پھر وہ وقت بھی آیا جب مشرکیان کا ایک وفد جناب ابوطالب کے پاس آیا اور ان سے کہا کہ آپ اپنے جیتیج سے کہیں

الانسترعب الاستراك المعلى المنظور كيسل المعلى المنظور كيسل المعلى المنظور كيسل المنظور المنظور

کہ وہ ہمارے معبودوں کو ہرا بھلا کہنا چھوڑ دے اور اس کے بدلہ میں اسے جتنا بھی
مال چاہئے ہم اسے دیں گے اور وہ جس عورت ہے کہیں گے ہم ان کا نکاح کریں
گے۔ جناب ابوطالب نے حضور نبی کریم شے کیڈا کو بلایا اور انہیں مشرکین مکہ کے
مطالبہ ہے آگاہ کیا۔ حضور نبی کریم شے کیڈا نے جناب ابوطالب سے فر مایا۔
'' چچا جان! اگر یہ میرے ایک ہاتھ پر سورج اور ایک ہاتھ پر
چا ندبھی رکھ دیں تو میں پھر بھی جن بات کہوں گا اور گواہی دوں
گا کہ اللہ عزوجل ایک ہے اور اللہ عزوجل نے جھے جن کے
سازتھ مبعوث فر مایا ہے۔''

جناب ابوطالب نے جب حضور نبی کریم مطاب کی با تیں سنیں تو کہا تم حق کے ساتھ رہواور میں تمہارا ساتھ دول گاخواہ گفتی بھی مشکلات کا سامنا کیوں نہ کرنا پڑے۔

ا۔ بی ہاشم کے خاندان میں کوئی شادی ہیں کرے گا۔

۲۔ بی ہاشم کے ساتھ کسی قتم کی کوئی تجارت نہیں کی جائے گی۔

س۔ کوئی شخص ان کے ساتھ باہمی تعلق یا ملاقات یا بات چیت نہیں کرے

_18

س کوئی شخص ان کے پاس کھانے پینے کا کوئی سامان کے کرنہیں جائے گا۔
منصور بن عکرمہ نے اس معاہدہ کوتخریر کیا اور اس معاہدہ پر قریش کے تمام
سرداروں نے دستخط کے اور اس معاہدہ کو خانہ کعبہ کے اندر لفکا دیا گیا۔ جناب
ابوطالب کو مجبوراً حضور نبی کریم مین بیناہ لینی پڑی جو بعد میں شعب ابی طالب
کے نواح میں واقع ایک پہاڑی گھائی میں پناہ لینی پڑی جو بعد میں شعب ابی طالب
کے نام سے مشہور ہوئی۔حضور نبی کریم مین پیناہ کی ہمراہ آپ مین بیناہ کے ہمراہ آپ مین بینائی الل وعیال
اور چیا جناب ابوطالب بھی شھے۔

ابولہب کے علاوہ بنوہاشم کے وہ لوگ جنہوں نے دین اسلام قبول نہیں کیا تھا وہ بھی حضور نہی کریم ہے ہے۔ ہمراہ تھے اور اس گھاٹی میں محصور ہوئے۔
مال کے چار حرمت والے مہینوں رجب، ذیقعدہ، ذوالحجہ اور محرم الحرام میں سے
لوگ اس گھاٹی سے باہر نکلتے اور کھانے چنے کی چیزوں کا بندوبست کرتے۔
معضور نبی کریم ہے ہے گھڑا اور ان کے خاندان کے بائیکاٹ سے جہال حضور
نبی کریم ہے ہے ہی تازان کے دیگر افراد کو مشکلات کا سامنا کرنا پڑا وہاں جزیرہ نما
عرب کے دیگر قبائل میں جوحضور نبی کریم ہے ہے گئی نبوت کے متعلق جانے نہ تھے
وہ حضور نبی کریم ہے واقف ہوئے اور ای کا شم کی مظلومیت سے واقف ہوئے اور ان

میں حضور نبی کریم مضر کی است ملاقات کا اشتیاق بیدا ہونا شروع ہوا۔ تبین سال تک

المناسبة على المنافئة كي يعلى المنافظة كي يعلى المنافظة كي يعلى المنافظة كي يعلى المنافظة كي المنافظة كالمنافظة كالم

حضور نبی کریم مضایقی اینے خاندان کے ہمراہ اس گھائی میں محصور رہے اور اس دوران درختوں کے بینے کھا کرگزارہ کرتے رہے۔

تین سال تک حضور نی کریم بین اور خاندان کے دیگر مصائب میں بتلا رہ کیا اور رہے یہاں تک کہ قریش کے پھولوگوں کے دلول میں رحم کا جذبہ بیدار ہو گیا اور انہوں نے اس ظالمانہ معاہدہ کوختم کرنے کی کوشش کی۔ ہشام بن عمرو، زہیر بن امیہ مطعم بن عدی اور دیگر خانہ کعبہ میں گئے اور زہیر جو کہ جناب عبدالمطلب کے اور زہیر جو کہ جناب عبدالمطلب کے نواے تھے انہوں نے قریش کے دیگر سر داروں کو خاطب کرتے ہوئے کہا۔ نواے تھے انہوں نے قریش کے دیگر سر داروں کو خاطب کرتے ہوئے کہا۔

"بیکہاں کا انصاف ہے ہم لوگ تو عیش و آرام کی زندگی بسر کریں اور بنی ہائم کے بچے بھوک بیاس سے بلبلاتے رہیں۔

کریں اور بنی ہائم کے بچے بھوک بیاس سے بلبلاتے رہیں۔

اللہ کی شم اجب تک اس ظالمانہ معاہدہ کوختم نہیں کیا جائے گا میں جین سے بیس بیٹھوں گا۔"

ابوجہل نے جب بیتقر برین تو عصہ سے بولا۔ دوجم اس معاہدہ کو ہرگز ہاتھ نہیں لگاؤ۔''

ا زہیرنے ابوجهل کوللکارا تو ابوجهل خاموش ہو کیا۔ ابوالجمعری نے ابوجهل

سے کہا۔

" م پہلے بھی اس ظالمان معام سے کے حق میں نہ تھے اور اب اس کے پابند بھی نہیں ہیں۔"

روایات میں آتا ہے کہ تین سال کے بعد حضور نبی کریم مطابقہ نے اپنے پچا جناب ابوطالب کو بلایا اور ان سے قرمایا۔

"جومعابده مشركين في تحريركيا تماات ديمك جاث كى بهد"

الناست على الماني فانتزك فيصل الماني الماني فانتزك فيصل

جناب الوطالب نے جب صفور نبی کریم مضافی کی بات می تو جرائل کا اظہار کیا کیونکہ تین سال سے صفور نبی کریم مضافی کا خیاہ میں نہیں گئے تھے اور نہ وہاں سے کوئی انہیں ملنے آتا تھا۔ جناب ابوطالب نے آپ مضافی انہیں ملنے آتا تھا۔ جناب ابوطالب نے آپ مضافی انہیں یہ بات کس نے بتائی ؟''
حضور نبی کریم مضافی آنے فرمایا۔
'' مجھے اللہ عزوجل نے یہ بات بتائی ہے۔''

جناب ابوطالب نے جب حضور نبی کریم مضاعظم کی بات سی تو کہنے

'' بہتنے! توضیح کہتا ہے اور تو تبھی جھوٹ نہیں بولائے۔'' پھر جناب ابوطالب گھاٹی سے نکلے اور چندافراد کے ہمراہ خانہ کعبہ پہنچ۔ قریش کے لوگ سمجھے کہ شاید معانی مانگنے اور ہماری شرائط کو شلیم کرنے آئے ہیں۔ جناب ابوطالب نے جاتے ہی ان سے کہا۔

"وہ اس معاہدہ کو لے کرآئی کیونکہ جھے حضور نبی کریم مطابدہ کو لیک جے حضور نبی کریم مطابدہ کو دیمک چائے گئی ہے۔"
جناب ابوطالب کی بات من کر قریش کے لوگ خانہ کعبہ میں گئے اور جب اس معاہدے کو کھول کر دیکھا تو اسے واقعی دیمک چائے چی تھی۔ مشرکین مکہ اور قریش کے مردار ابھی بھی حضور نبی کریم مطابق کی رسالت کا اقرار کرنے کو تیار نہ ستھ وہ کہنے لگے۔

'' بیضر در محمد (منظیمَقَانم) کا کوئی جاد و ہے۔'' معاہدہ چونکہ دیمک جاٹ چکی تھی اس لئے شعب ابی طالب میں محصوری

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

الان ترعي الله المناع المائية كريسل المعالي المناع المائية كريسل المائية كريسل المائية كالمناع المناع المنا

کے بیتین سال ختم ہوئے اور حضور نبی کریم مطابقی اینے خاندان کے ہمراہ مکہ مکرمہ میں آکر دوبارہ آباد ہوئے جبکہ منصور بن عکرمہ جس نے بیہ معاہدہ تحریر کیا تھا اللہ عزوجل نے اس کے ہاتھ شل کردیئے۔

حضور نبی کریم مطابق کی دلی آرزوتھی کدان کے پچا جناب ابوطالب ایمان سے سرفراز ہوں یہی وجہ تھی کہ حضور نبی کریم مطابق فو قنا انہیں اسلام کی دعوت دیتے رہے تھے تا کہ حضور نبی کریم مطابق کی حمایت اور دین اسلام کی بدولت وہ جنت الفردوس میں اعلی مرتبہ کے حقدار ہوں۔

روایات میں آتا ہے جب جناب ابوطالب مرض الموت میں بتلا ہوئے تو اس وقت حضور نبی کریم مطابقی آپ کے پاس تشریف لائے اور ایک مرتبہ پھر اسلام قبول کرنے کی وقوت دی۔ جناب ابوطالب نے جوابا کہا کہ اے بھتے ! میں اسلام قبول کرنے کی وقوت دی۔ جناب ابوطالب نے جوابا کہا کہ اے بھتے ! میں

المناسر على المالي الما

جانا ہوں تو میرا خیرخواہ ہے لین میں اس ہے بھی ڈرتا ہوں کہ کہیں قرایش والے یہ نہ کہنے لیس کہ موت کے ڈر سے میں مسلمان ہوگیا۔ پھر حضور نبی کریم بطابیۃ ہے۔ جانے کے بچھ دیر بعد آپ کا وصال ہوگیا۔ حضرت علی الرتضی دائیڈ نے حضور نبی کریم بطابیۃ کم آنکھوں سے آنسو کریم بطابیۃ کم آنکھوں سے آنسو جاری ہو گئے۔ حضور نبی کریم بطابیۃ کی آنکھوں سے آنسو جاری ہو گئے۔ حضور نبی کریم بطابیۃ کی آنکھوں سے آنسو باری ہو گئے۔ حضور نبی کریم بطابیۃ نے دعزت علی الرتضی دائیڈ سے فرنایا جاو اور ان کی تجہیز و تکفین کا انتظام کرو۔ پھر حضور نبی کریم بطابیۃ اس موقع پر فرما رہے تھے۔ بنازہ میں شمولیت اختیار کی اور حضور نبی کریم بطابیۃ اس موقع پر فرما رہے تھے۔ بنازہ میں شمولیت اختیار کی اور حضور نبی کریم بطابیۃ اس موقع پر فرما رہے تھے۔ اور میرے تن میں کبھی کو تابی نہیں کی انڈ عز وجل اس کے بدلہ میں آپ کے ساتھ صلہ رخی کرے اور آپ کو نیک اج عطا

سیرت نگار لکھتے ہیں ہی وجہ ہے کہ تاریخ میں جناب ابوطالب کا تام بمیشہ اجھے لفظوں میں لیا جاتا ہے اور لیا جاتا رہے گا کیونکہ انہوں نے ہرمشکل گمڑی میں حضور نی کریم مطابقة کی اعانت فرمائی۔

جیدا کہ گذشتہ سطور میں بیان ہوا جناب ابوطالب کا وصال ۱۰ نبوی میں شعب ابی طالب نامی گھائی ہے والیس کے بعد ہوا۔ جب آپ کا وصال ہوا تو آپ ذائف کے ہمائی حضرت سیّدنا عباس والٹی نے دیکھا ان کے ہمائی کے ہون کا مرب بیل ۔ انہوں نے حضور نبی کریم مطابق نے دیکھا ان کے ہمائی کے ہون کا سرب ہیں۔ انہوں نے حضور نبی کریم مطابق ہے کہا۔
"اے بیتے! اللہ کی شم! میرے ہمائی نے وی کلمہ پڑھا ہے ۔
"اے بیتے! اللہ کی شم! میرے ہمائی نے وی کلمہ پڑھا ہے ۔

مؤرجین لکھتے ہیں جناب ابوطالب نے وصال سے قبل قریش کو وصیت

موَرْخِين لَکھتے ہیں جناب ابوطائب نے دصال سے قبل قریش کو دصیت کرتے ہوئے فرمایا۔

"دمیں تہمیں اپنے بھتے محمد (سے کھتے) کے ساتھ بھلائی کا تھم دیتا
ہوں اور وہ این اور صادق ہیں۔اللہ کی تئم! میں دیکھتا ہوں
کہ عرب کے دور دراز علاقوں سے تادار اور ضعیف لوگوں نے
اس کی دعوت کو قبول کرلیا ہے اور اس دعوت کو قبول کرنے ک
وجہ سے وہ معتبر ہو گئے ہیں ہیں جو ان کی دعوت کو قبول کرنے ک
گا وہ ہدایت پائے گا اور اگر میری زندگی وفا کرتی تو میں ان
کے ساتھ جنگوں میں شامل ہوتا اور ان کی کفالت کرتا۔"

حفرت علی الرتعنی دائین ہے مروی ہے فرماتے ہیں میرے والد جناب الوطالب نے میرے دادا جناب عبدالمطلب کی پیروی کی اور وصال فرمایا۔ جب ان کا وصال ہوا تو انہوں نے مجمعے وصیت کی کہ مجمعے جناب عبدالمطلب کی قبر میں وفن کرنا۔ ہیں نے حضور نبی کریم مطبق کی اس وصیت کا ذکر کیا تو حضور نبی کریم مطبق کی اس وصیت کا ذکر کیا تو حضور نبی کریم مطبق کا اس وصیت کا ذکر کیا تو حضور نبی کریم مطبق کا انہیں کریم مطبق کی اس وصیت کا ذکر کیا تو حضور نبی کریم مطبق انہیں کریم میں انہیں کریم میں انہیں عبدالمطلب کی قبر پر لے میں ۔ جب ہم نے جناب عبدالمطلب کی قبر پر لے میں ۔ جب ہم نے جناب عبدالمطلب کی قبر پر الے میں دیکھا۔

حضرت سیدنا حمزہ والنفیظ کا قول ہے جناب ابوطائب سابق الا بمان سے اور کسی بھی مشرک کی حمایت نبی کے لئے سرے سے ہی حرام ہے۔ جناب ابوطائب ابوطائب کے مسلمان ہونے کاعلم حضور نبی کریم مطابق کے اس جناب ابوطائب کے مسلمان ہونے کاعلم حضور نبی کریم مطابق کے اس فرمان سے بھی ہوتا ہے کہ حضور نبی کریم مطابق تا کہ موقع پر فرمایا۔

الناست على المراتفي الماتفي كي فيعلى المنظمة المحال المعلى المنظمة المحال المعلى المنظمة المعلى المنظمة المنظم

''کسی نی کے لئے جائز نہیں کہ وہ کسی مشرک سے اپنے دین کے لئے مدد لے۔''

کئی تذکرہ نگاروں نے ذکر کیا ہے کہ جتاب ابوطالب نے اسلام قبول کرلیا تھا مگرانہوں نے اپنے ایمان کو دوسروں سے خفیدر کھا۔

علامہ ابن جرعسقلانی تو اللہ بھی ان تذکرہ نگاروں میں ہیں جواس بات
کی تقیدیت کرتے ہیں کہ جناب ابوطالب نے اسلام قبول کیا تھا اور آپ برائیہ
نے اپنی تقینف 'الاصابہ فی تمیز الصحابہ ' میں جناب ابوطالب کے اس قول کو بطور
تقیدیت چیش کیا ہے کہ جب مشرکیین مکہ کے اکا برسر دار اسٹھے ہو کر جناب ابوطالب
کے پاس آئے شے اور انہوں نے حضور نبی کریم مطابقاً کی شکایت کرتے ہوئے کہا
تقا کہ وہ ہمارے معبودوں کو باطل تھرائے ہیں اور پھر حضور نبی کریم مطابقاً ہے ان
مشرکین کے جواب میں فرمایا تھا اگر یہ میرے ایک ہاتھ پرسورج اور دوسرے پر
جاب میں دکھ دیں تو میں حق بات کہنے سے بیجھے نہ ہموں گا۔ اس موقع پر جناب
ابوطالب نے کہا تھا اللہ عزوجل کی حتم ! میرا بحقیجا درست کہنا ہے۔

علامہ ابن جمرعسقلانی میشند فرماتے ہیں جناب ابوطالب کا یہ کہنا کہ میرا بھتیجا درست کہنا ہے اس بات کو ظاہر کرتا ہے کہ آپ نے حضور نبی کریم میشندیکنا کی تقیدیت کی اور زبان سے یہ الفاظ ادا کئے تھے۔

حضرت فاطمه فالغينا بنت اسد:

جیما که گذشته اوراق میں بیان ہو چکا حضرت علی المرتضلی وظائف کی والدہ ما جدہ حضرت فاطمہ وظائف میں بیان ہو چکا حضرت علی المرتضلی وظائف کی والدہ ما جدہ حضرت فاطمہ وظائف بنت اسد ہیں۔حضور نبی کریم مضف کی آئے جب نبوت کا اعلان کیا تو آپ وظائف کے ابتداء میں ہی اسلام قبول کرلیا۔ آپ وظائف کو بیشرف اعلان کیا تو آپ وظائف کو بیشرف

المناسرة على المائية كرفيعلى المناسطة المائية كرفيعلى المناسطة الم

بھی حاصل ہے کہ آپ بڑائی ہا ہم خاتون ہیں جنہوں نے حضور نبی کریم سے بھی اللہ اللہ میں خاتون ہیں جنہوں نے حضور نبی کریم سے بھی ہے۔ کی دعوت تو حید پر لبیک کہا اور اسلام قبول کیا۔

حضرت فاطمه فرائنی بنت اسد بجین ہے ہی نیک عادات واطوار کی مالک تصیں۔ آپ فرائنی بناب ابوطالب کی جفیجی تھیں اور رشتہ میں جناب ابوطالب کی جی تحقیل اور رشتہ میں جناب ابوطالب کی جی زاد تھیں۔ آپ فرائنی کے نیک خصائل کی بناء پر ہی جناب عبدالمطلب نے آپ فرائنی بہو بنانے کا فیصلہ کیا۔

گذشتہ اوراق میں بیان ہوا کہ حضور نبی کریم میں بیانی آپ دارا اور دادا کے وصال کے بعد اپنے بچا جناب ابوطالب کے زیرسایہ پرورش پائی آپ دارا نے بھی حضور نبی کریم میں بیٹنا کو اپنے بچوں کی ما نندعزیز رکھا اور حضور نبی کریم میں بیٹنا کو اپنے بچوں کی ما نندعزیز رکھا اور حضور نبی کریم میں بیٹنا کی ہر ضرورت کا خیال رکھا۔ آپ دائی نے بھی شعب ابی طالب میں محصوری کے ایام بسر کئے اور پھر جب حضور نبی کریم میں کو بیٹنا نے مکہ مرمہ میں موجود مسلمانوں کو مدینہ منورہ کی جانب مدینہ منورہ کی جانب میں مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کرنے کا تھم دیا تو آپ دائی بھی مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کر گئیں۔

حضور نبی کریم مضابی این کو حضرت فاظمہ زائفی بنت اسد سے والہانہ محبت منی اور حضور نبی کریم مضابی آپ زائفی کی ای طرح تکریم کرتے تھے جیسے ایک بیٹا اپنی مال کی تعظیم کرتا ہے۔ حضور نبی کریم مضابی اکثر و بیشتر آپ ذائفی کے پاس تشریف لاتے تھے اور آپ زبائفی کے پاس آ رام کرتے تھے۔ جب آپ زبائفی کے فرزند حضرت علی الرتضی زبائفی کا تکاح شنراوی رسول اللہ مضابیق حضرت سیّدہ فاطمہ الزبرا ذبائفی ہے ہوا تو حضرت علی الرتضی والنفی زبائفی والرتضی والنفی خبائفی کی خدمت میں یول عرض کیا۔

المنت المسترف المنافع المنافع

"ماں! رسول الله مضر کی شیرادی آپ دلی بیا کے گھر آئی ہیں اور میں آج سے پانی مجروں گا اور باہر کے تمام امور کا نگہبان ہوں گا اور باہر کے تمام امور کا نگہبان ہوں گا جبکہ وہ چکی پیسیں گی اور آٹا گوند مصنے میں آپ ذائی بیا کی معاون ہوں گا۔"

حضرت فاظمہ بنائج بنت اسد کا وصال مدینہ منورہ میں حضور نی کریم سے تعلقہ کو آپ بنائج اسکا وصال کی فلا ہری حیات میں ہوا۔ جب حضور نی کریم سے تعلقہ کو آپ بنائج اسکا وصال کی خبر ملی تو حضور نی کریم سے تعلقہ کی آتھوں سے آنسو جاری تھے۔حضور نی کریم سے تعلقہ کا آتھوں سے آنسو جاری تھے۔حضور نی کریم سے تعلقہ کا تشریف لائے اور آپ بنائج اسکا کے سر بانے کو رقم فر مائے اور تم نے بحوکا رہ کر جھے مناب اللہ عزوج لی تم پر رحم فر مائے اور تم نے بحوکا رہ کر جھے کہ اس اللہ عزوج لی لیاس کی حاجت کو ختم کرتے ہوئے جھے لیاس مہیا کیا۔'' کو حضہ نی کریم میں میں کی حاجت کو ختم کرتے ہوئے وہ کے حضہ نی کریم میں میں کی حاجت کو ختم کرتے ہوئے وہ کے حضہ نی کریم میں میں کی حاجت کو ختم کرتے ہوئے دور کی ہوئے کے حضہ نی کریم میں میں کیا۔''

پر حضور نبی کریم مطابقات خورت علی الرتضی طالفظ کو اینا کرند دیتے ہوئے فرمایا۔

" البیل میرے اس کرتہ میں گفن دینا۔"

منقول ہے کہ حضرت فاطمہ ذائفہ کا بنت اسد کے لئے لجنت البقیع میں قبر
کھودی گئی اور قبر حضرت اسامہ بن زید اور حضرت ابوایوب انصاری دی النظم نے کھودی۔ جب قبر کھود کی گئی تو حضور نبی کریم مضرک اندر بیف لائے اور قبر میں لیٹ کھودی۔ جب قبر کھود کی گئی تو حضور نبی کریم مضرک اللے اور قبر میں لیٹ کے اور قبر میں ایٹ کے اور قبر میں کے اور قبر میں کی کریم کے اور قبر میں کریم میں کے اور قبر میں کریم کے اور قبر میں کے اور کے او

"اے اللہ! میری مال کے ساتھ عنو و درگزر کا معاملہ فر ما اور ان کی قبر کو حد نگاہ وسیع فر ما دے۔"

الانتسترعب الله النفئ في تنوي في المعلى المع

پھرحضور نبی کریم مشرکت خودحضرت فاطمہ بنائنا بنت اسدکو قبر مبارک میں اتارا۔

یہ بھی منقول ہے کہ جب حضرت فاطمہ والنظا بنت اسد کا وصال ہوا تو حضور نبی کریم منقول ہے کہ جب حضرت والم ہے اور آپ مضابط کی داڑھی مبارک حضور نبی کریم مضابط ہے ہے اور آپ مضابط کی داڑھی مبارک بھی آنسووک سے تر ہو چکی تھی۔ آپ مضابط کی اینا کرنہ حضرت علی الرتضی والنظا والنظام والنظام کی اور کو دیا اور فرمایا انہیں اس کرنہ سے کفن دینا۔ پھر آپ مضابط قبر میں لیٹ مجے اور فرمایا۔

"اے اللہ! تو جانتا ہے انہوں نے میرے چیا جناب ابوطالب کے ہمراہ میری اعانت کی اور میرے ساتھ شفقت کا معاملہ روا رکھا اور اپنی ہرضر ورت کو میری ضرورت کی خاطر منا دیا۔"
پھر حضور نبی کریم مظار کھا نے صحابہ کرام جی آئیڈ سے فرمایا۔
"اللہ عزوج ل نے ستر ہزار ملا نکہ کو تھم دیا ہے کہ وہ میری ماں پر درود وسلام پڑھیں۔"

ایک روایت کے مطابق حضور نبی کریم مطابق حضرت فاطمہ بنائینا بنت اسد کی قبر مبارک کوخود کھودا اور اپنے دست مبارک ہے مٹی نکالی اور جب آپ بنازہ تیار ہوا تو جنازہ کوخود کندھا دیتے ہوئے قبر مبارک تک تشریف لائے اور خود اپنے ہاتھوں سے قبر مبارک میں اتارا اور دعائے خیر فرمائی۔

O___O



اسلام قبول كرنا

حفرت علی الرتضای و التفای و التفای و التفای و التفای المرتضای و التفای و ا

حضور نبي كريم مطفي يَعِيم كان يانا:

منقول ہے حضرت علی الرتھئی رائٹیڈ ابھی کم س سے مکہ کرمہ میں سخت قحط پڑا اور قریش بھی اس صورتحال ہے شدید متاثر ہوئے۔ جناب ابوطالب چونکہ کثیر العیال سے لہذا ان کے لئے اپنے اہل وعیال کی پرورش میں شدید مشکلات پیدا ہو گئیں۔ اس موقع پرحضور نبی کریم میں ہوئے اپنے چپا کے احسانات کو ملحوظ رکھتے ہوئے اپنے دو سرے چپا حضرت سیّدنا عباش رائٹیڈ سے جو بنی ہاشم کے امراء میں شار ہوتے سے فرمایا کہ آپ والفیڈ کے بھائی ابوطالب کثیر العیال ہیں اور قحط کی وجہ ہے لوگوں کا جو حال ہے وہ آپ والفیڈ بھی بہتر جانے ہیں لہذا ہمیں ان کا بوجھ کم کرتے ہوئے ان کی مدد کرنی چاہئے۔ حضرت سیّدنا عباس والفیڈ نے پوچھا ہم ان کی مدد کرنی چاہئے۔ حضرت سیّدنا عباس والفیڈ نے پوچھا ہم ان کی مدد کیے کر سے ہیں؟ حضور نبی کریم میں ہوئے فرمایا آپ والفیڈ ان کے ایک کی مدد کیے کر سے ہیں؟ حضور نبی کریم میں ہوئے کی پرورش کی ذمہ داری میں

الانتسان على المنافئة كرفيعل المنافظة كرفيعل المنافظة كرفيعل المنافظة كرفيعل المنافظة كالمنافظة كالمنافظة

لے لیتا ہوں اور یوں ہم ان کی مدوکر سکتے ہیں۔ حضرت سیّدنا عباس بڑائیڈن نے اس بات کو پہند کیا۔ پھر حضور نبی کریم میضی پیٹر اور حضرت سیّدنا عباس بڑائیڈن وونوں جناب ابوطالب کے پاس گئے اور انہیں ان کے دو بچوں کی پرورش کی پیشکش کی۔ جناب ابوطالب نے کہا عقیل کوتم میرے پاس رہنے دو۔ حضور نبی کریم میضی پیٹر نے حضرت علی الرتضای بڑائیڈن کا ہاتھ تھام لیا جو جناب ابوطالب کے سب سے چھوٹے فرزند سے اور حضرت سیّدنا عباس بڑائیڈن نے حصرت جعفر طیار بڑائیڈن کی پرورش کی ذمہ داری اٹھا اور حضرت سیّدنا عباس بڑائیڈن نے نبوت کا اعلان کیا تو حضرت علی الرتضای بڑائیڈن نے اسلام قبول کرلیا اور حضور نبی کریم میضی پھٹر کے زیرسا ہوں رہے جبکہ حضرت جعفر طیار بڑائیڈن نے اسلام قبول کرلیا اور حضور نبی کریم میضی پھٹر کے زیرسا ہوں نے حضرت سیّدنا عباس طیار بڑائیڈن نے بھی پچھ عرصہ بعد اسلام قبول کرلیا اور انہوں نے حضرت سیّدنا عباس طیار بڑائیڈن سے اپنا رشتہ منقطع کرلیا کیونکہ حضرت سیّدنا عباس بڑائیڈن نے اس وقت اسلام قبول نہ کیا تھا۔

والدجناب ابوطالب سے مشورہ کرنے کا فیصلہ:

المنافعة المالية المال

دیکھا تو حضور نی کریم مضائی آب دریافت کیا ہے سی عبادت ہے؟ حضور نی کریم مضائی آبا است کیا ہے کہا تھے کا انداز ا نے فرمایا ہم اللہ واحد کی عبادت کرتے ہیں۔ آپ مٹی تھے نے پوچھا ہے کہی عبادت ہے؟ حضور نی کریم مضائی آباد فرمایا۔

" درین الی ہے اور اللہ عزوجل نے جھے اپنے دین کی تبلیغ اور اللہ عزوجل کے جھے اپنے دین کی تبلیغ اور اللہ و مدایت کے لئے چنا ہے اور میں حمہیں ای اللہ وحدہ لاشریک پر ایمان لانے کی دعوت دیتا ہوں۔"

> '' علی (دافتن کتهبیں اس کا حق حاصل ہے لیکن انجی تم اس یات کا ذکر کسی اور مختص ہے نہ کرنا۔''

حضرت على المرتضى والنفوائي وضور في كريم مضيط المنفوا سونے كے لئے كا ذكر كسى سے نہيں كريں گے چنا في الل وات جب آپ والفوا سونے كے لئے ليے تو اس بات پرغور كرتے ہوئے سو گئے۔ اللہ عزوج ل نے آپ والفوا كے تقلب كو روشنى عطا فرمائى اور آپ والفوائي نے اپنے والد سے مشورہ كے بغير الكے روز حضور في كريم مضورہ كے بغير الكے روز حضور في كريم مضورہ كى خدمت اقدس میں حاضر ہوكر عرض كيا مجھے كلمہ پڑھا ہے۔ حضور في كريم مضورہ كي مضورہ كيا جھے كلمہ پڑھا ہے۔ حضور في كريم مضورہ كے الفوائد كي خدمت اقدس میں حاضر ہوكر عرض كيا مجھے كلمہ پڑھا ہے۔ حضور في كريم مضورہ كي مضورہ كيا ہو كا مريم مضورہ كيا ہے اللہ بڑر گواركي فصورہ كيا والد برزرگواركي فصورہ كا اللہ برزرگواركي فصورہ كا

حمترت علی الرتفنی وافغ کے تیول اسلام کے بارے میں ایک روایت ب

الانتسنز على المراق الماني الم

مجى بيان كى جاتى ہے كہ جب آپ شائن نے حضور نى كريم منظ كالم سے بدكها كه ميں ا ہے والد بزرگوار ہے مشورہ کرنے کے بعد جواب دوں گا اور پھر آپ بٹائٹن ،حضور نی كريم مضيطة كى خدمت سے استے والد برز گوار كے ياس جانے كے لئے رواند ہوئے توراستے میں خیال آیا والد بزرگوار نے بیاضیحت کی تھی کہ مہیں محر (منتظمینیا) محمی بھی بات کی دعوت دیں تو اہےضرور قبول کرنا اور ان کی نفی نہ کرنا چنانچہ آپ وللفيئة فورا بلنے اور حضور نبي كريم يشفيكا كى خدمت ميں خاضر ہوكر اسلام قبول كرليا۔ كتب سير من منقول ب حضور ني كريم يطيع كابتدائ اسلام مي عبادت کے لئے مکہ مرمہ کے نواح میں واقع ایک آبادی میں عبادت کی غرض سے تشریف لے جاتے۔اس دوران حضرت علی الرتضلی دانتیا بھی حضور نبی کریم مضاع الے ہمراہ موتے تھے۔ ایک دن حضور نی کریم مضائلاً اور آب دالفظ عبادت میں مصروف سے كرجناب ابوطالب، آب طافن كوتلاش كرت ادحرة نكل جناب ابوطالب نے جب بینیج اور بینے کو اس طرح عبادت میں معروف و یکھا تو جیران ہوئے بیکی عبادت كررب بي انبول في حضور في كريم مطاعة الساء يوجها بيار ، بعنها بدي ہے جوتم کررہے ہو؟ حضور ٹی کریم مطابقہ نے فرمایا۔

" بچا! میمرے باپ اہرائیم علائل کا دین ہے اور اللہ عزوجل نے جھے دسول بنا کر بھیجا ہے۔ بچا! آپ اس بات کے زیادہ حقدار ہیں میں آپ کو اس دین کی دعوت دول اور اس دعوت کو قدار ہیں میں آپ کو اس دین کی دعوت دول اور اس دعوت کو قبول کرنا آپ کا حق ہے آپ میری اس دعوت کو قبول فرما کیں . اور میری مدد کریں۔"

جناب الوطالب في حضور في كريم مطفيقة كى بات سفنے كے بعد كہا۔

الناسة على الله المنافع المائية كالمنافع المنافع المنا

"بیارے بھتے اتم درست کہتے ہولیکن میں اپنے آباؤ اجداد
کے دین کونہیں جھوڑ سکتا لیکن تم اس بات پر اظمینان رکھو کہ
جب تک میں زندہ ہوں تمہیں کوئی تکلیف نہیں پہنچائے گا۔"
پھر جناب ابوطالب اپنے بیٹے حضرت علی الرتضٰی وِنْ اَنْفَیْ کی جانب متوجہ
ہوئے جنہوں نے ابھی تک ان سے اپنے قبول اسلام کو چھپا رکھا تھا ان کومخاطب
کرتے ہوئے کہا۔

''علی (ر النین ایس اسلام قبول نے راوی کی اسلام قبول کے داوی کی خدمت کو اپنا کے ساتھ رہو اور ان کی خدمت کو اپنا شعار بنا لو، ان کا دامن مضبوطی سے تھامے رکھنا کیونکہ یہ جو بات بھی تم سے کہیں گے وہ نیکی اور بھلائی کی بات ہوگ۔'

حضرت علی المرتضی من النین نے جب والد بزرگوار کی بات سی تو آپ والنین کو اطمینان ہوگیا اور جس بات کا خدشہ تھا وہ دور ہوگیا۔ اب آپ والنین مزید کھل کر حضور نبی کریم منظی کے ساتھ عبادت میں معروف رہنے گئے۔

اسلام قبول کرنے والے او لین لوگوں میں سے بیں :

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن ہی وزٹ کریں: www.iqbalkalmati.blogspot.com

المناسة على المنافعة كي يسل المنافعة ال

کیا، عورتوں میں سب سے پہلے اسلام ام المونین حضرت سیّدہ فدیجہ جاہئے نے تبول کیا۔
کیا جبکہ بچوں میں سب سے پہلے اسلام حضرت علی المرتضی جاہئے نے تبول کیا۔
حضرت علی المرتضی دائی نے ایک روایت کے مطابق دی بری کی عمر اور ایک روایت کے مطابق دی بری کی عمر اور ایک روایت کے مطابق نو بری کی عمر میں اسلام قبول کیا۔ آپ زائی نے چونکہ حضور نبی کریم مطابق نو بری کی عمر میں اسلام قبول کیا۔ آپ زائی نو بری اور دیگر مطافرتی برائیوں سے بی بت بری اور دیگر معاشرتی برائیوں سے بی بت بری اور دیگر معاشرتی برائیوں سے دور رہے۔

حضور نبي كريم طفي عَيْدَ كَي قريش كودعوت اسلام:

حضور نبی کریم منظ اَ بعثت کے بعد خفیہ طور پراپی تبلیغ جاری رکھی اور اس عرصہ میں کئی لوگ دائرہ اسلام میں داخل ہو گئے۔ تین برس کی خفیہ تبلیغ کے بعد اللہ عز وجل نے سورہ الشعراء کی آیت ذیل نازل فرمائی جس میں حضور نبی کریم اللہ عز وجل نے سورہ الشعراء کی آیت ذیل نازل فرمائی جس میں حضور نبی کریم منظ کی آئے کہ کو اپنے قریبی رشتہ داروں کو دعوت اسلام دینے کا تھم دیا گیا۔ سورہ الشعراء میں ارشاد باری تعالی ہوتا ہے۔

حضور نبی کریم مطابق کوہِ صفا کی چوٹی پر چڑھ کراپی قوم کو بلایا۔ جب تمام قریش جمع ہو گئے تو آپ مطابق کوہِ صفا فرمایا۔

> "اے میری قوم! اگر میں تم سے کہوں اس بہاڑ کے پیچھے رشمن کا ایک لشکر موجود ہے اور تم پر حملہ کرنے کو تیار ہے تو کیا تم میری بات کا یقین کرلو گے؟"

الناسة على الله المعلى المعلى

قریش نے یک زبان ہوکر کہا۔

"بان! ہم اس بات کا یقین کر لیں سے کیونکہ ہم نے تمہیں صادق اور امین بایا ہے۔"

حضور نی کریم مضری الله عزوجل نے قریش کی بات می تو فرمایا۔
در میں تمہیں الله عزوجل کے عذاب سے ڈراتا ہوں اور دعوت
حق دیتا ہوں اگرتم لوگ ایمان لے آئے تو فلاح پاؤ گے اور
اگرایمان نہ لائے تو عذاب اللی تم پر نازل ہوگا۔''

مؤرضین لکھتے ہیں حضور نی کریم مطابقہ کی بات س کرتمام قریش طیش میں آ مجے اور آپ مطابقہ کے بچا ابولہب لوگوں کو بھڑ کا کر دہاں سے لے گیا۔

حضور نبي كريم مطاعيمة كى مدد كا فيصله:

حضور نی کریم مطفی آنے قریش کو بوں واپس لوٹے دیکھا تو حضرت علی الرتضی دائی جواس وقت حضور نی کریم مطفی کا النظام دولیا۔ الرتضی دائی دولی سے فرمایا۔ الرتضی دائی دولی سے فرمایا۔ الرتضی دولی کی اور تم ایک دولیت کا انتظام کروجس میں تم بی عبدالمطلب کو دولیت طعام دو۔"

حضرت علی الرتضی و النظر فی حضور نمی کریم مطفی المرتفی و ایک برتکاف دعوت کا اجتمام کیا جس میں تمام می عبدالمطلب کو مدعو کیا گیا۔ اس وعوت طعام میں حضرت سیدنا امیر حمزہ و مضرت سیدنا عباس دی النظر کے علاوہ جناب ابوطالب اور ابولہب نے بھی شرکت کی۔

روایات بس آتا ہے حضور نی کریم مطابق اس دعوت طعام کے بعد نی عبدالمطلب کو مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

النست على النبي الماني الماني

"اے بی عبد المطلب! تہارے یاس اہل عرب سے کوئی بھی ایباشخص آج تک نہیں آیا ہو گا جو مجھ سے بہتر کسی چیز کی تہہیں دعوت دے اور میں رب تعالیٰ کی قتم کھا کر کہتا ہوں کہ اللہ عزوجل کے سواکوئی عبادت کے لائق نہیں ہے اور اللہ عزوجل نے مجھے منصب نبوت پر فائز کیا ہے۔ ایک دن ہمیں موت آن لیے گی اور مرنے کے بعد ہمیں ایک مرتبہ پھر زندہ کیا جائے گا۔ پھر ہمارے اعمال کا حساب ہو گا اور نیکی کا بدلہ نیکی ہے جبکہ برائی کے بدلہ میں عذاب خداوندی مقدر ہوگا۔ ا بنى عبدالمطلب! تم جانتے ہوں میں ناتواں ہوں اور مجھے تہاری حمایت اور مدد کی ضرورت ہے تم میں سے جو بھی میری مدد کے لئے کھڑا ہوگا وہ میرا بھائی ہوگا پس تم میں سے کون ہے جومیری اس دعوت کو قبول کرے؟"

حضور نی کریم مطفی آئے کا س خطاب کے بی عبدالمطلب نے مندموڑ لیہ اور کوئی بھی حضور نی کریم مطفی آئے کی مدد کے لئے تیار نہ ہوا۔ اس موقع پر حصرت علی الرتضٰی دالٹین جو کم س متھے اور نا تو ال متھے کھڑ ہے ہوئے اور عرض کیا۔ الرتضٰی دلائٹیز جو کم س متھے اور نا تو ال متھے کھڑ ہے ہوئے اور عرض کیا۔ "یارسول اللہ مطفی کیا الشہ میں کم سن ہوں ، کمزور ہوں مگر میں

آپ مطافظة كى دعوت بر لبيك كہتا مول اور ميں آپ مطابقة كا كى دركرول كا اور جو آپ مطابقة كا ميں اس

ے جنگ کروں گا۔"

مؤرجين لكھتے ہيں كەحصرت على الرتضى وللفنظ كابي فيصله آپ وللفظ كے

الان المراق المالي الما

"ا _على (النفيز)! تو ميرا بهائي اور وارث ہے۔"

مؤرضین لکھتے ہیں ابولہب نے حضرت علی المرتضی و الفظ کے اس فیلے پر آپ والفظ کا تمسخر اڑایا اور آپ والفظ کی جسمانی کمروری پر شدید تقید کی مگر وہ آپ والفظ کا تمسخر اڑایا اور آپ والفظ کی جسمانی کمروری پر شدید تقید کی مگر وہ آپ والفظ کی روحانی توت کا اوراک ندر کھتا تھا اور مستقبل میں آپ والفظ کو ملنے والے مقام ومرتبہ سے نابلد تھا۔

O___O



دوسرا باب:

بجرت اور مدنی زندگی کے اہم فیصلے

ہجرت مدینہ، دختر رسول اللہ مطابقہ ہے نکاح، غزوات میں شمولیت، نقیب اسلام، مدنی زندگی کے اہم واقعات، حضور نبی کریم مطابقہ کا بطام ری وصال، حیات رسول اللہ مطابقہ میں فقہی واجتہا دی نصلے

O....O



ہے اس کی ذات میں مرکوز عصمت تخلیق ابوالائمہ بھی علی دالنین ابوالائمہ بھی علی دالنین ابور اب و شرف یاب آیت تطبیر ابور اب و شرف یاب آیت تطبیر ہے رازدار حرا و مبللہ بھی علی دالنین



للجرت مدينه

مشرکین مکہ کے ظلم وستم حد سے تجاوز کر بچکے تنے مگر پھر بھی وہ حضور نبی

کریم بینے بیڈ اور صحابہ کرام فری آئی کے حوصلوں کو پست نہ کر سکے۔اس دوران کی کے
ایام میں بیڑب جو کہ مدینہ منورہ کا پہلا نام تھا وہاں سے پچھلوگوں کا قافلہ مکہ مکرمہ
آیا۔حضور نبی کریم بینے بیڈ نے آئیس دعوت حق دی تو انہوں نے لبیک کہا اور دائرہ
اسلام میں داخل ہو گئے۔ جب مشرکین مکہ کے ظلم دستم میں بے پناہ اضافہ ہو گیا تو
ساانبوی میں حضور نبی کریم بینے بیڈ نے محابہ کرام دی آئی کے ایک گروہ کو مدینہ منورہ
کی جانب جرت کرنے کا تھم دیا۔ پھر جب پہلا گروہ کا میا بی کے ساتھ مدینہ منورہ
پہنچ میا تو تمام صحابہ کرام دی آئی گروہ در گروہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کرنا شروع

حضرت عروہ و النظائے ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حبشہ کی جانب ہجرت کرنے والے مہاجرین میں سے چندلوگ والیس مکہ مرمدلوث آئے اور اس دوران مکہ مکرمہ میں مجی بے شارلوگ مسلمان ہو چکے تھے جبکہ مدینہ منوزہ کے بھی بے شار لوگ مسلمان ہو چکے تھے۔ جبکہ مدینہ منوزہ کے بھی بے شار لوگ مسلمان ہو چکے تھے۔ قریش نے مسلمانوں پرمظالم کی انتہاء کر دی اور وہ مدینہ منورہ سے آنے والوں کو بھی تھے کرنے گے۔ اس دوران مدینہ منورہ کے ستر نقیب جو مسلمانوں کے مردار تھے انہوں نے جج کے ایام میں حضور نبی کریم مطابق کی بیعت

المنتسر على المناع المن

کی جے بیعت عقبہ کہا جاتا ہے اور انہوں نے عہد کیا آپ سے بھالی آپ سے بھالی آپ سے بھالی کے اور اپنی جو بھی صحابہ کرام رہ اُنڈ کے مدینہ منورہ آ کیں گے ہم ان کی معاونت کریں گے اور اپنی جان ان پر نجھاور کریں گے۔ پھر اللہ عزوجل کا تھم آن پہنچا اور اس دوران قریش کے ظام وستم میں بھی بے بناہ اصافہ ہو چکا تھا۔ ۱۳ نبو کی میں حضور نبی کریم میں بھالی نے اور یہ صحابہ کرام دی اُنڈ کا کے ایک قافلہ کو مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کرنے کا تھم دیا اور یہ قافلہ کا میابی کے بعد حضور نبی کریم میں ہوئے گئے ہے گئے گئے ہے گئے اس کے بعد حضور نبی کریم میں ہوئے گئے ہے گئے ہے گئے ہے گئے کہ کے ساتھ مدینہ منورہ پہنچ گیا۔ اس کے بعد حضور نبی کریم میں ہوئے گئے ہے گئے ہوں تھا ہے کہ کرام دی اگئے ہوری تعداد ہجرت کر کے مدینہ منورہ کی جانب روانہ ہوئے گئے۔

بخاری کی روایت میں ہے کہ حضور نبی کریم مطابط ہجرت کے متعلق صحابہ کرام بھے کی روایت میں ہے کہ حضور نبی کریم مطابط ہزات ہجرت کے متعلق صحابہ کرام بڑائی کو آگاہ کرتے ہوئے فرمایا کہ جھے تمہارا دار ہجرت دکھایا عمیا ہے جو مجوروں والا شہر ہے۔

حضور نبی کریم مضایقاتم کی ججرت کے متعلق حضرت علی الرتفنی والائی جنہیں آپ مضایقاتم نے است بستر پرلٹایا تھا اور حضرت ابو بکر صدیق والنظ اور ان کے اہل و عیال کے علاوہ کوئی نہ جاتا تھا کہ آپ مضایقاً ججرت کرنے والے ہیں۔
عیال کے علاوہ کوئی نہ جاتا تھا کہ آپ مضایقاً ججرت کرنے والے ہیں۔
حضور نبی کریم مضایقاً جب گھرے نگلنے لگے تو آپ مضایقاً ہے فانہ کعبہ کو و کیصتے ہوئے فرمایا۔

"تو مجھے اور اللہ کو بے صدمحبوب ہے گریہاں کے رہنے والوں نے مجھے یہاں سے جانے پر مجبور کر دیا ہے اگر میں مجبور نہ ہوتا تو یہاں سے مرگز نہ جاتا۔"

مؤرمین لکھتے ہیں جے کے دنوں میں بیڑب جو کہ مدیند منورہ کا پہلا نام تھا

الناستريم الله المن المان المناس المن

وہاں سے پچھالوگوں کا قافلہ مکہ مکرمہ آیا۔حضور نی کریم مینے اللہ نے آئیس دعوت حق دی تو انہوں نے لیک کہا اور دائرہ اسلام میں داخل ہو گئے۔ جب مشرکین مکہ کے ظلم وستم میں بے بناہ اضافہ ہو گیا تو سا نبوی میں حضور نبی کریم مینے ہو آئے نے صحابہ کرام بی ایک گروہ کو مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کرنے کا تھم دیا۔ پھر جب پہلاگروہ کا میابی کے ساتھ مدینہ منورہ پہنچ گیا تو تمام صحابہ کرام دی گئی گروہ در گروہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کرنے کا تھی کروہ در گروہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کرنے کا تھی کروہ در گروہ مدینہ منورہ کی جانب ہجرت کرنا شروع ہو گئے۔

بستر رسول الله مطاعية أير لينف كا فيصله:

حضور ٹی کریم مضاعیۃ نے محابہ کرام دی این کو مدیند منورہ کی جانب ہجرت كا تكم وية موئة فرمايا الله عزوجل في وبال تمهار المن عوالى اورامن وال محربنائے ہیں۔ آپ مطابعة كا تكم ملتے ہى صحابہ كرام وفائد نے مديد منوره كى جانب ہجرت کرنا شروع کردی۔ آپ مطفی تی ایمی تک ہجرت نہ کی تھی اور آپ مطابعة الله عزوجل كى جانب سے وى كے انتظار ميں تھے۔حضرت ابو بكر صديق اور حضرت على الرتضى وللفيئ سميت چند صحابه كرام وي فين ما مكرمه مين باقي ره مي تھے۔حضرت ابو برصدیق والنیز نے آپ مین تاہم سے جمرت کی اجازت طلب کی تو آب مطفي على في ما ياتم جلدى نه كرو موسكتا بالله عزوجل في تمهار الما كولى نيك بهم سفرلكها مو - پھر جب علم اللي آن بينجا تو آب ينظينينانے خصرت على الرتضلي طِلْنَظْ كُواسِين بستر يركنايا اور خود حضرت ابوبكر صديق بنالفنظ كحر تشريف سل سئے۔مشرکین مکہ نے اس رات آپ مین تھا کوشہید کرنے کا اراوہ کر رکھا تھا اور آب منظ بينان كاس اراده ت بل ى كمر عنكل كئ تعد حضرت علی الرتضلی والنفی و اینے ہے کہ وہ حضور نبی کریم بیٹے ہوتا کے بستریر

المناسر على المنافي المائية كرفيه لي المحال المحال

آرام فرما رہے ہیں اور اس وقت یہ بستر موت کا بستر ہے گر آپ طالغو نے اپنی جات ہے اپنی جائے ہوئے اپنی جات ہے اپنی جات کے بغیر حضور نبی کریم مضائے کے فرمان پر عمل کیا اور بے نیاز ہوکر اس بستر پر لیٹے رہے۔
بستر پر لیٹے رہے۔

روایات میں آتا ہے مشرکین مکہ نے جب دیکھا کہ حضور ہی کریم سے ایک منظم کے سے مشرکین مکہ ہے جب دیکھا کہ حضور ہی ڈھونڈ لی ہے تو انہوں نے ایک منصوبہ بنایا جس میں تمام قبائل کا ایک ایک آدی حضور ہی کریم سے انہوں نے ایک منصوبہ بنایا جس میں تمام قبائل کا ایک ایک آدی حضور ہی کریم سے انہیں سے انہیں کہ ایم ایم اوا تا کہ ایک لیے میں حضور ہی کریم سے انہیں مار دیں۔حضور ہی کریم سے انہیں کہ ادادوں کی خبر ہوگئی۔حضور ہی کریم سے انہیں کی موجود تھیں وہ متعلقہ لوگوں کو واپس کرنے کے بعد مدید منورہ پہنچیں۔حضور ہی مرجم سے منہیں۔حضور ہی

"علی (والنین)! مجھے بجرت کا حکم ہوگیا اور میں ابو بکر (والنین)
کے ساتھ مدینہ منورہ بجرت کرنے والا ہوں۔ میرے پال
لوگوں کی جو امانتیں ہیں وہ میں تمہارے سپر وکرتا ہوں تم ان
امانتوں کو ان کے مالکوں تک بہنچا دینا۔ مشرکین مکہ نے میرے
تنل کی منصوبہ بندی کی ہے اور وہ آج رات مجھے تل کرنے کا
تاپاک ارادہ رکھتے ہیں۔ تم میری یہ جیا در اوڑھ کو اور میرے
بستریر لیٹ جاؤ۔"

حضرت على الرتضى ولانفؤ ،حضور نبي كريم مضيّعيّن كرم من مان كے مطابق بستر

المنت على المناع المناع

پر لیٹ گئے اور جا در اوڑھ لی۔ مشرکین مکہ نے رات بھر حضور نی کریم میں ہے گھر کا محاصرہ جاری رکھالیکن مجھ ہوتے ہی انہیں خبر ہوئی کہ ان کا منصوبہ نا کام ہو چکا اور حضور نبی کریم میں میں ہے آئے آئی وقت مکہ مکر مہہ ہے باہر جا چکے ہیں۔

ایک روایت ہے ہی ہے کہ حضور نی کریم میر ایک ہوئے ہے ۔ دھزت علی المرتفیٰی المرتفیٰی کو این بستر پر لٹایا اور خود سورہ کیسین کی تلاوت کرتے ہوئے گھرے باہر تشریف لاے اور مٹی مجرمٹی لے کر ان کفار کے منہ پر ماری جس سے ان کی آئیسیں اندھی ہو گئیس اور وہ حضور نبی کریم میر کیا ہے گئی کو نہیں دکھے سکے اور حضور نبی کریم میر کئیس اندھی ہو گئیس اور وہ حضور نبی کریم میر کئیس مگر کیا اس کی کہ ایک شخص نے ان کو آکر اطلاع دی کہ تم جن کا انظار کرتے رہے یہاں تک کہ ایک شخص نے ان کو آکر اطلاع دی کہ تم جن کا انظار کرتے رہے یہاں تک کہ ایک شخص نے ان کو آکر اطلاع دی کہ تم جن کا شخص نے گھر کے اندر جا کر دیکھا تو حضور نبی کریم میر کئیس کی اس جماعت میں سے ایک شخص نے گھر کے اندر جا کر دیکھا تو حضور نبی کریم میر کئیس کے اوپر سے چا در اتاری تو شخص نے گھر کے اندر داخل ہو کر سوئے ہوئے ۔ انہوں نے پوچھا کہ حضور نبی کریم میر کئیس کے اوپر سے چا در اتاری تو حضور نبی کریم میر کئیس کے اوپر سے چا در اتاری تو حضور نبی کریم میں گئیس کے اوپر سے کا در ایک کہ حضور نبی کریم میر کئیس کی اگریم کی کہاں ہیں؟ آپ دی گئیس نے فرمایا۔

"میں یہاں لوگوں کی امانتیں واپس کرنے کے لئے موجود موسوں حضور نبی کریم میں میں کا مانتیں کی امانتیں اللہ کی محرف کے اس لئے موس حضور نبی کریم میں کی میں گئرانی تم کر رہے ہے اس لئے مہیں معلوم ہونا جا ہے کہ وہ کہاں ہیں؟"

مشرکین مکہ نے جب حضرت علی المرتضلی المان کا جواب سنا تو وہ شرمندہ ہوکر واپس جلے مجئے۔

حضرت على الرئضني والنفظ في النفظ في المرتم الطيفة المرتم الطيفة المرتم الطيفة المرتم المنطقة المرتبي المرتبي المنطقة المرتبي المنطقة المرتبي المنطقة المرتبي المنطقة ا

الناسة على الناس الفي الناسة على المعلى المع

ہوتے ہی لوگوں کی امانتیں والیس کیں اور خود مدینہ منورہ کی جانب سفر ہجرت شروع کردیا۔ قبا کے مقام پر آپ وٹائٹی بھی حضور نبی کریم ہے ہے گافلہ سے آن ہے۔

حضور نبی کریم ہے ہے گئے آنے قبا میں حصرت کلاؤم بن البدم وٹائٹی کے گھر میں قیام کیا۔ حضور نبی کریم ہے ہے گئے ہے تا میں حصرت کلاؤم بن البدم وٹائٹی سے نبین خریدی اور اس پر ایک مجد کی بنیاد رکھی جے مجد قبا کے تام سے جانا جاتا ہے۔ حضرت علی الرتفائی وٹائٹی اور دیگر صحابہ کرام وٹائٹی نے اس مجد کی تغییر میں حضور نبی کریم میں ہو کے شانہ بٹانہ حصہ لیا۔ قبا میں پہلی مرتبہ نماز جمعہ باجماعت اداکی گئی جس میں سو کے قریب بٹانہ حصہ لیا۔ قبا میں پہلی مرتبہ نماز جمعہ باجماعت اداکی گئی جس میں سو کے قریب بٹانہ حصہ لیا۔ قبا میں پہلی مرتبہ نماز جمعہ باجماعت اداکی گئی جس میں سو کے قریب بٹانہ حصہ لیا۔ قبا میں پہلی مرتبہ نماز جمعہ باجماعت اداکی گئی جس میں سو کے قریب روز تک رہا۔

تم دنیااور آخزت میں میرے بھائی ہو:

مدینه منورہ پہنچنے کے بعد حضور نبی کریم مطابح اللہ بنے مہاجرین اور انصار میں رشتہ اخوت کی بنیاد رکھی اور حضرت علی الرتضلی مٹائٹنز کواپنا بھائی بنایا۔

> > حضور نبی کریم مضایتاندنے فرمایا۔

"ا على (﴿ النَّهُ وَ) المَّم وتيا اور آخرت ميس مير ، يعاني أجو- "

المناسبة على المائن في الم

مسجد نبوى مضاعيكم كالعمير من شموليت:

حضور نی کریم مطابقة في مدينه منوره يل حضرت ابوابوب انصاري طالتنه کے گھر قیام کیا۔ حضرت ابوابوب انصاری دالٹنے کے گھر کے نمامنے بنو مالک بن نجار کے ایک محلہ کے میدان میں جہال حضور نی کریم مطاع اللہ کی او منی قصوی بیشی تھی آب مطابق اس میدان کے متعلق دریافت کیا کہ بیجکہ س کی ملکیت ہے۔ آپ مضایقاً کو بتایا عمیا کہ بیددو کم س بھائیوں مہل اور سہیل کی جگہ ہے اور ان کے سر پرست مدیندمنوره میں سب سے پہلے اسلام قبول کرنے والے حصرت اسعد بن زرارہ رکائن میں۔آب مطابق اس مکر برمجد کی تعمیر کا ارادہ ظام کیا۔حضرت مہل اور حضرت سہیل دی گفتہ نے وہ جگہ فی سبیل اللہ دین جابی مرحضور نبی کریم من المنظم المنافظ الماده فامركيا اورحضرت ابوبكرصديق بالنفظ منازمين كي خریداری کے معاملہ پر بات کی۔ حضرت ابو برصدیق دلاننظ نے آپ مطابقا کی خواہش پرمسجد نبوی مطین تا کے ایکے زمین خرید نے کا فیصلہ کرلیا اور پھروس ہزاز درہم كے عوض وہ زمين خريد لي-مسجد نبوي مطابقية كى تقبير ميں حضرت على الرتضلي والتينة بھي ويكر محابه كرام وفافظ كے شاند بشاند حصد ليا اور ديواروں كى چنائى كے لئے اينين اٹھا کرلاتے رہے۔ آپ دالفظ اینٹیں اٹھاتے اور ذیل کامصر ندیڑھتے تھے۔ "مسجد کی تغییر میں جو حصہ لیتا ہے خواہ وہ کھڑا ہو کر تغییر مسجد مں شمولیت اختیار کرے خواہ بیٹھ کر تغییر مسجد میں شمولیت اختیار کرے اور جونتمبرمسجد میں خاک آلود ہونے ہے گھبرائے وہ دونول برابرنبیں ہو سکتے۔''

O___O



وختر رسول الله طفي عليهم سے نكاح

روایات میں آتا ہے کہ حضور نبی کریم مضيطيع کی لاڈلی صاحبزادی حضرت سیدہ فاطمہ الز ہرافل فیا سے نکاح کے لئے حصرت ابو برصدیق اور حصرت عمر فاروق ر المانيم نے حضور نبی كريم مضاعيم كو بيغام بھيجا مرحضور نبي كريم مضيم كار أن وونول صحابہ کرام بی انتخ کو یہی جواب دیا کہ جھے تھم الی کا انتظار ہے۔ ایک وان حضرت ابوبكرصدين اورحضرت عمر فاروق بني كنتنج محو كفتكو يتص اور مخفتكو كا موضوع تعاكمه بمم سمیت بے شارشرفاء نے حضور نبی کریم مطفی تی وختر نیک اختر حضرت سیده فاطمه الز ہرا فالنجا سے نکاح کی خواہش ظاہر کی ہے لیکن ہم میں سے سی کواس بارے میں مثبت جواب نہیں ملا ایک علی (المالفیز) رہ سے بیں مگر وہ اپنی منظمتی کی وجہ سے خاموش ہیں ہمیں ان کی حصلہ افزائی کرنی جائے تا کہ وہ حضور نبی کریم مطابعة اسے حضرت سيده فاطمه الزبراف فالخاس نكاح كى خوابش كرسكيل چنانجه آب والفنه اور حضرت عمر فاروق ملافنيز، حضرت على المرتضى المافنيز كے محرتشریف لے محتے تو پینہ چلا حصرت على المرتضى وللفنظ اس وقت ايك دوست كے باغ كو يانى وينے كے لئے محتے ہوئے تھے۔ جب بیرحضرات اس جگہ پہنچے تو انہوں نے حضرت علی المرتضى ملائنی کو اس بات برقائل کیا کہ وہ حضور نی کریم مطاع تھا ہے ان کی دختر نیک اختر کا رشتہ ما تکیں انہیں یفین ہے حضور نی کریم مطابق ان کی جاناری اور شرافت کی بناء پر

انہیں اپنی وختر نیک اختر کا رشتہ دے دیں گے۔

حضرت على المرتضى وثالثنا في خصنورني كريم يضفي الله كي خدمت ميس حاضر ہو كرحضور في كريم مطيع والمستحضرت سيده فاطمه الزبرا ذالفينات نكاح كي خوابش كا اظہار کیا۔حضور نبی کریم مضاع النے اسے قبول فرما لیا اور آپ بنالفظ سے دریافت فرمایا تمہارے یاس مہر دینے کے لئے کیا ہے؟ آپ رٹائٹنڈ نے عرض کیا اس وقت ميرك يال صرف ايك گھوڑا اور ايك زره موجود ہے۔حضور نبي كريم يضائينا نے فرمایاتم جاؤ اوراین زرہ فروخت کر دواوراس سے جورقم ملے وہ لے کرمیرے پاس آجاتا۔آپ رائفن نے زرہ لی اور مدیندمنورہ کے بازار میں جلے سے۔آپ طالفنا ایی زرہ لے کر بازار میں کھڑے منے حضرت عثان غی دلائند کا گزروہاں سے ہوا۔ انہوں نے آپ والٹن سے بہال کھڑے ہونے کی وجد دریافت کی تو آپ والٹن نے بتایا میں یہاں اپنی زرہ فروخت کرنے کے لئے کھڑا ہوں۔حضرت عثان غنی طالغیٰ نے وہ زرہ چارسو درہم میں خرید لی اور پھر وہ زرہ آپ را الفظ کو تحفظ وے دی۔ آپ مالفنائے واپس جا کرتمام ماجراحضور نبی کریم مطیع کیش گزار کیا۔حضور نی کریم مطابقی ان حضرت عثمان غی ڈی ٹیٹن کا بیرایٹار دیکھ کر ان کے حق میں وعائے خیر فرمائی اور زرہ کی رقم حضرت ابو برصدیق دالٹنے کودیتے ہوئے فرمایا وہ اس سے حضرت ستیرہ فاطمہ الز ہراہ کا فیا کے لئے ضروری اشیاء خرید لائیں۔حضرت ابو بمر صدیق دلانی دانشن جب تمام اشیاء خرید کر لے آئے تو حضور نبی کریم مضفیقات نے خود آپ وللفنة اور حضرت سيده فاطمه الزبرا ذاطفة كانكاح يرمايا

حضرت انس بن مالک والفؤ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم مشاعظ المرت علی الرتضلی والفؤ کی جانب سے نکاح کا پیغام سنا تو آب مشاعظ آپر

ون المسترسي المالي الما

وہ کیفیت طاری ہوگئی جونزول وی کے دفت ہوتی تھی۔ پھر پچھ دیر بعد آپ مطابقاتہ نے فرمایا۔

"الله عزوجل نے جھے بذر بعد وحی مطلع کیا ہے کہ میں اپنی اور اللہ علی دائلہ اللہ علی دائلہ اللہ اللہ علی دائلہ اللہ میں دائلہ اللہ میں دائلہ اللہ میں دائلہ اللہ میں دائلہ میں دا

پرحضور نبی کریم مضیح بین بین می می دید که تمام مهاجرین و انسار میں منادی کروا دو که وه مسجد نبوی مضیح بین اشریف لا نمی چنانچه مهاجرین و انسار کی ایک کثیر تعداد مسجد نبوی مضیح بین تشریف لا کی اور حضور نبی کریم مضیح بین و ان و ذخر ایک دخر تعداد مسجد نبوی مضیح بین تشریف لا کی اور حضور نبی کریم مضیح بین و این دخر نبید و فاطمه الزبرا دانیج کا نکاح حضرت علی المرتفی داانین سال کردیا۔

روایات میں آتا ہے کہ حضرت سیدہ فاطمہ الز ہراؤی کی رحمتی غزوہ بدر کے بعد لیعنی نکاح کے دھتی غزوہ بدر کے بعد لیعنی نکاح کے قریباً سات یا آٹھ ماہ بعد ہوئی۔حضور نبی کریم مطابق اللہ سنے معنوت میں المرتفظی دائی ہے فرمایا وہ تمام مہاجرین وانصار کواپنے ولیمہ میں شرکت کی دعوت دیں۔

حضرت سیدہ فاطمہ الز ہراؤی کی دعمتی کے بعد حضور نبی کریم مطابقہ معرت کے معارت سیدہ فاطمہ الز ہراؤی کی دعمتی کے معارت میں کریم مطابقہ حضرت معرف معرف کے اور اپنی وختر نیک اختر حضرت سیدہ فاطمہ الز ہراؤی کی اسے فرمایا۔

المناسر على المناخ المن

"اے فاطمہ (فالنون)! میں نے تمہارا نکاح خاندان کے سب سے بہتر شخص سے کی ہے۔"

پھر حضور نبی کریم مضائیۃ نے دونوں کو دعا دیتے ہوئے فرمایا۔
''البی! ان دونوں میں محبت پیدا فرمانا در انہیں ان کی اولا دکی
بر کمت عطا فرمانا اور ان کوخوش نصیب بنانا، ان پر اپنی رحمتیں
نازل فرمانا اور ان کی اولا دکوتر تی اور یا کیزگی عطا فرمانا۔''

حضرت عبدالله بن عباس والنفيات مردی ب فرمات میں حضور نبی کریم مطفق آبات میں حضور نبی کریم مطفق آبات جب حضرت سیدہ فاطمہ الزہراؤی آبات کا نکاح حضرت علی الرتضی والنفیات کیا تو حضرت سیدہ فاطمہ الزہراؤی آبات عرض کیا کہ آپ مطفق آبات میرانکاح اس معنص کے ساتھ کر دیا جس کے پاس نہ مال ہے نہ گھر؟ اس پر آپ مطفق آبات خرمایا۔

"اے فاطمہ (خلافی)! میں نے تیرا نکاح ایسے تحف سے کیا جو مسلمالوں میں علم وضل کے لحاظ سے میب سے دانا اور بہترین مسلمالوں میں علم وضل کے لحاظ سے میب سے دانا اور بہترین ہے۔''

حضرت اساء بنت عمیس فرانخها سے منقول ہے فرماتی ہیں کہ جب حضرت اسیدہ فاطمہ الز ہرا فرانخها رخصت ہوکر حضرت علی المرتضی فرانفیا کے گھر تشریف لا ئیں اتو اس وقت حضرت علی المرتضی فرانفیا کے پاس کچھ نہ تھا۔ آپ فرانفیا کے گھر میں بسر کی جگہ ریت بچھائی گئی تھی اور مجود کی چھال سے بھرا ہوا ایک تکیہ موجود تھا۔ گھر میں ایک گھڑا پانی کا تھا اور ایک برتن جس سے پانی پیا جا سکے حضور نبی کریم مضاع آئیا نے اہل ایک گھڑا پانی کا تھا اور ایک برتن جس سے پانی پیا جا سکے حضور نبی کریم مضاع آئیا نے اہل ایک گھڑا پانی کا تھا اور ایک برتن جس سے پانی پیا جا سکے حضور نبی کریم مضاع آئیا ایک ایک گھڑا پانی کا تھا اور ایک برتن جس سے پانی پیا جا سکے حضور نبی کریم مضاع آئیا ایک ایک بیا جا سکے دعضور نبی کریم مضاع آئیا ہے اہل

کے قریب نہ جانا۔ پھر حضور نبی کریم مضطح آخریف لائے اور حضور نبی کریم مضطح آخریب نہ جانا۔ پھر حضور نبی کریم مضطح آخریف کیا ہے؟ حضرت ام ایمن فرانی نا از اس میں میں ایمانی کہاں ہے؟ حضرت ام ایمن فرانی نا نے ایک جانب اشارہ کرتے ہوئے عرض کیا کہ آپ مضطح آخرے بھائی اور آپ مضطح آخر کی میں باتی مسلم مشکوایا اور پھر اس پر بچھ پڑھنے کے بعد وہ پانی پہلے حضرت علی الرتضی ڈائٹن کو دیا کہ وہ اے پی لیس اور سینہ پرال لیس پھر حضرت سیدہ فاطمہ الز ہرا فرانی کا کہ وہ الرتضی کی الرتضی کی اسے پی لیس اور سینہ پرال لیس پھر حضرت سیدہ فاطمہ الز ہرا فرانی کا کہ وہ بھی الرتضی کی اسے پی لیس اور سینہ پرال لیس پھر حضور نبی کریم مضرح تا کی الرتضی کی اسے فرایا کہ اور سینہ پرال لیس۔ پھر حضور نبی کریم مضرح تا کی الرتضی کی اسے پی لیس اور سینہ پرال لیس۔ پھر حضور نبی کریم مضرح تا ہوئے حضور نبی کریم مضور نبی کریم کی اسے بی لیس اور سینہ برال لیس۔ پھر حضور نبی کریم مضرح مورے حضور نبی کریم مضور نبی کریم مضور نبی کریم مضور نبی کریم مضور نبی کریم کی اسے بی ایس اور سینہ برال کیست ہوگئے۔

حضرت علی الرتضی والنین کا جب خاتون جنت حضرت سیّده فاطمه الز برا والنین سیّده خاتون بنت حضرت سیّده و النین بری تقی جبکه حضرت سیّده و النین اسیده فاطمه الز برا والنین کی عمر مبارک قریباً ایس بری تقی جبکه حضرت سیّده فاطمه الز برا والنین کی عمر مبارک قریباً بیندره بری تقی -

حضور نبی کریم مطفی تینا کی ہمسائیگی کا شرف:

حضرت علی الرتضی کا گر حضور نبی کریم مضری ایک گرے گھرے گھرے ہے۔ فاصلہ پر واقع تھا چونکہ حضور نبی کریم مضری کا ڈبی صاحبر ادی سے بے بناہ محبت تھی اس لئے ایک دن حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا بڑا ہی ہے شرمایا بیٹا! میرا دل چاہتا ہے متہمیں اپنے نزدیک بلوالوں۔ حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا بڑا ہی ہی ان عرض کیا بابا جان! حضرت حارث دی تھان میں نعمان کے کئی مکانات آپ مطابح کے مکان کے قرب و جوار میں موجود ہوں اگر ان سے کہا جائے تو وہ کوئی مکان خالی کرویں گے۔حضور بی کریم مطابح بین کواپنے بہت سے جوار میں موجود ہوں اگر ان سے کہا جائے تو وہ کوئی مکان خالی کرویں گے۔حضور بی کریم مطابح بین کواپنے بہت سے بی کریم مطابح بین کواپنے بہت سے بی کریم مطابح بین کواپنے بہت سے

المناسبة على المانية كي فيعلى المعلى المعلى

از دوا جی زندگی: کتب سر میں منقول ہے کہ حضرت علی الرتضنی طابنیو کو دختر رسول

کتب سیر میں منقول ہے کہ حضرت علی المرتضیٰ والنفیٰ کو وختر رسول اللہ حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا والفیٰ اللہ علیہ عبت تقی اور دونوں کے مابین زبردست دعشرت سیّدہ فاطمہ الزہرا والفیٰ اسے بے بناہ محبت تقی اور دونوں کے مابین زبردست دوئی ہم آئٹگی بائی جاتی تھے اس لئے مشکل دوسرے کی بات کو بیجھتے تھے اس لئے مشکل حالات میں بھی دونوں کے درمیان بھی کوئی لڑائی یا ناچاتی کی بات نہ ہوئی۔

حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤالغی نہایت ہی صابر وشاکر تھیں۔ آپ فرالغی کا کی گفتگو کا انداز حضور نبی کریم مطبع کی گفتگو کا انداز حضور نبی کریم مطبع کی گفتگو کا انداز حضور نبی کریم مطبع کا تمام کام اپ ہاتھوں سے کرتی تھیں۔ بہترین نمونہ تھیں۔ آپ فرائغی اپ گھر کا تمام کام اپ ہاتھوں سے کرتی تھیں۔ پکی پیستے بیستے آپ فرائغی کے ہاتھوں میں کئی مرتبہ چھالے پڑ جاتے تھے۔ گھر میں جھاڑو دیتیں 'کپڑے وهوتیں اور اس کے علاوہ رضائے الی کے لئے بنج وقت نمازوں کی پابندی اور تسبیحات کے لئے بھی وقت نکالتی تھیں۔ حضرت علی الرتضیٰی منازوں کی پابندی اور تسبیحات کے لئے بھی وقت نکالتی تھیں۔ حضرت علی الرتضیٰی

المناسر على المان المناس المنا

ر النفرائي كر المراب ا

منقول ہے کہ ایک مرتبہ حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤی پی اور حضرت علی الرتضی طالغین آئے ہو ہی ہر سے بھوکے تھے اور گھر میں کھانے کو کچھ نہ تھا۔ پھر آپ وٹائٹین کو کہیں مزدوری مل گئی اور اس مزدوری کے عوض انہیں ایک درہم ملا۔ آپ وٹائٹین نے اس ایک درہم ملا۔ آپ وٹائٹین نے اس ایک درہم سے جوخر یونے اور گھر لاکر حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤی پی کودیئے جنہوں نے اس ایک درہم سے چوخر یون کروٹی بنائی اور پھر دونوں نے تناول فرمائی۔

حضرت عمران بن حصین بالنیز فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ حضور نی کریم سے معرف کے اور میں سے معرف کے وقت حضرت سیدہ فاطمہ الز ہراؤانی کے گر تشریف لے گئے اور میں بھی ان کے ہمراہ تھا۔ حضور نی کریم سے کیا ہم اندرآ جا کیں؟ حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا بیلی ایم اندرآ جا کیں؟ حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا بیلی ایم اندرآ جا کیں؟ حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا بیلی اور اس قیص کے سوا کچھ بیلی اور اس قیص کے سوا کچھ نہیں اور اس قیص سے سارا بدن نہیں ڈھانیا جا سکتا۔ حضور نی کریم سے بیلی اور اس قیص سے سارا بدن نہیں ڈھانیا جا سکتا۔ حضور نی کریم سے بیلی خوات سیدہ جا در انہیں پرا دی جس سے انہوں نے اپنا بدن ڈھانی لیا۔ پھر حضور نی کریم سے نواز کرا ہم کے اندر داخل ہو گئے۔ حضور نی کریم سے بھر ت سیدہ فاطمہ الزہرا بڑا ہو گئی نے کہا بابا فاطمہ الزہرا بڑا ہو گئی ہے حال دریافت کیا تو حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا بڑا ہو گئی نے کہا بابا جان! کل سے فاقہ ہے۔ حضور نی کریم سے کوئیں کھایا حالانکہ میں اللہ کا مجبوب اور رسول فرمایا بین! میں اللہ کا مجبوب اور رسول

ہوں اور تمہاری نبیت اللہ عزوجل کے زیادہ قریب ہوں۔ بیٹی! میں نے آخرت کو دنیا پر ترجیح دی ہے اور فقر و فاقہ اختیار کیا ہے۔ پھر حضور نبی کریم مضافیاً نے اپنا دست مبارک حضرت سیّدہ فاطمہ الزہراؤ التی کا کدھوں پر رکھا اور فرمایا کہتم جنت کی عورتوں کی سروار ہواور میں نے تمہارا نکاح اس شخص سے کیا ہے جو دنیا و آخرت میں سردار ہے تم ایخ شوہر کے ساتھ صبر وشکر سے رہو۔

روایات میں آتا ہے کہ ایک مرتبہ حضرت علی الرتفایی بڑائیڈ گر تشریف لائے اور حضرت سیّدہ فاطمہ الر ہرا فرائیڈ سے کھانے کو ما نگا۔ حضرت سیّدہ فاطمہ الر ہرا فرائیڈ سے کہا گھر میں آج تیسرا دن فاقہ سے ہا اور کھانے کو ایک وانہ بھی نہیں ہے۔ آپ ڈائیڈ نے کہا تم نے مجھ سے ذکر نہیں کیا؟ حضرت سیّدہ فاطمہ الر ہرا فرائیڈ نے کہا مجھے میرے باپ نے بوقت رضتی تھیجت کی تھی کہ سیّدہ فاطمہ الر ہرا فرائیڈ نے کہا مجھے میرے باپ نے بوقت رفعتی تھیجت کی تھی کہ میں بے میں ہوں ال کر کے آپ ڈائیڈ کو پریشان نہ کروں چنانچہ یہی وجہ ہے کہ میں نے میں ہوال کر کے آپ ڈائیڈ کو پریشان نہ کروں چنانچہ یہی وجہ ہے کہ میں نے میں ہوال کر کے آپ ڈائیڈ کو پریشان نہ کروں چنانچہ یہی وجہ ہے کہ میں نے آپ ڈائیڈ کو پریشان نہ کروں چنانچہ یہی وجہ ہے کہ میں نے آپ ڈائیڈ کو پریشان نہ کروں چنانچہ یہی وجہ ہے کہ میں نے آپ ڈائیڈ کو پریشان نہ کروں جنانچہ یہی وجہ ہے کہ میں ا

O___O



غزوات مين شموليت

حضرت علی الرتضی و التفاقی و التفاقی

غزوهٔ بدر میں شمولیت:

حق وباطل کے درمیان پہلامعر کہ بجرت مدینہ کے دومرے سال رمضان المبارک میں بدر کے مقام پر ہوا جے تاریخ میں غزوہ بدر کے نام سے یاد کیا جاتا ہے۔ بدر کا میدان مدینہ منورہ سے قریباً ای میل کے فاصلے پر واقع ہے۔ اس غزوہ میں تین سو تیرہ مجاہدین جن میں ساٹھ مہاجرین اور باقی انسار ہامل تے حضور نبی میں تین سو تیرہ مجاہدین جن میں ساٹھ مہاجرین اور باقی انسار ہامل تے حضور نبی کریم مطابق کی قیادت میں میدان میں الرے۔ مشرکین کا انشکر ایک بزار کی تعداد میں سامان جنگ سے لیس ایوجہل کی قیادت میں میدان میں الزا۔ اسلامی انشکر کے بیس ایوجہل کی قیادت میں میدان میں الزا۔ اسلامی انشکر کے بیس جنگی ساز وسامان کی کی تھی اور جاہدین میں سب سے بروا امتحان مہاجرین کا تھا جوا سے بھائیوں کے مقابلہ میں تھے۔

ميدان بدر وينجنے كے بعد حصرت سعد بن معاذ طالفن نے ايك ميلے پرحضور

المناسبة على المنافية كرفيعلى المنافية كرفيعلى المنافية كوفيعلى المنافية كوفيعلى المنافية كالمنافية كالمنا

نی کریم مضط الناز کے لئے سائبان بنایا جہال حضرت ابو بکر صدیق والنائی ،حضور نی کریم مضط الناز ،حضور نی کریم مضط الناز کی حفاظت کے لئے مقرر ہوئے اور ای جگہ سے حضور نی کریم منظ الناز کے مقرر ہوئے اور ای جگہ سے حضور نی کریم منظ الناز کے در لیے الناز کو ہدایات جاری فرمائیں۔

صحیحین کی روایت ہے حضرت عمر فاروق والی فی فراتے ہیں کہ جب تق و باطل کے درمیان پہلامعرکہ بدر کے مقام پر ہوا تو حضور نبی کریم بیشے کی نہز نے مشرکین کے فیکر کا جائزہ لیا تو ان کی تعداد ایک ہزار کے قریب تھی اور وہ جنگی ساز وسامان سے لیس یقے جبکہ اسلامی لفکر کی تعداد تین سو تیرہ تھی اور ان کے پاس جنگی ساز و سامان کی بھی کی تھی ۔حضور نبی کریم مضاحی از قبلہ رو ہوکر اللہ عز وجل کی بارگاہ میں دعا کے لئے اینے ہاتھ بلند فرمائے اور دعا کی۔

"اے اللہ! تو نے میرے ساتھ جو وعدہ کیا اسے پورا فرما۔ اگر اسے میٹر میں ساتھ جو وعدہ کیا اسے پورا فرما۔ اگر اس منظی مجرمسلمان ختم ہو محظے تو روئے زمین پر تیری عبادت کرنے والا کوئی باتی ندرہے گا۔"

> "يارسول الله يطيئة إلى كافى ب الله عزوجل اينا وعده ضرور بورا فرمائ كائ

حضرت عمر فاروق والفنظ فرمات میں پھراللّه عزوجل نے مٹھی بھر مسلمانوں کی مدد فرمائی اور جمیں جنگ میں کامیابی اصل ہوئی۔

المناسرة على المناخ الم

غزوهٔ بدر کا آغاز اس وقت کے جنگی قواعد وضوابط کے مطابق پہلے فردا فردا ہوا۔میدانِ جنگ میں کفار کی جانب سے عتبہ بن ربیعہ اپنے بھائی شیبہ اور بیٹے ولید کے ساتھ میدانِ جنگ میں اترا۔ ان تینوں سے مقابلے کے لئے حضور نبی کریم ين و الساري نوجوانول كوميدان جنگ مي اتارا عنب بن ربيد نے جب ان انصاری نوجوانوں کو دیکھا تو اس نے للکار کوحصور نی کریم مضایق ہے کہا آپ ينظ كارے مقابلے ميں مارے معائيوں كوميدان جنگ ميں مجيجيں جس برحضور نی کریم مطاع النا تا مینول انصاری نوجوانول کو واپس بلایا اور حصرت سیدنا امیر حزه، حضرت على الرئفني اور حضرت عبيره بن حارث من النيخ كوميدان مين بعيجا حضرت عبيده بن حارث اس ونت ضعيف تضاوران كي عمراس ونت قريباً اس برس محى كيكن حضرت عبيده بن حارث والثنة جذبه جهاد مي مرشار من حدرت عبيده بن حارث وللفيظ كامقابله عتبه سے ہوا اور حضرت علی الرئفنی ولافیظ كامقابله وليد سے موا جبكه حضرت سيدنا امير حمزه والفنؤ كامقابله شيبه يعدموا وحضرت سيدنا امير حمزه اور حضرت على الرتفنى وخ النيز في أيك على واريس اين مدمقابل كى كرونيس ارا وي جبكه حضرت عبيده بن حارث والفنظ اور عتبه بن ربيعه كے درميان محمسان كارن برا ہوا تھا اور حضرت عبیدہ بن طارث طالغیز باوجودضعیف ہونے کے اس کا مقابلہ برای بهادري سے كرر بے متے حضرت على الرتضى والفيز نے جب و يكھا كدان كا فيصله بين ہور ہاتو آپ بڑائنز نے آگے بر صرعتبہ کی گردن اڑا دی جس کے بعد با قاعدہ جنگ شروع ہوگئی۔

حضور نبی کریم منظامین کی بہترین جنگی حکمت عملی اور حصرت علی الرتضلی طلاقتی المرتضلی الرتضلی الرتضلی منالغیز سمیت و بگرصحابه کرام من آندم کی شجاعت نے جلد ہی کفار کے قدم اکھاڑ دیئے

المناسرة على المناع الم

اور وہ میدانِ جنگ سے بھاگ گئے۔اس پہلے معرکہ من و باطل میں فتح دین اسلام کی ہوئی جس نے مستقبل میں ظاہر کردیا کہ اسلام اور کفر میں سے کس کو جینے کا حق ہے؟ حضور نبی کریم مضابح ہے کہ اس کے ماتھ بہترین سلوک کرنے کا تھا۔ سلوک کرنے کا تھا۔ سلوک کرنے کا تھم دیا۔

حق وباطل کی اس جنگ میں کفار کے ستر آ دمی مارے گئے اور ستر ہی
قیدی بنائے گئے۔ کفار کا سردار اور دین اسلام کا سب سے بڑا دشمن الوجہل بھی اس
معرکے میں مارا گیا۔ غزوہ بدر میں چودہ مسلمانوں نے جامِ شہادت نوش فرمایا جن
میں سے چے مہاجرین اور آٹھ انصار شامل سے جنہیں مقام بدر میں ہی سپر دِ خاک
کیا گیا۔

منقول ہے جضور نبی کریم مضطط کے پاس کھڑے ہوگا۔ کے اختتا م پر کفار کی لاشوں

کے پاس کھڑے ہوکران کوایک ایک کر کے پکارنا شروع کیا اور فر مایا۔

''کیا تم لوگوں نے اپ رب کا وعدہ سچانہیں پایا؟ ہم نے تو

اپنے رب کے وعدہ کو بالکل ٹھیک اور پچ پایا ہے۔'

معرکہ بدر میں شامل ہونے والے صحابہ کرام وی کھڑے کے فضائل بے شار

ہیں۔حضور نبی کریم مضط نے اہل بدر کی فضیات بیان کرتے ہوئے فر مایا۔

"اہل بدر میں شامل تمام حضرات سے اللہ عز وجل واقف ہے

اور اللہ عز وجل نے آئیں بخش دیا اور آئے کے بعد یہ جو بھی ممل

کریں گمر جنت ان کے لئے واجب ہو پچکی ہے۔''

عزوہ احد میں شمولیت:

غزوہ بدر میں مشرکین کے جولوگ جہنم واصل ہوئے ان میں بیشتر کا تعلق

المناسر على المنافعة كرفيعلى المنافعة كرفيعلى المنافعة كرفيعلى المنافعة كالمنافعة كالم

قریش سے تھا اور وہ قریش کے سرداروں میں سے تھے۔ان میں وہ لوگ بھی شامل سے جہدہوں نے بجرت کی رات حضور نبی کریم سے بھتے جنہوں نے بجرت کی رات حضور نبی کریم سے بھتے ہے۔
تھا۔ غزوہ بدر میں شکست کے بعد قریش کی راتوں کی نیندیں ترام ہو چکی تھیں انہوں نے کئی قبائل کو متحد کیا اور جنگ کی تیاریاں شروع کر دیں۔ جنگ کے لئے انہوں نے چندہ اکٹھا کرنا شروع کیا اور اس دوران قریش کا ایک قافلہ جو کہ سامانِ تجارت فروخت کرنے کے بعد ایک کیر منافع لے کر لوٹا تھا اس نے بھی اڑھائی لاکھ درہم فراہم کر دیے۔حضور نبی کریم سے بھا حضرت سیدنا عباس دا تھی جو کہ اسلام قبول کر چکے تھے گر مکہ عرصہ میں ہی مقیم سے انہوں نے قریش کی جنگی تیاریوں کی اطلاع ایک قاصد کے ذریعے حضور نبی کریم سے تھے انہوں نے قریش کی جنگی تیاریوں کی اطلاع ایک قاصد کے ذریعے حضور نبی کریم سے تھے انہوں نے قریش کی جنگی تیاریوں کی اطلاع ایک قاصد کے ذریعے حضور نبی کریم سے تھے انہوں نے قریش کی جنگی تیاریوں کی اطلاع ایک قاصد کے ذریعے حضور نبی کریم سے تھے انہوں کے قریش کی جنگی تیاریوں کی اطلاع ایک قاصد کے ذریعے حضور نبی کریم میں جنگی کریم کے تھے کی بہنچا دی۔

رئے الاول ہے میں جق و باطل کے درمیان دوسرامعر کہ احد کے مقام پر پیش آیا۔ احد مدینہ منورہ سے تین میل کے فاصلہ پرایک وادی ہے۔ مشرکین کالشکر جنگی ساز وسامان سے لیس تھا اور تین ہزار کے نفوس پر مشمتل تھا۔ حضور نبی کریم مین ساز وسامان سے لیس تھا اور تین ہزار کے نفوس پر مشمتل تھا۔ حضور نبی کریم مین ساز وسامان سے لیس تھا اور تین ہزار کو جنگ کی تیاری کرنے کا حکم دیا اور ایک ہزار مجاہدین کالشکر لے کراحد کے مقام پر پہنچ۔ ایک ہزار مجاہدین کے لشکر میں سے تین سولوگ عبداللہ بن ابی سلول منافق کے ساتھی تھے جنہیں وہ راستہ سے ہی واپس لے گیا اور یول حضور نبی کریم میں جن جا تاروں کی تعدادسات سورہ گئی جن میں حضرت ابو بکر مہدیق دائی دی میں حضرت سے بکر مہدیق دائی ہی تھے۔

حق و باطل کے درمیان جب جنگ شروع ہوئی تو حضور نی کریم مطابقہ نے حضرت عبداللہ بن جبیر ولائٹیؤ کو پچاس تیراندازوں کے ایک دستہ کے ہمراہ احد پہاڑ کی پشت پرتعینات کر دیا تا کہ اگر دشمن پشت سے حملہ آ در ہوتو وہ انہیں روک

الانستراكي المسترفي في تنزير في معلى المسترف في تنزير في معلى المسترف في تنزير في معلى المسترف المسترف

سکیں۔ مجاہدین نے مشرکین کی کمرتوڑ دی اور وہ میدانِ جنگ چھوڑ کر بھاگ نکلے۔
مجاہدین ان کے خیموں تک پہنچ گئے اور مشرکین نے اپنا ساز وسامان وہیں چھوڑ کر
بھا گئے میں عافیت محسوں کی۔ لشکر اسلام میں کچھ مجاہدین ایسے بھی شھے جنہوں نے
حال ہی میں اسلام قبول کیا تھا۔ انہوں نے جب مشرکین کو بھا گئے دیکھا تو مالِ
غنیمت لوٹنا شروع کر دیا۔

رحزت عبداللہ بن جبیر رفائنو کی قیادت میں جولشکر احد بہاڑ کی پشت پر لغینات تھا اس نے اپنی جگہ چھوڑ دی اور مالی غیمت سمیلنے میں مصروف ہو گئے۔ حضرت خالد بن ولید رفائنو جو اس وقت مسلمان نہ ہوئے تھے ان کی سربراہی میں مشرکین کے ایک لشکر نے مسلمانوں پر پشت سے تملہ کر دیا جس میں سر سے زیادہ مسلمان شہید ہو گئے ۔حضور نی کریم مطبع بھا کہ جا نثاروں نے آپ مطبع کا محاصرہ کرلیا اور آپ مطبع کا دفاع اپنی آخری سائس تک کرتے رہے۔حضور نی کریم مطبع کہ اور افواہ چھیل گئی کہ حضور نی کریم مطبع کر کیا شہید کر دیا گیا ہے۔صحابہ کرام خوائن کی جوش وخروش میں کی پیدا ہونا شروع ہوگئی اور پھر اس موقع پر حضرت سیّد ہو محرہ دوگائی جو کہ حضور نی کریم مطبع کی اور پھر اس موقع پر حضرت سیّد ہو جو کہ حضور نی کریم میں ہوگئی ہو کہ حضور نی کریم میں ہوگئی ہے اور پھر اس موقع پر حضرت سیّد ہو جمزہ دوگائی جو کہ حضور نی کریم میں ہوگئی ہو کہ حضور نی کریم میں ہوگئی ہوگئی کریا شروع میں ہو گئی ہو کہ حضور نی کریم میں ہوگئی ہو کہ حضور نی کریم میں ہو کہ مالیا۔

روایات مین آتا ہے غزوہ احد کے موقع پر جب لشکر اسلام اور کفار آمنے سامنے ہوئے تو ابونعد بن افی طلحہ کفار کے لشکر سے باہر نکلا اور اس نے آکر لشکر اسلام کو للکارا کہ کون ہے جو اس کا مقابلہ کرے؟ حضور نبی کریم مضابلہ نے حضرت علی الرتضی المائی کو اشارہ کیا اور آپ دائی ہے ہے ہے ہو ہے کر اس پر ایک وار کیا جس

الناسة على المالية كالمالية كا

ے وہ نیچ گر پڑا اور اس کی شرمگاہ کھل گئی۔ آپ مٹائنڈ نے جب مید کیفیت دیکھی تو اس کو چھوڑ کر واپس آ گئے۔

غزوہ احد میں سر صحابہ کرام رش اُلڈ نے جام شہادت نوش فرمایا جبکہ بائیس کفار جہنم واصل ہوئے۔حضور نبی کریم مین کی کی میں کارنے والے حضرت الوجر صدیق، حضرت عمر فاروق، حضرت علی المرتضی اور حضرت طلحہ بن زبیر رش اُلڈ کی المرتضی اور حضرت طلحہ بن زبیر رش اُلڈ کی جاناری کا جُوت دیا اور آپ مین کو کی حفاظت فرمائی۔حضور نبی کریم مین کو کی مطابق کا اکثر و بیشتر احد پہاڑ پرتشریف لے جاتے تھے اور فرماتے تھے یہ وہ پہاڑ ہے جس سے جسس محبت ہے۔ آپ مین کو کی جو رپ بھی تشریف لے جاتے تھے اور فرماتے ہے یہ اور اسے بھی ہم سے محبت ہے۔ آپ مین کو کی خود پر بھی تشریف لے جاتے اور فرماتے تم پر سلام ہو تمہارے حوصلہ اور صبر کی وجہ سے تمہیں تشریف لے جاتے اور فرماتے تم پر سلام ہو تمہارے حوصلہ اور صبر کی وجہ سے تمہیں تشریف لے جاتے اور فرماتے تم پر سلام ہو تمہارے حوصلہ اور صبر کی وجہ سے تمہیں آخرت میں بہترین انعام ملا ہے۔ اللہ عزوج ل نے سورہ آل عمران میں غزوہ احد کے متعلق فرمائے۔

وما اصابكم يوم التقى الجمعن فباذن الله وليعلم المومنين وليعلم النوين نافقوا المومنين وليعلم النيان نافقوا المومنين وليعلم النافين الرائى ك دن يبنيا وه الله ك عم الدور جونقصان تهمين اس لزائى ك دن يبنيا وه الله ك عم سادا و الله ك عما الدور و الله ك عما الدور و الله الك تفا تاكد كم عم سادور و الله الكان

والا ہے اور کون منافق ہے۔"

غزوہ احد کے متعلق میہ کہنا کہ اس میں مسلمانوں کو شکست ہوئی غلط ہے ۔
یہ جنگ بغیر کسی بتیجہ پر پہنچ بغیر ختم ہوئی کیونکہ اس جنگ میں دونوں فریقوں کا نقصان ہو ااور کوئی ایک فریق دوسرے پر حادی نہ ہو سکا۔ مشرکین ایک مرتبہ پھر حضور نبی کریم مضیح کے اپنے ناپاک منصوبہ میں ناکام رہے اور

حضور نبی کریم منطق اللہ کے جانثاروں کے آگے بے بس نظر آئے۔ غروہ حمرة الاسد:

شوال ۳ ه میں حضرت عبداللہ بن عمر وَلَيْ اَلَهُ اَلَى اَلَهُ اِللهِ اللهِ اللهُ الله

غزوهٔ بی نضیر:

۔ رکیج الاول ہم ہے کو حضور نبی کریم میں کہا گئی الشکر اسلام کے ہمراہ بنونضیر روانہ ہوئے تا کہ عبداللہ بن ابی سلول منافق جو بنونضیر کا حلیف تھا اور حقیقتا دین اسلام کا دخمن تھا اور بنونضیر کے یہود بول کے ساتھ مل کرمسلمانوں کے خلاف سازش کر رہا تھا اس کی سرکونی کی جائے۔ آپ میں تھا ہے اس موقع پر لشکر اسلام کا علم حضرت علی الرتضنی والتی میں ادا فر مائی۔ المرتضنی والتی میں ادا فر مائی۔ المرتضنی والتی میں ادا فر مائی۔ یہود بول نے جب دیکھا کہ اسلامی لشکر الن پرحملہ آور ہور ہا ہے تو وہ قلعہ بند ہو گئے اور قلعہ نکے اندر سے تیروں اور پھروں کی بارش شروع کر دی۔

روایات میں آتا ہے کہ بنونضیر، حضور نبی کریم مضطط کے جرت مدینہ کے وقت سے ہی قریش کے ساتھ خط و کتابت رکھے ہوئے تنے اور وہ آپ مضطط کے ساتھ خط و کتابت رکھے ہوئے تنے اور وہ آپ مضطط کے ساتھ خط و کتابت رکھے ہوئے تنے اور وہ آپ مضطط کے ساتھ خط و کتابت کے موقع پرعبداللہ بن مقروف رہے تنے نے۔ غزوہ احد کے موقع پرعبداللہ بن

المناسبة على المنافعة كرفيها

ابی سلول منافق جس نے غداری کی تھی اور اپنے تین بوساتھیوں کے ہمراہ میدانِ
جنگ سے فرار ہوگیا تھا اور بنونفیر کے پاس قیام پذیر تھا ان کی سازشوں کوختم کرنے
جنگ سے فرار ہوگیا تھا اور بنونفیر کے ہمراہ بنونفیر کوسبق سکھانے کے لئے روانہ
ہوئے لئے آپ مضور کے انگر اسلام نے ہمراہ بونفیر کوسبق سکھانے کے لئے روانہ
ہوئے لئکر اسلام نے بنونفیر کا محاصرہ کر لیا جو قریباً پندرہ روز تک جاری رہا۔ اس
ووران بنونفیر کا ایک ماہر تیرانداز غروا اپنے کچھ ساتھیوں کے ہمراہ قلعہ سے باہر
آپ مضور کا ایک ماہر تیرانداز غروا اپنے کچھ ساتھیوں کے ہمراہ قلعہ سے باہر
آپ مضور کا ایک ماہر تیرانداز غروا اور کا سرقلم کر کے آپ مضور کے ہمراہ
غروا اور اس کے ساتھیوں کا مقابلہ کیا اور غروا کا سرقلم کر کے آپ مضور کے قدموں
میں ڈال دیا۔

عبداللہ بن ابی سلول منافق نے بؤنفیر سے وعدہ کیا کہ وہ بؤقر بظہ کے ساتھ معاہدہ کر چکا ہے اور وہ عنقریب ان کی مدد کے لئے آنے والے ہیں گر بؤقر بظہ ان کی مدد کے لئے آنے والے ہیں گر بؤقر بظہ ان کی مدد کے لئے نہیں آئے۔عبداللہ بن ابی سلول چونکہ منافق تھا اس لئے وہ اپ ساتھیوں کے ہمراہ وہاں سے فرار ہوگیا۔ بؤنفیر کے جب وسائل فتم ہونے گئے تو انہوں نے ہتھیار ڈال دیئے اور حضور نبی کریم ہے تھی ہے درخواست کی کہ انہیں ان کے مال واسباب سمیت یہاں سے جانے کی اجازت وی جائے۔حضور نبی کریم ہے تھی ہے ۔حضور نبی کریم ہے تاہوں کے انہیں اجازت دے دی اور وہ چے سواونٹوں پر اپنا مال واسباب لا دکر مدید منورہ سے باہرنکل گئے۔

بنونفیرکا سرداری بن اخطب تھا ال نے حضور نبی کریم بینے تھے ہے معاہدہ کیا کہ دہ آئندہ بھی مسلمانوں کے خلاف کسی کی مدونہ کریں ہے۔ بنونفیر کے قلعے خالی ہو سکتے تھے اور ان کی عداوت بے نقاب ہو چکی تھی۔ اس معرکہ میں سرکش یہود یوں کی رسوائی ہوئی اور ان کا غرور خاک میں ال کیا۔

المناسرة على المناخ الم

غزوهٔ بدر الموعود میں شمولیت:

احدے واپسی کے وقت ابوسفیان (رٹائٹنڈ) نے اعلان کیا تھا کہ وہ آئدہ سال اپنی فوج کو لے کر دوبارہ بدر کے مقام پر اکٹھا ہو گیا۔ حضرت عمر فاروق بڑائٹنڈ کے حضور نبی کریم بطفیکٹا کی اجازت سے بیاعلان کیا تھا کہ ہمیں تمہاری بات منظور ہے۔ ابوسفیان (رٹائٹنڈ) کی بات جموئی ہوئی اور وہ جنگ کی تیاری نہ کر سکا۔ اس نے اپنی شرمندگی دور کے لئے مدینہ منورہ نعیم بن مسعود اشجی کو بھیجا جس نے مدینہ منورہ جا کر پرو پیگنڈ اکیا کہ مشرکین مکہ نے ایک عظیم الشان شکر تیار کر رکھا ہے اور جنگ کی تیاری میں مصروف ہیں۔ نعیم بن مسعود مدینہ منورہ آتے وقت اپنا سرمنڈ واکر جنگ کی تیاری میں مصروف ہیں۔ نعیم بن مسعود مدینہ منورہ آتے وقت اپنا سرمنڈ واکر جنگ کی تیاری میں مصروف ہیں۔ نعیم بن مسعود مدینہ منورہ آتے وقت اپنا سرمنڈ واکر جنگ کی تیاری میں مصروف ہیں۔ نعیم وہ مور کرتے آر ہا ہے۔ اس نے مسلمانوں کو مشورہ ویا کہ دوہ مدینہ منورہ سے ہا ہم رزگلیں۔

حضرت عمر فاروق والنفظ کو جب اس بات کی خبر ہوئی تو آپ والنفظ ، حضور نی کریم مضطحی خدمت میں حاضر ہوئے ادر عرض کیا۔

الناسة عسل النفي النفي كيفيل كيفيل المعلى المعلى

شرمندگی کا سامنا کرنا پڑا۔

غزوهٔ بنی مصطلق:

مدینه منوره سے یہود بول کی جلاوطنی کے بعد مشرکین مکہ اور یہود بول كروابط مزيد مضبوط مو كئے اور انہول نے مشتر كدطور برحضور نى كرىم مضايقة اور وین اسلام کے خلاف سازشوں کا آغاز کر دیا۔ آپ مضابقا کو جب کسی سازش کی خبر ملتی آپ مضائی اسلام کے ہمراہ اس سازش کو تم کرنے کے لئے روانہ ہوجاتے چنانچه محرم الحرام ۵ ه میں آپ مضفیقا ذات الرقاع کی مہم پر چارسو صحابہ کرام دی آتیا کے ہمراہ روانہ ہوئے اور مدیند منورہ کے شال میں بنوغطفان کی سرحد پرتشریف لے گئے۔حضرت علی الرتضلی مٹائنیز اس مہم میں لشکر اسلام کے ہمراہ تھے۔لشکر اسلام جب بنوغطفان بہنچا تو يہودي قبائل كشكر اسلام كى جيب كى وجه سے فرار ہو سے۔ رئيج الاول ۵ ه ميں ايك مرتبه پھرخبر آئى كه دومة الجندل ميں كفار كا ايك عظيم لشكر اكثعابهور بإب ادريد بيندمنوره برحمله كرنا جابتا ہے۔حضور نبي كريم مضيّعة نے ایک ہزار صحابہ کرام دی گئے کو اسے ہمراہ لئے اور ان کی سرکوئی کے لئے روانہ موسة - حضرت على الرئضى والفنو بهي السميم من حضور في كريم مطفي المساند بثاند تھے۔ جب لشكر اسلام دومته الجندل پہنچا تو كفار ميدانِ جنگ سے فرار ہو كئے اور حضور نبي كريم مطفيكة والل مدينه منوره تشريف لے آئے۔

شعبان ۵ ه میں حضور نی کریم منظر ان گذشتہ واقعات کے پس منظر میں انتظر اسلام کو تیاری کا حکم دیا اور مدینہ منورہ ہے مریسی پہنچ تا کہ بی مصطلق جو سائٹر اسلام کو تیاری کا حکم دیا اور مدینہ منورہ ہے مریسی پہنچ تا کہ بی مصطلق جو سازشوں میں مصروف ہے ان کی سرکوئی کی جا سکے۔ بی مصطلق ، انشکر اسلام کے سازشوں میں مصروف ہے ان کی سرکوئی کی جا سکے۔ بی مصطلق ، انشکر اسلام کے سامنے صف آراء ہو گئے ۔حضور نبی کریم میں کی جا تھے ہیں اپنی صفوں کومنظم کیا اور ان

المناسبة على المنظر كرفيعل المناسبة على المن

پر تابراتوڑ حملے شروع کردیئے جس سے بی مصلطق کے پاؤں اکھڑ گئے اور وہ میدانِ جنگ سے فرار ہو گئے۔ حضرت علی المرتضلی رٹائٹٹن نے اس معرکہ میں اپنی بہادری کے بیشان جو ہر دکھائے۔ اس غزوہ میں بی مصطلق کے رئیس حارث بن البی ضرار کی بیٹی ''جویریئ' حضور نبی کریم شریقی آئے نکاح میں آئیں اور ام المونیون کے لقب سے سرفراز ہوئیں۔

غزوهٔ خندق:

ذیقعدہ ۵ ھ کو دشمنانِ اسلام کا بیا گھ جوڑ چوہیں ہزار کے لئنگر کی صورت میں مدینہ منورہ کی جانب جنگی ساز دسامان سے لیس ہوکر حملے کے لئے آیا۔ حضور نبی مدینہ منورہ کی جانب جنگی ساز دسامان سے لیس ہوکر حملے کے لئے آیا۔ حضور نبی کریم مطابح کا نبی مشتبل کو جب اس لشکر کی آمد کی خبر ہوئی تو آپ مطابح کا ایک لشکر تشکیل دیا اور حضرت سلمان فاری بڑائیڈ کے مشورہ کرام دی گئیڈ پر مشتبل ایک لشکر تشکیل دیا اور حضرت سلمان فاری بڑائیڈ کے مشورہ سے شہر کے گردا کی خندت کی کھدوائی شروع کی جس کی لمبائی قریباً ساڑھے تین میل

المناسبة على المنافي المنافية كرفيه لي المنافية كرفيه لي المنافية كرفيه لي المنافية كالمنافية المنافية المنافية كالمنافية المنافية كالمنافية كالمن

اور چوڑائی قریباً پانچ گزشی۔ اس خندق کی گہرائی پانچ گزشی اور اس خندق سے نکلنے والی مٹر اس خندق سے نکلنے والی مٹی اور پھروں کو خندق کے کنارے اس طرح لگا دیا کہ اس نے ایک مورچہ کی شکل اختیار کرلی۔

حضور نبی کریم مضطح خندق کی کھدائی کے لئے دی دی صحابہ کرام خاریم پڑھنٹم پرمشمنل ٹولیاں بنا کیں اور خود بھی خندق کی کھدائی میں حصہ لیا۔ حضرت علی الرتضی خالیم بڑی خندق کی کھدائی میں شامل تھے۔

مشرکین کا نشکر جب مدینہ منورہ کی سرحد پر پہنچا تو شہر کے گردخندق و کھے
کر پریشان ہوگیا۔ اس نے شہر کا محاصرہ کر لیا اور تیرا ندازی شروع کر دی۔ صحابہ کرام
وی این ہو گیا۔ اس نے شہر کا محاصرہ کر لیا اور تیرا ندازی شروع کر دی۔ صحابہ کرام
وی ہوا با تیر چلائے۔ کم وہیش ہیں دن کے محاصرہ کے بعد اللہ عز وجل
نے مسلمانوں کی مدو فرمائی اور ایک تیز آندھی آئی جس نے مشرکین کے خیصے اکھاڑ
دینے اور مشرکین جو خود کئی روز کے اس محاصرے سے تنگ آ چکے متنے اور ان کے
یاس کھانے پینے کی اشیاء ختم ہو چکی تھیں میدان جنگ سے بھاگ گئے۔

روایات میں آتا ہے عرب کا مشہور شہسور عمر و بن عبد واس جانب سے خندق پار کرنے میں کامیاب ہوگیا۔ عمر و بن عبد و کے بارے میں مشہور تھا وہ اکیلا سوکا مقابلہ کرسکتا ہے۔ حضرت عمر فاروق والفئی کے مشورہ پر حضرت علی الرفضی والفئی میں مقابلہ کرسکتا ہے۔ حضرت عمر فاروق میں مقابلہ کرس

"اے عبدو کے بیٹے! مجھے معلوم ہے تو نے اعلان کر رکھا ہے کہ اگر کوئی مخص جھے سے دو باتوں کا مطالبہ کرے تو ایک بات تو ضرور مان لے گا؟"

عرو بن عبدونے مغرورانہ لیج میں کیا ہاں! میں نے اعلان کر رکھا ہے۔

کتب سیر میں کفار کے محاصرے کی مدت بیس روز بیان کی جاتی ہے۔
بیس روز کے محاصرے کے بعد شدید طوفان آیا جس سے کفار کے خیمے اکھڑ گئے
اوران کے بدن طوفانی ابواؤں سے چھانی ہونے گئے۔اس خوف و ہراس کی کیفیت
کو دیکھ کر ابوسفیان (دلائٹو) جو کہ کفار کے تمام کشکروں کا سالا راعلیٰ تھا وہ سمجھا شاید
قیامت آگئی ہے۔اس نے ڈر کے مار ہے اپنی فوج کو واپسی کا تھم دیا۔
فی دی مرز قید دول

غروه بنوقر بظه:

حضور نبی کریم مین کی گریم مین کی خزوہ خندق کے بعد گھر تشریف لائے تو حصرت جبرائیل علیائیل تشریف لائے اور عرض کیا یارسول الله مین کی اللہ علیائیل اللہ عزوجل فرماتا ہے اجمی آپ جھیار نہ کھولیس کیونکہ بنوقر بظہ کا معاملہ ابھی باتی ہے چنانچہ آپ مین کیونکہ بنوقر بظہ کا معاملہ ابھی باتی ہے چنانچہ آپ مین کی ایک کی کی کھی شخص نماز عصر ادانہ کرے یہاں آپ مین کی ان وقت اعلان کروا دیا کہ کوئی بھی شخص نماز عصر ادانہ کرے یہاں

تک کہ ہم بنوقر بطلہ پہنچ جا کیں۔ پھر حضور نبی کریم مضری ایک ہزار صحابہ کرام بنی انتخ کا ایک لشکر لے کر بنوقر بظہ پہنچے اور حضرت علی المرتضی بڑی تی کو تبن سو صحابہ کرام بنی انتخ کے ایک دستہ کے ہمراہ مقدمہ الجیش پر مقرر فرمایا۔

روايات ميں آتا ہے كەحصرت على المرتضى بنائنيز نے لشكر اسلام كالحجنثر ا بنوقریظہ کے قلعہ کے سامنے گاڑ دیا۔ بنوقریظہ جواجا تک کشکر اسلام کے آئے کا س كر قلعه بند ہو گئے تھے انہوں نے قلعہ كى چھوں يز چڑھ كر گالى گلوچ شروع كر دى۔ حضور نبی کریم منطاعین بھی اس دوران بنوقر بظه پہنچ گئے اور آپ منطاعین کے قلعہ کے محاصرے کا تھم دے دیا۔ پچیس روز کے محاصرے کے بعد بنوقر بظہ نے آپ مٹنے یکٹا ے درخواست کی کہ انہیں زمانہ جابلیت میں قبیلہ اوس کے سردار حضرت سعد بن معاذ طلفن کے سیرد کیا جائے وہ جو فیصلہ کریں گے انہیں منظور ہوگا۔حضرت سعد بن معاذ بنالنمز جو كه غزوه خندق مين تير لكنے سے زخى ہو كئے تھے انبين بنوقر يظه بلايا کیا اور انہوں نے فیصلہ کیا کہ بنو قریظہ کے تمام مردوں کو آل کر دیا جائے اور ان کا مال و اسباب کو صبط کرلیا جائے۔حضرت سعد بن معاذ بٹائنی نے بیہ فیصلہ اس روشی میں کیا کہ بنوقر بظہ نے غزوہ خندق میں کفار اور دیگر یہودی قبائل کو پندرہ سومگوارل، تین سوزر ہیں، دو ہزار نیز عدے اور پندرہ سوڈ ھالیں فراہم کی تھیں۔ آپ سے کھیا کے تحكم پرایک خندق کھودی گئی جہاں مردوں کو ایک ایک کرکے لایا جاتا اور حضرت علی الرئضى اور حضرت زبير بن العوام بني أنتيم ان كي كردنيس ازات جاتے تھے۔ ان مردوں میں جی بن اخطب بھی شامل تھا جسے حضرت علی الرتضلیٰ بنالین نے مارا۔ بنوسعد کی سرکونی کے لئے کشکر کا سالارمقرر کیا جانا:

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن ہی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

۲ ہیں بنوسعد جو کہ فدک کے گردونواح میں واقع تھے انہوں نے خیبر

النستة عمل المستفى يُن الله المستفى ال

کے بہودیوں کے ساتھ مل کرسازش تیار کی کہ مدینہ منورہ پر چڑھائی کر دی جائے۔ حضور نبي كريم ينظ ينيه كو جب خبر موئى تو حضور نبي كريم ينظ ينيه في حضرت على الرئضي طبائنے: کوسومجاہدین کے ہمراہ بنوسعد کی سرکونی کے لئے روانہ کیا اور مدایت فرمائی کہ رات کوسفر کرنا اور دن میں قیام کرنا۔ آپ بٹائٹیڈ مدیندمنورہ سے روانہ ہوئے اور قدک و خیبر کے درمیان عجم نامی چشمہ پر پہنچ گئے جہاں آپ مٹائنڈ نے ایک آ دمی کو گرفتار کیا اور اس سے بنوسعد کی جنگی تیار بول کے بارے میں دریافت فرمایا۔اس تخص نے پہلے تو انکار کیا مگر جب اس سے تی سے پوچھا گیا تو اس نے اس بات کا اقرار کرلیا کہ میں بنوسعد کا جاسوں ہوں اور خیبر کے یہود بول کے باس فوجی تعاون · کی شرائط طے کرنے عمیا ہوا تھا۔ آب م^{الانٹی}ؤ نے اس سے جان بخشی کا دعدہ کرتے ہوئے اس سے بنوسعد کی فوجی قوت کے بارے میں معلومات حاصل کیس اور پھر آپ طالفن نے بنوسعد کی بے خبری میں ان پر ایک زوردار حملہ کر دیا جس سے بنوسعد منتشر ہو گئے اور آپ طالفنڈ وہاں سے یانچ سواونٹ اور دو ہزار بھیٹر بکریاں اینے لشکر کے ہمراہ ہا تک کر مدیندمنورہ لے آئے۔ بنوسعد کؤمنتشر کرنے سے خیبر کے یبودی جو بیامیدلگائے بیٹے تھے کہ اگر وہ مدیندمنورہ پرحملہ کریں تو ہنوسعدان کی مدوكريں مجان كى اميديں خاك ميں ال حكيں۔

رسول الله عضي على كانام شدمناف كافيصله:

المنت المسترف المالية المنتاع المنتاع

نے جب ویکھا ان کی اونٹی اس مقام ہے آگے بروصنے میں انکاری ہے تو آپ سے بیٹی جب ویکھا ان کی اونٹی اس مقام ہے آگے بروصنے میں انکاری ہے تو آپ سے بیٹی ہے کہ اس محابہ کرام رش گنا کے دیار نے کا تھم دیا۔ حدیبیہ میں قیام کے دوران ہی آپ سے بیٹی کو اطلاع ملی کہ مشرکین مکہ نے ان کی آمد کو غلط انداز میں لیا ہے اور وہ ان سے جنگ کرنا چاہتے ہیں۔

حضور نبی کریم مین کی مین کی این کا کہ وہ معززین کوسفیر بنا کر بھیجا تا کہ وہ معززین مکہ کو جا کر بتا کی ہم صرف خمرہ کی نیت سے آئے ہیں۔ آپ ہلانی جس معززین مکہ کو جا کر بتا کیں ہم صرف خمرہ کی نیت سے آئے ہیں۔ آپ ہلانی جس وقت مکہ مکرمہ میں داخل ہوئے تو آپ ہلاتی کی ملاقات ابان بن سعید بن العاص سے ہوئی جن کے ہمراہ آپ ہلانی ان کے گھر روانہ ہو گئے۔

حضرت عثمان عنی را النظر نے ابان بن سعید بن العاص کے ہمراہ حضور نی کریم مطابقہ کا پیغام ابوسفیان اور دیگر معززین مکہ کو پہنچایا۔ آپ را النظر کے اس پیغام کے جواب میں انہوں نے آپ را النظر سے کہا ہم تنہیں بیت اللہ شریف کے بیغام کے جواب میں انہوں نے آپ را النظر سے کہا ہم تنہیں بیت اللہ شریف کے طواف کی اجازت دیتے ہیں لیکن حضور نی کریم میں تی اور دیگر اسلام کواس بات کی اجازت نہیں ویں گے۔ آپ را النظر نے فرمایا کہ میں اس وقت تک طواف کعبہ نہ کروں گا جب بیک حضور نبی کریم میں تا کہ میں اس وقت تک طواف کعبہ نہ کروں گا جب بیک حضور نبی کریم میں تا کہ میں اس وقت تک طواف کعبہ شریف کا طواف نہ کر لیں۔

حضور نی کریم مضاعیة کو جب حضرت عثمان غی برالینی کی شہادت کی خبر ملی تو آپ میشادت کی خبر ملی تو آپ میشادت کے خبر ملی تو آپ میشادت کے ایم بیٹے بیٹے اور آپک درخت کے نیچے بیٹے

جب معززین مکہ کو اس بیعت کی خبر ہوئی تو وہ پریشان ہو گئے۔ انہوں نے حضرت عثان غنی دائنٹ کو واپس بھیج دیا اور ساتھ ہی صلح کے لئے ایک وفد سہیل بن عمروکی قیادت میں حضور نبی کریم مین ہی ہے گئے ایک مدمت میں بھیج دیا۔ سہیل بن عمرو نے آپ مین ہی ہو گئے تو اس بی اس بھیج دیا۔ سہیل بن عمرو نے آپ مین ہی ہو گئے تو آپ مین ہی ہو گئے تو آپ مین ہی ہو گئے تو آپ مین ہی ہو گئے ہوئے گئے ایس معاہدہ کو یہ کو حضرت علی انساری دائنٹ کو محم دیا وہ معاہدہ کو یا تو حضرت علی الرتضلی دائنٹ معاہدہ کو یا تو حضرت علی الرتضلی دائنٹ تحریر فرما کمیں گئے یا حضرت عثمان غنی دائنٹ کے اس معاہدہ کو یا تو حضرت علی الرتضلی دائنٹ تحریر فرما کمیں گئے یا حضرت عثمان غنی دائنٹ کے اس معاہدہ کو یا تو حضرت علی الرتضلی دائنٹ تحریر فرما کمیں گئے یا حضرت عثمان غنی دائنٹ کے اس معاہدہ کو یا تو حضرت عثمان خنی دائنٹ کے اس معاہدہ کو یا تو حضرت عثمان خنی دائنٹ کے اس معاہدہ کو یا تو حضرت عثمان خنی دائنٹ کے اس معاہدہ کو یا تو حضرت عثمان خنی دائنٹ کے اس معاہدہ کو یا تو حضرت عثمان غنی دائنٹ کے اس معاہدہ کو یا تو حضرت عثمان خوالے کہا کہ اس معاہدہ کو یا تو حضرت عثمان غنی دائنٹ کے دائنٹ کے اس معاہدہ کو یا تو حضرت عثمان غنی دائنٹ کے دائنٹ کے دائنٹ کے یا حضرت عثمان غنی دائنٹ کے دائنٹ کے دائنٹ کے دائنٹ کے دائنٹ کے دائنٹ کے دائنٹ کی دائنٹ کے دائنٹ کی میں گئے کے دائنٹ کے

النست على المراقع الماتين كي فيه المراقع المحال الم

حضور نی کریم پینے کو تھے المرت علی المرتضی شائن کو تھم دیا وہ معاہدہ تحریر فرما بھیں۔ آپ شائن نے لکھا۔

بسم الله الرحمن الرحيم

سبیل بن عمرو نے اعتراض کیا کہ ہم رحمٰن کونبیں جانے اس لئے تم تکھو بسمک د حضرت علی الرتضٰی مٹائنڈ نے حضور نبی کریم میٹیڈیڈیٹ کی جانب دیکھا تو حضور نبی کریم میٹیڈیڈٹ نے فرمایا کہ تم

بأسم اللهم

لکھ لونے حضرت علی الرتضی را النظامی را النظامی منابع میں کریم منطق کے فرمان کے مطابق لکھ دیا۔ پھر حضور نبی کریم منطق کا اللہ اللہ مطابق لکھ دیا۔ پھر حضور نبی کریم منطق کا اللہ فرمایا۔

هذا ما قاضى عليه محمد رسول الله مِشْفَرَقِهُمْ

لکھو۔ سہیل بن عمرہ نے اس پر بھی اعتراض کیا کہ ہم آپ منظم ہے۔ رسول نہیں مانے اس لئے یہاں محمد بن عبداللہ (منظم ہونے) لکھا جائے۔

حضرت على المرتضى والنفظ في حضور نبى كريم مضائطة كى جانب و يكھتے ہوئے فرمايا ميں ايسانہيں كرسكتا۔ آپ مضائطة في آئے بروھ كرخود رسول الله كے لفظ مثا و سيئے اور ان كى جگہ محمد بن عبدالله (مضائعة) لكھ ديا اور حضرت على المرتضى والله الله فرمايا۔

'' میں محمد رسول انٹد (مضرکیفیم) ہوں اور محمد بن عبداللہ (مضرکیفیم) بھی ہوں۔''

جب معاہدہ تحریر ہو گیا تو حضرت علی المرتضی مٹاٹنڈ نے بھی و نگر ا کابر صحابہ کرام خاتیج کی طرح اس پر دستخط کئے۔

المناسبة على المناسبة المناسبة

فانتح خيبر:

معاہدہ حدیب کے بعد حضور نبی کریم مضفی ایک کو اس بات پر اطمینان ہو گیا كداب يجه عرصه تك مشركين مكه كى جانب ہے كى قتم كاكوئى خطرہ لاحق نہيں ہوگا تو آپ مضائی اب مدینه منورہ کے اطراف میں واقع ان سازشی قبائل کی جانب ا پی توجه مرکوز فرمانی جو آئے دن مدینه منورہ کا سکون برباد کرنے اور مسلمانوں کو نقصان پہنچانے کے منصوبے بناتے رہتے تھے چنانچہ آپ مٹنے پینے انتے سب سے يهلي خيبر كارخ كيا- خيبر شهر مين كئي بلند شلے اور پهاڑ ہے اور بد خالصتاً يهودي بستى تھی اور ان یہودیوں نے خیبر میں بے شار تطعیقمبر کرر کھے تھے۔ خیبر، مدینہ منورہ ہے ای میل کے فاصلے پر واقع تھا۔ آپ مشاری الم میں منورہ سے قریباً سولہ سو جانمار صحابه كرام بن منظم كے ہمراہ روانہ ہوئے۔حضرت ملی الرتضلی بڑالفن جو كه اس وقت آ شوب چیثم کے مرض میں مبتلا تھے وہ بھی اشکر میں آپ مٹے بھٹا کے ہمراہ تھے۔ لشكراسلام نے سب سے پہلے خيبر کے قلعہ ناعم پرحملہ کيا۔حضور نبي كريم ین کی تیا کے مار حضرت محمد بن مسلمہ بڑائنے کی قیادت میں افتکر اسلام کے ایک گروہ نے قلعہ ناعم پرجملہ کیا۔حضرت محمد بن مسلمہ بنائفیڈ اور ان کے بھائی حضرت محمود بن مسلمہ بنالٹنے نے نہایت ولیری کے ساتھ مقابلہ کیا اور بالآخر جام شہادت نوش فرمایا۔ قلعہ ناعم کے بعد لشکر اسلام نے اپنی پیش قدمی جاری رکھی یہاں تک کہ قلعہ تموص کے علاوہ خیبر کے تمام قلعے نتح کر لئے۔قلعہ قبوص کا شار خیبر کے سب سے مضبوط قلعول ميں ہوتا تھا اور اس قلعے میں بہود بوں کا سردار مرحب رہتا تھا۔حضور نبی کزیم بین پیزان نظر اسلام کو حکم دیا که وه قلعه قموس کا محاصره کرکیس ۔ کشکر اسلام نے قلعہ قبوص کا محاصرہ کرنے کے بعد اس برکٹی تا بر توڑ حملے کئے لیکن فتح نصیب نہ

المنت تعلى المنتاخ الم

من حضور نبی کریم بیض کی افر مان من کرتمام صحابہ کرام بین کی از خواہش پیدا ہوئی کہ علم اسے عطا ہو۔ اگلے روز جمعہ تھا۔ آپ سے بیٹی نے جمعہ کی نماز کی اوا کی کے بعد دریافت کیا علی (خالفیٰ) اس وقت کہاں ہے؟ حضرت علی المرتضلی کی اوا کی کے بعد دریافت کیا علی (خالفیٰ) اس وقت کہاں ہے؟ حضرت علی المرتضلی جلالفیٰ جو ابھی تک آشوب چہم کے مرض میں مبتلا تھے اور اسی وجہ سے جنگ میں عملی طور پر حصہ بھی نہ لے سے انہیں بلایا گیا۔ آپ میں بیٹی نے دریافت فر مایا علی طور پر حصہ بھی نہ لے سے انہیں بلایا گیا۔ آپ میں بیٹی اور پر حصہ بھی نہ لے سے المرتضلی جلالفیٰ جلالفیٰ المرتضلی جلالفیٰ المرتضلی جلالفیٰ المرتضلی جلالفیٰ المرتضلی جلالفیٰ کے فر مایا علی (جلالفیٰ)! میرے پاس وکھتی ہیں اور پچھ دکھائی نہیں دیتا۔ آپ میں ہیں اور پچھ دکھائی خلالفیٰ کی تعمول پر دگا دیا۔ آ جاؤ۔ حضرت علی المرتضلی جلالفیٰ کی تعمول پر دگا دیا۔ آ

حضرت علی المرتضی و النفظ کی تکلیف جاتی رہی اور آپ و النفظ کی آنکھیں افعیک ہوگئیں کریم میں المرتضی و النفظ کی آنکھیں المحکمیں میں میں کریم میں کریم میں کریم میں کریم میں کریم میں کریم میں کہ کا ایک جھنڈ آ آپ و النفظ کو عطا کرتے ہوئے آپ والنفظ کے حق میں دعائے خیر فرمائی۔

حضرت على المرتضى وللفنز فرمات بين حضور في كريم يضائية المك لعاب وبهن

التفاية على المراقع المائة الم

لگانے کے بعد مجھے بھی آتھوں کی کوئی بیاری نہ ہوئی بلکہ میری آتھیں پہلے ہے زیادہ روشن ہو گئیں۔

حضرت علی المرتضی بڑائیڈ نشکر اسلام کے ہمراہ قلعہ قبوص کے دروازے پر پہنچے اور جھنڈا دروازے کے پاس گاڑ دیا۔ آپ بڑائیڈ نے ایک مرتبہ بھر لوگوں کو اسلام کی دعوت دی جسے انہوں نے قبول کرنے سے انکار کر دیا۔ اس دوران ایک یہودی نے قلعہ کی حجست سے پوچھاتم کون ہو؟ آپ بڑائیڈ نے فرمایا میں علی (جہائیڈ) بن الی طالب ہوں۔ اس یہودی نے جب آپ بڑائیڈ کا نام سنا تو کا نپ اٹھا اور کہنے لگا۔

'' تورات کی تم! یخص قلعد فتح کے بغیر ہر گزنبیں جائے گا۔' حضرت علی المرتضی والنیز نے قلعہ قبوص پر حملہ کیا تو یہود یوں کے سردار مرحب کا بھائی حارث کئی یہود یوں کے ہمراہ مقابلے کے لئے نکلا۔ آپ والنیز نے ایک ہی دار میں اس کا کام تمام کر دیا اور لشکر اسلام نے باقی کے تمام یہود یوں کو جہنم واصل کر دیا۔ مرحب کو جب اپ بھائی کے قبل کی خبر ہوئی تو وہ غیظ وغضب کے مالم میں ایک اشکر کے ہمراہ قلعہ قبوص سے باہر نگلا اور با آواز بلند کہنے لگا۔ ''خیبر مجھے جانتا ہے کہ میں مرحب ہوں ، سطح پوش ہوں، بہادر اور تجریہ گار ہون۔''

> حضرت علی المرتضی دلی تنفیز نے اس کے جواب میں فر مایا۔ "میں وہ ہوں میری مال نے میرا نام شیر رکھا تھا اور میں دشمنوں کونہایت تیزی ہے تل کرتا ہوں۔''

مرحب نے جب مفرت سعلی الرتضی بنائنہ کا کلام سنا تو غنے میں اس

الانت تعلى المراق المالي المال

نے کموار کا وار کیا جسے آپ بڑائیڈ نے اپنی کموار سے روک لیا اور اس پر جوانی وار کیا اور ایک ہی وار کیا ہور ایک ہی وار میں اس کا سرقلم کر دیا۔ مرحب کی لاش گرتے ہی شکر اسلام نے یہودی لشکر پر حملہ کر دیا جس نے بے شار یہودی مار ہے گئے اور باتی جونے گئے وہ قلعہ کے اندر بھاگ گئے اور باتی جونے گئے وہ قلعہ کا دروازہ بند کر لیا۔

حدث تعلی المرتضی بنائین نے قلعہ کا بھاری بھر کم درواز واکھاڑ بھینکا اور اشکر اسلام قلعہ قوس میں داخل ہو گیا۔ یہود یول نے شکست سلیم کرتے ہوئے امان طلب کی اور آئندہ سے برعبدی سے تو بیر لی۔حضور نبی کریم میں بیری شرط بران سے سلے کر اور آئندہ سے برعبدی سے تو بیر لی۔حضور نبی کریم میں بیران سے سلے کر اور اسلام کی اور آئندہ سے برعبدی سے تو بیر کی سے تو بیر کی سے تابید کی شرط بران سے سلے کر لی۔

ابوسفیان (طالبینه) کی مددنه کرنے کا فیصله:

رمضان المبارک ۸ ہیں حضور نبی کریم مضر کے بڑے اسلام لشکر کے ہمراہ مکہ مکرمہ میں داخل ہوئے اور بیروی شہر تھا جہاں ہے آپ بیض کی کا آبائی شہر تھا جہاں ہے آپ بیض کی کا آبائی شہر تھا انہائی نامساعد حالات میں بجرت کرنا پڑئی تھی اور بیرآپ بیض کی آبائی شہر تھا اور مکہ مکرمہ پرلشکر اسلام کی چڑھائی کی وجہ بیہ ہوئی کہ مشرکیین مکہ نے معاہدہ حدیب کی دو برس تک پابندی کی اور پھر انہوں نے بنی بکر کے ساتھ مل کرمسلمانوں کے حلیف قبیلہ بنی فرزاعہ کو نقصان بہنچایا۔ آپ بیض کی نظر کے ساتھ مل کرمسلمانوں کے طیف قبیلہ بنی فرزاعہ کو نقصان بہنچایا۔ آپ بیض کی نظر کے ساتھ مل کرمسلمانوں کے شرائط رکھیں۔

- ا۔ بی خزاعہ کے مقتولوں کا خون بہا دیا جائے۔
- ٢۔ قریش بی برکی حمایت سے دستبردار ہوجائے۔
- سار اگر پہلی دونوں شرائط منظور نہیں تو اعلان کر دیں کہ معاہدہ حدیب یوث گیا

ہ۔

المناسبة على المناخ الم

مشرکین مکہ نے اس وقت تک گھمنڈ میں یہ کہد دیا کہ ہم معاہدہ حدیبیہ و ختم کرتے ہیں گر بعد میں انہیں احساس ہوا کہ وہ غلطی پر ہیں۔ ابوسفیان (شائن یہ جواس وقت مسلمان نہ ہوئے تھے انہوں نے حمرداران مکہ کو سمجھانے کی کوشش کی کہ اس وقت مسلمانوں کی طاقت بہت زیادہ ہے اور ہم ان سے دشمنی مول نہیں کہ اس وقت مسلمانوں کی طاقت بہت زیادہ ہے اور ہم ان سے دشمنی مول نہیں

حضرت ابوسفیان رفائیو نے معاہدہ حدید کو بچانے کی کوشش میں مدینہ منورہ کا سفرافتیار کیا اور مدینہ منورہ آنے کے بعدائی صاجر ادی ام المونین حضرت ام حبیبہ والفی کے مکان پر قیام پذیر ہوئے۔ ابوسفیان (والفی نے اس بستر پر بیٹے کے دیا اور فر مایا بی حضور نبی کریم کے ایکن کا بستر ہے۔ ابوسفیان (والفی کی کھ دیر و بال رکنے کے بعد حضور نبی کریم کے اور کی کے اور اپنے آئے کہ دیا اور فر مایا بی حضور نبی کریم کے ابوسفیان (والفی کی کہ دیا و اس کے محاسب میں حاضر ہوئے اور اپنے آنے کا مدعا بیان کیا۔ حضور نبی کریم کے ابوسفیان (والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا جس پر ابوسفیان (والفی کی وہاں سے حضرت ابو بکر صدیق والفی کی خدمت میں حاضر بھوائی انہوں نے بھی ابوسفیان (والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ میں حاضر بھوائی اور حضرت عمر فاروق والفی معفرت عثمان غنی طافی اور حضرت علی الوسفیان (والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ الرتفی والفی والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ الرتفی والفی والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ الرتفی والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ الرتفی والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ الرتفی والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ الرتفی والفی والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔ الرتفی والفی کی بات کا کوئی جواب نہ دیا۔

تاریخ اسلام کے سنبری دور کا آغاز:

جب حضرت ابوسفیان (ملائنید) ناکام ہوکر واپس لوٹ گئے تو حضور نی کریم سے تعدید کے تو حضور نی کریم سے تعدید نے معابہ کرام می آئیم کو جنگ کی تیاری کا تھم دیا اور اس مقصد کے

الناستر على المنافي الفيز كر فيصل المنافي المن

لئے اپنے تمام حلیف قبائل کو بھی علم نامے بھیج دیئے۔ کسی بھی صحابی نے حضور نی

کریم میں بھی ہے۔ یہ بات پوچھنے کی جرائت نہ کی کہ وہ کس سے جنگ کی تیاری کا علم
دے رہے ہیں یہاں تک کہ حضور نبی کریم میں بھی کسی صحابی حتی کہ اپنے
راز دان حضرت ابو بکر صدیق رالی ہے۔ بھی اس بات کا ذکر نہیں کیا کہ وہ کس سے
جنگ کرنا جائے ہیں؟

حضرت ابوبکر صدیق و این صاحبزادی ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ والفی ایک سے تو ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ والفی ایک سے تو ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ والفی ایک سے تھیار نکال رہی تھیں۔ آپ والفی نے اپنی صاحبزادی سے حضور نبی کریم مضی الفی ان کے بارے میں دریافت کیا تو انہوں نے بھی لاعلمی کا اظہار کر دیا۔ جنگ کی تمام تیاریاں انہائی خاموثی کے ساتھ ہوتی رہیں حتی کہ ارمضان المبارک ۸ھ کو حضور نبی کریم انہائی خاموثی کے ساتھ ہوتی رہیں حتی کہ مراہ مکہ کر مدروانہ ہوئے۔

الشكراسلام جب مقام جھ پہنچا تو حضور نی كريم مضائية نے لشكركو خيمه زن ہونے كا تفكم ديا۔ مقام جھ پرحضور نی كريم مضائية كے چچا حضرت سيّدنا عباس والنائة جوك كا تفكم ديا۔ مقام جھ پرحضور نبی كريم مضائية كے چچا حضرت سيّدنا عباس والنائة جوك كم كم كرمه ميں قيام پذير تھے اپنے اہل وعيال كے ہمراہ حاضر ہوئے اور حضور نبی كريم مضائة كا كشكر ميں شامل ہوئے۔

مشركين مكه كو جب حضور في كريم مضيئية كى آمدى اطلاع ملى تو انهول نے تحقیق كے لئے ابوسفیان (وَالْفَوْ) كو بھیجا اور جب ابوسفیان (وَالْفَوْ) نے لشكر كا جائزہ لیا تو وہ اتنا عظیم والشان لشكر و كھے كرجیران رہ گئے۔ ابوسفیان وَالْفَوْ نے واپس جائزہ لیا تو وہ اتنا عظیم والشان لشكر و كھے كرجیران رہ گئے۔ ابوسفیان وَالْفَوْ نے واپس جا كرمشركين مكه سے كہا ابھى بھى وقت ہے وہ جا كرجفور في كريم مطافى مائك ليس تا كرمش جو جائے اور خطرہ مل جائے۔

الناسة عمل المستفى بناتنز كرفيه لي المعلق ال

حضور نبی کریم بینے پہلے جس وقت مکہ مکرمہ میں داخل ہوئے تو آپ مینے پہلے اپنی افٹنی قصوی پرسوار سے قصوی وہی اور شی جو ہجرت کے وقت حضور نبی کریم بینے پہلے کرآپ مینے پہلے کرآپ مینے پہلے کرآپ مینے کرآپ مینے پہلے کرآپ مینے کہ آپ مینے پہلے کرآپ مینے کہ آپ مینے پہلے کرآپ مینے پہلے کہ آپ مینے پہلے کہ آپ مینے پہلے کہ اور اس اور کئی اور آج دین اسلام کی سب سے بردی فتح مکہ مکرمہ کے وقت بھی آپ مینے پہلے اس اور کئی پرسوار سے ۔ آپ مینے پہلے کے دائیں جانب حصر ت ابو بکر صدیق وقت بھی آپ مینے پہلے اس اور پہلے وی برار مجاہدین کا ایک فشکر عظیم تھا۔

مهميں جو کام کہا گيا ہے تم وہ کرو:

فتح مکہ کے بعد حضور نبی کریم بیٹے پیڈا خانہ کعبہ میں داخل ہوئے اور آپ
سٹے پیڈا جس بت کی جانب اشارہ فرماتے ہتے وہ بت اوند سے منہ زمین پر گر جاتا
تفا۔ جب تمام بت ٹوٹ محے تو ایک بت جوسب سے بلند جگہ نصب تھا اس کوتو ڑنے
کے لئے آپ سٹے پیڈا نے حضرت علی المرتضلی والائے سے فرمایا۔

''حم میرے کندھوں پر چڑھ کراس بت کوتو ڑ دو۔''

حضرت على المرتضى وللأنوز بن عرض كيا-"يارسول الله مضاع في أمير ب والدين آب مضاع في آر بان موس آب مِنْ وَمُنَامِم مِيرِ اللهِ كَالْمُول بِرِيرُ هِ جِلْهِ الْمِيلِ - " خضور نبي كريم مِنْ وَمُنْ اللهِ فَعَرِيدًا فِي قرمايا -

''اے علی (شالفیز)! کیاتم نبوت کا بوجھ اٹھالو گے۔''

حضرت علی الرتضی و النفی و الفی مضور نبی کریم مضور کی بات س کر خاموش محافر کی الم مضور نبی کریم مضور کی اور پر حضور نبی کریم مضور کی اور پر حضور نبی کریم مضور کی کندهول پر چره کراس بت کوتو ژدیا۔

ایک روایت کے مطابق حضرت علی الرتضی و الفی جب حضور نبی کریم مطابق حضرت علی الرتضی و الفی جب حضور نبی کریم مضور نبی کریم مضور نبی کریم مضور نبی کریم مطابق حضرت علی الرتضی و الفی خاندهول پر چرا مصرت عرض کیا۔

''یارسول اللہ منظائے بھٹا تمام پردے ہٹ جکے ہیں اور میرا سر عرش کے قریب ہے اور آسان کی ہر چیز تک میری رسائی آسان

"__

حضور نبی کریم مطاع الے

"اے علی (طالفظ) الته بیں جو کام کہا گیا ہے تم وہ کرو۔"

حضرت على المرتضى ملائفة نے بت كوتور ديا اور چھلاتك لكا كرحضور نبي

كريم مضيعة إك كندهول سے فيج اتر آئ اور عرض كيا-

حضور نی کریم مضر الله تا الله

"الله (طلاب) تقال على المنافظة المنافظ

الناست الله التي نالة إلى المعلى المعلى

حضور نبي كريم منظر المين جموث بين بولت:

روایات کے مطابق جب حضور نی کریم ہے ہے۔ مکہ کرمہ برحمد کرنے کے لئے لشکر اسلام کو خفیہ تیاریوں کا تھم دیا تو حضرت حاطب بڑائین نے قریش کو ایک خطاکھا جس میں تحریر تھا کہ میراغالب گمان میہ کہ کشکر اسلام مکہ مکرمہ برحملہ کرنے کے لئے تیاریاں کر رہا ہے۔ حضرت حاطب بڑائین نے یہ خط ایک عورت کو دیا جواس خطاکوا ہے بالوں میں چھیا کرمکہ مکرمہ کی جانب روانہ ہوئی۔

حضور نبی کریم بین و بذرید وی اس بات کی اطلاع دی گی اور آپ بین و بختی از برین العوام اور حضرت عمارین یاسر می اندین کوطلب فرمایا اور انہیں اس عورت کا حلیہ بتاتے ہوئے فرمایا قلاں جگہ فلاں حلیہ کی عورت تمہیں ملے گی اس کے پاس ایک خط ہے تم وہ خط لے کر آ جاؤ۔ جب بیتمام حضرات اس عورت کے پاس بینچ تو اس عورت سے خط کے بارے میں دریافت کیا۔اس عورت نے لائلمی کا اظہار کیا۔حضرت علی الرفضی پڑائین نے فرمایا۔

کیا۔اس عورت نے لائلمی کا اظہار کیا۔حضرت علی الرفضی پڑائین نے فرمایا۔

کیا۔اس عورت نے لائلمی کا اظہار کیا۔حضرت علی الرفضی پڑائین نے فرمایا۔

کیا۔اس عورت نے لائلمی کا اظہار کیا۔حضور نبی کریم بین بین جھوٹ نہیں ہولتے۔''

پھر حضرت علی الرتضی بڑائٹی نے میان سے تلوار نکالی اور اس عورت کوئل کرنے کی دھمکی دی جس پراس عورت نے اپنے بالول میں سے وہ خط اکال دیا۔ آپ بڑائٹی وہ خط سے کرحضور نبی کریم میٹی پیدا کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ حضور نبی کریم میٹی پیدا کو معلوم ہو گیا کہ یہ خط نبی کریم میٹی پیدا کو معلوم ہو گیا کہ یہ خط حضرت حاطب بڑائٹی حضرت حاطب بڑائٹی کو معلوم بوگیا کہ یہ نائی حضرت حاطب بڑائٹی کو کو بالیا تو انہوں نے معذرت کرتے ہوئے عض کیا۔

"يارسول الله يضي علا اس خط كوتح يركرن كا مطلب بيه بركزن

المستفى يُنْ تَنْ كِيملِ اللهِ اللهِ

تھا کہ میں منافق ہو گیا ہوں یا مرتد ہو گیا ہوں میں آج بھی آب سے بیتی ہو گیا ہوں میں نے یہ خط آب سے ایمان رکھتا ہوں میں نے یہ خط صرف اس لئے تحریر کیا تا کہ قریش پر میراحق ٹابت ہو جائے اور وہ میرے اہل وعیال کی حفاظت سے غافل نہ ہوں۔'
حضور نبی کریم بیلے بیتی کے حضرت حاطب بڑائیڈ کے اس سے پر انہیں معافیہ

فرما وياب

حنين ميں رسول الله يضين كا ساتھ نہ چھوڑنے كا فيصله:

شوال ۸ ھ بیں حنین کے مقام پر حق و باطل کے درمیان ایک اور معرکہ ہوا۔ مکہ مکر مہ کے نواح میں ہواز ن اور تقیف دو جنگجو قبائل رہتے ہے جنہیں وین اسلام اور حضور نبی کریم میں ہواز ن ابتداء ہے ہی شدید نفرت تھی۔ ابر ہہ نے جب خانہ عجب پر چڑھائی کی تھی تو اس وقت بھی ایک ثقفی نے اس کی رہنمائی کی تھی۔ فتح مانہ کہ ہے قبل ہی یہ لوگ مکہ مہ کے خلاف مکہ ہے قبل ہی یہ لوگ مکہ مہ کے خلاف ابھار رہے تھے۔

ہوازن اور ثقیف قبائل کو جب معلوم ہوا کہ مسلمانوں نے مکہ فتح کرلیا ہے تو انہوں نے بیسوچ کر جنگی تیار بیاں شروع کردیں کہ اگر انہوں نے مسلمانوں کو شکست دے دی تو طاکف کے باغات واملاک اور مکہ مکرمہ کی وادیاں سب ان کی ہو جا کیں گی چنانچہ یہ قبائل چار ہزار افراد کا لشکر لے کر مکہ مکرمہ پر چڑھائی کی فرض سے وادی حنین میں اتر ہے۔حضور نبی کریم مضافی تا ہو کہ اس وقت مکہ مکرمہ میں موجود سے آپ مضافی ہو جب یہ خرطی تو آپ مضافی تا ہے ہو کہ اس وقت مکہ مکرمہ میں موجود سے آپ مضافی ہو جب یہ خرطی تو آپ مضافی تا ہے اس مخالہ کرام بن اللہ کا تا ہو ایس مضافیہ کرام بن اللہ کا تا ہو ایس مناز کی دیا ہے اور کی کریم مضافیہ کرام بن اللہ کی تیاریاں شروع کرنے کا تھم وے دیا۔

المناسة على المنافئة كي فيمل المنافظة كي فيمل المنافظة كي فيمل المنافظة كي فيمل المنافظة كي المنافظة ك

" بے شک اللہ پہلے بھی میدانِ جنگ میں تمہاری مدو کر چکا ہے اور اب حنین کے موقع پر بھی جب تم اپنی کٹرت پر فخر کر رہے ہے اور وہ کچھ کام نہ آئی اور زمین باوجود وسعت کے شک کر دی گئی پھرتم پیٹے پھیر کر بھاگ نکلے پھر اللہ نے اپنے رسول (مطابق پھر کر بھاگ نازل کی اور ایسی فوج رسول (مطابق) پر اور مسلمانوں پر تسلی نازل کی اور ایسی فوج بھیجی جوتم نے نہیں دیکھی۔"

بنو ہوازن جو تیراندازی کے ماہر تھے انہوں نے لشکر اسلام پر تیروں کی اور وہ تمام نوسلم صحابہ کرام دی گئیز الیں ہو چھاڑ کی لشکر اسلام میں بھگڈر کچ گئی اور وہ تمام نوسلم صحابہ کرام دی گئیز میدانِ جنگ سے فرار ہونے والوں میں وہ ہزار افراد کا دہ گردہ بھی شامل تھا جو صرف مالی غنیمت کی لالچ میں لشکر اسلام کے ہمراہ آیا تھا۔ کا وہ گردہ بھی شامل تھا جو صرف مالی غنیمت کی لالچ میں لشکر اسلام کے ہمراہ آیا تھا۔ اب میدانِ جنگ میں حضور نبی کریم بیٹے ہوئی کی جا نثاروں کے سواکوئی موجود نہ تھا۔ ان جا نثاروں میں حضرت ابو بکر صدیق ،حضرت عمر فاروق ،حضرت عثان غنی ،حضرت

الانستر على المراق المالية الم

علی الرتضی، حضرت زبیر بن العوام، حضرت طلحه بن عبیدالله، حضرت ابوعبیده بن الجراح، حضرت ابوعبیده بن الجراح، حضرت سیّدنا عباس شی آنتیم اور دیگر صحابه کرام شی آنتیم کی جماعت موجود تھی۔ غزوہ و خنین میں فتح کشکر اسلام کی ہوئی اور اس معرکه میں چھمسلمان شہید ہوئے جبکه بنوہ وازن کے اکہتر افراد مارے گئے۔

حضرت جابر بن عبدالله رفال نیز سے مروی ہے فرماتے ہیں ہم وادی حنین کی جانب روانہ ہوئے اور دغمن جو پہلے سے ہی وادی کی گھاٹیوں ہیں گھات لگائے بیشا تھا اس نے ہم پرحملہ کر دیا اور ہم شکست کھا کر یوں بکھر گئے کہ کی واپس پلنتے نہیں سنتے۔حضور نبی کریم مطابق آیک جگہ کھڑے ہوئے اور آپ مطابق نیارا۔

نہیں شنے۔حضور نبی کریم مطابق آیک جگہ کھڑے ہوئے اور آپ مطابق تیا نہ نے پارا۔

''کہاں جاتے ہومیری جانب آؤ میں اللہ کا رسول ہوں، میں محمد (مطابق بن عبداللہ (فالفنی) ہوں۔'

حضرت جابر بن عبداللہ وظائفہ فرماتے ہیں حضور نبی کریم مضفہ کہتا کی اس پیار کا بچھ اثر نہ ہوا اور ہرکوئی بھاگ رہا تھا۔ اس موقع پر مہاجرین اور انصار کے پیار کا بچھ لوگ اور آپ مضفہ کے خاندان کے افراد کے علاوہ حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق وہی گئی ہا ہے۔ حضور نبی کریم مضفہ کے خاندان کے حضرت عمر فاروق وہی گئی ہا ہا تقدم رہے۔ حضور نبی کریم مضفہ کے خاندان کے افراد میں سے حضرت علی المرتضی ، حضرت سیّدنا عباس ، حضرت سیّدنا فضل بن عباس ، حضرت اسامہ بن زید، حضرت رہیجہ بن حارث اور حضرت ابوسفیان بن حارث ہو گئی ہے۔

حضرت جابر بن عبدالله والنوائد والنوائد ملى النوائد المائون التي الله المرحضور في كريم يطائونا النوائد المرائد والنوائد والنوائد والنوائد والنوائد والنوائد والنوائد والنوائد والنوائد والمرائد والنوائد والمرائد والمرائد

" با آوازِ بلند بكاري كدائ معشر انصار! اے بيعت رضوان

المنت على المراق المالية المال

كرنے والو!"

چنانچہ حضرت سیدنا عباس طالفنڈ نے یونمی بکارا تو لوگ بلنے اور جواب میں لیک لیک کہنا شروع کر دیا۔ میں لیک لیک کہنا شروع کر دیا۔

غزوهٔ طائف میں شمولیت:

حضور نبی کریم منظ کی آنے فرمایاتم درست کہتے ہواور میں نے بھی اس خواب کی بہی تعبیر نکائی ہے۔ پھر حضور نبی کریم منظ کی آئے کے اسلام کو کوچ کرنے کا حکم دیا۔

لئے طائف کی فتح نہیں ہے۔"

خولہ بنائن منے میں بنت میں نے جو معرت عثان بنائن منطعون کی بیوی تھیں انہوں سے انہوں منظعون کی بیوی تھیں انہوں اند

المناسر على المنافعة كي يعلى المنافعة المنافعة كي يعلى ال

حضور نبی کریم مشفظ بین الله ایال! ایسا بی ہے۔حضرت عمر فاروق منالیا ہی۔ نے عرض کیا۔

''اگرتھم ہوتو میں گشکر کے کوچ کرنے کا اعلان کروں۔'' حضور نبی کریم میٹے پھٹانے اجازت دے دی اور پھر حضرت عمر فاروق وٹالٹیؤ نے گشکر کے کوچ کرنے کا اعلان کیا۔

روایات بین آتا ہے کہ طائف کے محاصرے کے دوران حضور نبی کریم بین کوئی الرتفنی دائن کا الف کے دوران حضور نبی کریم بین کوئی الرتفنی دائن کو ایک مختصر سے لئکر کے ہمراہ طائف کے نواح میں بھیجا تا کہ دہ اردگر دموجود بت خانوں کوختم کر سمیں ۔ آپ بڑائن جب لئکر لے کر نظے تو آپ بڑائن کا مقابلہ اوطاس کی گھاٹیوں میں موجود بنو ہوازی اور بنو تقیف کے ایک لئکر سے ہوا جے آپ بڑائن نے ایک مختصر سے معرکہ کے بعد زیر کرلیا۔ کے ایک لئکر سے ہوا جے آپ بڑائن نے طائف کے اردگرد کے تمام علاقے کو بت خانوں سے اس کے علادہ آپ بڑائن نے طائف کے اردگرد کے تمام علاقے کو بت خانوں سے اس کے علادہ آپ بڑائن نے طائف کے اردگرد کے تمام علاقے کو بت خانوں سے

الانت تعنى في الله المعالي الم

یاک کردیا۔

بنی طے کی سرکونی کے لئے لشکر کا سالار مقرر کیا جانا:

منقول ہے 9 ھ میں حضور نبی کریم مضافی آئے خصرت علی الرتضی دائی الر الفنی دائی الر الفنی دائی الیہ الیہ سو پچاس سواروں کے ہمراہ قبیلہ طے کی سرکو بی کے لئے روانہ کیا اور حکم دیا کہ بنی طے کے بت خانے کو مسمار کر دیں۔ آپ وٹائیڈ اپنے لشکر کے ہمراہ تیز رفتاری سے بنی طے پر حملہ آور ہوئے کہ آہیں سنجھلنے کا موقع ہی نہ مل سکا۔ آپ وٹائیڈ نے بنی طے کا بت خانہ جلا کر راکھ کر دیا جبکہ بنی طے کے لوگ فرار ہوگئے۔ اس معرکہ میں بے شار مالی غنیمت مسلمانوں کے ہاتھ آیا۔ بنی طے کا حاکم عدی بن حاتم شام کی جانب فرار ہوگیا جبکہ قبیلہ طے کے مشہور تنی حاتم طائی کی بیٹی کولشکر اسلام نے قیدی بنایا جسے مدید منورہ میں لاکر حضور نبی کریم سے تی ہے کہ پر قید خانے میں قید کر دیا گیا۔

غزوهٔ تبوك:

رجب المرجب ٩ ہے میں حضور نبی کریم مین وقتی ہے شام اور مصر کے عیسائی
رومیوں کی سرکو بی کا ارادہ کیا اور اس مقصد کے لئے تمیں ہزار مجاہدین کا لشکر تیار کیا
گیا۔ جس وقت غزوہ تبوک کے لئے تیاریاں شروع کی گئیں وہ گرمیوں کا موسم تھا
اور لشکر اسلام کو مالی وحر بی وسائل کی کمی کا سامنا تھا۔ آپ مین جی بینی نے تمام مسلمانوں
سے کہا وہ اپنی استطاعت کے مطابق جنگ میں حصہ لیں۔

حضرت عثمان عنی دلائنڈ نے جنگ کے لئے نوسوادنٹ، سوگھوڑے اور ایک ہزار دینار فراہم کئے۔

حضرت عبدالرحمٰن بن عوف وللفنظ نے جالیس ہزار درہم جنگ کے لئے

و ابم کئے۔

حضرت عمر فاروق بڑا تھے اپنا نصف مال جنگ کے لئے فراہم کیا۔
حضرت ابو بکر صدیق بڑا تھے اپنا تمام مال جنگ کے لئے فراہم کر دیا۔
جب آپ بڑا تھے سے حضور نبی کریم سطے تھے اپنا تمام مال کہ گھر والوں کے لئے کیا
جب آپ بڑا تھے ہوتو آپ بڑا تھے نے عرض کیا۔

"يارسول الله مضفي الله الله مضفي الله الله الله الله الله الله من كافي

"__

حضور نی کریم سے بھانے نے خودہ جوک کاعلم حضرت ابو بکر صدیق دالتین کے سپر دکیا۔ جب بید قافلہ مدید منورہ سے روانہ ہوا تو اس میں دس ہزار با بیادہ اور ہیں ہزار بیدل تھے۔ حضور نی کریم سے بھانے نے حضرت علی الرتھنی دلائٹین کو مدید منورہ میں اٹل بیت کی حفاظت اور نگرانی پر مامور فر مایا اور جنگ کے لئے روانہ ہوئے۔ میں اٹل بیت کی حفاظت اور نگرانی پر مامور فر مایا اور جنگ کے لئے روانہ ہوئے۔ سامال کی کی وجہ سے اکثر جگہوں پر درختوں کے بیتے کھا کر گزارہ کر نا پڑا۔ لئکر اسلام جب عرب اور شام کی سرحد پر واقع تبوک کے مقام پر بہنچا تو اس نے وہاں پڑاؤ کیا۔ اس دوران راستہ میں موجود بے شار علاقے اسلامی مملکت کا حصہ بنے۔ قیصر روم نے شام کی سرحد سے اپنے لئکر کو واپس بلا لیا اور اسلامی کا حصہ بنے۔ قیصر روم نے شام کی سرحد سے اپنے لئکر کو واپس بلا لیا اور اسلامی گئر جیس روز تک تبوک کے مقام پر قیام پذیر ہا۔

تبوک سے واپسی کے بعد جزیرہ عرب کے دور دراز علاقوں سے بے تمار وفود حضور نبی کریم مطابق کی خدمت میں حاضر ہونے گے اور لوگ جوق در جوق دائرہ اسلام میں داخل ہونے گے۔ اللہ عزوجل نے قرآن مجید میں سورہ نفر اس بارے میں یول ارشاد فرمایا ہے:

الناسة على السرين التاني التان

إذَا جَآءَ نَصُرُ اللّهِ وَالْفَتْحُ * وَرَأَيْتُ النَّاسَ يَدُخُلُونَ فِي دِيْنِ اللّهِ أَفُواجًا *

" بیس الله کی مدد آن بینی اور فتح نصیب ہوئی اور تم نے دیکھ لیا کہ لوگ جوق در جوق دین اسلام میں داخل ہوئے۔"

روایات کے مطابق غزوہ تبوک کے لئے روانہ ہوتے وقت حضور نی کریم سے بھانے نے بہلی مرتبہ حضرت علی الرتھنی جائے نے کہا اور آپ ہمراہ نہیں رکھا اور آپ بالنی کو مدیدہ منورہ میں اہل بیت کی حفاظت کی ذمہ داری سونی گئی۔حضور نی کریم سے بھانے اللہ یہ منورہ سے لئکر لے کر نکلے سے کہ منافقوں نے باتیں کرنی شروع کردیں حضور نی کریم سے بھانے اس لئے آپ جائے ہے کہ منافقوں نے باتیں کرنی شروع کردیں حضور نی کریم سے بھانے اس لئے آپ جائے ہے کہ انہیں آپ جائے ہے کہ منافقوں نے کے کہ انہیں آپ جائے ہے کہ انہیں موضع شرف بنے اور صورتھال سے آگاہ کیا۔حضور نی کریم سے بھائے انے فرایا۔

"اے علی (طالبنو) ایمات اس بات کو پہند نہیں کرتے کہ تہارا مقام میرے نزدیک ایسا ہو جیسے ہارون علیائل کا مولی علیائل مقام میرے نزدیک ایسا ہو جیسے ہارون علیائل کا مولی علیائل یع میں کے نزدیک تھا اور قرق صرف اتنا ہے ہارون علیائل پیغیر تھے جبکہ میرے بعد کوئی نی نہیں ہے۔"

O.....O.....O



تبلیغ اسلام کے لئے بمن روائلی

فتح مکہ کے بعد ۸ مد میں حضور نبی کریم میں خفرت علی المرتضی مرات نئی المرتضی مرات نئی المرتضی مرات نئی المرتضی مرات نئی کو ملک یمن روانہ کیا تا کہ وہ وہاں دین اسلام کی تبلیغ کرسکیں۔آپ بڑا تھی ہے یمن اسلام کی تبلیغ کا کام اس مؤثر انداز میں کیا کہ یمن کا سب سے برا قبیلہ ہمدان وائرہ اسلام میں واغل ہوگیا۔

ام میں حضور نی کریم مضور ایک مرتبہ پھر حضرت علی المرتضی والنظ کو تین سوسواروں کے ہمراہ ملک یمن روانہ کیا۔ اس مہم میں روائی کے وقت حضور نی کریم مضور نی کریم مضور نی کریم مضور نی آپ والنظ کو اپنے دست مبارک سے عمامہ با ندھا اور سیاہ علم آپ والنظ کے سرد کیا۔ آپ والنظ نے عرض کیا۔

حضور نبی کریم منطق کیئے خضرت علی المرتضی مٹائٹنڈ کے سینہ مبارک پر ہاتھ رکھا اور دعا فرمائی۔

"البی! علی (ملائن) کے سینہ کو کشادہ فرما دے اس کی زبان کو راست کو بنا دے اور اس کے دل کو نور ہدایت سے منور فرما



"-<u>-</u>-.

حضرت علی المرتضلی طالق ملک یمن روانہ ہوئے اور لوگوں کو دعوت من دی جس کو اہل کی المرتضلی طالق ملک یمن روانہ ہوئے اور لوگوں کو دعوت حق دی جس کو اہل یمن نے قبول کیا اور آپ طالق کے تبلیغی کا وشوں سے بے شار لوگ دائر ہ اسلام میں واخل ہوئے۔

ملک یمن میں مذج کے مقام پر حضرت علی المرتضی و اللی کا مقابلہ ایک قبیلے ہے ہوا جس نے آپ و النیز کی دعوت کو قبول کرنے ہے انکار کر دیا اور جنگ پر آمادہ ہو گئے۔ آپ و النیز نے اپنے تین سوسواروں کے مخصر لشکر کے ہمراہ ان کا و شک کرمقابلہ کیا جس کے بعدوہ میدان جنگ سے فرار ہو گئے۔

O....O.....O



نقيب اسملام

حضور نی کریم بین ایم ایم نیائی بنامی جانے سے سے قبل بھی حضرت الوبکر صبد این والی فائی کو امیر جی صبد این والی فائی کو امیر جی مقرر فر مایا گیا تھا۔ آپ والی فی امیر جی کے تمام فرائض ادا کے اور اسپنے ساتھیوں مقرر فر مایا گیا تھا۔ آپ والی فی امیر جی کے تمام فرائض ادا کے اور اسپنے ساتھیوں کے لھانے پینے اور سونے کا برابر انتظام کرتے رہے۔ آپ والی فی این دفقاء کو اس طریقے سے منظم کیا کہ دشمنان اسملام بھی تھے رہیں کہ مسلمان تعداد میں ان کی توقع سے بہت زیادہ ہیں۔

حضرت جاہر بن عبداللہ بڑائیڈ سے مروی ہے فرماتے ہیں جب ہم مقام مرت پر پہنچ تو حضرت ابو بکر صدیق بڑائیڈ نے ہمیں فیجر کی نماز کے لئے پکارا۔ اس دوران ہم نے اونٹن کے بلبانے کی آمازش ۔ آپ بڑائیڈ ہم سے فرمانے لگے کہ یہ

المناسبة على المنافظة كريسل المنافظة كريسل المنافظة كريسل المنافظة كريسل المنافظة كالمنافظة المنافظة المنافظة المنافظة المنافظة كالمنافظة المنافظة المنافظة كالمنافظة المنافظة كالمنافظة ك

حضور نی کریم مطابق کی اوفنی قصوی کی آواز ہے اور شاید حضور نی کریم مطابق خود تشریف لا کی مطابق کی اور شاید حضور نی کریم مطابق خود تشریف لا کے بول۔ اگر حضور نی کریم مطابق اللہ خود بول کے تو ہم حضور نی کریم مطابق اللہ کی افتداء میں نماز اوا کریں گے۔

حفرت جامر بن عبدالله وللفيئة فرمات بيل كدابهى حفرت ابو برصديق وللفيئة كاكلام جارى تقاكداس دوران حفرت على المرتفى والفيئة تشريف لائد آب والفيئة كاكلام جارى تقاكداس دوران حفرت على المرتفى والفيئة تشريف لائد آب والفيئة في حيار الفيئة في المرتفى والفيئة في حيار المرتفى والفيئة المرتفى والمرتبطي المرتفى والفيئة المرتفى والمرتبطي المرتفى والفيئة والمرتبط المرتفى والمرتبط والمرتب

"ا اے علی (دلائنو) ؟ کیے آئے ہو کیا قاصد بن کر آئے ہو یا قائد بن کر؟"

حضرت جابر بن عبدالله دلائن فرماتے ہیں جب ہم مکہ مرمہ بہنچ اور خانہ
کعبہ کا طواف کر چکے تو حضرت ابو بکر صدیق دلائن نے ہمیں مناسک جج کی تعلیم
دی۔ اس کے بعد حضرت علی المرتضلی بڑٹائن نے سور کا قوبہ کی تلاوت فرمائی اور اعلان
کیا اب کوئی بھی مشرک خانہ کعبہ میں داخل نہ ہوگا، کوئی شخص بر منہ خانہ کعبہ کا طواف
نہ کرے گا۔

حضرت جابر بن عبدالله والنائد والنفيظ فرماتے ہیں پھرعرفہ کے دن حضرت ابو بکر صدیق والنفظ نے جج کا خطبہ دیا تو حضرت علی المرتضلی والنفظ نے سور و تو ہہ کی ایک

المنت على المراق المن المانية كر فيصل المنافقة كر فيصل المنافقة كر فيصل المنافقة كر فيصل المنافقة المنافقة كر فيصل المنافقة المنافقة كر فيصل المنافقة المنافقة كر فيصل المنافقة المنافقة كر في المنافقة المنافقة كر في ا

مرتبہ پھر تلاوت فرمائی۔ پھر جب حضرت ابو بکر صدیق طائنے نے لوگوں کو قربانی کا حکم دیا تو قربانی کے بعد حضرت علی المرتضی طائنے نے پھر سورہ تو بہ کی تلاوت کی اور پھر جب حضرت ابو بکر صدیق طائنے نے سعی کا طریقہ بتایا اور سعی کرنے کا حکم دیا تو حضرت ابو بکر صدیق طائنے نے سعی کے بعد پھر سورہ تو بہ کی تلاوت فرمائی۔ بول حضرت علی المرتضی طائنے نے حضور نبی کریم مضریق کے بعد پھر سورہ تو بہ کی تلاوت فرمائی۔ بول حضور کی مضور نبی کریم مضریق کے فرمان کے مطابق جار مرتبہ سورہ تو بہ کی تلاوت فرمائی۔

حضور نبی کریم مضرکت الو بکرصد بن وظاهند کو امیر جج مقرر فرمایا جبکه حضرت الو بکرصد بن وظاهند کو امیر جج مقرر فرمایا جبکه حضرت علی الرتضلی وظاهند کو نقیب اسلام مقرر فرمایا اور حضرت سعد بن الی وقاص، حضرت جابر بن عبدالله اور حضرت الو جریره وی تشیم کومعلم بنایا اور جهنرت الو بکرصد بن وظاهند کو این جانب سے قربانی کے لئے بیس اون بھی ویئے۔

O....O....O



ججة الوداع ميں شموليت

روایات میں آتا ہے کہ ملک یمن کے کامیاب سفر کے بعد حضرت علی المرتفئی دالینے میں آپ دالینے کو خبر علی المرتفئی دالینے میں آپ دالینے کو خبر علی کہ حضور نبی کریم مضافی آپ دالینے ہیں۔ کہ حضور نبی کریم مضافی آپ جانب عازم سند کی غرض سے مکہ مکرمہ تشریف لے گئے ہیں۔ آپ دالینے اس خبر کے ملتے ہی مکہ مکرمہ کی جانب عازم سفر ہوئے اور منزل برمنزل سنرکرتے مکہ مکرمہ پہنچے۔ جب آپ دالینے کہ مکرمہ کی حدود میں داخل ہونے لگو تو احرام باندھ لیا۔ پھر آپ دالینے ،حضور نبی کریم دینے بینے کی خدمت میں حاضر ہوئے اور اپنے کی تفصیلات بیان کیں۔حضور نبی کریم دور نبیان کبیر کریم دور نبید کریں دور نبید کری دور نبید کری دور نبید کریم دور ن

المناسبة على المنافع ا

حضور نبی کریم مضطح قیا نے فرمایا تم فکر نہ کرو اور پھر حضور نبی کریم مضطح قیا تہ نے حضرت علی الرتضلی و النین کو اپنی قربانی کے جانوروں میں شریک فرمالیا۔ آپ و النین کے حانوروں میں شریک فرمالیا۔ آپ و النین کے ساتھ جج کی سعادت حاصل کی اور یہ آخری جج میں نین کریم مضطح کی اور یہ آخری جج ہے جو حضور نبی کریم مضطح کی خابری حیات میں کیا ای لئے اس جج کو تاریخ میں جہ الوداع کے نام سے یاد کیا جاتا ہے۔

O....O....O



مدنی زندگی کے اہم واقعات

حضرت علی المرتضی و الفی المرتضی و الفی المرتضی و المرتضی المرتضی المرتضی المرتضی المرتضی المرتضی المرتضی المرتضی المرتضی المرتبی المر

الله عزوجل كا وعده:

المنت كالمستفى فالتوكي في المالي المالي

ا کیشخص آیا اس کے بیاس ایک اونٹ تھا اور وہ اس اونٹ کوفر وخت کرتا حیابتا تھا۔ آب بنی تن نے اس شخص ہے کہا وہ یہ اونٹ کتنے میں بیجنا جا ہتا ہے؟ اس شخص نے کہا میں اے ایک سوحیالیس درہم میں فروخت کروں گا۔ آپ بنائیڈ نے فرمایا اس اونٹ کو ادھر باندھ دیے مگر ایک شرط پر کہ میں اس کی قیمت بچھ دہر میں ادا کروں گا۔اس مخص نے رضامندی ظاہر کر دی اور اونٹ باندھ کر چلا گیا۔آب رہائن اجی کھڑے ہی تھے کہ ایک اور شخص آیا اور اس نے آپ بڑاٹنڈ سے دریافت کیا بیاونث كس كا ہے؟ آپ رنائنوز نے فرمایا بداونٹ میرا ہے۔اس شخص نے كہا كيا آپ رنائنوز كااراده است يجيز كاب السين المنظر في فرمايا بال-ال مخص في قيت يوجي تو آب طالفوا في اسے اونث كى قيت دوسو درجم بتائى۔اس آدى نے دوسو درجم دے كروه اونث كليا يجهدر بعدوه مخص آياجس سے آب طالفظ نے اونث ليا تھا۔ آب بنالفذ نے اسے ایک سو جالیس درہم دیئے اور ساٹھ درہم لے کرحضرت سیدہ فاطمد الزمرا ذالغناك ياس آئے اور انبيس وہ ساٹھ درہم دے ديئے۔حصرت سيدہ فاطمه الزبرا والنافظ في يوجها بدكهال سير آئي؟ آب والنفظ في فرمايا بدوه بين جس كا الله عزوجل نے وعدہ كيا ہے اور ہم نے حضور نبي كريم يضيّع اللہ سنا ہے كه جوالله عزوجل کی راہ میں ایک خرج کرے گا اے دی ملیں کے چنانچہ میں نے اس سائل کو چھ درہم دیئے اور اللہ عزوجل نے مجھے ان کے عوض ساٹھ ورہم وے دیئے۔

سورج واپس لوٹ آیا: غزوہ خیبر ہے واپس پر مقام صہبا پر حضور نبی کریم مضاعیۃ نے حضرت علی

المرتضى ولائنوز كى گود ميس سرركها اورسو گئے يبال تک كه سورج غروب ہو گيا۔ آب المرتضى ولائنوز كى تور بين اور ميں اور سو گئے يبال تک كه سورج غروب ہو گيا۔ آب ولائنوز نے عصر كى نماز ادانہيں فرمائى تھى اس لئے آپ ولائنوز بريشان تھے۔ حضور نبی

الناسة عمل المالية المناع المالية الما

کریم سے بیٹنے کی آنکھ کھلی تو حضور نبی کریم سے بیٹی کی آپ رظائنے کو پر بیٹان دیکھ کر اس پر بیٹانی کی وجہ دریافت کی تو آپ رظائنے نے بتایا کہ میری عصر کی نماز فوت ہوگئ اس پر بیٹانی کی وجہ دریافت کی تو آپ رظائنے نے بتایا کہ میری عصر کی نماز فوت ہوگئ ہے۔ حضور نبی کریم میں ہے۔ حضور نبی کریم میں ہیں اللہ عز وجل کے حضور دعا کی اور سورج بلیث آیا اور آپ رظائنے نے نماز عصر اوا قرمائی۔

سخشش وعطا كامعامله:

حضور نبی کریم مضاعیة بنانے ایک شخص کو تھجوروں کے لدے ہوئے اونٹ ویئے۔ال مخص نے عرض کیا یارسول اللہ منتے پہلا آپ منتی پیلا کے بعد ہمارے ساتھ ا یک ہخشش وعطا کون کرے گا؟ حضور نبی کریم ہے پہانے فرمایا ابو بکر (مالانا)۔ اس متخص نے حضرت علی المرتضى بنائفی سے اس بات كا ذكر كيا۔ حضرت علی المرتضى بنائفیز نے فرمایاتم حضور نبی کریم منظیم سے یوجیھو منرت ابو بکرصدیق بنائن کے بعد الیم بخشش وعطا كامعامله كون كرے گا؟ اس شخص نے حضور نبی كريم مطفي يہين كى خدمت میں حاضر ہوکر دریافت کیا تو حضور نبی کریم منتی کیا نے فرمایا عمر (مین میز)۔اس شخص نے حضرت علی المرتضی منالفند کو حضور نبی کریم منطفیقیا کے جواب کے متعلق بتایا۔ حضرت على المرتضى ولالنيز نے فرمایاتم حضور نبي كريم مين وين اسے يو چھوان كے بعد بخشق وعطا كا معامله كس كے سپر د ہو گا؟ اس شخص نے حضور نبي كريم مشينية كى خدمت میں حاضر ہوکر دریافت کیا۔حضور نی کریم مضاعظاتے فرمایا ان کے بعد بدمعاملہ عثمان (والنفظ) كے سيرو ہو گا۔ اس مخص نے جب حضرت على المرتضى والنفظ كو بيه بات بتائی تو آپ دلائن نے اے دوبارہ کھے نہا۔

تيري رقم كاضامن كون موكا؟:

روایات میں آتا ہے ایک اعرابی مدیند منورہ آیا اور اس کے پاس اس

المناسرة على المالية ا

وفت چند تکواری تھیں جنہیں وہ مدینہ منورہ میں فروخت کرنے کا ارادہ رکھتا تھا۔ اس کی ملاقات حضور نبی کریم مین کیا ہے ہوئی اور حضور نبی کریم مین کیٹنے کو وہ مکواریں بیند آسکیں اور حضور نبی کریم منتظ ویتا نے وہ ملواریں اس سے لے کیں اور رقم کی ادا کیکی کے لئے چند دنوں کی مہلت طلب کی۔وہ اعرابی واپس نوٹا تو اس کی ملاقات حضرت على المرتضى طالفيد سے ہوئی۔ اس اعرابی نے حضرت علی المرتضى طالفید سے اس بات كا ذكر كيا-حضرت على المرتضى طالنظ في الساعراني سے كہاتم في حضور نبي كريم منظ اللها عند بات نبين يوجهي كداكران كرساته بجه معامله بيش آجائة پھر تہمیں ان تکواروں کی قیت کون ادا کرے گا؟ اس اعرابی نے تفی میں سر بلا دیا اور پھر کہا میں ابھی حضور نبی کریم مضر کھا ہے اس کے متعلق دریافت کرتا ہوں۔ پھر وه اعرابی ،حضور نبی کریم منظر بینا کی خدمت میں حاضر ہوا اور بوچھا کہ اگر آپ منظر کینا كے ساتھ كچھ معاملہ بيش آ جائے تو مجھے رقم كى ادائيكى كون كرے گا؟ حضور نبى كريم يضيئين نے فرمايا اگر ميرے ساتھ بچھ معاملہ پيش آيا تو تنہيں رقم ابو بكر (طالفنز) ادا کریں گے اور وہ میرا دعدہ بورا کریں گے۔اس اعرابی نے جا کرحضرت علی المرتضلی طلطنظ سے اس کا ذکر کیا۔حضرت علی الرتضلی طائنٹ نے فرمایاتم نے بیٹیس پوچھا کہ اگر ابو بكر صديق طالفيز كے ساتھ بجھ معاملہ بيش آجائے تو پھر رقم كون اداكرے كا؟ اس اعرابی نے تفی میں سر ہلا دیا اور پھر حضور نبی کریم مضارقة کی خدمت میں جا کر پوچھا اگر حضرت ابو بکر صدیق الٹنٹؤ کے ساتھ کچھ معاملہ پیش آجائے تو پھر مجھے رقم كون ادا كرے گا؟ حضور ني كريم مطاع تنازية نے فرمايا تمهيں رقم عمر (مالفنو) ادا كريں کے اور وہ میرا وعدہ بورا کریں کے۔ اس اعرابی نے حضرت علی الرتضى منافظ کے یاں جا کرحضور نبی کریم مضر کھنے الے جواب سے آگاہ کیا۔ حضرت علی الرفضی طالفتہ

الانتسنة على المنافئة كرفيعل المنافظة ا

نے فرمایا کیا تم نے یہ بوچھا کہ حضرت عمر فاروق وٹائٹیڈ کے ساتھ اگر کچھ معاملہ بیش آگیا تو پھر تہمیں یہ رقم کون ادا کرے گا؟ اس اعرابی نے نفی میں سر ہلا دیا اور پھر دوبارہ حضور نبی کریم مضطح اُن فرمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا اگر حضرت عمر فاروق وابارہ حضور نبی کریم مضطح بیش آگیا تو میری رقم کا ضامن کون ہوگا؟ حضور نبی کریم مضح بھے معاملہ بیش آگیا تو میری رقم کا ضامن کون ہوگا؟ حضور نبی کریم مضح بھے بین ونوں کے ساتھ ایسا معاملہ ہوگا اس وقت تک تجھے بھی موت آپھی ہوگی۔

دلائل النبوة میں منقول ہے حضرت عبداللہ بن عباس خلفظنا ہے مروی ہے فرمات بین حصرت علی الرتضلی والنیزونے مجھے سے فرمایا جب الله عزوجل نے حضور نی کریم مشیری کو کھم دیا کہ وہ قبائل عرب کو دین کی تبلیغ کریں تو ایک دن حضور نبی كريم مطفة ينتخ نكلے اور ميں اور حضرت ابد بكر صديق طالنون بھي اس وفت حضور نبي كريم آ مے برده کرسلام کیا اور حضرت ابو بکرصدیق بڑالٹنے خیر میں سبقت لے جانے والے اور ماہرانساب منے۔حضرت ابو بحرصدیق دلائنؤ نے ان سے یو چھاتمہاراتعلق کس قبیلہ سے ہے؟ وہ بولے بی رہید ہے۔آب طالفن نے یوجھاتم بی رہید کی کس شاخ سے تعلق رکھتے ہو یعنی ان کے سی او نیے قبیلہ سے ہویا پھر نیلے قبیلہ سے تعلق ہے؟ وہ بولے ہماراتعلق اونچے طبقہ سے ہے۔ آپ طالفنا نے بوجھا کس او نچے طبقہ سے ہے؟ وہ بولے ذہل اکبر ہے۔ آپ مالٹنٹ نے پوچھا کیاعوف بن محلم تم سے تھا جس کے متعلق مشہور ہے عوف کی وادی میں گرمی ہیں ہے؟ وہ بولے ہیں۔ آپ دالفن نے یو چھا کیا شریف انفس مزدلف تم میں سے تھا جس کی موجود گی میں

المناسر على المستفى المائيز كرفيعلى المستفى المائيز كرفيعلى المستفى المائيز كرفيعلى

کوئی منامہ نہ باندھتا تھا؟ وہ بولے نہیں۔ آپ رٹی تھیٰ نے بوچھا کیا بسطام بن قیس تم میں سے تھا جو دیباتوں کا مالک اور تمام قبائل کا منتبا تھا؟ انہوں نے کہانہیں۔ آپ رٹی تیٰ نے بوچھا جہاس بن مرہ تم سے تعلق رکھتا تھا جواپی چیزوں کی اور ہمسایہ کی چیزوں کی حفاظت کرنے والا تھا؟ وہ بولے نہیں۔ آپ رٹی تی نے بوچھا تو بھر کیا حوفزان تم سے تھا جس نے بادشاہوں سے جنگ کی اور انہیں قبل کیا؟ وہ بولے ہر گرنہیں۔ آپ رٹی تی نوچھا تو کیا تم کندی بادشاہ کے نتھیالی ہو؟ وہ بولے نہیں۔ آپ رٹی تی نوچھا کیا تم محمی بادشاہ کے سسرالی ہو؟ وہ بولے نہیں۔ آپ رٹی تی تی اور انہیں۔ آپ رٹی تی تی تا کہ رہیں۔ آپ رٹی تی تو تھا کیا تم محمی بادشاہ کے سسرالی ہو؟ وہ بولے نہیں۔ آپ رٹی تی تا کہ دہل اکبرنہیں بلکہ ذہل اصغر ہو۔

الانتست عمل المستفى الأنتورك فيصل المستفى المنتورك فيصل المستفى المنتورك فيصل المستفى المنتورك المنتور

نوجوان بولا کیاتم ان میں سے ہو جولوگوں پر بے پناہ احسانات کرتے ہیں؟ آپ طالغیز نے فرمایا نہیں۔ اس نوجوان نے بوچھا تو پھر کیاتم اہل تدوہ سے ہو؟ آپ طالغیز نے فرمایا نہیں۔ وہ نوجوان بولا تو پھر کیا اہل حجابہ سے آپ شائیز کا تعلق ہے؟ ایس طالغیز نے فرمایا نہیں۔

حضرت عبداللہ بن عباس والخینا فرماتے ہیں حضرت علی الرتضی والنین نے فرمایا پھر حضرت ابوبکر صدیق والنین نے اپنی اوٹنی کی مہار موڑی اور حضور نبی کریم بین کی جانب واپس لوٹ آئے۔ اس پر وہ نوجوان بولا سیلاب کے مقابلہ میں سیا بیا آگیا اور وہ بھی اسے چیر کراور بھی نے کرنکل جاتا ہے۔ حضور نبی کریم سیلیت کیا اور وہ بھی اسے چیر کراور بھی نے کرنکل جاتا ہے۔ حضور نبی کریم سیلیت نے اس نوجوان کی بات نی تو تعبیم فرمایا۔ میں نے عرض کیا اے ابو بکر (والنین)!

آب والنین تو اس جوان کے ہاتھوں مصیبت میں جتلا ہو گئے؟ آپ والنین نے فرمایا علی (والنین)! تم درست کہتے ہو ہر بہاڑ سے اونچا ایک بہاڑ ہوتا ہے اور مصیبت علی (والنین)! تم درست کہتے ہو ہر بہاڑ سے اونچا ایک بہاڑ ہوتا ہے اور مصیبت اس وقت آتی ہے جب زبان کھلتی ہے۔

حضرت عمر فاروق وللغيز كي مشكل آسان كرنا:

حضرت عبداللہ بن مسعود ولی است مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم مطابقہ نے حضرت عمر فاروق ولی نی کو سرقات کی وصولی کے لئے بھیجا۔ آپ والی نی صدقات کی وصولی کے لئے بھیجا۔ آپ ولی نی صدقات کی وصولی کے لئے روانہ ہوئے تو پہلے شخص حضرت سیّدنا عباس ولی نی مسیّدنا عباس ولی نی مسیّدنا آپ ولی نی وصولی کے لئے روانہ ہوئے تو پہلے شخص حضرت سیّدنا آپ ولی نی نی نو قال ہے۔ حضرت سیّدنا عباس ولی نی نو قال ہے۔ حضرت سیّدنا عباس ولی نی نو قال ہوتا تو ہی تمہیں بتا دیتا۔ آپ ولی نی مرتبہ کہا اللہ کی تشم ! اگر اللہ اور اس کے رسول مطابح ہوتا تو ہی تمہیں بتا دیتا۔ آپ ولی نی مرتبہ کہا اللہ کی تشم ! اگر اللہ اور اس کے رسول مطابح بھے دیا گیا ہے۔ پھر آپ ولی نی مرتبہ بلند نہ ہوتا تو ہی اس پڑل کرتا جس کا تھم جمعے دیا گیا ہے۔ پھر آپ ولی نی مورت والی ہوتا تو ہی اس پڑل کرتا جس کا تھم جمعے دیا گیا ہے۔ پھر آپ ولی نی مورت والی ہوتا تو ہی اس پڑل کرتا جس کا تھم جمعے دیا گیا ہے۔ پھر آپ ولی نی اس پڑل کرتا جس کا تھم جمعے دیا گیا ہے۔ پھر آپ ولین ان مورت کی تاب ولین کی مورت کی تاب ولین کو مورت کی تاب کرتا ہوتا تو ہیں اس پڑل کرتا جس کا تھم جمعے دیا گیا ہے۔ پھر آپ ولین کو کی تاب کرتا ہوتا کو میں اس پڑل کرتا جس کا تھم جمعے دیا گیا ہے۔ پھر آپ ولی کی کرتا ہوتا کو میں اس پڑل کرتا جس کا تھم جمعے دیا گیا ہے۔ پھر آپ ولین کی دیا کہ کی کرتا ہوتا کو میا کرتا ہوتا کو میں اس پڑل کرتا جس کا تھم جمعے دیا گیا ہے۔ پھر آپ ولی کی کرتا ہوتا کو میں اس پڑل کرتا جس کا تاب کی کرتا ہوتا کو میں اس پڑل کرتا ہوتا کو میں کرتا ہوتا کو میا گیا ہوتا کو میں کرتا ہوتا کی کرتا ہوتا کی کرتا ہوتا کیا گیا گیا کہ کرتا ہوتا کو میں کرتا ہوتا کی کرتا ہوتا کرتا ہوتا کرتا ہوتا کرتا ہوتا کرتا ہوتا کرتا ہوتا کیا گیا ہوتا کرتا ہوتا کرتا ہوتا کرتا ہوتا کرتا ہوتا کرتا ہوتا کرتا ہوتا کیا گیا کرتا ہوتا کرت

المناسة عسالي المنافي الأفتار كيمل المنافية كيميل المنافية كيميل

علی الرتضی بڑائیڈ کے پاس گئے اور سارا ماجر انہیں بیان کیا۔ حضرت علی الرتضی بڑائیڈ کے آپ بڑائیڈ کے آپ بڑائیڈ کے اپ لے گئے۔ آپ بڑائیڈ کے اپ لے گئے۔ آپ بڑائیڈ کے باس لے گئے۔ آپ بڑائیڈ کے عرض کیا یارسول اللہ مطابقی آپ ایس بیٹھ کے جھے صدقات کی وصول کے لئے بھیجا بس مجھے پہلے خص جو طے وہ آپ مطابق آپ بھیجا ہے جھے حضرت سیّد تا عباس بڑائیڈ تھے انہوں نے مجھے سے الی بات کہی۔ حضور نبی کریم مطابق کے نفر مایا۔ انہوں نے مجھ سے الی بات کہی۔ حضور نبی کریم مطابق اور اس کا باپ انہوں نے مجھ سے الی بات کہی۔ حضور نبی کریم مطابق اور اس کا باپ انہوں نے بھی در دست کی دوشاخیس ہیں اب تم ان سے بھی نہ کہنا انہوں نے اپنی دوسال کی زکو ہے تم کروار کھی ہے۔''

O....O....O



حضورنبي كريم طفيظينه كاظامري وصال

ابوسعید بھائیڈ سے مروی ہے فرمائے ہیں کہ ایک دن حضور نی کریم مظافیۃ منبر پر تشریف فرما تھے آپ مطابقہ نے فرمایا اللہ عزوجل کا ایک بندہ ایسا ہے جے اللہ عزوجل نے اختیار دیا جا ہے دنیاوی دولت حاصل کرے چاہے اللہ عزوجل کے پاس رہنا پسند کریا۔ حضرت ابو بکر صدیق بھائیڈ نے جب آپ مطابقہ کی بات می تو رو پڑے اور جان گئے آپ مطابقہ کے وصال کا وقت آن پہنچا ہے۔ حضرت ابو بکر صدیق بھائیڈ نے روتے ہوئے موال کا وقت آن پہنچا ہے۔ حضرت ابو بکر صدیق بھائیڈ نے روتے ہوئے موال کا وقت آن پہنچا ہے۔ حضرت ابو بکر صدیق بھائیڈ نے روتے ہوئے خود حضور نبی کریم مطابقہ بھا پر قربان ہوں اس بندے سے مراد خود حضور نبی کریم مطابقہ بیں۔ آپ مطابقہ بین آپ مطابقہ بین کے اور وہ احسان مال کا بھی تھا اور آگر الوکوں سے زیادہ بھے پر ابو بکر (بھائیڈ) نے احسان کئے اور وہ احسان مال کا بھی تھا اور آگر میں اللہ عزوجل کے سواکسی کو اپنا دوست بنا تا تو یقینا ابو بکر (بڑائیڈ) کو بنا تا اور اب خلافہ کی ابو کر دو اسوائے خلات نہیں گر اسلامی اخوت قائم ہے اور مجد میں تمام درواز سے بند کر دو ماسوائے ابو بکر (بڑائیڈ) کے درواز سے کے درواز سے کے درواز سے کے درواز سے کی کے درواز سے کند کر دو ماسوائے ابو بکر (بڑائیڈ) کے درواز سے کر درواز سے کر درواز سے کے درواز سے کے درواز سے کر درواز سے کے درواز سے کر درواز سے کے درواز سے کر درواز سے کے درواز سے کر درواز سے کے درواز سے کر درواز سے کے درواز سے کے درواز سے کر درواز سے کے درواز سے کر درواز سے ک

حضرت عبداللہ بن عباس دائے ہیں ہے مروی ہے فرماتے ہیں جب سورہ نصر نازل ہوئی تو حضور نبی کریم مطابق ہیں جب سورہ نصر نازل ہوئی تو حضور نبی کریم مطابق ہے خصرت سیّدہ فاطمہ الزہراؤ اللّٰہ بُنا کو بلایا اور ان سے فرمایا مجھے میرے وصال کی خبر دے دی گئی ہے۔ یہ س کر حضرت سیّدہ فاطمہ

"اے لوگو! لوگ تعداد میں بردھ جائیں گے اور انصار کم ہو جائیں گے در انصار کم ہو جائیں گے در انصار کم انہوں جائیں گے بہاں تک کہانصار کھانے میں نمک کی مقدار برابر رہ جائیں گے جولوگوں کے امور میں سے کسی امر کا ولی ہواس کے المحار میں سے کسی امر کا ولی ہواس کے المحار میں سے بھلے لوگوں کے ساتھ اچھا کے المحار دری ہے کہان میں سے بھلے لوگوں کے ساتھ اچھا

الناسية على الماني والناز كالمسل

سلوک کرے اور ان کے خطا کاروں سے درگز رفر مائے۔'' حضرت عبدالله بن مسعود خلی شا سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ جمیں حسور نی کریم مصر الم المین المین وصال کی خبرایک روز قبل دی۔ ہم ام المونین حضرت عاکث صدیقہ ذال بنا کے جمرہ مبارک میں جمع ہوئے آپ سے بھائے انے ہماری جانب دیکھا تو آب مضاعينا كي أنكهول سے آنسو جاري ہو گئے۔ آب مضابق آ "الله تم لوگوں كوزنده ركھ اورتمہاري حفاظت فرمائے۔الله تم كوائي پناه ميں كے اور تمہاري مدد كرے اور تمہيں بلندي عطا فرمائے۔اللہ مہیں مدایت عطافرمائے اور تمہارے رزق کشادہ كرے۔الله تهبيس توفق وے اور تنهبين سيح سالم رکھے۔ ميں حمهمیں اللہ ہے ڈرنے کی وصیت کرتا ہوں اور تمہیں اللہ کے سپرد کرتا ہوں اور اسے تم پر خلیفہ متمرر کرتا ہوں جو تتہبیں کھلا ڈرانے والا ہوتا کہتم اللہ کے بندوں اور اللہ کے شہروں کے بارے میں اللہ پرزیادتی نہ کرنا ہے شک اللہ نے تہارے اور میرے متعلق فرمایا ہے کہ بیہ عالم آخرت ہم ان ہی لوگوں کے نئے خاص کرتے ہیں جو دنیا میں نہ برا بنتا جائے ہیں اور نہ فساد کھیلاتے ہیں اور پر ہیزگاروں کے لئے بہترین اجر ہے اور کیا تکبر کرنے والول کا ٹھکانہ دوزخ نہیں ہے۔ موت نزویک ہے اور اللہ کی طرف لوث کر جاتا ہے اور سدرۃ المنظمی کی طرف اور جنت الماوی کی جانب اور بورے پیالہ کی جانب اور رفیق اعلیٰ کی جانب لوث کر جانا ہے۔''

الناسية كالمستفى المثناك أليه المستفى المثناك المستفى المتناك المستفى المتناك المتناك

حصرت عبدالله بن مسعود ولله الله على الله عبي بم في عرض كى يارسول الله نزو كى مخص- ہم نے عرض كيا آپ مضيّعيّم كوكفن كون سا ديا جائے؟ آپ مضيّعيّم نے فرمایا میرے انہی کیڑوں سے یا مینی جاوروں میں سے یامصر کے سفید کیڑے میں سے۔ ہم نے عرض کیا آپ مضابیت کی تمانہ جنازہ کون پڑھائے گا؟ اور یہ کہد کر بم رو پڑے۔آپ مطاب الله فرمایا الله عزوجل تمہاری مغفرت فرمائے اورتم لوگ جب میرے سل سے فارغ ہو چکوتو مجھے میری جاریائی پرمیرے کمریس میری قبر کے پاس رکھنا اور تھوڑی دہر کے لئے گھرسے باہر چلے جانا اس لئے کہ سب سے يهلى ميرى نماز جنازه جرائل علياتها يرهيس تحيه پھر ميكائل علياتها، پھر اسراقيل غلیاتنام اور پھر ملک الموت مع اینے لشکر کے اس کے بعد تمام ملائکہ اور اللہ ان سب یرایی رحمت نازل فرمائے اور پھرتم جماعت در جماعت داخل ہونا اور مجھ پر درود و سلام پڑھنا اور كى رونے والى سے جھےكوئى تكليف ندوينا۔ ہم نے عرض كيا آب مِنْ وَقِيرِ مَهِ ارك مِن كون اتار _ كا؟ آب مِنْ وَيَا المراع مراكم مراكم مركول مع ملائکہ کے اور ملائکہ تمہیں و مکھ رہے ہوں کے اور تم انہیں نہیں و کھ سکو گے۔ روایات میں آتا ہے 1۸ صغر المظفر کوحضور نی کریم مضائلة جنت البقیع تشریف کے گئے اور جنت البقیع سے والیسی برآب مطابقة کی طبیعت ناساز ہوگئی۔ آب مضاعة إن تمام از واج مطهرات مثاقة سه اجازت الحرام الموثين حصرت عائشه صدیقہ ذالغنا کے جرو مبارک میں قیام کیا۔طبیعت کی خرابی کے باوجود آپ ير والماز موكى ت ماز يراهات رب جب طبيعت زياده ناساز موكى تو آب عين المعرت بلال صبى والني كوبلايا اورانبين علم ديا كه وه حضرت ابوبكر صديق

المناح الماليك الماليك

ر النائی سے نمازی امامت کے لئے کہیں۔ ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ والنائی فرماتی ہیں میں نے عرض کیا یارسول الله مضر کی ایار سول الله مضر کی ایار سول الله مضر کی آوازین نہ سکیں گے آپ مضر کی ہوجاتی ہے وہ جب قرائت کریں گے تو لوگ ان کی آوازین نہ سکیل گے آپ مضر کی مضر کے میں وہ امامت کریں۔ حضور نبی کریم مضر کی اسلامی امامت مرف ابو بکر (دالنائی) می کریں گے۔

ایک دن ظهر کے وقت حضور نبی کریم مطابقیۃ کی طبیعت قدرے سنبھلی تو ایک دن ظهر کے وقت حضور نبی کریم مطابقیۃ کی طبیعت قدرے سنبھلی تو ایک دی المقابی دی گفتہ کے ہمراہ معجد نبوی میں تشریف لائے۔ حضرت ابو بکر صدیق دلی المرت نماز ظهر کی امامت فرمار ہے تھے انہوں نے جب حضور نبی کریم مطابقیۃ کے قدموں کی آ ہٹ تن تو بیجھے ہنے گئے مرحضور نبی کریم مطابقیۃ نے اشارہ سے انہیں نماز جاری رکھنے کا تھم دیا۔ نماز کی ادائیگی کے بعد حضور نبی کریم مطابقیۃ نے اشارہ سے انہیں نماز جاری رکھنے کا تھم دیا۔ نماز کی ادائیگی کے بعد حضور نبی کریم مطابقیۃ نے صحابہ کرام دی گفتیۃ کو مخاطب کرام دی گفتیۃ کو مخاطب

"میرے بعد میری قبر کو بہود و نصاریٰ کی طرح سجانہ گاہ نہ بنا این اور میں تم کو انصار کے حق میں وصیت فرما تا بول کہ یہ لوگ میرے متعلق لوگ میرے متعلق الوگ میرے متعلق السیخ حقوق کو پورا کیا ہے اوران میں سے اچھا کام کرنے والول کوعزت کی نگاہ سے دیکھنا اور لغزش کرنے والوں سے ورگزر سے کام لینا جم ایک بندہ ایسا بھی ہے جس کے سامنے دنیا کو بیش کیا گیا گراس نے آخرت کو افتیار کیا۔"

حضرت ابو برصد بن دانت نے جب حضور نی کریم سے بیانے کی بات کی تو

آپ جنائی کی آنکھوں ہے آنسو جاری ہو گئے اور بجھ گئے کہ حضور نبی کریم مضافی کے اور بجھ گئے کہ حضور نبی کریم مضافی کا اثارہ ان کی جانب ہے۔ آپ جنائی نئے نئے عرض کیا یارسول اللہ مضافی کا میرے ماں باپ ، میری جان ، میرا مال سب بچھ آپ مضافی کی آپ مضافی کا بیر تربان ہو۔ حضور نبی کریم مضافی کا باپ ، میری جان ، میرا مال سب بچھ آپ مضافی کا بیر قربان ہو۔ حضور نبی کریم مضافی کا باپ نے فرمایا۔

''اے ابو بکر (شافیز)! تسلی رکھواور ابو بکر (شافیز) کے درواز ہے کے علاوہ مسجد کی جانب کھلنے والے تمام درواز ہے بند کر دواور کو علاوہ مسجد کی جانب کھلنے والے تمام درواز ہے بند کر دواور کوئی ایسانہیں سوائے ابو بکر (شافیز) کے جسے میں اپنا دوست رکھتا ہوں۔

" اے علی (ملائنز)! فلال کے چند درہم میرے ذمہ واجنب بیل جو میں الے تنظیر کے لئے اوھار لئے تنظیم بیل جو میں نے اسامہ دلائنز کے لئنگر کے لئے اوھار لئے تنظیم انہیں اوا کروینا۔

اے علی (دلینین) ایم آج کے بعد مجھ سے حوش کور پر ملو گے۔ میر سے بعد تم پر بے شار مصبتیں نازل ہوں گی تم ان مصائب کا صبر کے ساتھ مقابلہ کرنا اور جب تم دیکھو کہ لوگ دنیا کو اختیار کرنا پند کرتے ہیں تو تم آخرت کو اختیار کر لینا۔'' حضرت ابو بکر صدیق رائٹین نے بوقت وصال حضور نبی کریم مطابقاتا سے دریافت کیا یارسول مند مین بینی آپ سے انتخابی کا وصال کا وقت آن پہنچا ہے؟ آپ

النستة على المستونى الماتين كالمنافق المنافق ا

ﷺ نے فرمایا وصال بہت قریب ہے۔حضرت ابو بکرصدیق طالنیڈ نے عرض کیا جو اللہ کے باس ہے وہ آپ منظ کو مبارک ہو کاش ہمیں ہمارے انجام کی بھی کچھ خبر ہوتی؟ آپ منظور نے فرمایا سدرۃ المنتلی، جنت الماوی، فردوس اعلیٰ، شراب طہور سے بھرے ہوئے پیالے اور رفیق اعلیٰ کی جانب مبارک زندگی کی بشارت مور حصرت ابو بمرصديق من النيز في عرض كيا يارسول الله مصارية آب يضايين كونسل عرض کیا آپ منطق کی کو گفن کون سا دیا جائے؟ آپ منظ کی ان نے فرمایا میرے انہی كيروں سے اور يمنى لباس اور مصرى سفيد جاور سے -حضرت ابو بكر صديق طالند نے عرض کیا یارسول اللہ مضاعیم آپ مضاعیم کی نماز جنازہ کون برصائے گا؟ آپ مِنْ يَعْنِهُ نِهِ فَرِما يَا اللَّهُ تَهْمِينَ بَهُترين جِزا دے جب تم مجھے عسل دے چکواور کفن بیہنا چکوتو پھر مجھے میرے گھر میں میری قبر کے نزدیک جاریائی پر رکھ دینا اور پھر باہر نكل جانا۔ سب سے پہلے اللہ عزوجل درودوسلام پڑھے گا اور رحمتیں نازل فرما نے گا۔ پھر فرشتے آئیں کے اور مجھ پر درودوسلام پڑھیں گے۔اس کے بعدتم گروہ در گروه اندر داخل ہونا اور جھ پر درود دسلام پڑھنا۔تم لوگ رو کر مجھے تکلیف نہ ہے 'یانا۔ حضرت ابو بكر صديق والنفظ في عرض كيا يارسول الله يضايفًا آب يضايفًا كوقبر ميس كون اتارے كا؟ آپ مِنْ الله في الله في مايا كه مير الله

بخاری کی روایت ہے حضرت علی المرتضی والنین ،حضور نبی کری منظری کی بیانین کی بیانین کا بیانین کا بیانین کی مصروف رہے۔ ایک دن آپ والنین میں مصروف رہے۔ ایک دن آپ والنین حضور نبی کریم وفی ہے جمرہ مبارک سے باہرتشریف لائے تو لوگوں نے دریافت کیا حضور نبی کریم وفیل کی طبیعت کیسی ہے؟ آپ والنین نے فرمایا اب قدرے بہتر ہے۔ حضرت سیدنا کی طبیعت کیسی ہے؟ آپ والنین نے فرمایا اب قدرے بہتر ہے۔ حضرت سیدنا

الناسة على الله المن المان الم

عباس طالنفز نے جب آپ طالفنو کی بات سی تو فرمایا۔

''علی (طلق المنظر)! میں نے حضور نبی کریم مضطر اللہ عزوجل کی قتم کھا کر پرموت کے آٹار دیکھے ہیں اور میں اللہ عزوجل کی قتم کھا کر کہتا ہوں کہ بنوعبدالمطلب کے چبرے کی کیفیت موت کے وقت کیسی ہوتی ہے؟''

ام المومنين حضرت سيّده عائشه صديقه والنّخ أفرماتي بي كه حضور نبي كريم مِنْ وَيَلِمُ كَى طبیعت تاساز ہوئی تو آپ مِنْ وَالْمِ مَنْ وَالْمَ مَنْ الله الله الله وَكُم ازواج مطبرات وَالْمُنْ ك مشورہ سے میرے حجرہ میں قیام کیا۔ میں آپ مطابع کی تمارداری میں مصروف ر بی۔ ایک روز آپ منظ ویکا کا سرمبارک میرے کندھے پر تھا کہ آپ منظ کا سر مبارک میرے سرکی جانب مائل ہوا۔ میں نے گمان کیا کہ شاید کسی حاجت کا ارادہ ہو؟ اتی در میں آپ مضافی نا کے دہن مبارک سے لعاب مبارک کا ایک نطفہ نکلا اور میرے سینہ میں ہنگی کی مڑی کی مجرائی میں جا گراجس سے میرے جسم کی روسکتے كمرے ہو گئے۔ میں نے خیال كيا شايد آپ مطاع يائي بيا ہوئى طارى ہو كئى ہے۔ میں نے آپ مظامین کو جاور سے ڈھانی دیا۔ اس دوران حضرت عمر فاروق اور حضرت مغیرہ بن شعبہ بنی آئے ۔ انہوں نے اندر آنے کی اجازت طلب کی اور میں نے ان کو اندر بلا لیا اور بردہ تھینے لیا۔حضرت عمر فاروق بڑائنے نے جب آپ سطاع الله كا ب بوشى كود يكها تو كها كه كتنى سخت ب بوشى ب حضرت مغيره بن شعبه طالنيز كهن كلح حضور بى كريم مطابقيم كا وصال موكيا ہے۔ ميں نے كہا كه تم جھوث كتب موادر فتنه يميلانا جائب موب شك آپ منظانيا كا دصال اس وقت تك نه مو كا جب تك الله عزوجل منافقين كوخم نبيس كروے كا_ كير حضرت الو بكر صديق طالفنا

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی وزٹ کریں: www.iqbalkalmati.blogspot.com

المنت على المنافئة كرفيعلى المنافئة كرفيعلى المنافئة كرفيعلى المنافئة كرفيعلى المنافئة كالمنافئة كالمنافئة

تشریف لائے اور انہوں نے جب حضور نبی کریم مضور کی اور یکھا تو انا للہ وانا الیہ راجعون بڑھا اور حضور نبی کریم مضرکتی بیشانی کا بوسدلیا۔

ام المونین حضرت عائشه صدیقه وانفخهٔ فرماتی بین که جب حضور نبی کریم مضيئية كا وصال مواتو لوك التصم مو كئة اور رون كى آوازي بلند مون لكيس فرشتول نے آپ مضاعظم کو آپ مضاعظم کے گروں میں لپیٹ دیا۔ آپ مضاعظم کے وصال کے متعلق لوگوں میں اختلاف ہو گیا۔ بعض نے آپ یضا کھنے کی موت کو جھٹلا ویا، بعض کو سنگے ہو گئے اور طویل مدت کے بعد بولنا شروع کیا۔ بعض لوگوں کی حالت خلط ملط ہو گئی اور بے معنی ہاتیں کرنے سکے، بعض حواس باختہ ہو گئے اور بعض غم سے مذھال ہو گئے۔ حضرت عمر فاروق والنفظ ان لوگوں میں سے تھے جنہوں نے آپ مطابع کی موت کا انکار کر دیا تھا۔حضرت علی الرتضلی طابعہ عم سے ترهال ہوکر بیضنے والوں میں منصے اور حضرت عثمان غنی دلی نفذ ان لوگوں میں ہے ہے جو کو تنگے ہو کررہ گئے تھے۔حضرت عمر فاروق النفیز نے اپنی تکوار میان سے نکال لی اور اعلان کردیا کہ اگر کسی نے کہا کہ حضور نبی کریم مضفِظِیم کا وصال ہو گیا ہے تو میں اس كا سرقكم كر دول كا اور آپ مطفئ تياني معنرت موى عليبئل كى طرح جاليس ون كے لئے اپى توم سے بوشيدہ مو كئے بيں اور جاليس دن بعد آب سفايين بم ميں واليس آجائيس محيـ

ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ ذات فی بیں حضرت ابو بکر صدیق واللہ فی بیں حضرت ابو بکر صدیق دالتہ فی فی اللہ کا اطلاع ملی تو اس وقت آپ دالتہ فی عارث بن فرز ت کے اللہ علی اللہ اللہ علی تو اس وقت آپ دالتہ فی عارث بن فرز ت کے اس منظم اللہ فوراً آئے اور حضور نبی کریم منظم بی خدمت میں عاضر ہوئے ، حضور نبی کریم منظم بی جانب و یکھا ، پھر جھک کر بوسہ دیا اور فر مایا۔

الناسة على الماسين الم

''یارسول الله منظیمی ایس میرے مال باپ آپ منظیمی بر قربان
دول الله عزوجل آپ منظیمی کواب موت کا مزه نہیں چکھائے
کو الله کی قتم احضور نبی کریم منظیمی اوسال فرما گئے۔''
الله کی قتم احضور نبی کریم منظیمی اوسال فرما گئے۔''
ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ بی نجا فرماتی ہیں پھر حضرت ابو بحرصد ایق بی پھر حضرت ابو بحرصد ایق بین پھر حضرت ابو بحرصد این بین پھر حضرت ابو بحرصد این بین پاس با بر تشریف لائے اور فرمایا۔

''اے لوگو! جو محمد منظ وَ مِن عبادت كرتا تھا تو يا در كھ محمد منظ وَ مِنَا الله وصال فرما كئے ہيں اور جو محمد منظ وَ مِنْ الله عندان اللہ عندان منظم اللہ عندان منظم اللہ عندان منظم اللہ عندان اللہ

ومَا مُحَمَّدُ إِلَّا رَسُولٌ قَدُ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرَّسُلُ الْمُولُ الْمُولُ الْمُولُ الْمُولُ الْمُولُ الْمُولُ الْمُلِمِ الْمُولُ الْمُولُ الْمُولُ الْمُولُ الْمُولُ الْمُولُ الْمُولُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ ال

''اور محمہ منظ میں ہو ایک رسول ہیں ان سے پہلے بھی کی رسول ہو چکے تو کیا اگر وہ وصال فرما جا کیں یا شہید ہوجا کیں تو تم اللے پاؤں بھر جائے گا تو اللہ کا کچھ پاؤں بھر جائے گا تو اللہ کا کچھ نقصان نہ کرے گا اور اللہ جلد ہی اجر دے گاشکر گزاروں کو۔'' مضرت عبداللہ بن عباس ڈائٹ نی فرماتے ہیں جب حضرت ابو بکر

حضرت عبدالله بن عباس والفيئا فرماتے ہیں جب حضرت ابو بمر صدیق طالقہ نے یہ آیت مبارکہ تلاوت فرمائی تو معلوم ہوتا تھا کہ ہم میں سے کوئی پہلے اس آیت کو جانتا نہ تھا۔

الناسة على المالي فالنوك فيهل المالية المالية

حضرت علی المرتضی من المرتضی من المرتضی من المرتضی من المرتضی المرتضی المرتضی المرتضی المرتضی المرتضی المرتفی المرتفی

''اے گروہ مسلمان! ہرقوم اپنے جنازہ کی بہنسبت اپنے غیر کے زیادہ ستحق ہے میں تہمیں اللہ کی قتم دیتا ہوں اس لئے کہ تم اگر داخل ہو گے تو جن کاحق ہے تم ان کو آپ مینے تو جن کاحق ہے تم ان کو آپ مینے تو جن کاحق ہے تم ان کو آپ مینے تو جن کاحق ہے باس کو تی نہیں پاس سے ہٹاؤ گے۔ اللہ کی قتم! آپ مینے تو تی باس کو تی نہیں داخل ہوگا ما شوائے اس کے جس کو بلایا جائے۔'

حضرت على المرتضلي والنينة كاغم:

حضرت عبدالرحمان بن سعيد والنفية سے مردى ہے كہ ايك روز حضرت على المرتضى والنفية غرده چرے كے ساتھ تشريف لائے۔حسرت ابو بكر صديق والنفية نے كہا كہ جھے وہ دريافت كيا كہ س بات سے غمز دہ ہيں؟ حضرت على المرتضى والنفية نے كہا كہ جھے وہ پيش آيا جو ته ہيں ہيں آيا۔حضرت ابو بكر صديق والنفية نے حاضرين سے كہا۔ بيش آيا جو ته ہيں ہيں تہ ہيں اللہ كی قتم دے كر بوچھا است اللہ كی قتم دے كر بوچھا ہوں كہ كيا تم نے كى كود كھا ہے جس نے جمھ سے زيادہ حضور من كي كريم مطابق اللہ كی تم سے زيادہ حضور اللہ كی تم سے زيادہ حضور اللہ كی تم کے كہا ہو۔ "

O___O

المناسر على المنافع الماني المنافع الم

حیات رسول الله طفی این میں فقہی واجہ تادی فیصلے

حفرت علی الرتضای و التنائز کی زندگی کے وہ فیصلے جو حضور نبی کریم مضافیۃ کی حیات طاہری میں آپ و التنائز کے اور وہ فیصلے تاریخ میں سنہری خروف میں ورج میں ذیل میں آپ والتنائز کے اور وہ فیصلے تاریخ میں سنہری خروف میں ورج ہیں ذیل میں انہیں اختصار کے ساتھ بیان کیا جا رہا ہے تا کہ قار کین آپ والتنائز کی علمی وفقہی مرتبہ سے آگاہ ہوں۔

عمير (اللهنيز) كے دعوى امانت كے متعلق فيصله:

کتب سیر میں منقولی ہے جس رات حضور نی کریم مینے وَقَائِم نے مدید منورہ کی جانب ہجرت فرمائی حضرت علی المرتفئی رافئؤ کو اپنے بستر پر لٹایا اور فرمایا کہ تم صبح ہوتے ہی لوگوں کی امانتیں ان کولوٹا کر مدیند منورہ کی جانب ہجرت کرتا۔ آپ رفائؤ فرمانِ مصطفیٰ مینے وَقَائِم کے مطابق بستر نبوی مینے وَقَائِم لیٹ کے اور صبح ہوتے ہی آپ رفائؤ فرمانِ مصطفیٰ مینے وَقَائِم کے مطابق بستر نبوی مینے وَقَائِم لیٹ کے اور صبح ہوتے ہی آپ رفائٹو نے تمام لوگوں کو ان کی امانتیں واپس لوٹا ویں۔ اس دوران حظلہ بن ابی مفیان کے بہ کا دے پر عمیرین واکن ثقفی (والنوئو) نے آپ رفائٹو کے پاس آکر دوران حفالہ بن ابی مفیان کے بہ کا دے پر عمیرین واکن ثقفی (والنوئو) نے آپ رفائٹو کے پاس آک دوران حفالیا تو کھوایا میں نے حضور نبی کریم مینے وائٹو نے پاس اسی مشقال سونا بطور امانت رکھوایا تھا جمعے میرا سونا واپس کیا جائے۔ آپ رفائٹو نے عمیر (رفائٹو) سے نشانی طلب کی تو تھا جمعے میرا سونا واپس کیا جائے۔ آپ رفائٹو نے عمیر (رفائٹو) سے نشانی طلب کی تو

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن ہی وزٹ کریں: www.iqbalkalmati.blogspot.com

النست على النبي النبي النبي النبي المناسق المن

عمير (طلبينه) نے نشانی بتا دی۔ آپ طالفیز نے تمام امانتوں میں اس کی امانت تلاش کی مگر وہ نہ ملی۔ آپ مٹالٹنڈ نے عمیر (مٹالٹنڈ) سے فرمایاتم حجوث بولتے ہو۔عمیر (طِلْنَهُ ابنی ضد بر قائم رہے اور کہا میری گواہی قریش کے معززین دیں گے۔ آب رالنیز نے عمیر (رالنیز) سے فرمایا کہتم اینے گواہوں کو خانہ کعبہ میں طلب کرو اور پھر آپ بڑالٹنے؛ خود بھی خانہ کعبہ بہنچ گئے اور عمیر (بڑالٹنے؛) بھی اینے گواہوں کے ہمراہ خانہ کعبہ بینچ گیا۔ آپ رہائٹیز عمیر (رہائٹیز) کوعلیحدہ جگہ لے گئے اور ان سے يوجها انہوں نے اپن امانت كس وقت حضور نبي كريم مطاع اللے كسيرد كي تقي انہوں نے کہا فلال دن دوپہر کے وقت اور حضور نبی کریم مضایقاتی نے وہ امانت اپنے غلام كبيردكر دى تقى-آب والفؤ نے بھر عليحدى ميس عمير (والفؤ) كے كواہ ابوجهل كو طلب کیا اور اس سے اس امانت کے متعلق ہو جھا۔ ابوجہل نے گواہی و بنے سے الكاركرديا اوركها محصر بركوابى دينالازم نبيس-آب طالفيزين نے دوسرے كواہ ابوسفيان (والنفذ) كوطلب كيا اور ان سے يو جها كه عمير (رائاتند) نے ابن امانت كس وقت حضور نبی کریم مطابقة كے سيرد كی تھى؟ ابوسفيان (النائن ا) نے كہا عمير (النائن) نے ا بنی امانت فلال دن شام کے دفت حضور نبی کریم پر این کا کے سیرد کی تھی اور حضور نبی كريم مطفي فين السام اين ما ركوليا تقارات والني في العمير كالكار اور كواه حظلہ کو بلایا اور اس سے بوچھاعمیر (النفیز) نے اپنی امانت کس وفت حضور نبی کریم منظائلة کے سپرد کی تھی؟ منظلہ نے کہا عمیر (المالفیّا) نے عین دو پہر کے وقت اپنی یہ امانت حضور بی کریم مضر کے سیرد کی اور حضور نی کریم مضر کا اے اے اپ یاس ر کھ لیا۔ پھر آپ رالفن نے عمیر (دالفن) ایک اور گواہ عقبہ کو بلایا اور اس سے امانت کے متعلق دریافت کیا؟ عقبہ نے کہا کہ عمیر (الطفیٰ) نے بیرامانت عصر کے وقت

المنت توسل المنتان على المنتائي كي فيصل المنتان كي فيصل المنتان كي فيصل المنتان كي فيصل المنتان كي المنتان كي المنتان كي فيصل المنتان كي في منتان كي فيصل المنتان كي في منتان كي فيصل المنتان

حضور نبی کریم مضیری آنے سپردی تھی اور اسے اپنے گھر بھیج دیا تھا۔ آپ را تھا۔ آپ را تھا۔ آپ را تھا۔ آپ را تھا۔ عرمہ نے عمیر (دان کے گواہ عکر مہ کو بلایا اور اس سے امانت کے متعلق ہو چھا۔ عکر مہ نے کہا عمیر (دان نے یہ امانت طلوع آفاب کے وقت حضور نبی کریم مضیری آنے ہے کہا عمیر (دان نے یہ امانت طلوع آفاب کے وقت حضور نبی کریم مضیری آنے ہے سپردکی تھی اور حضور نبی کریم مضیری آنے اسے آپ را تھا کی والدہ فاطمہ را تھی بنت اسد کے یاس بھیج دیا تھا۔

حضرت علی الرتضی رئی تئی نے جب تمام گواہوں کے بیانات لے لئے تو
آپ رئی تین جان گئے کہ عمیر (رئی تین) کا دعوی جموث پر بنی ہے۔ عمیر (رئی تین) بھی
اپنی اصلیت ظاہر ہونے پر پشیمان تنے اور ان کے چبرے کا رنگ بدل چکا تھا۔
آپ رٹی تین اصلیت ظاہر ار رٹی تین سے فر مایا تم کیوں پر بیٹان ہورہ ہو؟ عمیر (رڈی تین)
نے کہا میرا دعوی جموٹا تھا اور میں خانہ کعبہ میں کھڑے ہو کر قتم کھا تا ہوں کہ میں
نے کہا میرا دعوی جموٹا تھا اور میں خانہ کعبہ میں کھڑے ہو کر قتم کھا تا ہوں کہ میں
نے حضور نبی کریم مطابق کے پاس کوئی امانت نبیس رکھوائی تھی اور جمھے اس کام کے
نے حضور نبی کریم مطابق کے پاس کوئی امانت نبیس رکھوائی تھی اور جمھے اس کام کے
نے حظلہ بن الی سفیان نے آمادہ کیا تھا اور جمھے لا کچ دی تھی۔ عمیر (رڈی تین) کی بات
سن کر معززین قریش کے سرشر مندگی سے جمک گئے۔

مؤرخین لکھتے ہیں اس داقعہ کے بعد عمیر (النائن اُ نے اسلام قبول کرلیا۔

يمن ميں ايک عجيب وغريب مقدمه كا فيصله:

منقول ہے کہ حضرت علی المرتضی والفؤ کو جب حضور نبی کریم مطابطانے نے

یمن بھیجا تو یمن میں آپ والفؤ کی عدالت میں ایک مجیب وغریب مقدمہ پیش

ہوا۔ ایک عورت نے ایک ماہ کے اندر نبین مختلف مردول کے ساتھ خلوت نشینی کی
اور پھر وہ عورت حاملہ ہوگئی اور نو ماہ بعداس عورت کے ہاں ایک لڑکا پیدا ہوا۔ اب
ان تینوں اشخاص نے یہ دعویٰ کیا کہ وہ اس لڑکے کے باپ ہیں۔ آپ والفؤ نے

النست على المناع المناع

ديت كي رقم كا فيصله:

منداحر میں منقول ہے ایک مرتبہ چندلوگوں نے ایک شرکو پھنسانے

کے لئے کواں کھودا اور شیر اس کو کیں میں گرگیا۔ پھران لوگوں میں سے چندا یک
دوسرے سے فداق کرتے ہوئے اسے کو کیں میں دھکیلنے گئے اور ان کے اس فداق
کے دوران ایک شخص واقعی اس کو کیں میں گر پڑا اور اور اس نے گرتے ہوئے ایک
اور شخص کے دامن کو پکڑ لیا۔ دوسر مے شخص نے بھی بدحوای میں تیسر مے شخص کا
دامن پکڑلیا اور تیسر مے شخص نے چوتھے شخص کا دامن پکڑلیا اور پھر چاروں شخص کی
اس کنو کیں میں گر پڑے۔ شیر نے ان چاروں شخص کو چیڑ پھاڑ ڈالا۔ ان چاروں اللہ اور پھر جارت کے مقتول کو مور و
اس کو کیں میں گر پڑے۔ شیر نے ان چاروں شخص کو چیڑ پھاڑ ڈالا۔ ان چاروں والی مور و
الزام تھہراتا تھا۔ پھر حضرت علی المرتضلی بڑائی کو اس واقعہ کا علم ہوا تو آپ بڑائی نے
الزام تھہراتا تھا۔ پھر حضرت علی المرتضلی بڑائی کو اس واقعہ کا علم ہوا تو آپ بڑائی نے
فرمایا ایک نبی میں چیئر کی موجودگی میں تمہارا یوں جھکڑنا اچھا نہیں ہے اور تم اپنا مقدمہ
عدالت نبوی میں چیئر بیس پیش کر سکتے ہو۔ ان لوگوں نے کہا آپ بڑائی ہوارے مابین

المناسبة عمل المنافعة كرفيه لما المنافعة المنافع

موجود ہیں آپ بڑائی ہی اس مقدمہ کا فیصلہ فرما دیں۔ آپ بڑائی نے فیصلہ دیا کہ جن لوگوں نے کنواں کھودا تھا ان کے قبائل سے ان مقتولین کے خون بہا کی رقم ہوں وصول کی جائے کہ ایک کو چوتھائی، ایک کو تہائی، ایک کو نصف اور ایک کو کمل رقم خون بہا دی جائے۔ آپ رٹائٹ کے اس فیصلہ پر وہ لوگ راضی نہ ہوئے اور انہوں نے یہ فیصلہ جمۃ الوداع کے موقع پر حضور نبی کریم مطابق کی بارگاہ میں چیش کیا۔ حضور نبی کریم مطابق کی بارگاہ میں چیش کیا۔ حضور نبی کریم مطابق ہوئے اسے برقر ار رکھا۔

نبی کریم مطابق نے آپ رٹائٹ کے فیصلہ کو سراجتے ہوئے اسے برقر ار رکھا۔
علی (مٹائٹ کے ایک کرسکتا:

بحار الانوار میں منقول ہے یمن میں قیام کے دوران حضرت علی الرتفنی و بھا گئے جائے ہیں گئے ہوئے کے خدمت میں ایک مقدمہ پیش کیا گیا کہ ایک شخص کے گھوڑے نے بھا گئے ہوئے کے ایک شخص کو داء نے گھوڑے ہوئے کے مالک کو پکڑ لیا اور اس سے خون بہا کا مطالبہ کرنے گئے۔ پھر جب جھڑا بردھا تو وہ لوگ اپنے مقدے کا فیصلہ کروانے کے لئے آپ رڈائٹیڈ کے پاس آئے۔آپ رڈائٹیڈ نے فرمایا گھوڑے کے مالک پر دیت کی رقم واجب نہیں ہے۔مقتول کے ورثاء رڈائٹیڈ نے فرمایا گھوڑے کے مالک پر دیت کی رقم واجب نہیں ہے۔مقتول کے ورثاء مطمئن نہ ہوئے اور انہوں نے حضور نبی کریم سے ایک کی خدمت میں حاضر ہو کر سے مقدمہ پیش کیا اور آپ رڈائٹیڈ کی شرکایت کی۔حضور نبی کریم سے ایک کی خدمت میں حاضر ہو کر سے مقدمہ پیش کیا اور آپ رڈائٹیڈ کی شرکایت کی۔حضور نبی کریم سے ایک نوایا۔ مقدمہ پیش کیا اور آپ رڈائٹیڈ کی شرکایت کی۔حضور نبی کریم سے فیصلہ ہے جوعلی دیا ہے۔''

مقتول کے در ثاء نے جب حضور نبی کر بھی مطابق کی بات سی تو کہنے لگے یا رسول اللہ مطابق الم آج میں اور جم حضرت علی المرتضی یارسول اللہ مطابق الم آج میں اور جم حضرت علی المرتضی مالینی کے فیصلے پر راضی بین اور جم حضرت علی المرتضی ملائی کے فیصلہ کوتناہم کرتے ہیں۔ ر

المسترع الله تفي فالنو كي فيصل المالية

نجران کے نصاری کے متعلق فیصلہ:

واه میں حضور نبی کریم مضافیاً نے عرب کے مختلف قبائل اور ہمسابیممالک کے سربراہان کو اسلام کی دعوت دیتے ہوئے مختلف خطوط ارسال کئے۔ ایسا ہی ایک خط حضور نبی کریم مضاعیات نے نجران کے نصاری کو بھی تحریر فرمایا جس کے جواب میں نصاریٰ کا ایک وفد حضور نبی کریم پہنے پیٹا ہے ملاقات کے لئے مدینہ منورہ حاضر ہوا۔ ان لوگوں نے سونے کی انگوشیاں بہن رکھی تھیں اور رکیٹمی لباس زیب تن کر رکھے تھے۔ بیالوگ جب اس حالت میں مسجد نبوی مشاعیقی مضور نبی کریم مشاعیق ے ملاقات کے لئے واخل ہوئے تو حضور نبی کریم مضر ان سے منہ موڑ لیا اوران کی کسی بات کا کوئی جواب نه دیا۔نصاریٰ کا بیدوفد مایوس ہوکرمسجد نبوی مطابقتا سے لکلاتو ان کی ملاقات حضرت عثمان غنی اور حضرت عبدالرحمٰن بن عوف رض النظم سے مولی _ وفد نے ان حضرات سے شکوہ کیا کہ آپ لوگ پہلے تو جمیں دعوت دیتے ہیں اور جب ہم حاضر ہوتے ہیں تو ہم ہے گفتگو کرنا پیند نہیں کرتے۔اس دوران حضرت على الرئضني طالنيز كا كرر ومال سے موا-حضرت عثان عنى طالفند نے آپ طالفند كو يكارا اور دريافت كيا آب اللفظ كى اس معاسل من كيارات به المنظ ال

"میری رائے تو بیہ ہے کہ ریالوگ اپنی سونے کی انگوٹھیاں اور ریشی کریم انگوٹھیاں اور ریشی کریم انگوٹھیاں اور ریشی کریم انظام اللہ استام ملیں۔"
ملیس۔"

چنانچہ نصاریٰ کے اس وفد نے رہیمی لباس تندیل کر کے ساوہ لباس زیب تن کیا اور اپنی سونے کی انگوٹھیاں بھی اتار دیں اور حضور نبی کریم بھنے کھیلام کی المناسر على المالي المالي

خدمت میں حاضر ہوئے تو حضور نبی کریم مضرکتا ہے ان کی جانب توجہ فر مائی اور ان کے سوالات کے جوابات بھی دیئے۔

محوروں کی تقسیم میں عدل:

حضرت ابوہریرہ رہائیں سے مروی ہے فرماتے ہیں ایک مرتبہ میں حضور نبی كريم يضيئية كى خدمت ميں حاضر ہوا اور اس وقت حضور نبي كريم مضيئة كے سامنے معجوری رکھی ہوئی تھیں۔ میں نے حضور نی کریم مطابقیۃ کوسلام کیا اور حضور نی كريم منظيكة في مير المام كاجواب دية بوئ اين دست اقدى س جھے محجوری عطافرمائیں۔ میں نے ان محجوروں کو گناتو وہ تبتر (۲۳) تھیں۔ پھر میں حضور نبی کریم مضاعیات کی خدمت سے رخصت ہوا اور حضرت علی الرتضلی والمنظ کے پاس میا اور ان کے سامنے بھی محبوریں رکھی ہوئی تھیں۔ میں نے حضرت علی الرتضى طالفظ كوسلام كيا اور انبول نے مير اسلام كا جواب ديا۔ پر حصرت على الرئضى والغيز نے مجھے محجوریں عطا قرمائیں۔ میں نے ان محجوروں کو گنا تو وہ یھی تہتر (۷۳) تھیں۔ میں دوبارہ حضور نبی کریم مطابقیًا کی خدمت میں حاضر ہوا اور تمام واقعه بیان کیا-حضور نبی کریم مضين تلاسند ميري بات س كرتبسم فرمايا اور فرمايا-'' کیاتم جانے نہیں میرا ہاتھ اور علی (مِنْائِنُوْ) کا ہاتھ عدل میں

O___O



تيسراباب:

خلافت صديق اكبر طالفيظ اورعلى المرتضلي طالفين

حضرت ابو بكرصد لق والنفيظ كى بيعت كا فيصله، دورصد يقى والنفيظ ميں اجتهادى وفقهى فيصله، حضرت سيّده فاطمه الزهرا والنفيظ كا وصال، حضرت ابو بكرصد ابن والنفيظ كا وصال

O....O....O



فدائی ہوں تو کس کا ہوں کوئی دیکھے میری قسمت قدم پر جس حسیس کی جان طلعت ناز کرتی ہے خدا کے فضل سے اختر میں ان کا نام لیوا ہوں میں ہوں قسمت بے نازاں قسمت مجھ پر ناز کرتی ہے



حضرت ابوبكرصد بق طلائد كي معرف المعرب كي معرب كي معرب كي فيصله

حضور نبی کریم بطاع آنہ کی تدفین ابھی عمل میں نہ آئی تھی کہ سقیفہ بنی ساعدہ میں انصار کا ایک اجتماع ہوا اور انصار کا بید دعویٰ تھا کہ وہ حضور نبی کریم سے بھینا کے جانشین ہیں۔ حضرت ابو بکر صدیق والتی کو اس کی خبر ہوئی تو آپ بڑا تھا نے حضرت ابو عبیدہ بن الجراح جی آئی کو ساتھ لیا اور سقیفہ بنی ساعدہ پہنچے۔ گفتگو کے دوران انصار نے مطالبہ کیا ایک امیر ہمارا ہوگا اور ایک تنہارا ہوگا۔ انصار کے اس مطالبہ کو قبول کرنے کا مطلب تھا اسلامی اخوت کو خود اپنے ہاتھوں انصار کے اس مطالبہ کو قبول کرنے کا مطلب تھا اسلامی اخوت کو خود اپنے ہاتھوں بی ختم کر دیا جائے اور اگر انصار کا مطالبہ مانتے ہوئے انہیں مند خلافت پر فائز کر انصار کی خلافت پر فائز کر انصار کی خلافت کو تشاہر ہوگا ہوگا۔ انصار کی خلافت کو تشاہر نہ کرتے ۔ اس کے علاوہ انصار کی جمی دوگروہ تھے بنی اوس موقف پر باہم انفاق نہ پایا جاتا تھا لبذا یہ امر محال اور بنی خزرج اور ان میں بھی اس مؤقف پر باہم انفاق نہ پایا جاتا تھا لبذا یہ امر محال اور بنی خزرج اور ان میں بھی اس مؤقف پر باہم انفاق نہ پایا جاتا تھا لبذا یہ امر محال اور بنی خزرج اور ان میں بھی اس مؤقف پر باہم انفاق نہ پایا جاتا تھا لبذا یہ امر محال اور بنی خزرج اور ان میں بھی اس مؤقف پر باہم انفاق نہ پایا جاتا تھا لبذا یہ امر محال تھا کہ انسار میں ہے کہ کو خلیفہ مقرر کیا جاتا۔

حضرت ابوبکرصد این منافظهٔ نے موقع کی نزاکت کو دیکھتے ہوئے فر مایا یہ جائز نہیں مسلمانوں کے ایک وفت میں دو امیر ہوں اس طرح سند ہے۔ نہ ا

بیدا ہو جائے گا اور امت مسلمہ کا اتحاد پارہ بارہ ہو جائے گا۔ اس سے فتنہ و فساد شروع ہو جائے گا۔ اس سے فتنہ و فساد شروع ہو جائے گا اور سنتیں ترک ہو جائیں گی۔ پھر آپ رظافی نے تجویز دی امراء مہاجرین جماعت میں سے ہوں گے اور وزراء انصار سے ہوں گے۔ اس موقع پر آپ رظافین سے ذیل کا تاریخی فطبہ بھی ارشاد فرمایا۔

''بہم تہارے نضائل و مناقب سے انکار نہیں کرتے گرقریش اور عرب کے دوسرے تمام قبائل بھی بھی تہاری خلافت کوتشلیم نہ کریں گے اور ویسے بھی مہاجرین نے حضور نبی کریم مطابقات کی دعوت پر سب سے پہلے لبیک کہا اور ان کا حضور نبی کریم مطابقات کی دعوت پر سب سے پہلے لبیک کہا اور ان کا حضور نبی کریم مطابقات بھی ہے اور یہاں اس محفل میں عمر (دائشنے) بھی موجود جیں تم ان میں بھی موجود جیں تم ان میں سے جس کے ہاتھ پر جا ہو بیعت کرلوتا کہ امت مسلمہ کا شیراز ہی جمر نے نہ یائے۔''

حضرت عمر فاروق والفيئون في جب حضرت ابو بكر صديق والفيئو كا خطبه سنا تو آئے برده كرا بنا ہاتھ آپ والفيئو كے ہاتھ ميں دے ديا اور كہا۔

"آپ را افرائن سے بہتر کوئی نہیں ہے اور آپ را افرائن ہارے سردار اور حضور نبی کریم مضح جانشین ہیں۔ حضور نبی کریم مضح جانشین ہیں۔ حضور نبی کریم مضح جانشین ہیں۔ حضور نبی کریم مضح جانشین کوعزیز رکھا اور آپ را النفظ کریم مضطح کی رائے کو تریز دکھا اور آپ را النفظ کی رائے کو تریز دی۔"

حضرت عمر فاروق والمنظورة عيدى حضرت ابو بكر مديق والنفو كى بيعت كى معترت ابو بكر مديق والنفو كى بيعت كى تمام محلوق آپ والنفو كى بيعت پر ثوث پڑى اور حضرت ابوعبيده بن الجراح والنفو كى تمام محلوق آپ والنفو كى بيعت پر ثوث پڑى اور حضرت ابوعبيده بن الجراح والنفو

الناسة على المان ا

کی بیعت کے بعد انصار نے بھی آپ طال کے دست اقدی پر بیعت کر لی۔ آپ النظار وہاں سے واپس لوٹے اور پھر حضور نبی کریم میش کی تدفین عمل میں آئی۔
حضرت سالم بن عبیدہ رشائنڈ سے مروی ہے کہ انصار کے کسی شخص نے کہا کہ ایک خلیفہ ہم میں سے ہواور ایک آپ میں سے؟ حضرت عمر فاروق رشائنڈ نے فرمایا۔

«'ایک میان میں دونگوارین ہیں رہ سکتیں۔''

بیعت میں تاخیر کی وجہ:

حضرت على الرتضلي طالفيد كى بيعت كمتعلق روايات مين آتا ہے آپ والتن نے حضرت ابو برصدیق والفید کی بیعت میں اس لئے تاخیر فرمائی کہ آپ طالنیز نے قتم کھا رکھی تھی کہ جب تک وہ قرآن یاک جمع نہیں کر لیتے اس وفت تک ا نماز کے سوامبھی اپنی جا در نہ اوڑھیں گے۔جس وفت آپ مٹائنڈ بیعت کے لئے حاضر ہوئے تو آپ والنظ نے اس موقع برحضرت ابو برصدیق والنظ کے فضائل کا المجمى ذكركيا جوكلام حضور في كريم مطيعة للمنافية في حضرت ابوبكر صديق طالفي كي بارے من فرمایا تھا۔آپ دلائن نے اس بات کا بھی برملا اقرار کیا کہ شروع میں ہم سمجھتے استے کہ خلافت ہو ہاشم کاحق ہے کیونکہ ہم حضور نبی کریم پنے پینے ابت دار ہونے كى وجه سے اسے اینا حق مجھتے تھے۔حضرت ابو بكرصديق طالفند نے جب آب طالفند كاكلام سناتوان كى أيميس نم ہوكئيں۔حضرت ابوبكرصديق والنفظ نے فر مايا۔ "اللَّهُ عزوجل كي تتم! مِن رسول الله يضيَّعَيِّمْ كَعُرْيرُ وا قارب كو اہے عزیز وا قارب سے بہتر جانتا ہول۔"

اب كلام ك بعد حصرت ابو برصديق والنيز اور حصرت على الرتضى والنيز

الانت المستنافي المانية كي فيصل المعلق المعل

کے درمیان غلط جنمی دور ہوگئ اور دونوں کے دل ایک دوسرے کے معاملے میں صاف ہو گئے۔

بیشتر مورخین نے حضرت علی المرتضلی مٹاٹنٹو کی جانب سے بیعت میں تاخیر کی ایک وجہ باغ فدک اور مسئلہ وراثت کوقرار دیا ہے۔

روایات میں آتا ہے حضور نبی کریم مضور ہے وصال کے بعد جب حضرت ابو بمرصدیق رائی رائی منصب خلافت پر فائز ہوئے تو حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا والتہ بنا ورحضرت سیدہ فاطمہ الزہرا وراثت کا مطالبہ والتہ بنا عباس رائی والتہ والتہ کا مطالبہ کیا۔ آپ رائی نے فرمایا۔

"میں نے حضور نی کریم مضافیۃ ہے سنا ہے انبیاء کرام باللہ کے مال میں وراثت نہیں ہوتی وہ جو کچھ چھوڑتے ہیں وہ صدقہ ہوتا ہے البتہ آل رسول مضافیۃ اس میں سے نفقہ لے سکتے ہیں۔ اللہ عز وجل کی شم ا بے شک حضور نبی کریم مضافیۃ کے رشتہ دار مجھے اپنے رشتہ داروں سے زیادہ عزیز ہیں مگر میں حضور نبی کریم مضافیۃ کے صدقہ میں کچھ بھی تبدیل نہیں کروں گا اور حضور نبی کریم مضافیۃ کے صدقہ میں کچھ بھی تبدیل نہیں کروں گا اور حضور نبی کریم مضافیۃ کے رشتہ داروں سے ایسے بی پیش آئ ک گا جس طرح حضور نبی کریم مضافیۃ ہے دشتہ داروں سے ایسے بی پیش آئ ک گا جس طرح حضور نبی کریم مضافیۃ ہے دشتہ داروں سے ایسے بی پیش آئ ک گا جس طرح حضور نبی کریم مضافیۃ ہے دشتہ داروں سے ایسے بی پیش آئ ک گا جس

حضرت علی المرتضی والفین کی جانب سے بیعت کی تاخیر کو کئی لوگوں نے غلط رنگ دینے کی کوئش کی اور حضرت ابو بکر صدیق والفین کو بھی ان کی جانب سے غلط رنگ دینے کی کوشش کی اور حضرت ابو بکر صدیق والفین نے اپنی برد باری غلط بہی میں مبتلا کرنے کی کوشش کی کیکن حضرت ابو بکر صدیق والفین نے اپنی برد باری اور تدبر کے ساتھ اس تمام معاللے کو خوش اسلونی سے طے کیا۔

المناسر على المراس المناع الماس المناع المناس المناع المنا

خلافت صديق طالعيد يرجه اعتراض نه تها:

حضرت ابو بمرصدیق و النفظ جب خلیفہ بے تو سیجھ لوگوں نے آپ والنفظ کی خلافت کے اہل نہیں تو آپ و النفظ نے ایس و النفظ کی خلافت کے اہل نہیں تو آپ و النفظ نے منصب خلافت کے اہل نہیں تو آپ و النفظ نے لوگوں کو مخاطب کرتے ہوئے فر مایا۔

"اے لوگو! اگر تمہیں بیا گمان ہے کہ میں نے خلافت سے تم ے اس لئے لی ہے کہ جھے اس میں رغبت ہے یا جھے تم پر پھھ فوتیت حاصل ہے توقتم ہے اس ذات کی جس کے قبضہ میں میری جان ہے میں نے خلافت کو خلافت کی طرف رغبت كرتے ہوئے ياتم پر ياكسى مسلمان پرتر جي حاصل كرنے كے لئے نہیں کی اور نہ مجھے بھی بھی رات اور دن میں اس کا لا کچ پیدا ہوا اور نہ ہی میں نے حصی کر اور نہ ہی اعلانیداللہ عزوجل سے اس کا سوال کیا اور بے شک میں نے ایک الی بروی بات کا قلادہ اپنی گردن میں ڈال لیا جس کی مجھ میں طاقت نہیں ہاں اگر اللہ عزوجل نے میری مدوفرمائے۔ میں اس بات کو ببندكرتا بول كربيك اصحاب رسول يضف كالم كل موجائ ال شرط پر کہ وہ اس ہے انصاف کرے پس میں پیرخلافت تم پر واپس کرتا ہوں اور آج ہے میں بھی تمہاری طرح ایک عام شخص ہوں۔''

حضرت ابو بکر صدیق والٹنؤ نے اس خطبہ کے بعد اپنے گھر کا دروازہ بند کرلیا۔ آپ والٹنؤ تمین دن تک مسلسل اپنے گھرے تکلتے اور بیہ کہہ کر واپس جلے

الناست على النبي المائية كرفيعلى المنافقة كرفيعلى المنافقة كرفيعلى المنافقة كالمنافقة كالمنافقة

عاتے میں نے تمہاری بیعت کو واپس کیا۔ اس دوران حضرت علی الرتضی طالفند کھڑے ہوجاتے اور فرماتے۔

"بلاشبہ اللہ اور اس کے رسول مضاعیق آب رظافی کو ہمیشہ مقدم رکھتے ہیں ہیں کون مقدم رکھتے ہیں ہیں کون مقدم رکھتے ہیں ہیں کون ہے جو آب رظافی کو مقدم سے ہٹائے "

حفرت زیدبن علی فرائ فہنا اپنے جد سے روایت کرتے ہیں کہ حفرت ابو بکر صدیق بڑا کہ حضرت ابو بکر صدیق بڑا فی فرائے فی اور خلافت کو واپس کیا تو حضرت علی الرفضی والفی کی فرے ہو کر کہا۔

"الله كى قتم! ہم اس بيعت كو ہر گز واپس نه كريں كے اور ہم جانتے ہيں حضور نبي كريم مطابق الله قائد كو ہم ميں سے ہرا يك پرمقدم ركھا ہے۔"

روایات میں آتا ہے کہ حضرت ابو بکر صدیق والفئ جب خلیفہ مقرر ہوئے تو حضرت ابوسفیان والفئی نے حضرت ابوسفیان والفئی المرتضلی والفئی والفئی والفئی کے پاس آکر کہا کہ تم لوگوں پر اس خلافت کے بارے میں قریش کا ایک جھوٹا گھر غلبہ پا گیا اللہ کی قتم! میں سواروں اور پیادوں کا ایک لئکر جمع کرسکتا ہوں۔ آپ والفئ نے نے فرمایا کہ تم پہلے بھی اسلام اور مسلمانوں کے دشمن رہے ہولیکن تنہاری وشنی جمیس کچھ نقصان نہ پہنچاسکی۔ بلاشہ ہم نے حضرت ابو بحرصد بی والفئ کواس منصب کا اہل پایا ہے۔

O___O

المستوع المسترف الماتين في الماتي

دورِ صد لفي طالتين ميں اجتهادی وفقهی فيصلے

حضرت ابوبکر صدیت رفائنو کے زمانہ میں مجلس شور کی کا قیام عمل میں نہ آیا تھا گر حضرت ابوبکر صدیت رفائنو کا طریقہ تھا کہ وہ کی بھی ابہم مسئلہ پر اکا برصحابہ کرام جن گفتی ہے مشاورت ضرور کرتے تھے۔حضرت علی الرتضی رفائنو کو دور صدیق رفائنو میں بھی ویسے ہی قدر کی نگاہ سے دیکھا جاتا تھا جیسا کہ حضور نبی کریم مضافیونہ کی فاہری حیات میں آپ رفائنو کی قدر کی جاتی تھی۔حضرت ابوبکر صدیق رفائنو کی فاہری حیات میں آپ رفائنو کی قدر کی جاتی تھی۔حضرت ابوبکر صدیق رفائنو کی فاہری حیات میں آپ رفائنو کی قدر کی جاتی تھی۔حضرت ابوبکر صدیق رفائنو کی مصوروں پر عمل کرتے تھے۔دور مدیقی رفائنو میں آپ رفائنو کی اور فقہی فیصلے کتب سیر کا حصہ ہیں۔ ذیل میں آپ رفائنو کی اور فقہی فیصلے کتب سیر کا حصہ ہیں۔ ذیل میں آپ رفائنو کے وہ اجتہادی اور فقہی فیصلے کتب سیر کا حصہ ہیں۔ ذیل میں آپ رفائنو کے وہ اجتہادی اور فقہی فیصلے کتب سیر کا حصہ ہیں۔ ذیل میں آپ رفائنو کے وہ اجتہادی اور فقہی مقام سے آگاہ ہوں۔ مصر سے آگاہ ہوں۔

حضرت البوبكر صديق والنفؤ منصب خلافت پر فائز ہونے كے بعد كى تتم كاكوئى وظيفه يا تنخواہ نہ ليتے تنے بلكہ خليفہ بننے سے قبل كپڑے كى تجارت كيا كرتے تنے اور خليفہ بننے كے بعد بھى اپنى گزر بسر كے لئے اى پیشے كواختیار كئے ركھا اور ایک دن آپ والنفؤ كپڑا كندھے پر اٹھائے مدينہ منورہ كے بازار میں جا رہے تنے كہ حضرت عمر فاروق اور حضرت ابوعبيدہ بن الجراح ولئ آئیز سے ملاقات ہوگئی۔ حضرت

المناسبة عمل المالية ا

عمر فاروق برنائی نے بوچھا آپ برنائی کہاں جارہے ہیں؟ آپ برنائی نے فرمایا میں بازار تجارت کے لئے جا رہا ہوں تا کہ اپنے اہل وعیال کے کھانے کا بندوبست کرسکوں۔حضرت عمر فاروق برنائی نے عرض کیا آپ برنائی مسلمانوں کے معاملات کے بھہبان ہیں اس لئے آپ برنائی اپنے لئے بچھ وظیفہ عیت المال سے مقرر فرما لیس تا کہ آپ برنائی محبد نبوی میں بیٹھ کرلوگوں کے معاملات احسن انداز میں نبٹا کیس تا کہ آپ برنائی محبد نبوی میں بیٹھ کرلوگوں کے معاملات احسن انداز میں نبٹا کیس تا کہ آپ برنائی اور دیگر کیس جانبی اس ورہم ماہوار مقرر اکا برصحابہ کرام می کائی کی مشاورت سے آپ برنائی کا وظیفہ تین سودرہم ماہوار مقرر کرویا گیا۔

حضرت ابوبكرصديق والنفي كوجهاد برجائے سے روكنا:

حضرت عبداللہ بن عمر والی ہے نے ذوالقصہ کی جانب روانہ ہونے گئو تو صدیق والفی والی کے اسری کی سرکوبی کے لئے ذوالقصہ کی جانب روانہ ہونے گئو تو حضرت علی المرتضی والفیئ آئے اور آپ والی کے اس کے اونٹ کی مہار پکڑی اور کہا۔

مارت علی المرتضی والفیئ آئے اور آپ والی کے اونٹ کی مہار پکڑی اور اس نظرت علی اللہ والی اللہ والی اللہ واللہ والل

المناسر على المائن الما

ایک اعرابی کے سوالوں کے جواب دینا:

روایات میں آتا ہے کہ حضور نی کریم مضائقیا کے وصال کے چند دن بعد ایک اعرابی مسجد نبوی میں آیا۔اس اعرابی نے اپنے چبرے کو ڈھانپ رکھا تھا۔اس نے حضور نبی کریم مضر عظیم الے کے وصال برافسوس کا اظہار کیا اور دریافت کیا حضور نبی كريم منطقيكا كے وصى كون بين؟ حصرت ابو برصديق والنفظ في حضرت على الرفضي ر النائن كى جانب اشاره كيابيرسول الله مطفيكا كوصى بين-اس اعراني نے آپ وللفنظ كوسلام كيا۔ آب والفنظ نے اسے سلام كا جواب ديا اور اس اعرابي كواس كے نام سے بکارا۔ اس اعرابی نے تعجب سے کہا کہ آب دالٹن میرا نام کیے جانے ہیں جبکہ رید میری اور آپ والفنو کی مہلی ملاقات ہے؟ آپ والفود نے فرمایا کہ مجھے حضور نی کریم مطابع انتهارے متعلق بتایا تھا اور تمہارے حال سے بھی آگاہ کیا تھا۔ آب دالفنا نے فرمایا کہ تمہارا نام مصر ہے اور تم نے اسے قبیلے کوحضور بنی کریم مطابقة ، کی بعثت کی خبر دی تھی اور کہا تھا تہامہ میں ایک شخص کھڑا ہوگا جس کے رخسار جا ند سے زیادہ روش اور جس کی تفتکو میں شہد سے زیادہ منعاس ہوگی۔ وہ نچر پرسوار ہوگا إوراسيخ جوتول اور كيرُ ول كوخود پيوند لكائے كا۔ وہ زنا، سود، شراب خوري اور ناحق خون بہانے کوحرام قرار دے گا اور وہ آخری نی ہوگا۔ وہ رمضان الها كے كے روز ے رکھنے والا ہوگا اور بیت الله شریف کا جج کرے گا۔ وہ یا نچے وفت کی نماز ادا كرے كا اور تم اس پر ايمان لے آؤ اور اس كى تقىد يق كرو۔ تمہارى قوم نے جب تبهاري بالتمسني توحمهي قيدكر ديا اوراب جب حضور ني كريم يطفيكان كا وصال ہوچکا تو تہاری توم سلاب مین غرق ہوئی اور یوں تہمیں اس قید خانے سے آزادی ملى۔ پھرتمہارے کانوں نے تیبی نداسی: اےمصر! مدینه منورہ جاؤ دہاں حضور نبی کریم

المنت على المنتائج ال

ستن وين كا وصال ہو چكا ہے تم ان كے صحابہ كرام ون اللہ اور ان كے روضه مبارک کی زیارت کرو۔ اس اعرابی نے جب اینے حال آپ بڑائنو کی زبانی ساتو اس كى آئھوں سے آنسو جارى ہو گئے اور اس نے آپ را النفظ كے ہاتھ كا بوسہ لے لیا۔ پھراس نے آپ شائن سے عرض کی کہ میں کچھ سوالات کے جواب جا ہتا ہوں؟ آپ بنائن في فرمايا كهم سوال يو حيما انشاء الله العزيز تمهيس ان كاجواب ملے گا۔ اس اعرابی نے حضرت علی الرتضى والنفر النفر الله الله الله الله وه كون سانر ہے جس کا باب اور مال نہیں ہے؟ آپ طالتن نے فرمایا وہ حضرت آدم علیاتیا ہیں۔ اس اعرابی نے دوسرا سوال کیا کہ وہ کون سی مادہ ہے جو بغیر مال باپ کے پیدا ہوئی؟ آپ طالفنو نے فرمایا وہ حضرت حوا عظم جیں۔اس اعرابی نے تیسرا سوال کیا وہ کون سا نر ہے جو بغیر نر کے پیدا ہوا؟ آپ مالانن نے فرمایا وہ حضرت عیسیٰ علیمنا ہیں۔اس اعرابی نے چوتھا سوال کیا کہ دہ کون می قبر ہے جس نے قبر والے کوسیر كرائى؟ آپ رائن نے فرمایا كه دہ قبر مجھلى ہے جو حضرت يوس علينيا كواہنے پيك میں لے کر تین دن تک پھرتی رہی۔اس اعرابی نے یا نچوال سوال کیا کہ وہ کون سا جم ہے جس نے ایک مرتبہ کھایا پھر بھی نہیں کھایا؟ آپ دائٹن نے فرمایا کہ وہ جسم حضرت موی علیاتی کا عصا ہے جوسانی بن کرفرعون کے جادوگروں کے جادوکو نگل گیا۔ اس اعرافی نے چھٹا سوال کیا کہ وہ زمین کا کون سا مکڑا ہے جہال صرف ایک مرتبہ سورج کی روشی پڑی؟ آپ دلائٹؤ نے فرمایا کہ دریائے نیل کا وہ حصہ جو حضرت موی غلیاله کے عصا سے شق ہوا تھا۔ اس اعرابی نے ساتواں سوال کیا کہ الیا کون سا جاندار ہے جو پھر سے پیدا ہوا؟ آپ طافی نے فرمایا کہ وہ حضرت صالح علياتا كى اوغى ب جو يقر عد يدا مولى -اس اعرابى نے آمحوال سوال كيا المنت على المنتائج ال

کہ وہ کون می عورت ہے جس نے تمین ساعت میں بیچے کوجنم دیا؟ آپ طالتہٰ نے فرمایا که وه حضرت مریم بینام بین جنہوں نے حضرت عیسیٰ غلیاتات کو جنا۔اس اعرابی نے نوال سوال کیا کہ وہ کون ہے دو دوست ہیں جو آپس میں بھی ایک دوسرے کے وشمن نہیں ہوتے؟ آپ طالفن نے فرمایا کہ وہ جسم اور جان ہیں جو بھی ایک دوسرے کے دشمن نہیں ہوتے۔ اس اعرابی نے دسوال سوال کیا کہ وہ کون سے دو وثمن ہیں جو آپس میں مجھی ایک دوسرے کے دوست نہیں ہوتے؟ آپ طالنظ نے فرمایا کہ وہ موت اور زندگی ہیں جو بھی ایک دوسرے کے دوست نہیں ہوتے۔اس اعرابی نے گیارہوال سوال کیا کہ شے اور لاشے کیا ہے؟ آب رالنوز نے فرمایا کہ شے موس ہے اور لاشے کا فر ہے۔ اس اعرابی نے بارہوال سوال کیا رحم مادر میں سب سے پہلے کون سا اعضاء بنآ ہے؟ آپ طافنظ نے فرمایا رحم نادر میں سب سے بہلے شہادت کی انگلی بنتی ہے۔ اس اعرابی نے تیرہواں اور آخری سوال کیا قبر میں سب سے آخر میں کون سی چیز فنا ہوتی ہے؟ آپ دائنٹو نے فرمایا بندہ کے دماغ کی مری-اس اعرائی نے جب آپ دالفن کے جوابات سے تو با اختیار آپ دالفن کا

ایک صخص کے شراب پینے کا واقعہ:

حضرت امام جعفر صادق والنفظ سے مروی ہے فرماتے ہیں دور صدیقی والنفظ سے مروی ہے فرماتے ہیں دور صدیقی والنفظ میں ایک شخص کو حضرت ابو بکر صدیق والنفظ کی بارگاہ میں بیش کیا گیا اور اس شخص نے شراب بی ہے؟ تو اس شخص نے شراب بی ہے؟ تو اس شخص نے اشرار کر لمیا اور کہا کہ میں نے اسلام قبول کیا اور میرا گھر ان لوگوں کے پاس ہے جوشراب نوشی کرتے ہیں اور میں نہیں جانیا تھا کہ اسلام میں شراب حرام ہے۔

المن المراكب المراكب المن المانين كي فيمل المنافق المن

حضرت الوبكر صديق بن النيئة نے ال مخص كى بات فى تو حضرت عمر فاروق بن النيئة كى جانب متوجہ ہوئے اور لوچھا اس كاكيا فيصلہ كيا جائے؟ حشرت عمر فاروق بن النيئة نے حضرت كہا يہ فيصلہ تو الوالحس بن النيئة بى كريں گے۔ حضرت الوبكر صديق بن النيئة نے حضرت عمر فاروق بن النيئة كو اين بہنچ اور ان عمر فاروق بن النيئة كو اين بہنچ اور ان كے سامنے يہ مسئلہ بيان كيا۔ آپ بنائين نے فرمايا اس مخص كو لے كر مہاجرين و انصار كے سامنے يہ مايا جائے اور ان سے لوچھا جائے كہ كيا ان جس سے كى هائے ان اس مخص كو آپ ان جس سے كى هائے بنائين كيا۔ آپ بولئين نے فرمايا اس مخص كو آپ ان جس سے كى هائے بنائين كيا ہے؟ چنا في اس مخص كو آپ برائين كيا كہ اس منے شراب كے حرام ہونے كا ذكر كيا ہے؟ چنا في اس مخص كو آپ برائين كيا در اس منے كيا ہے۔ آپ برائين كيا كہ اس نے شراب كے حرام ہونے كا ذكر اس شخص كے سامنے كيا ہے۔ آپ برائين كو جب اس بات كے متعلق بتايا گيا تو آپ برائين نے فرمايا اس مخص كو چھوڑ ديا جائے كوئكہ بير حرمت فحر سے آگاہ نہ تھا۔

لواطت كے متعلق فيصله:

کنزالعمال میں منقول ہے حضرت فالد بن ولید را اللہ نے حضرت ابو بکر صدیق اللہ نے حضرت ابو بکر صدیق رات نظر کو ایک مکتوب لکھا کہ عرب کے مرتد قبیلوں میں مرد مردوں سے اور عورتیں عورتوں سے نکاح کر رہے ہیں اس معاملہ میں میری رہنمائی کی جائے۔ حضرت ابو بکر صدیق رائی نیڈ نے اکا برصحابہ کرام رہی آئی کو بلایا اور ان سے اس معاملہ میں مشورہ طلب کیا۔ حضرت علی الرتضی رہا تھی اس مجلس مشاورت کا حصہ تھے میں مشورہ طلب کیا۔ حضرت علی الرتضی رہا تھی اس مجلس مشاورت کا حصہ تھے آپ رہا تھی نے فرمایا بلاشبہ سے بہت بڑا گناہ ہے اور جسیا کہ اس سے قبل ایک قوم آپ رہانا ہوئی تھی تو اللہ عروب لے ان پر اپنا عذاب تازل کیا تھا اور میں اس مسئلہ پر بیہ کہوں گا ایسے افراد کو دَبیتی ہوئی آپ میں جلایا جائے۔ حضرت ابو بکر اس مسئلہ پر بیہ کہوں گا ایسے افراد کو دَبیتی ہوئی آپ میں جلایا جائے۔ حضرت ابو بکر

النست على المالي المالي

صدیق طالفیز نے آپ طالفیز کے فیصلے کی تکریم کرتے ہوئے تھم دیا کہ ایسے فعل بد میں مبتلا افراد کو دہمتی ہوئی آگ میں جلایا جائے۔

خواب کی حقیقت مثل سایہ کے ہے:

منقول ہے حضرت ابو بکر صدیق و النین کے پاس دو شخص آئے اور ان میں سے ایک شخص کہتا تھا کہ یہ دوسرا شخص کہتا ہے کہ میں نے خواب میں تیری مال کے ساتھ جماع کیا ہے۔ حضرت ابو بکر صدیق و النین نے اس کی بات سی تو خاموش موجو ہے۔ حضرت علی الرتضی و النین جو اس وقت حضرت ابو بکر صدیق و النین کے پاک موجود تھے انہوں نے فرمایا کہ اس شخص کو دھوپ میں کھڑا کر کے اس کے سامیہ کو گوڑے مارے جا کمیں کیونکہ خواب کی حقیقت مثل سامیہ کے ہواراس شخص کو بھی مطور تنہیہ کوڑے مارے جا کمیں کا کہ میہ آئندہ ایسا برا خواب بیان کر کے کسی دوسرے مسلمان کواذیت نہ پہنچائے۔

O___O



حضرت سيده فاطمه الزهرا ظلينا كاوصال

کیا بات رضا اس چنتان کرم کی زہرا ہے کلی جس میں حسین اور حسن پھول حضور نبی کریم مضافی جس میں حسین اور حسن پھول حضور نبی کریم مضافی ہوتا چلا کے وصال کے بعد حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرافی پائے کا کے رخ والم میں اضافہ ہوتا چلا گیا جس کی وجہ ہے آپ رفی پی طبیعت روز بروز گرتی چلی گئے۔ آپ برافی بی اس کے علاوہ گھر میں بچوں اور شوہر کی ذمہ داری بھی تھی جے آپ رہنے گئیس۔ اس کے علاوہ گھر میں بچوں اور شوہر کی ذمہ داری بھی تھی جے آپ رفیانی نہایت احسن طریقے سے نبھانے کی کوشش کرنے گئیس۔ حضرت ابو بحرصد بی رفی نفی کو جب آپ فرائی کی علالت کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی فرائی کی علالت کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خانون کی اور تھارت ابو بحر صدیق والی کی علالت کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی اطلاع ملی تو حضرت ابو بحر صدیق والی خواند کی الی تو حضرت ابو بحر صدیق والی کی دور کی خواند کی الی تو حضرت ابو بحر کی دور کی خواند کی الی تو حضرت ابو بحر کی خواند کی الی کی دور کی دور کی دور کی کی دور ک

حضور نبی کریم مین پینائے وصال کے جھ ماہ بعد حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فران الوصال میں مبتلا ہوئیں۔حضرت ابوبکر صدیق بڑا نیز عیادت کے لئے تشریف لائے اور حضرت علی المرتضی بڑا نیز سے اجازت طلب کی کہ انہیں سیّدہ بڑا نیز التحقی کی عیادت کی اجازت دیں۔حضرت علی المرتضی بڑا نیز سیّدہ فاطمہ الزہرا کی عیادت کی اجازت دیں۔حضرت علی المرتضی بڑا نیز سیّدہ فاطمہ الزہرا بڑا نیز ناسے جا کر کہا مسلمانوں کے خلیفہ تہاری عیادت کے لئے آئے ہیں اگر تم کہوتو میں انہیں گھرے اندرآنے کی اجازت دے دول۔حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا بڑا نیز ناسی میں انہیں گھرے اندرآنے کی اجازت دے دول۔حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا بڑا نیز ناسیس گھرے اندرآنے کی اجازت دے دول۔حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا بڑا نیز ناسیس گھرے اندرآنے کی اجازت دے دول۔حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا بڑا نیز ناسیا

نے اجازت دے دی اور آپ بڑائٹنے نے حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا بڑائینے سے ان کا حال احوال دریافت کیا اور فرمایا۔

"الله كالمن الله كالمن الله كالمن الله كالمن الله كالمن الله الله كالله كالله

حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرار اللہ ہو کہ اس سے قبل درا ثنت کے معاملہ پر حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرار اللہ ہیں انہوں نے آپ واللہ کی بات سی تو حضرت ابو برصدیق رائن میں انہوں نے آپ واللہ کی بات سی تو ابی ناراضی فورا ختم کر دی نے

حضرت ابو بمرصد بق رخاتین کی المید حضرت اساء بنت عمیس رخاتین ، حضرت استیده فاطمه الز براخ الخینی کی الحجی دوستوں میں شار ہوتی ہیں۔ حضرت ام جعفر رخاتین سیده فاطمه الز براخ الخینی کی الحجی دوستوں میں شار ہوتی ہیں۔ حضرت اساء بنت عمیس رخاتین اسے فرمایی کہ جھے یہ بالکل اچھا نہیں لگتا جس طرح آج کل عورتوں کا جنازہ لے کر جایا جاتا ہے ان کے اوپر ایک چا در ڈال دیتے ہیں جس سے پرده نہیں ہوتا اور عورتوں کی جمامت بھی دکھائی دیتی ہے۔ حضرت اساء بنت عمیس رخاتین ہوتا اور عورتوں کی جمامت بھی دکھائی دیتی ہے۔ حضرت اساء بنت عمیس رخاتی کہا میں نے حبشہ کے لوگوں میں دیکھائے کہ جب عورتوں کا جنازہ اٹھایا جاتا ہے تو اس پرتازہ کھجوروں کی شاخیں منگوار کر چار پائی پر کمان کی مانند باندہ کر کر گرا ڈال دیتے ہیں جس سے جنازہ کی بہچان ہوجاتی ہے کہ یہ عورت کا جنازہ کے در پردہ بھی برقرار رہتا ہے۔ حضرت سیدہ فاطمہ الز ہرا خواتی نے فرمایا کہ جب میرا وصال ہو جائے تو میرا جنازہ بھی ای طرح اٹھانا اور تمہارے اور میر ے شوہر میرا وصال ہو جائے تو میرا جنازہ بھی ای طرح اٹھانا اور تمہارے اور میر یہ شاخی حضرت سیدنا علی الرتھنی خالفتی خالفتی کے سواجھے کوئی عسل نے دے۔

الناسترع الله الفئ الماني الما

روايات مين آتا ہے كەحضرت على المرتضى بنائنيد ،حضرت سيده فاطمه الزہرا طلی خان کے دوز جب گھر تشریف لائے تو آپ طالخیانے بیاری اور کمزوری کے باوجود آٹا گوندھا اور اینے ہاتھ سے روٹیال یکا ئیں۔ پھر حضرت علی المرتضلی و النفذ اور بجول کے كير م دهوئے حضرت على الرتضى والفظ نے فر مايا فاطمه (والنفظ)! میں نے تمہیں بھی دو کام استھے نہیں کرتے دیکھا آج تم کام استھے کررہی ہو۔ آپ والنائف فرمايا من فرات خواب من اسية والدير ركوار حضور في كريم من المناه والدير ركوار حضور في كريم من المناه كو و یکھا۔ بابا جان میرے منتظر تھے میں نے عرض کیا میری جان آپ منظر کیا کی جدائی میں نکل رہی ہے۔ آپ مضح کے خرمایا فاطمہ (خلیج)! میں بھی تمہارا انظار کررہا ہوں لیں اس خواب کے بعد میں نے جان لیا میرا اس دنیا میں بیآخری دن ہے اور میں اب اس دنیا ہے بردہ فرمانے والی ہوں۔ میں نے بیروشیاں اس لئے یکائی ہیں کہ کل جب آپ مزافعہ میرے عم میں مبتلا ہوں تو میرے بیجے بھوکے نہ رہیں اور کپڑے اس لئے دھو دیئے ہیں کہ میرے بعد جانے کون کپڑے دھوئے۔حضرت على الرتضى والطفر في جب آب والفراك كي التمن سنين تو ان كي المحصول سے آنسو جاری ہو گئے۔حضور نی کریم مضاعظۃ کی جدائی اور اب حضور نی کریم مضاعظۃ کی لاؤلی صاحبزادی اور خاتون جنت بناتنجا کی جدائی آب مناتنظ کے لئے ایک کاری زخم سے تم نہ تھی۔ آپ ملافظ ان جب حضرت علی الرتفنی والفنی کی بید کیفیت و میسی تو فرمایا آب (بنائز) عم نه كري اور جيسے آب (بنائنز) نے يملے مبركيا اب بھى مبر سيجة بے شک اللہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ہے۔

المناسر على المناسل ال

کلا دیں۔ حضرت اساء بنت عمیس والنظائی نے جب انہیں کھانے کے لئے جمع کیا تو انہوں نے کھانا کھا کہ ہم اپنی والدہ کے بغیر کھانا نہیں کھا کہ ہم اپنی والدہ کے بغیر کھانا نہیں کھا کیں گھا کی المرتضلی والنظائی تشریف لائے اور آپ والنظائی میں گئے۔ اس دوران حضرت علی المرتضلی والنظائی والنظائی والنظائی والنظائی والنظائی والنظائی والدہ کا آخری و بدار کرنے و جیجے۔ آپ والنظائی والنظائی والنظائی والنظائی والنظائی والنظائی والنظائی والدہ کا آخری و بدار کرنے و جیجے۔ آپ والنظائی والنظائی والنظائی والنظائی والدہ کا آخری و بدار کرنے و جیجے۔ آپ والنظائی و والدہ کیا ہو کے ایک مرتبہ پھر حضور نبی کریم مطاب کے ووضہ مبارک پر جھیج و یا۔

المناسر على المالي المالي

سنجال کررکھ دو۔ حضرت اساء بنت عمیس خلیجناکے جانے کے بعد آپ خلیجنانے حضور نبی کریم مضیق کی امت کے گنبگاروں کے لئے دعا فرمائی اور اپنے بچوں کے لئے دعا فرمائی اور اپنے بچوں کے لئے دعا فرمائی والی آفرین کے لئے دعا اور اپنی جان جان آفرین کے لئے دعا اور اپنی جان جان آفرین کے لئے دعا کے در دی۔ کی سیردکر دی۔

حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراہ النیجا کے دصال پر آپ رہی ہی کے جو کہ ابھی کم س سے دہ بے حد افسر دہ سے اور آپ رہی ہی کو یاد کر کے رویا کرتے ہے۔ حضرت علی المرتضلی ہلائی ہی بچوں کو دلاسہ دیتے ہوئے رو پڑتے تھے۔ روایات میں حضرت علی المرتضلی ہلائی کی اشعار کا بھی ذکر ہے جو انہوں نے آپ زہائی کے روسال پر کے۔ان اشعار کا مقہوم ذیل ہے۔

المناسرة على المنافظة كي يعلى المنافظة كي يعلى المنافظة كي يعلى المنافظة كي يعلى المنافظة الم

"جھے سے وہ بیارا جدا ہوا ہے جس کے بعد اب کوئی محبوب جھے نظر نہیں آتا اور میرے دل میں اس کے سواکسی کا حصہ نہیں ہے۔ میں دنیا کے بے شار امراض ویکھا ہوں اور مریض بلکہ موت بھی بیار ہے۔ میرااجھاع میں افراق ضروری ہاور ہر وصل سوائے فراق کے کم ہے۔ سیّدہ فاطمہ (ریافیٹا) کی جدائی حضور نبی کریم میں کی جدائی کے بعد ظاہر کرتی ہے کہ جدائی حضور نبی کریم میں کے یاس نہیں رہتا ہ''

O....O.....O



حضرت ابوبكرصديق طالثن كاوصال

حضرت عمر فاروق والنين كوخليفه مقرر كرنا:

حضرت حسن بھری والی ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت ابو بکر صدیق والی ہے الیشن جب بہت زیادہ بیار ہو گئے تو آپ والیشن نے ارشاد فرمایا ہیں اختیار دیتا ہوں تم الین نے الیشن جب بہت زیادہ بیار ہو گئے تو آپ والیشن نے ارشاد فرمایا ہیں اختیار دیتا ہوں تم این لیے خلیفہ چن لو ۔ لوگوں نے کہا ہمیں اللہ اور اس کے رسول اللہ مضابی نے خلیفہ کی رائے میں کوئی اعتراض نہیں ۔ آپ والین نے قدر سے خاموش رہنے کے بعد فرمایا۔

''میرے نزدیک عمر (دافائیؤ) بن خطاب سے بہتر کوئی نہیں۔' حضرت حسن بھری دافیئو فرماتے ہیں پھر حضرت ابو بکر صدیق دافیؤ نے حضرت عبدالرحمٰن بن عوف دافیئو سے حضرت عمر فاروق دافیئو کے بارے میں بوچھا تو حضرت عبدالرحمٰن بن عوف دافیئو نے عرض کیا۔

"آپ دالنو جھے ہے بہتر عمر (داننو) کوجائے ہیں۔"

حضرت حسن بصری والنیز فرماتے ہیں کہ حضرت ابو برصدیق والنیز نے است میں کہ حضرت ابو برصدیق والنیز نے حضرت عثمان غنی والنیز سے حضرت عمر فاروق والنیز کے بارے میں وریافت کیا تو حضرت عثمان غنی والنیز نے عرض کیا۔

''جتنی میری معلومات ہیں عمر (النینؤ) کا باطن اس کے ظاہر

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن جی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

المناسبة على المنافع ا

ے زیادہ بہتر ہے اور ہم میں اس وقت ان جیسا کوئی نہیں۔' حضرت حسیق بھری طالتے ہیں پھر حضرت ابو بکر صدیق طالتے ہیں کے حضرت ابو بکر صدیق طالتے ہیں دیگر احباب سے مشورہ کیا اور حضرت عمر فاروق طالتے کو خلیفہ مقرر کر دیا اور حضرت عثمان غنی طالتے ہیں کہتم تحریر کرو۔

"ابو بكر (طَالِنَهُ فَيْ) بن ابوقاف طَالِنَهُ الله عمر (طَالِنَهُ) بن خطاب كو خليفه نامز دكيا-"

حضرت عمر فاروق طالني كوخليفه بنانے كے لئے قائل كرنا:

ایک روایت میں ہے جب خضرت ابو بکر صدیق جائنے کی طبیعت ناساز ہوئی تو آپ جائنے نے کھڑی سے جھا تک کرلوگوں سے فرمایا بلاشہ میں نے تم سے ایک عہد کیا اور کیا تم اس عہد پر راضی ہو؟ لوگوں نے عرض کیا ہم راضی ہیں۔حضرت ایک عہد کیا اور کیا تم اس عہد پر راضی ہو؟ لوگوں نے عرض کیا ہم راضی ہیں۔حضرت عمر علی المرتضی والفنظ کھڑے ہوئے اور فرمایا جب تک منصب امارت کو حضرت عمر فاروق والفنظ کے سپر دنہیں کیا جائے گا ہم راضی نہ ہوں گے اور پھر حضرت ابو بکر صدیق والفنظ نے سپر دنہیں کیا جائے گا ہم راضی نہ ہوں گے اور پھر حضرت ابو بکر صدیق والفنظ نے ایسا ہی کیا۔

حضرت ابو بمرصديق طالغين كا وصال:

ابن سعد کی روایت ہے حضرت ابو بکر صدیق والنفو کی خدمت میں پہلے
لوگ عیادت کے لئے حاضر ہوئے۔لوگوں نے عرض کیا۔
"اے خلیفہ رسول مضاع کیا ہم آپ والفو کے لئے کسی طبیب
کو نہ بلوا کیں؟"

حضرت ابو بكرصديق والفنزين فرمايا _ «طبيب نے مجھے ديکھا ہے۔"

لوگوں نے یو حیصا۔

" كيرطبيب نے آپ ظائف ہے كيا كہا؟"

حضرت ابو بكرصديق طالفيز نے فرمايا۔

" طبیب کہتا ہے میں ہر اس کام کو گزرنے والا ہوں جس کا

میں ارادہ رکھتا ہوں۔''

حضرت ابوبکرصدیق برنائیز کے مرض الموت کی ابتداء سات جمادی الثانی کو ہوئی۔ اس روز سوموار کا دن تھا۔ آپ برنائیز نہائے تو آپ برنائیز کو بخار ہو گیا جو پندرہ دن تک رہا۔ اس دوران حضرت عمر فاردق برنائیز ، آپ برنائیز کے حکم پرامامت فرماتے رہے۔ بالآخر ۲۱ جمادی الثانی ساہجری کو آپ برنائیز اس جہانِ فانی سے کوچ فرما گئے۔

ابن سعد کی روایت ہے بوقت وصال حضرت ابو بکر صدیق والفن کی عمر ' میارک اتن ہی تقی جتنی حضور نبی کریم پیشنز تین کی تھی۔

حضرت ابو بحرصدین و فاتنی کوشس آپ و فاتنی کی اہلیہ حضرت اساء ولی تنها بنت عمیس نے حسب وصیت دیا۔ حضرت اساء ولی تنها بنت عمیس اکثر روزہ سے ہوتی تصین اور جس دن آپ ولی تنی کے وصال کا وقت قریب ہوا تو آپ وٹی تنی نے انہیں فتم دے کر روزہ رکھنے سے منع فرمایا تا کہ بوقت عسل کہیں نقامت نہ ہوجائے۔ حضرت ابو بحر صدیق وٹی تنی کی نماز جنازہ حضرت عمر فاروق وٹی تنی نے برحائی اور قبر مبارک حضور نبی کریم میں تنی کریم میں تنی کریم میں تنی کو میں کھودی گئی۔ قبر مبارک میں حضرت عمر فاروق ، حضرت عبدالرحمٰن بن عبیداللہ اور حضرت عبدالرحمٰن بن ابو بکر وی کریم میں اتر تا جا ہا تو بن عبیداللہ اور حضرت عبدالرحمٰن بن ابو بکر وی گئی ہے اتارا۔ حضرت عبداللہ بن عمر شائع بن عبیداللہ اور حضرت عبدالرحمٰن بن ابو بکر دی گئی ہے نہ میں اتر تا جا ہا تو

المناسرة على المالية ا

حضرت عمر فاروق طالفن نے انہیں منع کرتے ہوئے فرمایا۔ ''بس کافی ہیں۔''

حضرت على المرتضلي طالتين كاغم:

حضرت ابو بكر صدیق برنالینی فلیفدرسول الله بطفیقیا منظ اور آپ برنالینی کے وصال کا سانحه صحابہ کرام بری گفتی پر کسی بارگرال سے کم ندتھا اور آپ برنالین کے وصال کے وقت صحابہ کرام بری گفتی کاغم ان کے چہرول سے دکھائی دیتا تھا۔

حضرت علی المرتفظی براہنی کو جب حضرت ابو بکر صدیق برالفین کے وصال کی خبر ہوئی تو آپ براٹین روتے جاتے تھے اور کہتے جاتے تھے۔

خبر ہوئی تو آپ براٹین روتے جاتے تھے اور کہتے جاتے تھے۔

''ابو بکر صدیق (فراٹین) نے سب سے پہلے اسلام قبول کیا۔

آپ براٹین ایمان میں سب سے زیادہ مخلص اور یقین میں پہلتہ آپ براٹین ایمان میں سب سے زیادہ مخلص اور یقین میں پہلتہ آپ براٹین ایمان میں سب سے زیادہ مخلص اور یقین میں پہلتہ آپ براٹین ایمان میں سب سے زیادہ مخلص اور یقین میں پہلتہ سے ۔ آپ براٹین ایمان میں سب سے زیادہ مخلص اور یقین میں پہلتہ سے ۔ آپ براٹین ایمان میں سب سے زیادہ مخلص اور یقین میں پہلتہ ۔

عظے۔ آپ دالتہ نے اس وقت حضور نبی کریم مضائی کی تقدیق کی جب کوئی ان پر ایمان ندلایا تھا۔ آپ دلائیڈ مسلمانوں کی سر پرتی فرمانے والے عظے اور سیرت میں حضور نبی کریم مشائی کا

کے ہم سب سے زیادہ مشابہ عظے۔ اللہ عزوجل آپ طالفن کو جن این مثابہ عظے۔ اللہ عزوجل آپ طالفن کو جزائے میں آپ طالفن کو جزائے خیردے۔ اللہ عزوجل نے اپنی کتاب میں آپ طالفن کو

"مدين" كے لقب سے يادفر مايا۔ آپ طالفظ اسلام كا قلعه

منصاورا برافنو كى دليل قوى تقى-"

روایات میں آتا ہے کہ حضرت علی الرتضلی ولائفیٰ کو جب حضرت ابو بکر صدرت ابو بکر صدرت ولائفیٰ المرتضلی ولائفیٰ کو جب حضرت ابو بکر صدرت ولائفیٰ کے وصال کی خبر ملی تو آپ ولائفیٰ نے انا للد وانا الیہ راجعون پڑھا اور پھراہے گھرے باہرآ کرفر مایا۔

المناسبة على المنافظ كر فيعلى المنافظ كر فيعلى المنافظ كر فيعلى المنافظ كر فيعلى المنافظ كالمنافظ كالم

"آج خلافت نبوت كاسلسلة مم وگيا." وصال صديق اكبر رئالنيم برخطاب كا فيصله:

پھر حضرت علی المرتضی طالتین چا اور حضرت ابو بکر صدیق طالتین کے گھر پر
پہنچ جہال حضرت ابو بکر صدیق طالتین کا جسم اقدس جار پائی پر رکھا ہوا تھا۔ آپ
طالتین نے حضرت ابو بکر صدیق طالتین کے گھر کے باہر صحابہ کرام مخالفہ کے اجتماع
سے خطاب کرتے ہوئے فرمایا۔

"اے ابو بکر (رایانیو)! الله عزوجل کی آب دالفور بر بے پناہ رحمتیں نازل ہوں۔ آپ طالفنا ، حضور نبی کریم مطابقات کے محبوب، مونس اور عمنحوار تھے اور آپ رٹائٹیز کو بیشرف بھی حاصل ہے كه آب طالفناء حضور ني كريم مطفيكا كر راز دان اورمشير تھے اور آپ بالفرز نے اسلام قبول کرنے میں سبقت فی اور آپ طالفين كا يفين قوى تعا-آب طالفيد سب سي زياده مخلص مومن يتھے اور خوف خدا رکھنے والے تھے۔ آپ طالفو اللہ عزوجل کے دین میں دوسرول کی نسبت سب سے زیادہ بے نیاز اور مسى بھى چيزكى برداہ ندكرنے دالے تھے۔ آب مالفنا، حضور نی كريم مطابعة كے ديكر رفقاء كى نسبت زيادہ فضيلت والے، بركت والے اور سبقت لے جانے والے تے اور آب طالفنا بی سیرت رسول الله مطاعقا کے سب سے زیادہ مشابہ تھے۔ آب دلاننه ويكر صحابه كرام ويَأْتَهُمْ مِن مقام ومرتبه مين سب سے انفل منے اور اللہ عزوجل اسیے حبیب حضرت محمصطفیٰ

المناح الدر تفي يان في المناح المناح

من عَنْ مِانب سے آپ رٹائٹ کو جزائے خبر عطا فرمائے۔ آب رالنن في خصور في كريم من المناقظة كى اس وقت تصديق كى تھی جب سب انہیں جھٹلا رہے تھے اور حضور نبی کریم مضاریہ کی تکذیب کررہے تھے۔ آپ طالتہ کو اللہ عزوجل نے اپنی كتاب مين "صديق" كالقب سے يادكيا ہے اور آب طالقة نے حضور نبی کریم مطبق تیا کے ساتھ اس وقت عمخواری اور دلجو کی . كى جب دوسر الوك بخل سه كام لے رہے تھے۔ آپ طالقنا نے ہرفتم کے حالات میں حضور نبی کریم مطابقاً کا ساتھ دیا جبكه دوسر _ اوگ اس وفت حضور نبي كريم بطفي كاساته چهور رہے ہتھے۔آپ دلائنو نے یا وجود تکالیف اور مصائب کے حضور نبي كريم مضيّعيَّا كا ساته نه جهورُ ا اور آپ رائنيزُ ثاني اثنين اور یار غار تھے۔ آپ را الغیز اجرت میں حضور نبی کریم مضاعقانے کے رقی سے اور حضور نی کریم مطابق کے وصال کے بعد جد آب والنفظ خليفه بنائ محية تو آب والنفظ نے خلافت كاحق بھی بھر بورادا کیا اور ایبا کوئی نبی مطاع الم خلیفہ کے کوئی بھی ادا نه كرسكتا تها_آب والنفؤ في اس وقت بهرتى كا مظامره كيا جب دوسرے ست ہو گئے تھے اور آپ دلائنی اس وقت تو ی تنے جب سب کمزور و عاجز تھے۔ آپ دالٹنظ نے سنت رسول الله يضيئة كواينا شعارينائ ركها جب لوك شش وينج مين مبتلا تھے۔ آپ ملائفظ بلاتفرقہ خلیفہ برحق تصاور آپ ملائفظ کی ذات

المناسر على المالي الما

بلاشبه منافقین کو عصه، کفار کورنج اور حاسدین کے لئے کراہیت اور باغيول كے لئے غيظ وغضب كى علامت تھى۔ آپ مناتند حق يرقائم رہے جبكه دوسرے لوگ اس وقت يز د لى كا مظاہرہ كرر ٢ يض اور آب طالنيز ني الله وقت ثابت قدمي كامظامره کیا جب سب کے قدم لڑ کھڑا رہے تھے۔ آپ مٹائٹۂ نے نور خداوندی کوآ کے بر حایا اور پھرلوگوں نے آپ بڑائن کی پیروی كرتے ہوئے ہدايت كو ياليا۔آب رالني كى آوازسب سے يست تقى مرآب بنافية كامقام ومرخبه سب بلند تعارآب ملافن كا كلام مجيده تقا ادرآب رالننز كي بات درست تقي -آب والفن خاموش طبع تنفي مرجب بهي بات كرت منع تفوس بات كرتے تھے۔آب رافنو كى بہادرى كا مقابلہ كوئى نبيس كرسكا اور آب مالفن سے بڑھ کر کوئی معاملہ فہم نہیں تھا۔ اللہ عزوجل كاسم! آب طافعة دين كرروار تصح جب لوگ وين سے عافل تھے۔ آپ ذالنی مومنوں کے لئے ایک رحمال باب کی ماند تے ادر مومنین کو اپنی اولاد کی ما نندر کھتے ہتے۔ لوگ جس بھاری بوجھ کے لئے خود کو عاجز جائے تھے آپ ملائن وہ بھاری بوجھ انھانے والے تھے۔جس چیز کولوگوں نے چھوڑ دیا آپ مالفند نے اس کی مرانی اور ممبداشت کی اور آب بالفظ نے لوگوں کو ووسكمايا جے وہ بيل جائے تھے۔ جب لوگ مجرا رہے تھے آب طالفن في مركا دامن نه چوژ ااورآب طالفن في لوكول كو

الناسة على المالية الم

تعلی دی اور این مدایت کی خاطر وہ آپ طالفظ کے راستہ پر لوٹ آئے اور وہ جس چیز کے متعلق سوچ بھی نہ سکتے تھے اے انہوں نے یالیا۔ آپ طالفنہ کی ذات کفار کے لئے آگ كا شعله اور عذاب كا نزول تقى - آپ طالفيْ كى ذات مومنين کے لئے رحمت کا نزول تھی اور وہ آپ بڑالٹنے؛ کی ذات میں خود كويرسكون محسوس كرتة يتصه آب والنفظ نيك ادصاف كالمجموعه تے اور آپ رالنوز کی جست قوی تھی۔ آپ رالفز کی بصیرت كمزور ندتمي اور نه بي آب طالفي بزدل تصر آب طالفي ك قلب میں بھی خوف نے جگدند لی اور آپ طالفید ایک پہاڑ کی ما نند تنے جس کو تیز آندھیاں اور طوفان بھی اپنی جگہ ہے نہیں بلا سكتے _حضور ني كريم مطابقة نے آپ طالفن كمتعلق فرمايا كه آب وللفنظ كى رفافت ان كے لئے مالى خدمت كے اعتبار ے احسان کرنے والی تھی اور آپ طالفند ،حضور نبی کریم مطابقات کے فرمان کے مطابق جسمانی اعتبار سے کمزور مگر اللہ عزوجل کے معاملہ میں قومی اور زور آور منصے۔ آب طالفند کا مقام ومرتب بارگاہ خداوندی میں بے حد بلند ہے اور لوگوں کے نزد یک آب والنين جليل القدر اور بلندمرتبه كے حال میں۔ آب والنين كى نسبت كوئى طنزنبيس كرسكتا اور ندى آب دائفند يركونى اعتراض كرسكتا ہے۔آب بالنيز كمزور اورضعيفوں كا حوصلہ براهانے والے تھے اور حقد ارکواس کاحق ولائے والے تھے۔ آپ بالنفرا

المناسر على المنافع ال

کی نگاہ میں دور و نزویک سب برابر تھے اور آپ رٹائنو کے قرب کا حقدار وه تھا جومتقی و پر ہیز گار تھا۔ آپ ملائنے کا مرتبہ حق وصدافت کی دلیل ہے اور آپ طافت کا قول قطعی اور معامله بردباری ہے۔ آپ دالفنواس وقت دنیا ہے رخصت ہو رہے ہیں جب معاملہ آسان ہو چکا اور دنیا ہموار ہو چکی ہے اور ايمان جر پكر چكا ہے اور اسلام اور مسلمان تابت قدم ہو كے ہیں اور امر خداوندی غلبہ یا چکاہے اگر چد کفار اس وجہ سے غبار آلود بیں۔آپ طالفیز کے اقد امات نے آپ طالفیز کے بعد میں آنے والوں کو تھ کا دیا ہے اور آپ جائف اس بات سے اعلیٰ وارفع ہیں کہ آپ ہلائنڈ پر گریہ وزاری کی جائے اور آپ ہلائنڈ کی موت کی مصیبت آسانوں پر بھی دیکھی جاسکتی ہے اور ہم سب اللّذعز وجل بى كے لئے بيں اور بازشبه ميں اى كى جانب لوٹ کر جاتا ہے اور ہم قضائے خداد تدی پر راضی ہیں اور ہم نے اپنا معاملہ ای کے سپرد کر دیا۔ اللہ عزوجل کی فتم! حضور نی کریم مضایقاتے وصال کے بعد آپ دلانوز کا وصال ہمارے کئے کسی بڑے سانحہ سے کم نہیں ہے اور آپ مظافیۃ وین کی عزت اور جائے پناہ تھے۔اللہ عزوجل آپ بنائن کو اسے حبیب مطاع اور میں آپ مالنے کے اجر سے محروم نہ رکھے اور آپ مالنٹن کے راستہ ہے گمراہ نہ کزے۔" روایات میں آتا ہے جب حضرت علی المرتضی مظافیظ نے اپنا خطاب ختم کیا

المناسبة عمل المنافعة كرفيعل المنافعة كرفيعل المنافعة كرفيعل المنافعة كالمنافعة كالمنا

تو لوگ جو خاموشی ہے اس خطبہ کو سن رہے تھے وہ بے تنحاشہ رونے گے اور کہنے لگر

''اےرسول اللہ مضافیۃ کے داماد! آپ رالیٹیڈ نے کی کہا ہے۔' حضرت وہب سوائی رائیٹیڈ فرماتے ہیں کہ حضرت علی الرتضٰی رائیٹیڈ نے ہمیں خطبہ ارشاد فرمایا اور دریافت کیا حضور نبی کریم مضافیۃ کے بعد امت میں سب
سے افضل کون ہے؟ میں نے عرض کیا آپ رائیٹیڈ ۔ آپ رائیٹیڈ نے فرمایا نہیں بلکہ حضور نبی کریم مضافیۃ کے بعد سب سے افضل حضرت ابو بکر صدیق رائیٹیڈ ہیں اور مضرت ابو بکر صدیق رائیٹیڈ ہیں اور باشہدت عمر فاروق رائیٹیڈ ہیں اور بلاشہدت عمر فاروق رائیٹیڈ ہیں اور بلاشہدت عمر (رائیٹیڈ) کی زبان پر بواتا ہے۔

حضرت عبدالله بن عباس والفيئن سے مروی ہے فرماتے ہیں میں ان لوگوں میں کھڑا تھا جو حضرت عمر فاروق والفیئن کے لئے وعائے مغفرت کررہے ہے اور اس وقت حضرت عمر فاروق والفیئن کا جنازہ رکھا ہوا تھا۔ اس دوران ایک فخص میرے بیجھے آیا اور اس نے میرے کندھے پرانی کہنی ٹکائی اور فرمایا۔

المنت على المالية الما

فرمایا مجھے توی امید ہے کہ اللہ عزوجل انہیں ان کے ہمراہ رکھے گا۔''

حضرت عبداللہ بن عباس فرائے ہیں میں نے مڑکر دیکھا کہ وہ کون ہے جو میرے کندھے پر کہنی ٹکائے ایس کھا کہ وہ کون ہے جو میرے کندھے پر کہنی ٹکائے ایس گفتگو کر رہا ہے تو وہ حضرت علی الرتضلی ذائفیہ ہے۔

فضيلت صديق اكبر رائاتين بزبان على الرتضلي والثنين

حضرت علی الرتضی طالعی الرتضی طالعی سے مردی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم مضائعی ارشاد فرمایا۔

''میری امت میں ابو بکر اور عمر (دخی اُنظیم) سے زیادہ افضل ، متی ، پر ہیز گار اور عدل و انصاف والا کو کی شخص نہیں ہے۔'' حضرت علی المرتضی مٹائٹیؤ سے مردی ہے قرماتے ہیں حضور نبی کریم مضور تھا۔ کرمایا۔

" اگر ابو بحر طالفنانند بهوتے تو اسلام جاتار بتا۔"

حضرت ابوموی اشعری والنیز سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت علی المرتضی والنیز نے جھ سے فرمایا کیا میں تنہیں حضور نبی کریم مطرکا کے بعد سب سے المرتضی والنیز نے جھ سے فرمایا کیا میں تنہیں حضور نبی کریم مطرکا کے بعد سب سے افضل محض کے بارے میں نہ بتاؤں؟ میں نے عرض کیا بتا ہے۔ آپ والنیز نے فرمایا۔

" حضور نی کریم مضائظ آئے بعد سب سے افضل حضرت ابو بر صدیق دانشہ بیں۔"

حضرت حسن بصرى والفيز في مروى ب قرمات بي حضرت على الرتضلي

الناست على المن المان ال

طِيْعَةُ نِے قرمایا۔

"خصور نی کریم منظیم نے اپنی بیاری کے دوران حضرت ابوبکر صدیق فیانی کی امامت کے لئے بلایا حالانکہ اس دفت میں بالکل تندرست تھا اور وہاں موجود تھا۔حضور نی کریم منظیم بین کی اس فیلے سے ہم تمام صحابہ کرام من گفتی سمجھ گئے کہ حضور نی کریم منظیم نے حضرت ابوبکر صدیق منافق کو اپنا جانشین مقرر کیا ہے۔"

حضرت علی الرتضی و النفیز سے مردی ہے فرماتے ہیں میں حضور نبی کریم مطفقہ کے باس تشریف فرما تھا کہ حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق بنی کریم النفیز کے باس تشریف فرما تھا کہ حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق بنی کریم النفیز کیا ہے و دنوں کو دیکھتے ہوئے فرمایا۔
اکٹھے حاضر ہوئے ۔حضور نبی کریم النفیز کیا ہے دونوں کو دیکھتے ہوئے فرمایا۔
"مید دونوں اہل جنت کے بوڑھوں اور جوانوں کے سردار ہیں۔

ما موائے انبیاء نظام کے۔''

حضرت ام موی فران کے مروی ہے فرماتی ہیں حضرت علی المرتضی بنائن کو معلوم ہوا کہ ابن سیا ان کو حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فار وق بن نئم پر فوقیت دیتا ہے تو آپ طالفت نے اس کے قبل کا ارادہ کیا۔ جب آپ عبالا نے اس کے قبل کا ارادہ کیا۔ جب آپ عبالا نے سے

المن المراق المالية ال

دریافت کیا گیا آپ طالفیڈ اس کونل کیوں کرنا جا ہے ہیں تو آپ طالفیڈ نے فرمایا۔

"اس کونل کرنا ضروری ہے کیونکہ وہ ایک الی بات کہتا ہے
جس سے امت میں فساد کا خطرہ ہے اور حضرت ابو بکر صدیق
اور حضرت عمر فاروق وی اُنڈ تم مجھ سے بہتر ہیں۔"
حضرت ام موکی طالفی فرماتی ہیں اس کے بعد حضرت علی المرتضی طالفی فرماتی ہیں اس کے بعد حضرت علی المرتضی طالفیڈ نے
ابن سبا کوشہر بدر کر دیا۔

حضرت ابوزناد ر الفیار کوکیا ہوا جو انہوں نے حضرت الو کر الفیٰ دالفیٰ دالفیٰ دالفیٰ دالفیٰ دالفیٰ دالفیٰ دالفیٰ کے بین حضرت ابو کر صدیق دالفیٰ دالفیٰ

"اگرتو قریش ہے تو اللہ سے معافی مانگ اور اگر مومن اللہ کی پناہ میں نے ہوتا تو میں کھے قبل کردیتا۔ حضرت ابو بکر صدیق بطائی کو بیتا۔ حضرت ابو بکر صدیق بطائی کو بھے پر چار باتوں کی وجہ سے فوقیت حاصل تھی۔ اوّل وہ امام بنے میں بھے پر سبقت لے گئے، دوم ہجرت کے وقت بار عار بنائے گئے، سوم اسلام کی اشاعت انہی کی وجہ سے ہوئی اور جہارم اللہ عزوجل نے سوائے حضرت ابو بکر صدیق بطائی ا

O___O



چوتھا باب:

خلافت عمر فاروق طالتنه اورعلى المرتضلي طالته

حضرت عمر فاروق وظائفا کی بیعت کا فیصله، دور فاروقی وظائفا میں اجتہادی وفقهی فیصله، حضرت عمر فاروق وظائفا کی خلافت کے لئے چھ نامزد کیاں، حضرت عمر فاروق وظائفا کی شہادت نامزد کیاں، حضرت عمر فاروق وظائفا کی شہادت

O___O



نقش لاحول لکھ اے خامہ ہمیاں تحریر یا علی بنائی عرض کر اے فطرت وسواس قریں مظہر فیض خدا جان و دل ختم الرسل مظہر فیض غدا جان و دل ختم الرسل قبلہ آل نبی مضائقا ، کعبہ ایجاد یقیں

STATE OF THE PARTY OF THE PARTY

المناسرة على المنافئة كرفيعلى المنافظة كرفيعلى المنافظة كرفيعلى المنافظة كرفيعلى المنافظة كالمنافظة كالمنا

حضرت عمر فاروق طالتين كى بيعت كا فيصله

حضرت عبدالله بن مسعود وَلَيْ فَهُنَا فَر مات بین و مشاحب فراست تمین شخص بین حضرت ابو بکرصدیق وَلَانْهُنَا محضرت عمر فاروق وَلانْهُنَا كَ معامله مین که آنبین ظیفه نا مزوكیا و حضرت عمر فاروق وَلانْهُنَا كَ معامله مین که آنبین ظیفه نا مزوكیا و حضرت موی علیائل کی الجید جنهول نے این والد حضرت شعیب مطرت موی علیائل کی الجید جنهول نے این والد حضرت شعیب فلیائل سے کہا آنبین ملازم رکھ لیجئے اور حضرت یوسف علیائل کی الجید ...

حضرت سالم بن عبدالله وللنفظ فرماتے بیں جب حضرت ابو بکر صدیق ولائٹظ کے وصال کا وقت قریب آیا تو آپ ولائٹظ نے وصیت فرمائی۔ بہم اللہ الرحمٰن الرحیم!

اما بعد! بہ ابو بحر (دائنین) کی جانب سے وہ عہد ہے جو ایسے وقت میں دیا جب کہ اس کی دنیا کا زمانہ اختام پذیر ہے اور وقت میں دیا جب کہ اس کی دنیا کا زمانہ اختام پذیر ہے اور وہ دنیا سے جا رہا ہے۔ اس کی آخرت کا دورِ اول شروع ہونے والا ہے اور دار آخرت میں قدم رکھ رہا ہے جہاں کا فربھی ایمان کے آئے گا اور جھوٹا شخص بھی بی جا آئے گا اور جھوٹا شخص بھی بی جائے گا اور جھوٹا شخص بھی بی جو لے آئے گا اور جھوٹا شخص بھی بی جو لے گا۔ میں اپنے بعد عمر بن خطاب (دائی نیز) کو خلیفہ مقرر کرتا بولے گا۔ میں اپنے بعد عمر بن خطاب (دائی نیز) کو خلیفہ مقرر کرتا

الناسية على المالية ال

ہوں۔ اگر انہوں نے انصاف سے کام لیا اور میرا گمان بھی
ان کے متعلق یہی ہے اور اگر انہوں نے ظلم کیا تو وہ جانیں۔
میں نے بھلائی کا ارادہ کیا ہے اور غیب کاعلم مجھے نہیں۔ اللہ
عزوجل کا فرمان ہے جن لوگوں نے ظلم ڈھائے ان کو بہت
جلد پہنہ چل جائے گا کہ کس کروٹ پروہ پلٹا کھا کیں گے۔''
اس کے بعد حضرت ابو بکر صدیق ڈائٹیڈ نے حضرت عمر فاروق ڈاٹٹیڈ کو بلا
اس کے بعد حضرت ابو بکر صدیق ڈاٹٹیڈ نے حضرت عمر فاروق ڈاٹٹیڈ کو بلا
بھیجا اور جب حضرت عمر فاروق ڈاٹٹیڈ حاضر ہوئے تو آپ ڈاٹٹیڈ نے ان کو مخاطب

''اے عمر (طالتہ؛) البخض رکھنے والے سے تم نے بغض رکھا اور محبت کرنے والے سے تم نے والے نے زمانے دمانے محبت کی اور بدیرانے زمانے سے محبت سے چاتا آرہا ہے کہ بھلائی سے عداوت اور شرارت سے محبت کی جاتی ہے۔''

حضرت عمر فاروق والنفظ نے کہا کہ مجھے خلافت کی کچھ حاجت نہیں۔ حضرت ابو بمرصد بق دالفظ نے فرمایا۔

" عر (النائية)! منصب خلادت كوتمهارى ضرورت ہے تم نے مركار دوعالم مطابقة كود يكھا ہے اورتم ان كى صحبتوں ميں رہ موادرتم نے ديكھا ہے حضور ني كريم مطابقة نے ہمارے نفول كو اپنے نفس برتر جي دى اور يهال تك كه ہم لوگ آپ مطابقة الى اپنے نفس پرتر جي دى اور يهال تك كه ہم لوگ آپ مطابقة الى كے ديے ہوئے ان عطيات ميں سے ہيں جو آپ مطابقة الى كے ديے ہوئے ان عطيات ميں سے ہيں جو آپ مطابقة الى كے ديے ہوئے ان عطيات ميں سے ہيں جو آپ مطابقة الى كے مربد دیا كرتے ہم لوگوں كو عطافر مائے اور بچا ہوا اسے الى كو مديد دیا كرتے

المناسر على المنافع ال

تے اور تم نے مجھے دیکھا اور میرے ساتھ رہے۔ میں نے تو ای ذات گرامی کے نقش قدم کی پیروی کی جو مجھ سے پہلے سے اللہ عز وجل کی فتم! یہ باتیں میں سوتے میں نہیں کر رہا ہوں اور نہ بی خواب دیکھ رہا ہوں اور میں کسی وہم کے طور پر بیشہادت نہیں دے رہا اور بے شک میں ایک ایسے راستے پر ہوں جس میں کی نہیں۔

ا _ عمر (الله في التمهيس معلوم مونا جائية بي شك الله عز وجل کے لئے پچھ حقوق ہیں رات میں جن کووہ دن میں نہیں قبول فرما تا اور پچھ حقوق ہیں دن میں جن کو وہ رات میں قبول نہیں فرمات اور بروزِ قیامت جس کسی کی بھی تراز ویئے اعمال وزنی ہو گی اور تراز وئے اعمال کے لئے حق بھی یہی ہے کہ وہ وزنی اس وفتت ہو گی جب اس میں حق کے سوالیجھ نہ ہو گا اور بروزِ قیامت جن لوگوں کے اعمال کا بلیہ ہلکا ہو گا وہ وہی ہوں گے جنہوں نے باطل کی پیروی کی ہوگی اور میزان عمل کے لئے حق ہے کہ بجز باطل کے اور کسی چیز سے اس کا بلہ ملکا نہ ہو۔ اے عمر (دلائنہ)! بے شک سب سے پہلی وہ چیز جس سے میں ممہیں ڈراتا ہوں وہ تمہارانفس ہے اور میں تم کولوگوں سے بھی پرہیزگاری کا تھم دیتا ہوں۔ لوگوں کی نظریں بہت بلند وبالا دیکھنے لگی ہیں اور ان کی خواہشات کامشکیز ہ پھونکوں سے بھر گیا ہے اور لوگوں کے لئے لغزش سے خیریت ہو جائے گی

مناسبة عمل المالية المنازع الم

تم لوگوں کولغزشات میں پڑنے سے بیاؤ کے اس لئے لوگوں کو ہمیشہ تمہاری جانب ہے خوف رہے گا اور تم سے ڈرتے ر ہیں گے جب تک کہتم اللہ عزوجل سے ڈرتے رہو گے اور بيدميري وصيت ہے اور ميں تمہيں سلام كرتا ہول۔"

حضرت عمر فاروق بالهن نے ۲۳ جمادی الثانی ۱۳ کو منصب خلافت سنجالا۔ اس وقت آپ شائنز کی عمر مبارک قریباً باون برس تھی۔ آپ رہائنز منصب خلافت برفائز ہونے کے بعد منبر برتشریف لاے اور ذیل کا خطبہ دیا۔ "ا ہے اوگو! میں جمی تمہاری طرح انسان ہوں اگر مجھے حضرت ابو بمرصد بن بنائن كى نافر مانى كاخيال نه بوتا تو ميس بمى تمهارا حاتم بنايىندنەكرتا_

> اے لوگو! الله عزوجل نے مجھے تمہارے لئے آزمائش بنایا ہے اور تہمیں میرے کے آزمائش بنایا ہے۔جونیک کام کرے گا میں بھی اس کے ساتھ نیکی کروں گا اور جو برائی کا مرتکب ہوگا میں اس کوعبر تناک سز ا دوں گا۔''

مجر حضرت عمر فاردق والنيئة في الله عزوجل كى باركاه ميس يوس دعاكى -''البی! میں بخت ہوں مجھے زم کر دے۔

الني! مِن كمزور بول مجھے طاقتور بنا دے۔

الني! ميں بخيل ہوں مجھے تني بنادے۔''

لوگوں کے دلوں میں حضرت عمر فاروق مٹائٹؤ کی سختی کے متعلق شکوک پیدا ہوئے تو آپ برالنیز نے انہیں مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

الناسة على السريق بن الناس المعلى المسلم الم

" دو تمهین علم ہونا جائے میری تخی اب کم ہو چکی ہے البتہ میں مسلمانوں پر کسی ظلم اور ظالم کا وجود برداشت نہیں کروں گا۔
مسلمانوں پر کسی ظلم اور ظالم کا وجود برداشت نہیں کروں گا۔
میں امن اور سلامتی اختیار کرنے والوں کے ساتھ نرم رہوں گا۔
- اور ظالموں کو حرف غلط کی مانند صفح ہستی سے مٹا کر دم لوں گا۔

حضرت سعید بن مسینب را النفظ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق ولائن جس مسید بن مسینب را النفظ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق ولائن جسب منصب خلافت پر فائز ہوئے تو آپ را النفظ مسجد نبوی مشیط النفظ میں تشریف لائے اور ذیل کا خطبہ ارشا و فرمایا۔

''اما بعد! میں جانیا ہوںتم مجھے سخت دیکھتے ہواور میری بختی کی وجہ رہے کہ میں نے حضور نبی کریم مطابعتی کے ہمراہ ایک عرصہ كزارا ٢ اور ميس حضور ني كريم يطفيكين كاخادم تها اورحضور ني كريم يضيئة لوكول يركريم تنه اور ميل حضور نبي كريم يضايينا کے مقابل ایک تکوار کی ما نند تھا جسے حضور نبی کریم مضافی اللے نے میان میں رکھا اور مجھے جس امرے منع کیا میں اس سے بازر ہا اور پھر حضور نبی کریم مٹنے بیٹا اس دنیا ہے کوج کر گئے اور حضور نی کریم مطاع تناخ بنے جب وصال فرمایا اس وفت مجھ سے راضی تھے۔ پھر حضرت ابو بکر صدیق خالفۂ خلیفہ مقرر ہوئے اور میں حضرت ابوبكر صديق والنيز كے ساتھ رہا اور وہ رقبق القلب اور رحم كرنے والے تھے اور میں ان كا بھی خادم تھا اور ميري تختی ان کی نرمی کے ساتھ ال جاتی تھی۔ اگر حضرت ابو برصدیق والنيز بحص كى بات سے ركنے كا حكم ديتے تو ميں اس سے رك

المناسبة على المناخ الم

جاتا تھا اور پھر حضرت ابو بکر صدیق فاتن کھی اس دنیا سے کوچ کر گئے اور جب ان کا وصال ہوا تو وہ مجھ سے راضی سے اور انہوں نے مجھے فلیفہ مقرر کیا۔ اب جبکہ میں فلیفہ بن چکا ہوں تو تم مجھے جانے ہواور تمہیں میرا بخو بی تجربہ ہاور تم حضور نبی کریم مضابح کی سنت سے بھی بخوبی آگاہ ہو۔ میں مضور نبی کریم مضابح کی سنت سے بھی بخوبی آگاہ ہو۔ میں کمزوروں کو ان کا حق دلوانے والا ہوں۔ اب اللہ کے بندو! اللہ عزومل سے ڈرو اور خود کو میری مدد پر آبادہ کرو اور اپنی اللہ عزوما سے ڈرو اور خود کو میری مدد پر آبادہ کرو اور اپنی جانوں کو میری سزاسے محفوظ رکھواور مجھے امر بالمعروف اور آپی عن المنکر کے ذریعے تنبیہ کرو اور اللہ عزومل نے مجھے تمہارے عن المنکر کے ذریعے تنبیہ کرو اور اللہ عزومل نے مجھے تمہارے عن المنکر کے ذریعے تنبیہ کرو اور اللہ عزومل نے مجھے تمہارے عن المنکر کے ذریعے تنبیہ کرو اور اللہ عزومل نے مجھے تمہارے عن المنکر کے ذریعے تنبیہ کرو اور اللہ عزومل نے مجھے تعبار کے خور دہ نہ ہونا۔'

جیسا کہ گذشتہ اوراق میں ایک روایت بیان ہوئی کہ جب حضرت ابوبکر
صدیق والفئ کی طبیعت ناساز ہوئی تو آپ والفئ نے کھڑی سے جما تک کر لوگوں
سے فرمایا بلاشبہ میں نے تم سے ایک عہد کیا اور کیا تم اس عہد پر راضی ہو؟ لوگوں نے
عرض کیا ہم راضی ہیں۔ حضرت علی الرتفئی والفئ کھڑے ہوئے اور فرمایا جب تک
منصب امارت کو حضرت عمر فاروق والفئ کی تی بیرونہیں کیا جائے گا ہم راضی نہ ہوں
کے اور پھر حضرت ابو بکر صدیق والفئ نے ایسانی کیا چنا نچہ جب حضرت عمر فاروق
رفانون نے بھی
رفانون کے دست اقدی پر لوگوں نے بیعت کی تو حضرت علی الرتفئی والفئ فی والفئ نے بھی
بغیر کی تر دد کے بیعت میں سبقت کی۔

O___O

المناب على المنافي الم

دورِ فاروقی طالته میں اجتہادی فقهی فیصلے

وجدان میں حیدر رہائٹنؤ کی محبت کے لگا ہوں

حیدر رہائٹنؤ کو بنایا گیا ہے مولا میرے آگے

حضرت عمر فاروق رہائٹنؤ کے دور خلافت میں جو مجلس شوریٰ قائم کی گئی جس

میں جلیل القدر صحابہ کرام جو گئین کو شامل کیا گیا۔ ان صحابہ کرام جو گئین میں حضرت عثمان غنی ، حضرت علی المرتضی ، حضرت عبدالرحمٰن بن عوف ، حضرت معاذ بن جبل ،

عثمان غنی ، حضرت لیا بن اور حضرت الی بن کعب جی گئین شامل ہے۔ مجلس شوریٰ کا کام

حضرت زید بن ٹابت اور حضرت الی بن کعب جی گئین شامل ہے۔ مجلس شوریٰ کا کام

قما کہ وہ کہ وہ دو مرہ کے معمولی اور ایم نوعیت کے تمام معاملات کو نبائے۔ جب کوئی اہم

مسئلہ در چیش ہوتا تو مجلس شوریٰ کے ارکان اکا ہر مہاجر وانصار کا اجلاس طلب کرتے

جس میں سب کی رائے معلوم کرنے کے بعد فیصلہ کیا جاتا۔

حضرت علی المرتضی دلافتی کو دور فاروقی دلافتی میں بھی و پہے ہی قدر کی نگاہ سے دیکھا جاتا تھا جیسا کہ حضور نبی کریم مضیقیم کی طاہری حیات اور حضرت ابو بحر مبدیق دلافتی سے دیکھا جاتا تھا جیسا کہ حضور نبی کریم مضیقیم کی فلاہری حیات میں اور حضرت مرفاروق دلافتی مبدیق دلافتی سے مشورہ کرتے ہے۔ دور آپ دلافتی سے مشورہ کرتے ہے۔ دور قاروقی دلافتی سے مشورہ کرتے ہے۔ دور فاروقی دلافتی میں آپ دلافتی کے اجتہادی اور فقیمی فیصلے کتب سیر کا حصہ جیں۔ ذیل میں آپ دلافتی میں کے ان کا مختصرا

بیان کیاجارہا ہے تا کہ قارئین کے لئے ذوق کا باعث بنیں۔ حضرت عمر فاروق طالٹنڈ کے وظیفہ میں اضافے کا فیصلہ:

حضرت عمر فاروق و الني فلفه مقرر ہونے سے پہلے تجارت کیا کرتے تھے۔ جب آپ جس کے ذریعے وہ اپنے اہل وعیال کے گزر بسر کا انتظام کرتے تھے۔ جب آپ و النی کے کندھوں پر خلافت کا بوجھ آیا تو تجارت کو مزید جاری رکھنا ممکن ندر ہا چنا نچہ لوگوں نے آپ و النی کو حضرت ابو بکر صدیق و النی کی طرح بیت المال سے وظیفہ لوگوں نے آپ و النی کی تجویز پیش کی۔ آپ و النی نے اپنے لئے وہی وظیفہ مقرر کیا جو حضرت ابو بکر صدیق و النی کی تجویز پیش کی۔ آپ و النی نے اپنے لئے وہی وظیفہ مقرر کیا جو حضرت ابو بکر صدیق و النی کی تجویز پیش کی۔ آپ و النی کے عرصہ کر رنے کے بعد بید وظیفہ آپ و النی کی کے مقرر تھا۔ پھے عرصہ کر رنے کے بعد بید وظیفہ آپ و النی کی کا من کی تا گئی کے مقرت علی المرتضی و النی کی کا من کی تا گئی کے وظیفہ میں اضافہ کی درخواست دیگر اکا برصحابہ کرام و کا گئی کے سامنے پیش کی جس پر تمام صحابہ کرام و کا گئی نے متفقہ طور پر آپ و النی کی جس پر تمام صحابہ کرام و کا گئی نے متفقہ طور پر آپ و النی کی جس پر تمام صحابہ کرام و کا گئی نے متفقہ طور پر آپ و النی کی جس پر تمام صحابہ کرام و کا گئی نے متفقہ طور پر آپ و النی کی دس پر تمام صحابہ کرام و کا گئی نے متفقہ طور پر آپ و النی کی دس پر تمام صحابہ کرام و کا گئی کا خطور پر آپ و کا گئی کی دس پر تمام صحابہ کرام و کا گئی کے متفقہ طور پر آپ و کی منظور کی دے دی۔

حضرت عمر فاروق والنين كوجهاد برجائے سے روكنا:

لشکراسلام کے ہاتھوں زبردست شکست نے ایرانیوں کا غرور فاک ہیں ملا دیا تھا۔ مسلمان عراق کے بیشتر علاقوں پر قابض ہو چکے تھے۔ اس دوران ایرانی تخت پر یز دگرد ممکن ہوا۔ یز دگرد کی حکمت عملی کی بناء پر ایرانیوں نے عراق کے ان مفقوحہ علاقوں ہیں جن پر اب اسلامی حکومت قائم ہو چکی تھی شرائگیزی شروع کردی۔ یزدگرد کی اس منعوبہ بندی کی وجہ سے بے شار مفتوحہ علاقے ایک مرتبہ ایرانی مملکت کے زیر تسلط چلے گئے۔ حضرت عمر فاروق والٹین کو جب ان واقعات کی خبر ہوئی تو آپ والٹین کے نہر ہوئی تو آپ والٹین کے نہر ہوئی تو آپ والٹین کے نہر ہوئی اور اس مرتبہ آپ

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

ر المنتر علی می المالی می المالی الم

و النفظ نے بوے بیانے پر جہاؤی تیاریاں شروع کر دیں۔ آپ و النفظ نے فیصلہ کیا کہ اس مرتبہ خود لشکر اسلام کی قیادت کریں گے اور ایرانیوں کو ایبا سبق سکھا کیں گے کہ وہ آئندہ شرا گیزی سے توبہ کرلیں گے۔ آپ و النفظ جب لشکر کی تیاری کے بعد خود مدینہ منورہ سے جانے لگے تو اس موقع پر حضرت عثمان غنی اور حضرت علی المرتفظی وی ائتی اور حضرت عثمان غنی اور حضرت علی المرتفظی وی ائتی اور حضرت عثمان غنی اور حضرت علی المرتفظی وی المرتفظی نے آپ و النفظ کو جباد پر جانے سے روک دیا اور کہا کہ آپ والنفظ کے ایمانیوں کی سرکو لی کے النفظ کے کے مناسب نہ ہوگا بلکہ آپ والنفظ کو چیا ہے کہ ایرانیوں کی سرکو لی کے لئے کسی قابل اور اہل شخص کو سالار مقرر فرما کیں۔

حضرت عمر فاروق والنيز نے ان اکابر صحابہ کرام وی این کے مشورہ کو ترجیح دیتے ہوئے ان سے لشکر کے سالار کے متعلق مشورہ کیا کہ ان کی زگرہ میں کے لشکر کا امیر مقرد کیا جائے؟ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف والنیز نے مشورہ دیا حضرت سعد بن ابی وقاص والنیز کوشکر کا سالا رمقرر کریں۔ آپ والنیز نے اس مشورہ کو بہند کیا اور حضرت سعد بن ابی وقاص والنیز کو تھم دیا کہ وہ لشکر اسلام کو لے کر حضرت شی بن حارث والنیز کے باس پنجیس جواس وقت عمراق کے ایک سرحدی علاقے سراف میں آٹھ برار کے لشکر کے بھر اہموجود تھے۔

س ججری کے آغاز کامشورہ دینا:

خطرت عمر فاردق وللنفظ في المين دورخلافت ميں باتا عدہ ہجری سال کا آغاز کيا اور اس مقصد کے لئے حضرت علی المرتضی ولائنظ کے مشورہ ہے حضور نبی کریم مطابق کی ہجرت سے منظ سال کا آغاز کیا اور سال کا آغاز محرم الحرام سے کیا گیا۔

حضرت عمر فاروق شائعية كمتعلق آب شائعة كافيصله:

حفرت عمر فاروق ولا تنز ایک مرتبه مال تقسیم کرنے گے اور آپ ولا تنز کی مال کی تقسیم کا آغاز حفرت سیّد تا امام حسین و کالیز سے کیا تو آپ ولائن کے صاحبر اور حضرت عبداللہ ولائن نے کہا پہلے جھے مال عطا کریں میں اس کا زیادہ حق رکھتا ہوں اور میں امیر المونیین کا بیٹا ہوں۔ آپ ولائن نے بینے میں اس کا زیادہ حق رکھتا ہوں اور میں امیر المونیین کا بیٹا ہوں۔ آپ ولائن نے بینے کی بات سی تو فرمایا تو پہلے ان کے باپ جیسا باپ لے کر آؤ اور ان کے جدامجد جیسا اپنا جدامجد کے بات میں اس کا تا جدامجد عبدا کا مال مالکو۔

راوی کہتے ہیں حضرت سیّدنا امام حسن اور حضرت سیّدنا امام حسین دی النینا کے گوش گرزار کیا۔ حضرت علی الرتضای دی گئی کے گوش گرزار کیا۔ حضرت علی الرتضای دی گئی کے گوش گرزار کیا۔ حضور نبی الرتضای دی النظام دی گئی ہے گوش گرزار کیا۔ حضور نبی کریم مضاعی کریم مضاعی کا اس کی خبر جرائیل علیا ہے کہ دی تھی کہ محر جنتیوں کے سورج ہیں۔

راوی کہتے ہیں حسنین کریمین دی انتخارے حضرت عمر فاروق والنظیری کو جب حضرت علی فاروق والنظیری کو جب حضرت علی الرتضائی والنیری کا فرمان سنایا تو آپ والنیری النیری کی المرتضائی والد بزرگوار سے کہوکہ وہ میتح برلکھ دیں۔

ایک روایت کے مطابق حضرت عمر فاروق رائٹون نے جب حسنین کریمین رفائف سے یہ بات کی تو کچھ صحابہ کرام رفی آفتی ہے ہمراہ حضرت علی الرتضی رفائف کے مراہ حضرت علی الرتضی رفائف کے مراہ حضور بی کریم مضطفی ہے ایسا گھر پہنچ اور فر مایا اے علی (دفائف)! کیا آپ رفائف نے حضور بی کریم مضطفی ہے ایسا سنا ہے؟ حضرت علی الرتضی والفی والفی سے کہا ہاں! ہم نے حضور بی کریم مضطفی ہے ایسا سنا ہے کہ جرجنتیوں کے سورج ہیں۔ حضریت عمر فاروق والفین نے کہا آپ رفائف ہی سے منازی کے مورج ہیں۔ حضریت عمر فاروق والفین نے کہا آپ رفائف ہی

یۃ روے دیں چنانچہ حضرت علی المرتضی دائی نے یہ تحریر لکھ دی۔
"دیتر رہے علی دائی نے بن ابی طالب کی جانب سے عمر دائی نے بن ابی طالب کی جانب سے عمر دائی نے بن ابی طالب کی جانب سے عمر دائی نے بن ابی طالب کے لئے کہ حضور نبی کریم میں کے لئے کہ حضور نبی کریم میں کے لئے کہ حضور نبی کریم میں کے اللہ عزوج ل کا پیغام پہنچایا کہ عمر جنتیوں کے سے اور انہوں نے اللہ عزوج ل کا پیغام پہنچایا کہ عمر جنتیوں کے سورج ہیں۔"

حضرت عمر فاروق وللنفؤ نے میتحریراپنے پاس محفوظ کرلی اور جب آپ ولائفؤ کو زخمی کیا گیا تو آپ ولائفؤ نے اپنی اولا دکو وصیت کی کہتم فلاں تحریر لاؤ اور جب وہ تحریر لے آئے تو آپ ولائفؤ نے فرمایا کہ اسے میر سے ساتھ میر کے فن میں دکھ دینا چنا نچہ آپ ولائوؤ کے فرمان کے مطابق بوقت تدفین ایسا ہی کیا گیا۔ شرا بی کی سز اسی کوڑ ہے کرنے کا فیصلہ:

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق بڑائنڈ نے اپے مشیروں سے مشورہ کیا کہ اگرکوئی شخص شراب ہے تو اس کی کیا سزا ہوئی چاہئے؟ حضرت علی الرتضٰی بڑائنڈ نے فرمایا اس کی سزااس کوڑے ہوئی چاہئے۔ آپ بڑائنٹ نے حضرت علی الرتضٰی بڑائنٹ کے فیصلے کوسرا ہے ہوئے تھم جاری کیا کہ شرابی کی سزااس کوڑے ہوگی۔ قاضی یعلیٰ کے فیصلے کی تو ثیق کرنا:

منقول ہے ایک شخص حضرت عمر فاروق والفن کے قاضی یعلیٰ کے پاس آیا اور اس کے ہمراہ ایک اور شخص تفا۔ اس نے الزام لگایا کہ بیشخص میرے بھائی کا قاتل ہے۔ قاضی یعلیٰ نے اسے مرحی کے حوالے کر ہیا۔ مدعی نے اس شخص کو اپنی تاتل ہے۔ قاضی یعلیٰ نے اسے مرحی کے حوالے کر ہیا۔ مدعی نے اس شخص کو اپنی تکوار کے وار سے مارا اور اس گمان پر کہ آب بیمر جائے گا اسے زخمی حالت میں اس کے وارثوں نے اس کا علاج کیا اور وہ ا

المنتسبة على المستريخ المائية كي فيصل المائلة المائلة

تندرست ہو گیا۔ مدعی ایک مرتبہ پھراس قاتل کو لے کر قاضی یعلیٰ کے پاس آیا اور کہا یہ میرے بھائی کا قاتل ہے۔قاضی یعلیٰ نے کہا میں نے اسے تیرے حوالے کئے تھا۔ مدعی بولا میں نے اس پر تلوار کا وار کیا تھا اور بیشدید زخمی ہو گیا تھا بھر میں نے اسے اسے اس کے دارتوں کے حوالے کر دیا مگریہ زندہ نے گیا۔ قاضی یعلیٰ نے اس مخص کے زخموں کو ملاحظہ کیا اور اس قاتل کے باز و برکار ہو چکے تھے۔ قاضی یعلیٰ نے ان زخموں کا شار کیا اور مدی سے کہا کہ جھے پرشرعاً ان کی دیت اور تاوان واجب ہے اور اب تو یا تو تاوان کی رقم اوا کر اور اسے قبل کر دے یا پھر اسے چھوڑ دے كونكه توني اين يهلي حمله مين بير كمان كيا تفاكه بيه مارا جا چكا بي مكر بياني كيا-مدی کو قاضی یعلیٰ کے فیصلہ سے تملی نہ ہوئی اور اس نے حضرت عمر فاروق طالفیٰ کی خدمت میں حاضر ہو کر قاضی یعلیٰ کی شکایت کی۔آپ طالنی نے قاضی یعلیٰ کو بلایا اور ان سے مقدمہ کی تفسیلات دریافت کیس۔ اس وقت حضرت علی الرتضلی طالفند مجھی آپ بٹائنیز کے پاس تشریف فر ما تھے۔حضرت علی الرتضنی بٹائنز نے قاضی یعلیٰ کے فیصلہ کی تو یتن فرمائی اور فرمایا کہ قاضی یعلیٰ کا فیصلہ درست ہے۔آب برالتنظ نے بھی حضرت علی المرتضلی والنفذ کے فیصلہ کوسراہا اور قاضی یعلیٰ کے خلاف دائر اس درخواست كوخارج كرويا_

ایک عورت کے مقدمہ کا فیصلہ:

منقول ہے حضرت عمر فاروق وظائن کے پاس ایک عورت کا مقدمہ پیش ہوا جس نے بیاس کی شدت کی وجہ سے ایک چرواہے سے پانی مانگا اور اس چرواہے نے ایک مانگا اور اس چرواہے نے اس شرط پر پانی وینے کا وعدہ کیا کہ وہ اس کے ساتھ ہم بستری کرے گی۔ اس عورت نے بیاس کی شدت کی وجہ سے وعدہ کرلیا اور باامر مجبوری اسے اپنے گی۔ اس عورت نے بیاس کی شدت کی وجہ سے وعدہ کرلیا اور باامر مجبوری اسے اپنے

ساتھ فعل بدکی اجازت دے دی۔ حضرت عمر فاروق رفی فیٹیڈ کے پاس اکابر صحابہ کرام بنی فیٹیڈ نے بنی نیڈ نیٹی تشریف فرما سے جن میں حضرت علی المرتضی طابعتی سے آپ بنی فیٹیڈ نے اس معاملہ پر مشورہ طلب کیا تو حضرت علی المرتضی طابعتی نے فرمایا چونکہ اس نے بیہ فعل بد باامر مجبوری کیا لہٰذا اے چھوڑ دیا جائے۔ آپ طابعتی نے حضرت علی المرتضی طابعتی کے فیصلے کو سراجتے ہوئے اس عورت کو جانے کا تھم دے دیا۔

د ایک مجنون عورت پر حد جاری نہ کرنے کا فیصلہ:

منقول ہے ایک مرتبہ حضرت علی المرتضى بنالنین مدیندمنورہ کی گلیوں سے گزررے تھے کہ آپ رہائنیو نے کچھ لوگوں کو دیکھا جو ایک عورت کو تھیٹتے ہوئے کے جارہے تھے اور وہ عورت خوف سے تھرتھر کانپ رہی تھی۔ آپ طالفین نے ان لوگوں سے یو چھا کہتم اس عورت کو بول کیوں تھسیٹ رہے ہو؟ وہ بولے بیعورت زنا کی مرتکب ہوئی ہے اور امیر المونین حضرت عمر فاروق بٹائنٹے نے اس پر حد جاری کی ہے۔ آپ بھائنڈ نے اس عورت کو ان لوگوں کے چنگل سے جھٹرایا اور ان لوگوں کی سرزنش کی نه وہ لوگ حضرت عمر فاروق بنائنی ہے۔ پاس کئے اور تمام ماجرا بیان کیا۔حضرت عمر فاروق بنائنیز نے فرمایا علی (نائنیز) ضرور آگاہ ہوں ئے کہ انہوں ئے کس وجہ سے ایسا کیا ہے؟ پھر حضرت عمر فاروق بٹائین نے آپ بٹائیز کو بدوایا اور مسكه وريافت كيا- آب بالنفذ فرمايا كيا امير المونين بالبيز في منه رنبي ريم مُنْ يَكُمُ كَا فَرِمَانَ نَهِينِ سَنَا كَهُ مِينَ لُوكَ السِيحِ مِن جَن تَنْكُمُ النَّمَا لِيا يَهِ بِي فِينَ ان کے اعمال کا مجھموا خذہ ندہوگا۔ اوّل سونے والا جب تک کہوہ بیدار ندہو بان، دوم تابالغ جب تک که ده بالغ نه بهوجائے اور سوم وہ جس کے حواس اس کا ساتھ نہ دیں اور وہ مجنون ہو۔ میر عورت مجنون ہے اور اے دیوائلی کا دورہ پڑتا ہے ہذا ہی

پر حدود جاری نہیں ہوسکتی۔حضرت عمر فاروق وٹائٹیؤ نے آپ وٹائٹیؤ کے فیصلے کوسرا ہے ہوئے اس عورت کور ہا کرنے کا حکم جاری کر دیا۔ معدد معاند میں میں ہوتا اس فی اس فی

میں عمر (طالبین) کے فیصلے کوئیس بدلوں گا:

منقول ہے کہ اہل نجران اور حضور نبی کریم مضابقینے کے مابین ہونے والا معاہدہ حضرت علی الرتضلی ڈاکٹنؤ نے تحریر کیا تھا اور پھر جب دورِ فاروقی ڈاکٹنؤ میں اہل نجران کی تعداد بڑھ گئی اور ان کے مابین اختلافات پیدا ہو گئے۔حضرت عمر فاروق ر الفن کو بھی بیاند بیشدلاحق تھا کہ بیں ان کی تعداد برجے سے مملکت اسلامیہ کو پھھ نقصان نہ پہنچے۔اس دوران اہل نجران کا ایک دفد حضرت عمر فاروق والٹنیز کے پاس آیا اور معاہدہ میں تبدیلی کا مطالبہ کیا۔حضرت عمر فاروق بنائنیز نے کی مرضی کے موافق معاہدہ میں کچھردوبدل کر دیا۔ پھراہل نجران اس نے معاہدہ پرخود ہی نادم ہوئے اور انہوں نے حضرت عمر فاروق خالفنز سے ان بنی شرا لط کوختم کرنے کا مطالبہ کیا۔حضرت عمر فاروق بنائنی نے ان کا مطالبہ مانے سے انکار کر دیا اور انہیں کھے ، جرمانه بھی کر دیا۔ اہل نجران کا بدوفد حضرت علی المرتضى طائفی کے یاس میا اور عرض كياكه جارى سفارش كري اورآب والنفيز في اين داية باته سعارا معامده تحرير كيا تفا-آب رالنفظ نے فرمايا عمر (والنفظ) راست كو اور معامله فهم بيل ميل ان کے فیصلے کو ہر گرنہیں بدلوں گا۔

عثمان عنى طالفية مضبوط، قوى اور امين بين:

روایات میں آتا ہے ایک مرتبہ صدقہ کے پھے اونٹ بیت المال میں آتا ہے ایک مرتبہ صدقہ کے پھے اونٹ بیت المال میں آگے۔ حضرت عمر فاروق والفی و خالفتا کو آئے۔ حضرت عمل المرتضی و خالفتا کو بلا بھیجا تا کہ ان کے کواکف تیار کے جا کیں۔ اس دوران آپ والفی خود دھوپ میں بلا بھیجا تا کہ ان کے کواکف تیار کے جا کیں۔ اس دوران آپ والفی خود دھوپ میں

www.iqbalkalmati.blogspot.com

187

المنتسوع السلطى المنتواك فيعلل المنافع ال

کھڑ ہے ہوکران اونٹوں کے رنگ ،عمر اور حلیہ لکھواتے رہے۔

مؤرضین لکھتے ہیں حضرت عثمان عنی وظافی سابیہ میں بیٹھے اونٹول کے کواکف تحریر فرمار ہے تھے جبکہ حضرت علی المرتضلی وٹائٹیڈ سر پر کھڑ ہے لکھوار ہے تھے اور حضرت عمر فاروق وٹائٹیڈ بتاتے جاتے تھے۔ حضرت عمر فاروق وٹائٹیڈ کے پاس اس وقت دو کالی چا در یں تھیں جن میں سے ایک کوآپ وٹائٹیڈ نے بطور تہبند ہاندھا ہوا تھا جبکہ دوسری کو اوپر لپیٹ رکھا تھا اور آپ وٹائٹیڈ اونٹوں کو گنتی کر کے ان کے رنگ اور ان کے دانت کھوار ہے تھے۔

حضرت علی المرتضی و الفیز نے اس موقع پر حضرت عثان عنی والفیز ہے کہا کہ کیا آپ والفیز نے حضرت معیب علیائل کی صاحبز ادی کا قول حضرت موسی علیائل کے کیا آپ والفی میں کیا گیا ہے علیائل کے متعلق نہیں پڑھا جس کا ذکر قرآن مجید میں سورہ القصص میں کیا گیا ہے علیائل کے متعلق نہیں بڑھا جس کا ذکر قرآن مجید میں سورہ القصص میں کیا گیا ہے ابا جان! انہیں ملازم رکھ لیجئے کیونکہ بیرہ وہ ہیں جوان سب سے بہتر ہیں جنہیں آپ علیائل ملازم رکھنا جا ہیں اور بی قوی اور امین ہیں۔

حضرت عمر فاروق وللنيئ في حضرت على الرئضلي وللنيئ كي بات سني تو حضرت على الرئضلي وللنيئ كي بات سني تو حضرت عثمان غني وللنيئ كي جانب اشاره كرتے ہوئے فرمایا۔
"بیمضبوط، قوى ادرا مين ہیں۔"

ایک عورت اور اس کے بیٹے کے مابین فیصلہ:

بحار الانوار میں منقول ہے کہ ایک غلام نے حضرت عمر فاروق والنفؤ کی خدمت میں حاضر ہوکرا پی مال کی شکایت کی کہ وہ مجھے بیٹالشلیم کرنے سے انکاری ہودمت میں حاضر ہوکرا پی مال کی شکایت کی کہ وہ مجھے بیٹالشلیم کرنے سے انکاری ہوافت ہے جس کی وجہ سے میں انتہائی مفلسی کی زندگی بسر کرر ما ہوں۔ آپ والفی نے تعلم دیا اس عورت کو چیش کیا جائے چنانچہ کی زندگی بسر کرر ما ہوں۔ آپ والفی نے تعلم دیا اس عورت کو چیش کیا جائے چنانچہ

المناسر على المنافع المانية كرفيه لمانية المنافع المنافعة المنافعة

اس عورت کو آپ رٹائنڈ کے سامنے پیش کیا گیا۔ آپ رٹائنڈ نے اس عورت سے کہا تو اس شخص کو اینا بیٹا مانے سے کیوں انکاری ہے؟ وہ عورت بولی میرجھوٹ بولتا ہے اور میں باکرہ ہوں اور میں نے آج تک کسی مرد کوئبیں دیکھا لینی کسی مرد کے ساتھ صحبت نبیں کی۔ آپ رہائیڈ نے فرمایا کیا تیرے باس اپنی بات کے گواہ موجود ہیں؟ وہ عورت بولی ہاں! میرے یاس گواہ ہیں۔آپ مٹائٹنز نے اس عورت سے کہا پھر تو اینے گواہ پیش کر۔ وہ عورت گئی اور اسینے ہمسایہ کی عورتوں کو دس دیں دیار بطورِ رشوت دیئے تا کہ وہ اس کے حق میں گواہی دیں اور انہیں لے کر آپ بڑالنز کے یاس آگئی۔آب بڑالٹنز نے جب ان گواہوں سے اس عورت کے باکرہ ہونے کے متعلق یو جھاتو ان تمام عورتوں نے اس بات کی تصدیق کی۔ وہ غلام بولا بیتمام عورتیں جھوٹ بولتی ہیں اور سعد بن مالک مزنی میرا باپ ہے اور میں قحط کے سال پیدا ہوا۔ میری پرورش بھیڑ کے دودھ سے ہوئی ہے ادر پھر میں جوان ہوا تو میرا باب سفر پر چلا گیا اور ایک عرصه گزرگیا وہ واپس نہیں لوٹا۔ میں نے اپنے باب کے دوستوں سے دریافت کیا تو وہ کہنے لگے تیرا باپ مرگیا ہے۔ جب میری مان کواس کی خبر ہوئی تو اس نے تمام جائداد پر قابض ہونے کے لئے جھے اپنا بیٹالشلیم کرنے ت انکار کردیا اور آج میں انتہائی مفلسی کی زندگی گزارنے پر مجبور ہوں۔

حضرت عمر فاروق برائیز؛ جب فریقین کی با تیں س چکے اور گواہوں کے بیاں چلتے بیانات بھی سن نے قد فر مایا بیا ایک بیجیدہ مسئلہ ہے آؤ ہم علی (برائیز؛) کے بیاس چلتے ہیں۔ بھر آپ برائیز؛ دونوں فریقین اور گواہوں کے ہمراہ حضرت علی المرتضٰی برائیز؛ دونوں فریقین اور گواہوں کے ہمراہ حضرت علی المرتضٰی برائیز؛ کے بیاس کئے ادر تمام مسئلہ بیان کیا۔ حضرت علی المرتضٰی برنائیز؛ نے دونوں فریقین اور گواہوں سے فرمایا کہ وہ مسجد نبوی بیٹے بیٹی جا کیں اور میں بھی مسجد نبوی بیٹے بیٹی بیں اور میں بھی مسجد نبوی بیٹے بیٹی بیں

المنت على المنتوك في المنتوك المنتوك

عاضر ہوتا ہوں۔

روایات میں آتا ہے حضرت علی المرتضلی خالفہ نے مسجد نبوی منتے ہوئیہ جس کر ا بينے غلام قنبر سے فرمايا اس شخص كى مال كو بلاؤ۔ جب وہ عورت آئى تو آپ طالفظ نے اس عورت سے فرمایا تو کیوں اس بات کا انکار کرتی ہے کہ بیر تیرا بیٹانہیں ہے؟ وہ عورت بولی میں باکرہ ہوں اور مجھے کسی مرد نے آج تک نہیں جھوا بھر میں کیسے ال مخص كى مال ہوسكتى ہوں؟ آپ را الفيظ نے فرمایا تو اليي بات نہ كر اور تو جانتى ہے کہ میں کون ہوں؟ وہ عورت بولی اگز آپ شائنڈ کومیری بات کا یقین نہیں تو پھر . تحمی طبیب خانون کو بلائیں اور اس ہے کہیں وہ میرا معائنہ کرے۔ آپ طالفہٰ نے ا یک طبیب خاتون کو بلایا اور وہ اس عورت کو تنہائی میں لے گئی۔ تنہائی میں اس عورت نے اس طبیب خاتون کوسونے کا ایک کنگن دیا اور کہا کہتم میرے حق میں گواہی وینا که میں باکرہ ہوں۔ وہ طبیب خاتون، آپ دلائنڈ کی غدمت میں حاضر ہوئی اور گوائی دی کہ بیعورت باکرہ ہے اور اے کسی مرد نے آج تک نہیں چھوا۔ آپ وللنظيظ نے فرمایا تو جھوٹ بولتی ہے۔ پھرآپ والنفیظ نے اینے غلام قسمر سے فرمایا کہم اس کی تلاشی لو۔ جب اس طبیب خاتون کی تلاشی لی گئی تو اس سے سونے کا ایک منگن برآمد ہو گیا۔ آپ طالفند نے اس عورت کو بلایا اور فرمایا تو مجھے جانتی ہے اور جبكه توابي بات سے انكارى ہے تو ميں تيرى اس شخص سے شادى كرنا جا بتا ہوں اور تواسے اپنا شوہر بنا لے۔ وہ عورت یولی مگر آپ جائٹنڈ کے اس فیصلے میں شریعت محمہ ی مِضْ مَعْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّا الللَّهُ اللَّهُ رکاوٹ ہوگئی؟ وہ عورت بولی وہ میرا بیٹا ہے اور شریعت محدی مطابقیا میں مال اور بینے کا نکاح نہیں ہوسکتا۔ آپ طالفت کی ذہانت سے اس عورت نے اقرار کرلیا تھا

المناسبة على المنافئة كالمعلى المنافئة كالمعلى المنافئة كالمعلى المنافئة كالمنافئة كال

کہ وہ مخص اس کا بیٹا ہے۔ آپ ولیٹن نے فرمایا تو نے میری بات کا پہلے انکار کیوں کیا؟ وہ عورت بولی میں جا ہتی تھی کہ میں تمام جائیداد کی اکلوتی وارث بنوں اس کیا؟ وہ عورت بولی میں جا ہتی تھی کہ میں تمام جائیداد کی اکلوتی وارث بنول اس لئے میں نے اسے بیٹائشلیم کرنے سے انکار کیا۔ آپ ولیٹن نے فرمایا تو بارگاہ الہٰی میں صدق ول سے تائب ہو۔

ایک امانت کا فیصله:

منقول ہے دو مخص ایک تھیلی میں سو دینار لے کر ایک عورت کے پاس سے اور اس سے کہا تو ہاری بیامانت اینے یاس رکھ لے اور جب تک ہم دونوں ا تعظمے تیرے یاس نہ آئیں تو بیامانت کسی ایک کو دالی نہ کرتا۔ چر چھوعرصہ بعد دونوں میں سے ایک مخض اس عورت کے یاس آیا اور ان سو دیناروں کی والیس کا مطالبه كيا۔ اس عورت نے وہ سووينار دينے سے انكار كر ديا اور كہا كه جب تك تم دونوں میرے پاس استھے ہو کرنہیں آؤ کے میں حمہیں میددینار ہر گز نہ دول کی۔اس مخص نے کہا میرے ساتھی کا انقال ہو گیا ہے۔ اس عورت نے پھر بھی اسے وہ وینار واپس کرنے ہے انکار کر دیا۔ وہ مخض اس عورت کے قبیلہ کے اکابرین کے یاس کیا اور انہیں تمام واقعہ بیان کیا۔ان اکابرین نے اس عورت سے کہا کہتم وہ سودینارات دے دو کہاس کا ساتھی مرچکا ہے۔ اس عورت نے اسے قبیلہ کے ان ا كابرين كے فيصلہ براس مخض كو وہ سودينار دے ديئے۔ پھراس واقعہ كوايك سال كا عرصہ بیت کیا اور ایک سال بعد وہ ووسر المخص اس عورت کے یاس آیا اور اس سے بطور امانت رکھوائے مجے سو دینار کی واپسی کا مطالبہ کیا۔ اس عورت نے کہا تیرا دوسرا ساتھی میرے پاس آیا تھا اور اس نے کہا تھا کہ میرے ساتھی کا انتقال ہو گیا اور میں نے اپنے تبیلہ کے اکا برین کے فیملہ کے مطابق وہ سودینارات دے دیئے

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

الناست على المنافقة كرفيع المنافقة كالمنافقة كالمنافقة كالمنافقة كالمنافقة كالمنافقة كالمنافقة المنافقة المنافقة المنافقة المنافقة كالمنافقة المنافقة كالمنافقة كالمنا

سے۔ وہ مخص اپنے مطالبہ پر قائم رہا۔ پھر جب سے معاملہ طول پکڑ گیا تو اس معاطہ کو حضرت عمر فاروق بڑائنوز کے پاس لے جایا گیا۔ آپ بڑائنوز نے اس عورت سے کہا تو ہر حال میں اسے وہ سو دینار واپس کرنے کی پابند ہے۔ اس عورت نے کہا آپ بڑائنوز ہمیں حضرت علی المرتضی بڑائنوز کے پاس جانے دیں اور وہ ہمارے ماہیں فیصلہ کریں گے۔ آپ بڑائنوز نے اجازت دے دی اور پھر وہ عورت اور شخص دونوں ہی حضرت علی المرتضی بڑائنوز نے اجازت دے دی اور پھر وہ عورت اور شخص دونوں ہی حضرت علی المرتضی بڑائنوز نے واپس کے۔ حضرت علی المرتضی بڑائنوز کے پاس گئے۔ حضرت علی المرتضی بڑائنوز نے فریقین کی المرتضی بڑائنوز کے پاس گئے۔ حضرت علی المرتضی بڑائنوز کے باس گئے۔ حضرت علی المرتضی بڑائنوز نے واپس اس میں اور پھر اس شخص سے فرمایا تو اپنے ساتھی کو لے کر آ اور اپنی امانت واپس نے کہا تھا کہ جب تک ہم دونوں نہ آئیں تو کس ایک کو امانت واپس نہ کرنا اب جبکہ تیرے ساتھی نے مرکبا تو بھی کر کرتا ہے کس ایک کو امانت واپس نہ کرنا اب جبکہ تیرے ساتھی نے مرکبا تو بھی کر کرتا ہے تو اپنی نے ساتھی کو لے کر آور اس میں واپس نے کہا تھا کہ جب تک ہم دونوں نہ آئیں تو اپنی کو رادر اس عورت سے اپنی امانت واپس لے جا۔

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طائنے نے جب حضرت علی الرتضلی الرتضلی الرتضلی الرتضلی الرتضلی الرتضلی الرتضلی دیا گی۔ طائنٹے کا فیصلہ سنا تو ہارگاہِ خداوندی میں دعا کی۔

"اك الله! مجھے على (دالنند) كے بعد برگز زندہ ندر كهنا _"

ایک حامله عورت کے فعل بدمیں مبتلا ہونے کے متعلق فیصلہ:

منقول ہے حضرت عمر فاروق و فائن کے پاس ایک حاملہ عورت کو لایا گیا جو زنا جیسے فعل بد میں مبتلا پائی گئی تھی۔ آپ وائن کے اس سے پوچھا کیا تو نے یہ فعل بد کیا ہے؟ اس عورت نے افرار کر لیا۔ آپ وائن کے اس پر حد جاری فرما دی۔ جب اس عورت کو سنگ ار کر نیا۔ آپ واگھ نے جارے تھے راستہ میں ان دی۔ جب اس عورت کو سنگ ار کرنے کے لئے لوگ لے جارے تھے راستہ میں ان کی ملاقات حضرت علی الرتفنی و ٹائن نے بوچھا کی ملاقات حضرت علی الرتفنی و ٹائن نے بوچھا کے دورت کو کہاں لے جاتے ہو؟ وہ بولے یہ زیادی مرتکب ہوئی ہے اور اس

المنت على المراق المنافق المنا

نے اپنے جرم کا اقرار بھی کرلیا ہے چانچے حضرت بھر فاروق وظائین نے اس پر صد جاری کرتے ہوئے اسے سکسار کرنے کا تھم دیا ہے۔ حضرت علی المرتضی وظائین نے اس عورت کو جھوڑ نے کا تھم دیا اور خود حضرت عمر فاروق وظائین کے پاس جا کراس عورت کے جمعلق دریافت کیا۔ آپ وظائین نے فرمایا اس نے اقرار جرم کیا چنانچہای بناء پر اس پر حد جاری کی گئی۔ حضرت علی المرتضی وظائین فرائین نے کہا وہ عورت حاملہ ہے اور قصور اس عورت کا ہے نہ کہا لہذا آپ وٹائین اس معاملہ پرغور فرما کیں۔ آپ وٹائین نے کہا وہ عورت کا میں۔ آپ وٹائین نے کہا وہ عورت کا میں۔ آپ وٹائین نے کہا کہ المرتضی وٹائین کی بات می تو اس عورت کورہا کرنے کا تھم وے دیا۔

دوران عدت نكاح كافيصله:

ریاض النظر ہ میں حضرت مسروق را النظاف ہے دوایت بیان کی گئی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت محر فاروق را النظاف کے پاس ایک عورت کو لایا گیا جس نے دورانِ عدت نکاح کر لیا تھا۔ آپ را النظاف نے اس عورت سے حق مہر واپس لے کر بیت المال میں جمع کروا دیا اور میاں بیوی دونوں کو الگ کر دیا اور فرمایا کہ دورانِ عدت عورت پر نکاح حرام ہے۔ جب آپ را النظاف کے اس فیصلے کی خبر حضرت علی المرتضی را النظاف کر النظاف کر النظاف کی خبر حضرت علی المرتضی را النظاف کر النظاف کر النظاف کر النظاف کے النظاف کی خبر حضرت علی المرتضی را النظاف کر النظاف کر النظاف کر النظاف کی خبر حضرت علی المرتضی را النظاف کر النظاف کی خبر عضرت علی المرتضی را النظاف کی المرتضی کی ہو جائے اور اس مسئلہ سے نابلد ہے تو پھر عورت حق مہر کی حقد ار سے کیونکہ اس نے خود کو مرد پر حلال کیا اور ان دونوں تکاح کر لیس۔ آپ را النظاف نے اور جب اس عورت کی عدت ختم ہو جائے تو یہ دونوں تکاح کر لیس۔ آپ را النظاف کی بات می تو فرمایا۔

"جس چیز کے متعلق کسی کوعلم نہ ہوتو وہ سنت رسول اللہ مضاعیما

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن ہی وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

النست عمل المنافية كي يعلى المالية الم

آپ طالعین پرروزہ کی قضا واجب ہے:

کنزالعمال میں حفرت سعید بن مسیّب برای نیز سے مردی ہے فرماتے ہیں ایک مرتبہ حفرت عرف اللہ بی ایک مرتبہ حفرت عرفاروق بڑا نیز نے نے اکا برصحابہ کرام بری آئی ہے ہو چھا کہ جھے ایک مسلکہ بتاؤ ۔ صحابہ کرام بری آئی نے بوچھا وہ کیا مسللہ ہے؟ آپ بڑا نیز نے فرمایا میری ایک کنیز ہے جوانتہائی خوبرہ ہے اور میں اس کے ناز وانداز سے اس کی جانب راغب ہوا حالا نکہ میں روزہ سے تھا۔ صحابہ کرام بڑی آئی ابھی تذہذب میں بہتلا تھے کہ وہ اس مسللہ کے متعلق کیا کہیں۔ ان صحابہ کرام بڑی آئی ہی حضرت علی المرتضی بڑا نیز بھی مسللہ کے متعلق کیا کہیں۔ ان صحابہ کرام بڑی آئی ہی حضرت علی المرتضی بڑا نیز ہی بی حضرت علی المرتضی بڑا نیز ہی اس کنیز سے صحبت کی حضرت علی المرتضی بڑا نیز ہی اس کنیز سے صحبت کی جوآپ بڑا نیڈ پر اس کنیز سے صحبت کی جوآپ بڑا نیڈ پر اس کا دوزہ کی قضا واجب ہے اور آگر ہے ماہ رمضان کا روزہ ہوتا تو پھر آپ بڑا نیڈ پر اس کا روزہ کی قضا واجب ہے اور آگر ہے ماہ رمضان کا روزہ ہوتا تو پھر آپ بڑا نیڈ پر اس کا روزہ کی قضا واجب ہے اور آگر ہے ماہ رمضان کا روزہ ہوتا تو پھر آپ بڑا نیڈ پر اس کا کفارہ بھی لازم ہوتا۔

ہاتھ اور یاؤں کئے ہوئے خص کا چوری کرنا:

کنزالعمال میں عبدالرحمٰن بن عابد مُرَائِد سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق والنظائے کے پاس ایک شخص کو لایا گیا جس نے چوری کی تھی اور چوری کی وری کی وجہ سے پہلے بھی اس کے ہاتھ اور پاؤل کا نے حصرت علی الرتفای والنظامی والنظامی والنظامی والنظامی والنظامی والنظامی والنظامی و النظامی و النظام

الانتساخ الدر تفي يُنْ يَوْنَ كُر يُسِيلِ اللهِ المِلْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المُلْمُلِي

ہے جواللہ اور اس کے رسول منظور ہے جنگ کریں ان کے ہاتھ اور پاؤں کا نے جا کیں مراس شخص کے ہاتھ اور پاؤں پہلے ہی کئے ہوئے ہیں الہٰذا اس پرشری سزا کو کم کرتے ہوئے اسے زندان میں ڈلوا دیا جائے۔ آپ دالتہٰذ نے حضرت علی الرتضیٰی خِلْتُونُ کی بات می تو اس شخص کو زندان میں ڈالنے کا تھم دے دیا۔ بیٹی کی شادی فاروق اعظم مِنْ اللہٰذ ہے کرنے کا فیصلہ:

كنزالعمال ميں حضرت ابوجعفر طالتنا سيامنقول ہے حضرت عمر فاروق طالقيًّا نے حضرت علی الرتضلی طالفيًّا كوان كی صاحبزادی حضرت سيّدہ ام كلثوم ظالفتا ے نکاح کا پیغام بھیجا۔حضرت علی الرتضلی طالفن طالفن نے فرمایا میں نے فیصلہ کیا تھا کہ میں اپنی دونوں بیٹیوں کی شادی حضرت جعفر رٹائٹنڈ کے بیٹوں سے کروں گا۔ آپ طلان نے فرمایا اگرتم میری شادی ان سے کرو کے تو اللہ عزوجل کی قتم اکوئی انسان ابیانہ ہوگا جوان کا اکرام مجھ سے بڑھ کر کرنے والا ہوگا۔حضرت علی الرتضلی طالعنہ نے آپ رالنفظ کی بات س کرایی صاحبزادی حصرت سیدہ ام کلوم والنفظ کا تکاح آب طالنيز سے كرديا اور پرمهاجرين نے آب طالنيز كواس شاوى كى مباركباد دى اور اس شادی کی وجہ دریافت کی۔ آپ مظافئ نے فرمایا اگر چہ میری بیٹی کی شادی حضور نبی کریم مطابع استوار ہوئی اور میرا رشتہ حضور نبی کریم مطابع ہے استوار ہوا مگر میں نے جایا میں حضور نبی کریم مضابقة کی نوای سے شاوی کر کے خاندان رسالت مآب مطيعية إسابنارشته مزيد يختد كرلول.

O___O



حضرت عمر فاروق شالٹیڈ کی خلافت کے لئے جھونامزدگیاں

"میں نے لوگوں سے فرمایا تھاتم اینے یاس مجمی کا فرغلاموں کو

الناست على المنافق على المنافق كي المعلى المنافق كي المنافق كي المنافق كي المنافق كي المنافق ا

نەلاۋلىكىنىم لوگول نے ميرا كہانہيں مانا۔"

حضرت عبدالله بن عمر خلی فینا قرماتے ہیں اس کے بعد والد بزر گوار حضرت

عمر فاروق بنالفيز نے حضرت عبدالله بن عباس بنالفیز سے فرمایا۔

" تم جاؤ اورميرے بھائيوں كو بلالاؤ۔"

حضرت عبدالله بن عمر رفی فی فی الفینا فرمات بین حضرت عبدالله بن عباس والفینا نے دریا دنت کیا کون سے بھائی؟ والد بزرگوار نے فرمایا۔

> " عثمان غنى ، على المرتضلي ، طلحه بن عبيدالله، زبير بن العوام ، سعد بن وقاص اورعبدالرحمان بن عوف شائن كو_"

حضرت عبداللہ بن عمر زال خین فرماتے ہیں حضرت عبداللہ بن عباس زال خین ان حضرت عبداللہ بن عباس زال خین ان حضرات کو بلانے چلے گئے اور والد بزرگوار میری گود میں سررکھ کرلیٹ گئے۔ جب تمام حضرات اکٹھے ہو گئے تو آپ زائنڈ نے ان کو مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔ بنی مرسم اس تیے حضرات کولوگوں کا سردار اور ان کی قیادت کرنے

والا پاتا ہوں اور بہ خلافت تم حضرات میں چھوڑتا ہوں اور جب تک تم میں استقامت رہے گی لوگوں کو بھی خلافت پر استقامت رہے گی لوگوں کو بھی خلافت پر استقامت ما استقامت میں اختلاف ہوگا تو پھر استقامت حاصل رہے گی اور جب تم میں اختلاف ہوگا تو پھر لوگوں میں بھی اختلاف بیدا ہو جائے گا۔''

حضرت عبدالله بن عمر ولا الخيئا فرمات بيل يجروالد بزرگوار في فرمايا د منم تين دن تك لوگول سے مشوره كرنا اور خود ميں سے ايك شخص كو خليفہ چن لينا - اس دوران حضرت صنبيب رومي ولائن المؤلول كو فران حضرت صنبيب رومي ولائن النظام الله لوگول كو فماز يرا ها كيم كے "

المناسبة على المناسبة على المناسبة المن

روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طلقی کا وصال کا وقت قریب آیا تو صحابہ کرام بھی کنتی کی ایک جماعت نے آپ بڑا تھی ہے خلیفہ کی نامزدگی کا مطالبہ کیا۔ آپ طلقی نے نے حضرت عبداللہ بن عباس فیلی بھناسے فرمایا تم جا کر حضرت عثمان غنی، حضرت علی المرتضی، حضرت طلحہ بن عبید اللہ، حضرت زبیر بن العوام، حضرت عبدالرحمٰن بن عوف اور حضرت سعد بن الی وقاص شی کی بلالاؤ۔ جب بید حضرات خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ بڑا تھی نے فرمایا۔

"میں خلافت کا امرتمہارے سپرد کرتا ہوں کہ حضور نبی کریم منظور کہا ہے وصال کے وقت تم سب سے راضی ہے اس لئے میں بیامرتمہارے سپرد کرتا ہوں اور تم خود میں سے ایک شخص کو خلیفہ مقرد کرلو۔"

. حضرت عمر فاروق طالغنظ نے اپنے بعد آنے والے خلیفہ کو نصبحت کرتے ہوئے فرمایا۔

> "الله عزوجل كى حمد و شناء اور حضور نبى كريم منظر عيلم برب شار درود وسلام-

> اما بعد! میں اپ بعد منتف ہونے والے کو خلیفہ مہاجرین اولین کے بارے میں وصیت کرتا ہوں کہ ان کے حقوق کو پہچانے اور ان کی عزت اور بڑائی کا خیال رکھے اور انصار کے بارے میں وصیت کرتا ہوں یا خیال رکھے اور انصار کے بارے میں وصیت کرتا ہوں یہ وہ لوگ ہیں جنہوں نے حضور نبی کریم مضافی اور مہاجرین سے قبل اپنے محمروں میں ٹھکانا دیا۔ میں اس بات کی وصیت کرتا ہوں کمان کے بھلوں کی باتیں مانیں اس بات کی وصیت کرتا ہوں کمان کے بھلوں کی باتیں مانیں

المستوع المستوى المانية كي فيصل المانية المستوى المانية المستوى المانية المستوى المستو

اور ان میں لغزش کرنے والوں سے درگز رکریں اور میں اس کو یہ بھی وصیت کرتا ہوں کہ اہل شہر کے ساتھ حسن اخلاق ہے بیش آئے اور بیالوگ اسلام کے لئے حفاظتی دستہ اور مال کا ذخیرہ کرنے والے اور وشمنوں کے لئے باعث غیظ وغضب میں اور بیر کدان سے چھے ندلیا جائے مگر جوان کے یاس زائد ہو اور وہ بھی ان کی رضامندی سے اور میں اعراب کے بارے میں بھلائی کرنے کی بھی وصیت کرتا ہوں اس لئے کہ یمی لوگ عرب کی جڑ اور اسلام کا سرچشمہ ہیں۔ان کے مال سے ان کے جانوروں کی زکوۃ لے کر انہیں کے فقراء برتقبیم كرد دے۔ الله عزوجل اور اس كے رسول مضاعفة كى طرف سے ان پر جو ذمہ داریاں عائد ہوتی ہیں۔ میں منتخب ہونے واللے خلیفہ کو وصیت کرتا ہوں لوگوں کے لئے جبیبا کہان ہے معاہدہ ہے اس کو پورا کر ہے اور جو دشمن ان کے پیچھے ہیں ان کو بھیج کر ان سے جہاد کرے اور کسی کو اس کی طاقت سے زیادہ تکلیف نہوے''

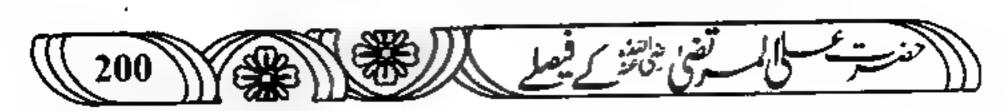
حضرت قاسم بن محمد والنيئة روايت كرية بين حضرت عمر فاروق والنيئة في النيئة في النيئة في النيئة في النيئة المالي البيئة بعد آنے والے خلیفہ کو تصبحت كرتے ہوئے فرمایا۔

> "اس آدمی کو جواس خلافت کا والی ہوگا استے معلوم ہونا جائے اس سے خلافت کو قریب اور جلد سب واپس لینے کا ارادہ کریں گے۔ میں لوگوں سے اپنے لئے خلافت باقی رکھنے میں لڑنا

رہوں گا اور اگر میں جان لیتا کہ لوگوں میں سے کوئی اس کام کے لئے زیادہ قوی ہے تو میں اس کو آگے بڑھاتا تا کہ وہ میری گردن مار دیتا، یہ بات مجھے زیادہ پند برنسبت اس کے کہ میں اس کا والی ہوتا۔''

حضرت انس بن ما لک ر النیز سے مردی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاردق ولائیز نے حضرت ابوطلحہ انصاری رائیز کو بلایا جس دفت آپ ر النیز کو زخمی کیا گیا تھا آپ رائیز نے حضرت ابوطلحہ انصاری رائیز سے فرمایا کہتم انصار کے بچاس افراد کو کے کر ان اصحاب شور کی کے ہمراہ رہنا اور جھے قوی امید ہے بیئنظریب کسی گھر بر جمع ہوں کے اور تم اس گھر کے درواز سے پر رکے رہنا یہاں تک کہ تین دن گزر جا کیں اور اس دوران کسی کوکسی بھی صورت اس گھر کے اندر داخل نہ ہونے دینا۔

O O O



حضرت عمر فاروق طالعين كي شهادت

حضرت عمر فاروق برائنوزی حالت شدید زخی ہونے کی بناء پر آہت آہت استہ مزید خراب ہونے گئی۔ آپ برائنوز نے اپ فرزند حضرت عبداللہ بن عمر فرائنون کوام الموشین حضرت عائشہ صدیقتہ فرائنوز کے پاس بھیجا کہ وہ انہیں حضور نبی کریم مضابق الموشین حضرت ابو بکر صدیق برائنوز کے پہلو میں سپر دِ خاک ہونے کی اجازت مرحمت فرما دیں۔ حضرت ابو بکر صدیقہ فرائنوز کے پہلو میں سپر دِ خاک ہونے کی اجازت مرحمت فرما دیں۔ حضرت عائشہ من عمر برائنوز کی جب ام الموشین حضرت عائشہ صدیقہ فرائنوز کے ایک بہنو میں کا اظہار کیا تو ام الموشین حضرت عائشہ صدیقہ فرائنوز کے واہش کا اظہار کیا تو ام الموشین حضرت عائشہ صدیقہ فرائیا۔

'' بہ جگہ تو میں نے اپنے لئے رکھی ہوئی تھی لیکن میں عمر فاروق طالنے کی ذات کوخود ہرتر نیج دیتی ہوں اور بہ جگہ ان کوعطا کرتی ہوں۔''

حضرت عمر فاروق وظائف کو جب بتایا گیا کہ ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ وظائف کے اسے جگہ مرحمت فرما دی ہے تو آب دخالف نے اپنے بیئے حضرت عبداللہ بن عمر دخالف سے فرمایا۔

''میرے سرکے بنچے سے تکمیہ ہٹا دو تا کہ بیں اپنا سرز بین سے لگا سکوں اور اللہ عز وجل کاشکر ادا کروں۔''

المناسبة عمل المسترفع المائية كرفيها في المسترفع المائية المسترفع المائية المسترفع ا

حضرت عمر فاروق طالقۂ نے حضرت عبداللہ بن عمر طالقہٰ کو وصیت کرتے ہوئے فرمایا۔

"بیٹا! جب میں مرجاؤں تو میری آئھیں بند کر وینا اور میرے کفن میں میانہ روی اختیار کرنا اور اسراف نہ کرنا کیونکہ اگر میں اللہ عزوجل کی بارگاہ میں مقبول ہوا تو جھے دنیا ہے بہتر کفن مل جائے گا اور اگر میں اللہ عزوجل کی بارگاہ میں مقبول نہ ہوا تو یہ گا اور جھ سے چھین نہ ہوا تو یہ گا۔ میری قبر کو زیادہ لمبی اور چوڑی نہ کرنا کیونکہ اگر میں اللہ عزوجل کے نزد یک معتبر ہوا تو وہ میری قبر کو حد نگاہ وسیع کر دے گا ورنہ میری قبر جنتی مرضی چوڑی ہو وہ اتی تگ کہ میری قبر جنتی مرضی چوڑی ہو وہ اتی تگ کردی جائے گی کہ میری قبر جنتی مرضی چوڑی ہو وہ اتی تگ کردی جائے گی کہ میری قبر جنتی مرضی چوڑی ہو وہ اتی تگ کردی جائے گی کہ میری قبر جنتی مرضی چوڑی ہو وہ اتی تگ کردی جائے گی کہ میری قبر جنتی مرضی جوڑی ہو دہ اتی تگ کردی جائے گی کہ میری پسلیاں ٹوٹ جائیں۔"

حضرت عمر وبن میمون ولائٹن سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق ولائن سے بوقت وصال اپنے بیٹے حضرت عمر اللہ بن عمر ولائن سے کہا دیکھو میرے ولائن سے المال کا کتنا قرض ہے؟ انہوں نے فرمایا کہ چھیاسی ہزار۔ آپ ولائن نے فرمایا۔
فرمایا۔

''تم میراتمام مال فروخت کر کے رقم بیت المال میں جمع کرا دینا اور اگر میر رقم ناکافی ہوتو پھر اپنے مال سے اس کو اوا کرنا اور اگر پھر بھی ناکافی ہوتو بنی عدی بن کعب سے لے لینا اور اگر پھر بھی قرضہ پورا نہ ہوتو قریش سے قرض کی اوا نیگی کا سوال کرنا اور ان کے علاوہ کسی سے نہ کہنا۔''

المناسر على المنافع المنافعة كل المنافعة المنافع

حفرت عمر فاروق برنائیز ۲۷ ذی المجب۳۲ هدور نمی بوئے تھے۔ آپ برنائیز کا وصال کیم محرم الحرام ۲۳ ه بروز ہفتہ ہوا۔ بوقت وصال آپ برنائیز کی عمر مبارک قریباً تریسٹھ برس تھی۔ آپ برنائیز کو حضرت ابو بکر صدیق برنائیز کے پہلو میں وفن کیا گیا۔ آپ برنائیز کو بیری کے پتول میں الجے ہوئے پانی سے تین مرتبہ شل دیا گیا۔ آپ برنائیز کو بیری کے پتول میں الجے ہوئے پانی سے تین مرتبہ شل دیا گیا۔ آپ برنائیز کی نماز جنازہ حضرت صہیب رومی برنائیز نے پڑھائی جو حضور نبی کریم سے بیان کے منبر اور مزار کے درمیان ریاض الجنہ میں اداکی گئی جبکہ حضرت عثان غی ، حضرت علی المرتضی ، حضرت عثان غی ، عضرت عبدالرحمٰن بن عوف اور حضرت عبدالتہ بن عرف اور حضرت اللہ بن عرف اللہ بن عرف آئیز کے آپ برنائین کوقتر مبارک میں اتارا۔

حضرت على المرتضى طالعين كاغم:

حضرت علی المرتضی مزال نیز نے حضرت عمر فاروق مزال نیز کے وصال پر فر مایا۔
'' دنیا میں مجھے جو محض حضور نبی کریم مطابق تیزیکا اور حضرت ابو بکر
صدیق مزال نیز کے بعد سب سے زیادہ محبوب تھا وہ محض آج کفن
میں لبٹا ہوا ہے۔''

روایات میں آتا ہے حضرت علی الرتفنی مزانیئ نے حضرت عمر فاروق مزالفیٰ المرتفنی مزانیئ کے حضرت عمر فاروق مزالفیٰ کے وصال بر فر مایا۔

''میری خواہش ہے میں مرتے وقت حضرت عمر فاروق بنائنونہ جیسے اعمال لے کر اللہ عزوجل کی بارگاہ میں پیش ہوں۔ ونیا میں مجھے جوشخص حضور نبی کریم مین کوئی اور حضرت ابو بکر صدیق بنائنونہ کے جوشخص حضور نبی کریم مین کوئی میں اللہ میں میں میں بنائوں کے بعد سب سے زیادہ محبوب تفا وہ شخص آج کفن میں لپٹا ہوا ہے۔''

المنت على المنتاع المن

حضرت عبداللہ بن عباس بڑا نہنا ہے مروی ہے فرماتے ہیں ہیں ان لوگوں میں کھڑا تھا جو حضرت عبر فاروق بڑا نیز کے لئے دعائے مغفرت کررہے تھے اور اس وقت حضرت عمر فاروق بڑا نیز کی جنازہ رکھا ہوا تھا۔ اس دوران ایک شخص میرے ، پیچے آیا اور اس نے میرے کندھے پرانی کہنی ٹکائی اور فرمایا۔

"الله عزوجل ان پر رحم كرے اور بين الله عزوجل ہے اميد ركھتا تھا الله عزوجل ان بين ان كے دونوں ساتھيوں كے ہمراہ ركھتا تھا الله عزوجل انبين ان كے دونوں ساتھيوں كے ہمراہ اور كھے كا يعنی حضور نبی كريم مين الله اور كھراس فخص نے فرمايا بين نے حضور نبی كريم مين الله ہے ساله اور پھراس فخص نے فرمايا بين نے اور عمر والله اور عمر الله الله عن وجل الله عن الله عن وجل الله عن الله عن

حضرت عبداللہ بن عباس ظافینا فرماتے ہیں میں نے مڑکر دیکھا کہ وہ کون ہے حضرت عبداللہ بن عباس ظافینا فرماتے ہیں میں نے مڑکر دیکھا کہ وہ کون ہے جو میرے کندھے پر کہنی ٹکائے ایسی گفتگو کر رہا ہے تو وہ حضرت علی المنظمیٰ طالعیٰ شخصے۔

فضيلت فاروق اعظم طالفنه بزبان على المرتضلي طالفينه:

حضرت علی المرتضی ملی نئے ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم ملے ہیں۔ نے ارشاد فرمایا۔

"میری امت میں ابو بر اور عمر (من انتخر) سے زیادہ افضل متقی،



پر ہیز گار اور عدل وانصاف والا کوئی شخص نہیں ہے۔'' حضرت علی المرتضٰی طِائِنَیْ فرماتے ہیں جب بھی تم صالحین کا ذکر کروتو عمر (طِالنَیْنُ) کوضرور یا درکھا کرو۔

حضرت موید رئالین سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ میرا گزرایک الی قوم پر ہوا جو حضرت ابو بکر صدیق رٹالین اور حضرت عمر فاروق رٹالین کی تنقیص کررہی تقی۔ میں حضرت علی المرتضٰی رٹالین کی خدمت میں حاضر ہوا اور تمام ماجرا ان کے گوش گزار کیا۔ حضرت علی المرتضٰی رٹالین نے میری بات من کرفر مایا۔ ''اللہ عزوجل کی ان پر لعنت ہو۔ ابو بکر صدیق اور عمر فاروق رٹھائی ، حضور نبی کریم میں کی جمائی اور آپ میں ہیں اور عرفاروق

O____O



يانچوال باب:

خلافت عثمان غني شائني اورعلى المرتضلي شائني

حضرت عثمان عنی طالعید کی بیعت کا فیصله، دورعثانی طالعید میں اجتہادی وفقهی فیصله، دورعثانی طالعید میں اجتہادی وفقهی فیصله، حضرت عثمان غنی طالعید کی شہادت





نقش لاحول لکھ اے خامہ بنہیاں تحریر یا علی بنائن عرض کر اے فطرت وسواس قریں مظہر فیض خدا جان و دل ختم الرسل قبلہ آل نی مضافظات و کعبہ ایجاد یقیں



حضرت عثمان عنى طالعين كي بيعت كا فيصله

حضرت عمرو بن میمون بنائنیز ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق والنيز كے وصال كے بعد حضرت عثمان غنى، حضرت على الرتضى، حضرت طلحه بن عبيدالله، حضرت زبيربن العوام، حضرت عبدالرحمن بنعوف اور حضرت سعدبن ابي وقاص و النه الله علم مع موت - حضرت عبدالرحمن بن عوف طالفين في عرمايا اسينه اس كام كوتين كے حوالے كر دو چنانچه حضرت زبير بن العوام طالفن في مائے حضرت ا على المرتضى مِنْ النَّهُ كَ حواله اور حصرت طلحه بن عبيدالله مِنْ عَبْدُ اللَّهُ الْمِنْ وَالْمُ عَالِم عثمان عَنى مِنْ النَّهُ اللَّهِ عَلَمُ اللَّهِ اور حصرت سعد بن الى وقاص مِنْ النَّهُ فَدْ نَهِ الْبِي رائع حضرت عبدالرحمن بن عوف طالنن کے حوالے کر دی۔ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف طالنون نے یر دیکھا تو فرمایا میں خود کو اس امرے دستبردار کرتا ہوں۔ پھر حضرت عبدالرحمٰن بن عوف مِنْ عَنْ مَنْ عَلَى المرتضَى مِنْ عَنْ اللَّهُ كَا مِا تَهِ بَكِرًا اور انہيں ايك طرف لے ليك ، اور کہا اگر آپ بڑائنے کوخلیفہ مقرر کیا جائے تو کیا آپ رٹائٹیڈ انصاف سے کام لیں ا کے اور اگر حضرت عثمان غنی ملائنۂ کو خلیفہ مقرر کیا جائے تو ان کی اطاعت کریں ے؟ حضرت علی المرتضی ملائن نے فرمایا ہاں۔اس کے بعد حضرت عبدالرحمٰن بن عوف النين نے حضرت عثمان عنی دلائنی کا ہاتھ تھاما اور ان کو ایک طرف لے گئے اور کہا اگر ا آپ مِنْ النَّهُ أَنْ كُوخليفه مقرر كيا جائے تو كيا انصاف ہے كام ليں گے اور اگر حضرت على

الناسة على المن الفي الأنوار كالمعلى المناسق ا

الرتضى بنائن کوخلیفه مقرر کیا جائے تو کیا ان کی اطاعت کریں گے؟ حضرت عثان غنی بنائن کے فرمایا ہاں۔ اس کے بعد حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بنائن نے خضرت عثان غنی بنائن کے دست حق پر بیعت کرلی جس کے بعد حضرت علی المرتضی بنائن منی بنائن کے دست حق پر بیعت کرلی جس کے بعد حضرت علی المرتضی بنائن اور دیگر لوگوں نے حضرت عثمان غنی بنائن کے دست حق پر بیعت کی اور حضرت عثمان غنی بنائن خلیفہ منتخب ہوئے۔

حفرت ابودائل برانین سے مردی ہے فرماتے ہیں کہ میں نے ایک مرتبہ حفرت عبان غی دالتین سے حفرت عبان غی دالتین کی بیعت کی اور حفرت عبان غی دالتین کو جھوڑ دیا اس کی کیا وجہ ہے؟ حضرت عبدالرحل بن عوف رائین نے فرمایا میں نے مشادرت کے وقت حفرت علی المرتفعی عبدالرحل بن عوف رائین نے فرمایا میں نے مشادرت کے وقت حفرت علی المرتفعی المرتفعی وظافین سے کہا میں آپ رائین کی بیعت کرتا ہوں کیا ب اللہ پر، سنت رسول اللہ میں تی پر اور سیرت ابو بکر وعمر رہی اُنڈیز پر -حضرت علی المرتفعی وظافین سے دہرائی تو حضرت عثان فی رائین نے حوایا فرمایا جتنی میری تو توت ہوئی۔ میں نے بہی بات حضرت عثان غی رائینو سے دہرائی تو حضرت عثان عنی رائینو نے فرمایا میں اس پر راضی ہوا۔

یہ بھی منقول ہے کہ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف بڑائیوں نے مشاورت کے وقت حضرت عثان غی بڑائیو سے علیحدگی میں پوچھا اگر میں آپ بڑائیوں کی بیعت نہ کروں تو پھر کس کی بیعت کر لیا۔ کروں تو پھر کس کی بیعت کر دوں؟ انہوں نے فرمایا تم علی بڑائیوں کی بیعت کر لیا۔ پھر میں نے حضرت علی المرتضٰی بڑائیوں سے علیحدگی میں پوچھا آگر میں آپ بڑائیوں کی بیعت کر بیعت کروں؟ انہوں نے فرمایا تم عثان بڑائیوں کی بیعت کر بیعت کروں؟ انہوں نے فرمایا تم عثان بڑائیوں کی بیعت کر بیا کہ آگر میں ان کی بیعت کر بیعت کروں؟ انہوں نے بھر میں نے بھی سوال حضرت زبیر بن العوام بڑائیوں سے کیا کہ آگر میں ان کی بیعت کروں؟ انہوں نے بھر میں نے بھر میں کی بیعت کروں؟ انہوں نے بھر میں ان گا عثان بڑائیوں کے انہوں نے بھر میں ان کی بیعت کروں؟ انہوں نے بھر میں ان کی بیعت کروں؟ انہوں نے بھر میں ان کی بیعت کروں؟ انہوں نے بھر میں ان گا عثان بڑائیوں کے بھر میں ان کی بیعت کروں؟ انہوں نے بھر سے فرمایا عثان بڑائیوں کی بیعت کروں؟ انہوں نے بھر سے فرمایا عثان بڑائیوں کی بیعت کروں؟ انہوں نے بھر سے فرمایا عثان بڑائیوں کے بیعت کروں؟ انہوں نے بھر سے فرمایا عثان بڑائیوں کے بیعت کروں؟ انہوں نے بھر سے فرمایا عثان بڑائیوں کے بیعت کروں؟ انہوں نے بھر سے فرمایا عثان بڑائیوں کے بیعت کروں؟ انہوں کے بیعت فرمایا عثان بڑائیوں کے بیعت کروں؟ انہوں کے بیعت کروں؟ انہوں کے بیعت کروں؟ انہوں کے بیعت فرمایا عثان بڑائیوں کے بیعت کروں؟ انہوں کی کروں کو بیعت کروں کو بیعت کروں کروں کو بیعت کروں کروں کو بیعت کروں کروں کو بیعت کروں کروں کروں کو بیعت کروں کروں کروں

النات كالسرتفي يُحْتَوْ كِ فيهل المحالية المحالي

یا پھر علی جائنیڈ کی۔ میں نے بہی سوال حضرت طلحہ بن عبیداللہ جائنیڈ ہے کیا اور انہوں نے بھھ سے کہا عثمان جائنیڈ خلافت کے حقدار ہیں۔ پھر میں نے ویگر اکا برصحابہ کرام جی اُئیم کی اکثریت نے حضرت عثمان غنی جائیم سے بھی مشورہ کیا اور صحابہ کرام جی اُئیم کی اکثریت نے حضرت عثمان غنی جائیم کی ایم ایا چنا نچہ یہی وجہ ہے میں نے حضرت عثمان غنی جائیم کی بیعت میں سبقت کی ، پھر سب نے اتفاق رائے سے حضرت عثمان غنی جائیم کی والد سے روایت بیان حضرت سلمہ بن ابی سلمہ بن عبدالرحمٰن جائیم کی جائیم کی اور این عبدالرحمٰن بی بی موف جائیم کی افرائیم کی جائیم کی اور این کے بعد حضرت علی المرتضی جائیم کی جیت کی ۔ کرتے ہیں حضرت عبدالرحمٰن بی بی بیلے حضرت عثمان غنی جائیم کی ۔ کرتے ہیں حصرت کی اور این کے بعد حضرت علی المرتضی جائیم کی جائیم کی ۔ ابن سعد کی روایت میں ہے حضرت عثمان غنی جائیم کی دست اقدس پر بیا ہے بیعت حضرت علی المرتضی جائیم کی وار پھر ان کے بعد دیگر لوگوں نے بیعت کی۔ ۔ سب سے پہلے بیعت حضرت علی المرتضی جائیم کی المرتضی جائیم کی المرتضی جائیم کی بیعت کی۔ ۔ سب سے پہلے بیعت حضرت علی المرتضی جائیم کی کے بعد دیگر لوگوں نے بیعت کی۔ ۔ سب سے پہلے بیعت حضرت علی المرتضی جائیم کی المرتضی جائیم کی المرتضی جائیم کیا تھر کی اور پھر ان کے بعد دیگر لوگوں نے بیعت کی۔

حضرت عثمان عنی بڑائٹھ نے منصب خلافت پر فائز ہونے کے بعد پہلی نماز جس میں لوگوں کی امامت فرمائی وہ نماز عصر تھی۔ نماز کی ادائیگ کے بعد آپ بڑائٹھ جس میں لوگوں کی امامت فرمائی وہ نماز عصر تھی۔ نماز کی ادائیگ کے بعد آپ بڑائٹھ منبر پر تشریف لائے اور اللّٰدعز وجل کی حمد و ثناء بیان فرمائی اور پھر حضور نبی کریم بھتے بھتے بھتے بیان فرمائی اور پھر حضور نبی کریم بھتے بھتے بھتے بیان فرمائی۔

"لوگو! سفر ابتداء میں انتہائی کھن اور دشوار ہوتا ہے اور آج
کے دن کے بعد مزید دن بھی آئیں گے۔ اگر میں زندہ رہا تو
میں تہہیں ای طریق پر خطبہ دول گا اور میں فن خطابت ہے
آشنائی نہیں رکھتا گر اللہ عز وجل کے فضل و کرم کا امیدوار ہوں
کہ وہ جھے علم وحلم کی نعمت عطاقر مائے گا۔

المنت المناح الم

لوگو! تم دارالامان مدينه منوره ميس حالت امن ميس اين زندگي بسر کر رہے ہواور تمہاری عمر گزری جا رہی ہے اور ایک خاص رفتار کے ساتھ زندگی موت کی جانب بردھ رہی ہے۔ انسان بھلائی کے کاموں میں سستی کا مظاہرہ کر رہا ہے حالانکہ وہ اینے کل سے بے خبر ہے۔ دنیا کی زیب و زینت درحقیقت شیطان کا مکر ہے اور شیطان تنہارے پیچھے ہے اور تمہارے نیک اعمال کے سوالیجھ بھی تنہارے کام نہیں آئے گا۔تم دنیا کی طلب سے خود کو مامون رکھوادر حرص وطمع کو باہر نکال پھینکو اور آخرت کے طلبگار بنو۔ تم این زندگیاں رسول اللہ مشاریق کی سنت اور فرامین کے مطابق بسر کرد۔ اگرتم قرآن مجید سے رہنمائی حاصل کرو گے تو یقیناً فلاح یاؤ گے۔اللہ عزوجل نے اين حبيب حضرت محمصطفي يضيئين سے قرآن مجيد ميں فرمايا کہ لوگوں کو دنیاوی زندگی کی حالت بیان فرمائیں جوالیں ہے جیے ہم نے آسان سے بارش برسائی، پھراس کے ذریعے اس ز مین کوآباد کیا اور پھر وہ ریزہ پر یزہ ہو جائے گی اور اللہ عز وجل قادر المطلق ہے۔ مال و اولا دسب دنیاوی زندگی کا ہی ایک حصد بن جبكه باقى ربنے والے صرف اعمال صالحہ بين اور اعمال صالحہ ہی اللہ عزوجل کے نزدیک بلحاظ تواب اور جزاء کے عمدہ اور بہتر ہیں۔''

O___O



دورعثاني طالتين ميں اجتہادی فقهی فضلے

ہاں ای روز میری جان میں جان آئے گ جبکہ نکلے گی میری جان علی والنفیٰ کے در پر حضرت عثمان غنی والنفیٰ کے دور خلافت میں جو مجلس شوریٰ قائم کی گئی جس میں جلیل القدر صحابہ کرام دِی اُنتیٰ کو شامل کیا گیا ان صحابہ کرام دِی اُنتیٰ میں حضرت علی المرتضٰی والنفیٰ بھی ہتھے۔

حضرت علی الرتضی و النفیٰ کو دور عثانی و النفیٰ میں بھی و یہے ہی قدر کی نگاہ سے و یکھا جاتا تھا جیسا کہ حضور نبی کریم مضری النفیٰ کے زمانہ میں آپ والنفیٰ کی قدر صد بی و النفیٰ کے زمانہ میں آپ والنفیٰ کی قدر کی جاتی تھی۔ حضرت عثمان عنی والنفیٰ آپ والنفیٰ سے مشورہ کرتے تھے اور آپ والنفیٰ کی جاتی تھی۔ حضرت عثمان عنی والنفیٰ آپ والنفیٰ سے مشورہ کرتے تھے اور آپ والنفیٰ کے مشوروں پر عمل بھی کرتے تھے۔ دور عثمانی والنفیٰ میں آپ والنفیٰ کے اجتہادی اور مفتمی فیصلے کتب سیر کا حصہ جیں۔ ذیل میں آپ والنفیٰ کے وہ اجتہادی اور فقمی فیصلے مقدم نیس کے ان کا مختصراً بیان کیا جارہا ہے تا کہ قار کمین کے لئے ذوق میں دور عثمانی والنفیٰ میں آپ والنفیٰ میں آپ کے دوا اس کی اور کئی دور دور عثمانی والنفیٰ میں آپ والنفیٰ کی دور دور عثمانی والنفیٰ میں کئے ان کا مختصراً بیان کیا جارہا ہے تا کہ قار کمین کے لئے ذوق میں دور دور عثمانی والنفیٰ والنفیٰ میں آپ والنفیٰ میں آپ والنفیٰ میں آپ والنفیٰ والنف

<u> ہرمزان کی دیت کا مقدمہ:</u>

ہرمزان ایرانی لشکر کا سیدسالار تھا اس نے مدینه منورہ پہنچنے کے بعد اسلام

المناسبة على الماستون الماستون

قبول کرلیا تھا اور حضرت عمر فاروق جائنی نے اس کا وظیفہ بھی مقرر کر دیا۔ ہرمزان نے حضرت عمر فاروق بٹائنڈ سے مدینہ منورہ میں رہنے کی درخواست بھی کی اور اِسے حضرت عمر فاروق طلينية نے قبول فرما ليا۔حضرت عمر قاروق مِنْ الينية كوشهيد كرنے والے فیروز ابولولو کوحفرت عمر فاروق طالفین کوشہید کرنے سے پہلے ہرمزان کے یاں دیکھا گیا تھا اور جس تخنجر ہے اس نے حضرت عمر فاروق طالفیٰ کوشہید کیا تھا وہ خنجر بھی ہرمزان کے پاس موجود تھا۔حضرت عبدالرحمٰن بن ابی بکر مِناتِظِمٰا نے اس خنجر کو شناخت کیا اور بتایا انہوں نے بیخ برمزان کے یاس ویکھا تھا نیز فیروز ابولولو بھی ہرمزان کے پاس موجود تھا اور ان کے ساتھ ایک عیسائی غلام ہفینہ بھی تھا۔ روایات میں آتا ہے حضرت عمر فاروق طالفین کی تدفین کے بعد حضرت عبیدا ملّٰد بن عمر ﷺ نے مشتعل ہو کر ہرمزان کولل کر دیا۔حضرت سعد بن ابی وقاص رِنْ النَّهُ: اور دیگر صحابه کرام بنی اُنتخ نے حضرت عبید الله بن عمر رَنْ النِنْ الوَحْجُر ماریے دیکھا۔ حضرت سعد بن افی وقاص مناتنیز نے آگے بڑھ کر حضرت عبید اللّٰہ بن عمر مُناتِنْهُما کو پکڑ لیا جبکه ہرمزان زخموں کی تاب ندلا سکا اور مر گیا۔

حفرت سعد بن ابی وقاص و النفاز نے حفرت عبیداللہ بن عمر و النفاز کو حضرت صبیب روی و النفاز کی عدالت میں چین کیا جواس وقت عارضی طور پر مسند خلافت پر مشمکن تھے۔ حضرت صبیب روی و النفاز نے یہ معاملہ نئے منتخب ہونے والے خلیفہ پر چھوڑ دیا۔ حضرت عثمان غنی و النفاؤ جب مسند خلافت پر بیٹھے اور تمام لوگ آپ و النفاذ کے دست می پر بیعت کر چھوٹو آپ و النفاذ کی خدمت میں حضرت عبیداللہ بن عمر و النفاذ کو چین کیا گیا کہ انہوں نے نومسلم ہرمزان کو تل کر دیا ہے۔ حضرت عبیداللہ بن عمر و النفاذ اللہ بن عمر و اللہ بن و اللہ بن عمر و اللہ بن و اللہ بن عمر و اللہ بن عمر و اللہ بن و اللہ

المناسبة على المنافظة كي فيلو كالمنافظة كي فيلو كالمنافظة كي فيلو كالمنافظة كالمنافظة

علی المرتضی بنوسی نے مجلس شوری کے ممبر ہونے کی حیثیت سے مشورہ دیا کہ حضرت عمرہ بن عبیدالقد بن عمر بنائین کو قصاص کے بدلے میں قتل کردیا جائے۔ حضرت عمرہ بن العاص بنائین نے حضرت علی المرتضی بنائین کے مشورہ پر اعتراض کرتے ہوئے فرمایا یہ کیسے ہوسکتا ہے ابھی کل ہی حضرت عمر فاروق بنائین کوشہید کیا گیا ہے اور آئ ان کے بیٹے کا خون بہایا جائے یہ مناسب نہیں ہے۔ حضرت عمرہ بن العاص بنائین کے بیٹے کا خون بہایا جائے یہ مناسب نہیں ہے۔ حضرت عمرہ بن العاص بنائین کے مشورہ کی تا ئید مجلس شوری کے دیگر تمام ارکان نے بھی کی جس پر حضرت عثان غنی مشورہ کی تا ئید مخلس شوری کے دیگر تمام ارکان نے بھی کی جس پر حضرت عثان غنی

'' میں میں میں کرسکتا کہ جس شخص کا باپ شہید کیا گیا ہوآج اس کو بھی قتل کروا دوں۔''

پھر حضرت عثمان غنی ڈائٹؤ نے اپنے مال میں سے ہرمزان کی دیت کی رقم ادا کی اور دیت کی رقم با قاعدہ بیت المال میں جمع کردا دی۔ لیف میں میں ہوتھا ہوں ہے۔

ریشم بہننے کے متعلق فیصلہ:

حضرت سعید بن سفیان قاری ﴿ النَّهُوْ فرمات بین میر ب بھائی کا انتقال ہوا تو اس نے وصیت کی راہِ خدا میں سودین صدقہ دینا۔ میں، حضرت عثان غنی ﴿ النَّهُوْ کَی خدمت میں حاضر ہوا اور اس وقت آب ﴿ النَّهُوْ کَی پاس ایک شخص تشریف فر اس حقے میں نے قبا زیب تن کر رکھی فی جس فاگر ببان اور کالر ریشم کی کناری کا تھا۔ اس شخص نے میری قبا کو برزنے کے لئے کھیٹچا۔ آپ ﴿ اللّٰهُوْ نے اس سے کہا کہ تم اسے چھوڑ دو چنا نچے انہوں نے مجھے چھوڑ دیا۔ پھر آپ ﴿ اللّٰهُوْ نے فرمایا تم لوگوں نے دنیا میں ریشم استعمال کر کے جلد بازی کا مظاہرہ کیا۔

حضرت سعيد بن سفيان قاري داللفظ فرماتے ہيں ميں نے عرض كيا ميرا

المسترس المسترض المانية كي فيهل المسترس المستر

بھائی مرگیا ہے اور اس نے وصیت کی تھی سود یتار راہ خدا ہیں صدقہ کروں۔ حضرت عثان غی ڈائٹؤ نے فر مایا اگرتم مجھ سے پہلے کی سے اس کے متعلق دریافت کرتے اور وہ ایسا جواب نہ دیتا جو ہیں تہہیں دوں گا تو ہیں تمہاری گردن اڑا دیتا کہ تم نے اس جابل سے ایسا سوال کیوں پوچھا؟ اللہ عز وجل نے ہمیں اسلام قبول کرنے کا حکم دیا اور ہم نے اسلام قبول کرنے کا حکم دیا اور ہم نے اسلام قبول کیا اور اللہ عز وجل کا شکر ہے کہ ہم مسلمان ہیں اور پھر اللہ عز وجل نے ہمیں ہجرت کا حکم دیا تو ہم نے ہجرت کی اور ہم مہاجر ہوئے۔ پھر اللہ عز وجل نے ہمیں ہجرت کا حکم دیا تو ہم نے ہجرت کی اور ہم مہاجر ہوئے۔ پھر اللہ عز وجل نے ہمیں جہاد کا حکم دیا اور ہم جاہد ہوئے اور تم اہل شام کے مجاہد ہوئے اور تم اہل شام کے مجاہد کھاؤ اور تمہار نے گھر والوں پر خرچ کرؤ اور سود یتار کا گوشت خریدو اور تم اے کھاؤ اور تمہار نے گھر والوں پر کھر گا اور ضرورت کے وقت گھر والوں پر کھاؤ کر تے کہ سے صدقہ کا ثواب ملکے گا اور ضرورت کے وقت گھر والوں پر خرچ کرنے سے صدقہ کا ثواب ملکے گا اور ضرورت کے وقت گھر والوں پر خرچ کرنے کرنے سے صدقہ کا ثواب ملکے گا اور ضرورت کے وقت گھر والوں پر خرچ کرنے کے سے صدقہ کا ثواب ملکے گا اور ضرورت کے وقت گھر والوں پر خرچ کرنے کے صدورت کے وقت گھر والوں پر خرچ کرنے کے صدورت کے وقت گھر والوں پر خرچ کرنے سے صدورت کی ثواب ملکا ہے جبکہ اسراف پر پکڑ ہوگی۔

حضرت سعید بن سفیان قاری را النیز فرماتے میں میں جب حضرت عثان غنی برالنیز کے پاس سے واپس لوٹا تو میں نے لوگوں سے دریافت کیا کہ وہ شخص کون تفاجس نے میری قبانیز سے کے باس سے واپس لوٹا تو میں نے بتایا وہ حضرت علی الرتضلی را النیز سے ۔
حضرت سعید بن سفیان قاری را النیز فرماتے ہیں میں حضرت علی الرتضلی را النیز نے جھ میں ایسا کیا دیکھا؟ آپ را النیز نے فرمایا۔
فرمایا۔

'' میں نے حضور نبی کریم مینے کھٹا ہے سنا ہے کہ عنقریب میری امت عورتوں کی شرمگا ہوں کو اور رہیم کو حلال جانے گی اور بیہ پہلا رہیم ہے جو میں نے کسی مسلمان پر دیکھا۔''

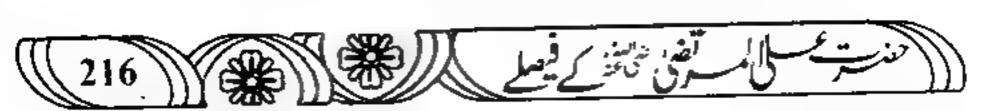
حفرت سعید بن سفیان قاری طالفتهٔ فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت علی المرتضلی طالفتہ کی کہ میں نے حضرت علی المرتضلی طالفتہ کی بات سی تو واپس آ کرا بی قبافروخت کر دی۔ حالت احرام میں شکار کے متعلق فیصلہ:

مند احد میں منقول ہے ایک مرتبہ جج کے دوران حضرت عثان غی بڑائیڈ کی خدمت میں منقول ہے ایک مرتبہ جج کے دوران حضرت عثان غی بڑائیڈ کی خدمت میں کسی شخص نے شکار کا گوشت پیش کیا۔ پھر حالت احرام میں شکار کو کھانے یا نہ کھانے یا نہ کھانے نے نہ میں خود شکار کر کے کھانا منع ہے جبکہ کی دوسرے کا شکار کھانے میں کوئی ممانعت نہیں ہے۔ پھر جب اس مسئلہ کے متعلق کوئی حتی رائے قائم نہ کی بیل کوئی ممانعت نہیں ہے۔ پھر جب اس مسئلہ کے متعلق کوئی حتی رائے قائم نہ کی جاسکی تو یہ مسئلہ حضرت علی الرتضی جاسکی تو یہ مسئلہ حضرت علی الرتضی جاسکی تو یہ مسئلہ حضرت علی الرتضی جانی تو یہ مسئلہ حضور نبی کریم میں جے اور حضور نبی کریم میں جے اس کے پاس گورخر شکار کر کے لایا گیا۔ حضور نبی کریم میں جی اور دہ خوایا جم حالت احرام میں جیں اور دہ جنہوں نے احرام نہیں با نہیں یہ گوشت کھلا دو۔

امام احمد میشنی فرماتے ہیں حضرت علی الرتضلی ولائٹؤ کے اس فیصلے کی گواہی بارہ افراد نے دی۔ پھر آپ ولائٹؤ نے ایک اور واقعہ کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا کہ حضور نبی کریم میشیونٹ کی خدمت میں حالت احرام میں شرمرغ کے انڈے پیش کے گئے اور حضور نبی کریم میشیونٹ نے آئیس بھی کھانے سے اجتناب برتا۔ اس واقعہ کی گواہی بھی کی اور حضور نبی کریم میشیونٹ نے انہیں بھی کھانے سے اجتناب برتا۔ اس واقعہ کی گواہی بھی کی لوگوں نے دی اور یوں حضرت عثان غنی ولائٹؤ نے بھی حالت احرام میں شکار کے گوشت سے اجتناب برتا۔

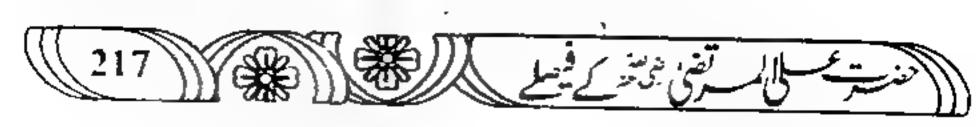
اب تو میراث کی حقدار ہے:

منقول ہے حبان بن منقذ کی دو ہویاں تھیں۔ان کی ایک ہوی ہاشمی جبکہ



دوسری بیوی انصاری تھی۔ حبان کا انتقال ہوا اور انہوں نے انتقال ہے تبل انصاری
بیوی کوطلاق دے دی تھی۔ ان کے انتقال کے بعد انصاری بیوی بھی ان کی وراثت
کی دعویدار ہوئی اور کہا کہ جب جھے میرے شوہر نے طلاق دی تو ان کی موت تک
میری عدت بوری نہ ہوئی تھی لہذا وراثت میں میرا بھی خصہ ہے۔ پھر یہ مقدمہ
حضرت عثان غی بڑائیڈ کی خدمت میں پیش کیا گیا۔ حضرت عثان غی بڑائیڈ نے فر مایا
اس مقدمہ کا فیصلہ حضرت علی الرتضای بڑائیڈ کریں گے چنا نچہ یہ مقدمہ آپ بڑائیڈ کی
ضدمت میں پیش کا گیا۔ آپ بڑائیڈ نے اس انصاری عورت سے کہا تو معبد نبوی
ضدمت میں بیش کا گیا۔ آپ بڑائیڈ نے اس انصاری عورت سے کہا تو معبد نبوی
میں منبر نبوی مضربی الکیا۔ آپ بڑائیڈ نے اس انصاری عورت نے طلاق کے بعد سے
میں بیش کا گیا۔ آپ بڑائیڈ نے اس انصاری عورت نے قدم کھا لی۔ آپ
مین مرتبہ ماہواری نبیں دیکھی۔ اس عورت نے قدم کھا لی۔ آپ
میان کی موت تک تین مرتبہ ماہواری نبیں دیکھی۔ اس عورت نے قدم کھا لی۔ آپ
بڑائیڈ نے فرمایا اب تو حبان کی میراث میں حصہ دار ہے۔

O____O



حضرت عثمان غنى طالنينه كى شهادت

ام المونین حضرت عائشہ صدیقہ بالنفیا ہے مروی ہے فرماتی ہیں کہ حضور بی کریم ہے بینا نے ایک مرتبہ حضرت عثان غنی بالنفیز سے فرمایا۔
''اے عثان (بڑائیز)! اللہ عزوجل تجھے عنقریب ایک خلعت عطافر مائے گا پھر لوگ تجھے سے مطالبہ کریں گے تو اس خلعت کواتارہ ہے گرتم ان کی خواہش پر اس خلعت کو نہ اتارتا۔'' حضرت عثان غنی بڑائیز پر جب اعتراضات کے گئے تو آپ بڑائیز نے معترضین کوان اعتراضات کے گئے تو آپ بڑائیز نے معترضین کوان اعتراضات کے شافعی جواب دیے۔

مؤرضین لکھتے ہیں حضرت زید بن ثابت، حضرت ابواسید ساعدی، حضرت علی حسان بن ثابت اور حضرت کعب بن ما لک شی اُنتی نے اتفاق رائے ہے حضرت علی الرتضلی بڑائنی کو حضرت عثمان بنی ڈائنی کو حضرت عثمان بنی بڑائنی کو حضرت عثمان بنی ڈائنی کی باس بھیجا تا کہ موجودہ صورتحال کے متعلق فیصلہ کیا جا سکے دھزت علی الرتضی بڑائنی جب آپ بڑائنی کے باس آ نے اور آپ بڑائنی کی باس آ نے اور آپ بڑائنی کی باس آ نے اور آپ بڑائنی کی باس آپ بڑائنی کی باس آپ بڑائنی کے باس آپ بڑائنی کی باس آپ بڑائنی کی باس آپ بڑائنی کی باس آپ بڑائنی کے باس آپ بڑائنی کی باس کی باس کر ہے ہوئے کہا۔

المنتر على المنتاخ بالتاني كي فيصل المنتائي المن

بائی اور جیسے میں حضور نبی کریم منظیمین کا داماد ہوں آب بنائید کھی حضور نبی کریم منظمین کے داماد ہیں اور بیشرف شیخین بنائید کے داماد ہیں اور بیشرف شیخین بنائید کے داماد ہیں اور بیشرف شیخین بنائید کو بھی حاصل نہ ہوا۔''

پھر حضرت علی المرتضی بنائیز نے حضرت عثمان عنی بنائیز سے حالات کے متعلق مشورہ کیا اور تفصیلی گفتگو کے بعد خضرت علی المرتضی بنائیز نے آپ بنائیز سے فرمایا کہ اس موقع پر انتہائی سوچ سمجھ کر کوئی بھی قدم اٹھا ئیں۔

روایات میں آتا ہے حضرت عنان غی جائے نے مدید منورہ آمد کے بعد اکا برصحابہ کرام بنی آئی جن میں حضرت علی المرتضی ، حضرت زبیر بن العوام ، حضرت طلحہ بن عبیداللہ بنی آئی اور دیگر شامل سے انہیں بلایا۔اس موقع پر آپ بنائی کے تمام طلحہ بن عبیداللہ بنی آئی اور دیگر شامل سے انہیں بلایا۔اس موقع پر آپ بنائی کے تمام گورز بھی موجود سے آپ بنائی نے مستقبل کے فتنہ کو بھا نہیے ہوئے اکا برصحابہ کرام بنی آئی سے مشورہ طلب کیا۔ اس موقع پر حضرت امیر معاویہ بنائی کھڑے ہوئے اور انہوں نے گفتگو کا آغاز کرتے ہوئے کہا۔

"اما بعد! آپ تمام حفرات کو بیر شرف عاصل ہے کہ آپ
سب کو حضور نبی کریم مضائے اللہ کی صحبت نصیب ہوئی اور آپ
حضرات امت کے نگہبان ہیں۔ آپ حضرات نے اپنے بھائی
عثان (جلائے:) کی خلافت پر اتفاق کیا اور اب جبکہ وہ ضعیف
ہو چکے ہیں تو ان پر اعتراض کئے جا رہے ہیں اور ان کے
خلاف سازشیں کی جا رہی ہیں۔ اگر آپ سب کی کوئی رائے
کو اس سے جمیں آگاہ سیجئے اور میں آپ حضرات کو شافعی
جواب دوں گا گریہ بات یادر ہے کہ اگر کسی کو بیطع ہو کہ وہ

الانت تعلى المراتفي فالتؤكر فيصل المستاح المست

خلیفہ بننا جا ہتا ہے تو وہ جان لے کو وہ بیٹھ بھیر کر بھا گئے کے سوا کی مہیں یائے گا۔''

حضرت امير معاويه و النفيظ كى سخت بات س كر حضرت على المرتضى و النفيظ و المرتضى و النفيظ كى سخت بات س كر حضرت على المرتضادياكور به بوئ اور آب و النفيظ في حضرت امير معاويه و النفيظ كو دُانث كر بشما دياحضرت عثمان عنى و النفيظ في اس موقع پر معترضين كے اعتراضات كے جوابات ديئے اور دلائل كے ساتھ ان كے اعتراضات كا ردكيا-

حضرت عثمان عنی طالفتی نے اس اجلاس کے بعد اپنے تمام گورنروں کو واپس جانے کی ہدایت کی۔حضرت امیر معاوید طالفتی نے آپ طالفتی سے کہا۔

'' امیر المونین! آپ طالفی میرے ہمراہ چلیں اور جھے اندیشہ ہے کہیں شریبند آپ طالفی میرے ہمراہ چلیں اور جھے اندیشہ ہے کہ کہیں شریبند آپ طالفی کو کچھ نقصان نہ بہنچا کیں۔'' مطرت عثمان غنی طالفی نے حضرت امیر معاوید طالفی کی بات کے جواب حضرت عثمان غنی طالفی طالفی نے حضرت امیر معاوید طالفی کی بات کے جواب

میں فرمایا۔

'' میں کسی بھی صورت حضور نمی کریم مین وَیْنَیْنَا کی قربت جھوڑنے

کو تیار نہیں ہوں خواہ میری گردن ہی کیوں نہ کاٹ دی جائے۔''
مضرت امیر معاویہ والفین نے حضرت عثمان غنی والفین کا جواب سننے کے
بعد حضرت علی المرتضی، حضرت زبیر بن العوام اور حضرت طلحہ بن عبیداللہ وہی اُئین سے
درخواست کی کہ اگر جھزت عثمان غنی والفین کو کچھ مصیبت یا خطرہ لاحق ہوتو وہ ان کا
ساتھہ دیں ''

حضرت عنان عنی والنفظ کی جانب ہے حضرت سعید بن العاص بنالنفظ کو معزول معرف سعید بن العاص بنالنفظ کو معزول کرنے کے بعد حضرت ابوموی اشعری بنالنفظ کوکوف کا گورزمقرر کردیا گیا تھا

المسترع الدرسية على المستراك المسترك ا

جس کی وجہ سے حالات قدر ہے بہتر ہونا شروع ہو گئے تھے۔عبداللہ بن سہااوراس کے شریبند ساتھی کوفہ کے حالات بہتر و کھے کر پریشان ہو گئے کیونکہ ان کا سارا کھیل ختم ہونے لگا تھا۔عبداللہ بن سبانے اپنے ناپاک عزائم کے حصول کے لئے اپنے بہر وکاروں کو نئے سرے سرگرم ہونے کا تھم دیا اور خود بھرہ میں تکیم بن حبلہ عدی کے مکان پر پہنچ گیا۔

عبدالله بن سبانے بھرہ پینچنے کے بعدای نے ایک مرتبہ پھرلوگوں کواہل بیت اطبار بنی نیز کی محبت کے پردے میں حضرت عثان غنی ڈلائنڈ اور آپ بڑائنڈ کے بیت اطبار بنی نیز کی محبت کے پردے میں حضرت عثان غنی ڈلائنڈ اور آپ بڑائنڈ کی محبر ہوئی تو گورنروں کے خلاف اکسانا شروع کر دیا۔ حکیم بن حبلہ کو جب اس کی خبر ہوئی تو انہوں نے عبداللہ بن سبا کواپنے گھر سے نکال دیا۔ عبداللہ بن سبااس دوران بھرہ میں ایک مرتبہ پھرفسادات شروع کرنے میں کامیاب ہو چکا تھا۔ وہ حکیم بن حبلہ میں ایک مرتبہ پھرفسادات شروع کرنے میں کامیاب ہو چکا تھا۔ وہ حکیم بن حبلہ کے نکا لئے کے بعد بھرہ ہے مصر پہنچ گیا۔

مؤر خین لکھتے ہیں کہ حضرت عثان عنی بڑائیڈ نے حمران بن عفان کو ایک عورت کے ساتھ اس کی عدت میں نکاح کرنے پر کوڑے لگوائے تھے اور اسے جلاوطن کر کے بھرہ جا کر آپ بڑائیڈ اور ان جلاوطن کر کے بھرہ جا کر آپ بڑائیڈ اور ان کے گورٹروں کے فلاف جھوٹا پر و پیگنڈ اشروع کر دیا۔ عبداللہ بن سبانے بھی اب نہایت زور وشور سے اپنی مہم کوشروع کر دیا جس سے حالات مزید خراب ہوتا شروع بہایت زور وشور سے آپ بڑائیڈ اور آپ بڑائیڈ کے گورٹروں میں تشویش کی لہر دوڑ گئی۔ ہوگئے جس سے آپ بڑائیڈ اور آپ بڑائیڈ کے گورٹروں میں تشویش کی لہر دوڑ گئی۔ عبداللہ بن سبانے حضرت علی المرتضلی بڑائیڈ سیت دیگر اکا برصحابہ کرام بین گئیڈ کے حالات کی تیکینی کو محسوس کر سے بین گئیڈ کے حالات کی تیکینی کو محسوس کر سے بین گئیڈ کے حالات کی تیکینی کو محسوس کر سے بین گئیڈ کے حالات کی تیکینی کو محسوس کر سے بین گئیڈ کے حالات کی تیکینی کو محسوس کر سے بین گئیڈ سے دیگر اکا برسے قبل میں کو خطرت عثمان غنی بڑائیڈ سے ملاقات کی ۔ آپ بڑائیڈ سے اس ملاقات ہے۔

المناسبة عمل المنافي الماني المنافي ال

شر پندوں کا ایک گروہ حضرت علی المرتضی جائنے ہے ملاقات کر کے ان ہے حضرت امیر معاویہ بنائنے کی شکایات کر چکا تھا۔ حضرت علی المرتضی جائنے نے آپ جو ہو ہے امیر معاویہ بنائنے کی شکایات کر چکا تھا۔ حضرت علی المرتضی جائنے نے آپ جو ہو ہو حضرت امیر معاویہ بنائنے کے اختیادات کی بات کی اور کہا۔

''میں جانتا ہوں کہ آپ رہائی نے امیر معاویہ (برائی) کو گورز مقرر نہیں کیا انہیں حضرت عمر فاروق رہائی نے نے گورزمقرر کیا تھا کیکن ان کے دور میں امیر معاویہ (رہائی نے) خود ہے کوئی فیطے نہیں کرتا تھا جبکہ آپ رہائی نے اسے ڈھیل دے رکھی ہے۔''

عبداللہ بن سبانے حضرت عثمان غنی را النونی اور آپ را النونی کے گورنروں کے خلاف جوسازش کی تھی اب وہ سازش عملی جامداختیار کرتی جارہی تھی ۔ مسلمانوں کو دوگروہوں میں تقسیم کیا جارہا تھا اور مملکت اسلامیہ کی بردھتی ہوئی قوت کو پارہ پارہ کرنے کا عبداللہ بن سبا کا گھناؤنہ منصوبہ کا میاب ہوتا دکھائی دے رہا تھا۔ اس ، دوران پھر جے کے لئے قافلے مکہ مکرمہ پہنچنے شروع ہو گئے۔ عبداللہ بن سباک پیروکاروں کے گروہ بھی مکہ مکرمہ کی جانب عازم سفر ہوئے۔

مؤرضین لکھتے ہیں مصرے ایک ہزارشر پسند مکہ مرمہ کی جانب عاذم سفر ہوئے اوران کا بظاہر مقصد ہج کرنا تھا مگر درحقیقت بیاس ارادہ سے نکلے تھے کہ بیہ حضرت عثمان غنی رہائٹیڈ کومعزول کردا کیں گے یا پھر انہیں قبل کر دیں گے۔ جب بیہ قافلہ کوفہ پہنچا تو کوفہ سے بھی ایک ہزادشر پہنداس قافلے میں شامل ہو گئے۔ پھر بیہ قافلہ کوفہ پہنچا اور کوفہ سے بھی ایک ہزادشر پہنداس قافلے میں شامل ہوئے اور یوں ان قافلہ کوفہ پہنچا اور کوفہ سے بانچ سوشر پہنداس قافلے میں شامل ہوئے اور یوں ان کی تعداداڑھائی ہزار ہوگئی۔

ميشرپند چونکه عبدالله بن سباكے بيروكار تفے لېذابيا بے منصوبے كے

الناسترع الله تضي الناتيز كرفيها

تحت کی جھوٹے چھوٹے گروہوں میں تقسیم ہو گئے اور پھر جج کے لئے مکہ کرمہ پہنچنے کی بجائے مد منورہ پہنچ گئے اور مدینہ منورہ کے نواح میں قیام کیا۔ بیشر پہند جس موقع کی بجائے مدینہ موقع کی تلاش میں تھے انہیں وہ موقع میسر آنے والا تھا کیونکہ جج کے لئے مدینہ منورہ میں مقیم کی صحابہ کرام رہی گئے اور تابعین رہی گئے ہم مکہ مکرمہ کی جانب عازم سفر ہو چکے تھے اور پچھروانہ ہونے کی تیاریوں میں مصروف تھے۔ان کے لئے بیایک سنہری موقع تھا کہ وہ اس موقع پراپے گھناؤنے منصوبہ پڑھل پیرا ہو سکیں۔

مؤرخین لکھتے ہیں کہ شریبندوں کا جوگروہ مصر سے چلا تھا اس نے امت مسلمہ ہیں انتشار پھیلا نے کے لئے یہ فیصلہ کیا تھا کہ وہ حضرت علی المرتضی والنفؤ کو خلیفہ بنے پر مجبور کریں گے جبکہ وہ شریبند جو بھرہ سے آئے ہتے ان کا منصوبہ تھا کہ وہ حضرت طلحہ بن عبیداللہ والنفؤ پر دباؤ ڈالیں گے کہ وہ منصب خلافت پر فائز ہوں جبکہ کوفہ سے چلنے والے شریبنداس ارادہ سے آئے تھے کہ وہ حضرت زبیر بن ہوں جبکہ کوفہ سے چلنے والے شریبنداس ارادہ سے آئے تھے کہ وہ حضرت زبیر بن العوام والنفؤ کو خلیفہ بنا کیں گے ادر یوں ان شریبندوں کا در پر دہ منصوبہ تو ایک ہی العوام والنفؤ کو خلیفہ بنا کیں گے ادر یوں ان شریبندوں کا در پر دہ منصوبہ تو ایک ہی تھا کہ وہ امت مسلمہ ہیں انتشار پیدا کریں گے گرساتھ ہی وہ ان اکابرصحابہ کرام وی النفؤ کہ تھے۔

مؤر نیبن لکھتے ہیں مصر کے شرپیند اپنے فرموم ادادہ کی پیکیل کے لئے حضرت علی الرتضی ہل فائن کے پاس گئے اور بھرہ کے شرپند اپنے فرموم ادادہ کی سیمیل کے حضرت طلحہ مین عبیداللہ وہل فیئ سے ملے جبکہ کوفہ کے شرپند اپنے فرموم ادادہ کی تکمیل کے لئے حضرت زبیر بن العوام وہل فیئ سے ملے اور ان حضرات خصرات کے علادہ ان شرپندوں نے امہات المونیون شری سے بھی ملاقاتیں کیس تا کہ ان کا اعتماد حاصل کے جا سکے گروہ اپنے ادادوں میں ناکام رہے۔

روایات میں آتا ہے مصری شریبندوں کا گروہ جب حضرت علی المرتضی بنائیڈ نے ان کے مطالبہ کو مانے سے انکار کر دیا تو انہوں نے اپنے مصوبہ کے دوسرے حصہ پر عمل کرتے ہوئے آپ بنائیڈ سے کہا کہا گرمصر کے گورز حضرت عبداللہ بن سعد بن الی سرح بنائیڈ کومعزول نہ کیا گیا تو انہم مدینہ منورہ سے باہر نہیں جا کمیں گے۔

شرپندوں کا بید مطالبہ ای گھناؤنے منصوبہ کی آیک کڑی تھا کہ حضرت عبداللہ بن سعد بن ابی سرح بڑائیڈ کی قیادت میں لشکر اسلام نے افر بقہ اور بورپ کے کئی علاقوں میں فتو حات کے جھنڈے گاڑے سے اور عبداللہ بن سبا منافق کو دین اسلام کی بیر تی آیک آنکھ نہ بھاتی تھی چنانچہ اسی وجہ سے اب ان شرپندوں نے حضرت عبداللہ بن سعد بن ابی سرح بڑائیڈ کی معزولی کا مطالبہ کیا تھا۔ حضرت علی المرتضی بڑائیڈ نے ان شرپندوں کو سمجھانے کی بہت کوشش کی مگر وہ اپنی بات پر علی المرتضی بڑائیڈ نے ان شرپندوں کو سمجھانے کی بہت کوشش کی مگر وہ اپنی بات پر بھندر ہے اور مدید منورہ سے باہر جانے سے انکار کردیا۔

حضرت علی المرتضی بڑائیڈ نے شریندوں کے اس مطالبہ کے بعد اکا برصحابہ کرام جی اُنٹی ہے مشورہ کیا اور پھر حضرت عثمان غنی بڑائیڈ کے پاس تشریف لے گئے اور انہیں شریبندوں کے ارادوں ہے آگاہ کرتے ہوئے کہا کہ اگر ان کا مطالبہ اس وقت مان لیا جائے اور حضرت عبداللہ بن سعد بن ابی سرح بڑائیڈ کومعزول کر دیا جائے تو حالات بہتر ہو سکتے ہیں۔ حضرت عثمان غنی بڑائیڈ نے آپ بڑائیڈ کی بات سن تو پوچھا اگر ہیں حضرت عبداللہ بن سعد بن ابی سرح بڑائیڈ کومعزول کرتا ہوں تو پھر ان کی جگہ کے مصر کا گورنر بناؤں؟ آپ بڑائیڈ نے مشورہ دیتے ہوئے کہا کہ سے بھر ان کی جگہ کے مصر کا گورنر بناؤں؟ آپ بڑائیڈ نے مشورہ دیتے ہوئے کہا کہ اس وقت مناسب بہی ہے کہ چھر بن ابی بکر کومصر کا گورنر بنا دیا جائے تا کہ حالات

و المالية الما

میں بہتائ آئے۔

محمہ بن الی بحر جو کہ حضرت ابو بکر صدیق بین تینی کے صاحبر اوے ہیں اور سنت اساء بنت عمیس بینی کے بطن سے پیدا ہوے اپنے والد بزرگوار کے مسال کے وقت کم بن بھے اور ان کی تربیت حضرت علی الرتضی بینی کے زیرسایہ بوٹ کی بوٹ رہے اور حضرت علی الرتضی برائی کی بوٹ رہے اور حضرت علی الرتضی برائی کی بوٹ رہے اور حضرت علی الرتضی برائی میں شریک ہوت رہے اور حضرت علی الرتضی برائی کی بے حدقد رہتے چنانچ یہی وجہ برائی می برائی کی بے حدقد رہتے چنانچ یہی وجہ ہے کہ حضرت مینان غنی برائی نے حضرت علی الرتضی برائی کی مشورہ کو مانتے ہوئے حضرت میداللہ بن سعد بن ابی سرح برائین کو مصرکی گورٹری سے معزول کر دیا اور محمد مین ابی سرح برائین کو مصرکی گورٹری سے معزول کر دیا اور محمد کی نابی بکر کو مصرکا گورٹر مقرر کرنے کا فیصلہ کرتے ہوئے ان کے نام فرمان جاری کردیا۔ حضرت علی الرتضی بڑائین بڑائین نے محمد بن ابی بکرکی امارت کا پروانہ لیا اور اس کردیا۔ حضرت علی الرتضی بڑائین برائیس یے فرمان دے دیا جس پر وہ شر پہند مدینہ متورہ سے بطے گئے۔

مؤرخین لکھتے ہیں مصری شریبندوں کے مدیندمنورہ سے جانے کے بعد بصرہ اور کوفہ کے شریبند بھی حضرت طلحہ بن عبیداللہ اور حضرت زبیر بن العوام مخالفہ کے سمجھانے یر مدینہ متورہ سے مطلے گئے۔

حضرت عثان عنی بیانی کا پیچازاد مروان بن الحکم جو تھم بن العاص کا بیٹا تھا اور مصر کا سابق گورنر تھا اور جسے معزول کر کے آپ بیانی نے حضرت عبداللہ بن سعد الی سرح بیانی کو مصر کا گورنر مقرر کیا تھا انتہائی شاطر ذبین کا آومی تھا اور وہ مصر کی کورنر مقرر کیا تھا انتہائی شاطر ذبین کا آومی تھا اور وہ مصر کی کورنری سے معزول کئے جانے پر کبیدہ فاطر تھا اور اکثر اس موقع کی تلاش میں ربتا تھا کہ کسی طرح اسے آپ بڑائی کے خلاف کوئی اقد ام کرنے کا موقع ملے۔

مؤرفین لکھتے ہیں مردان بن الحکم کو جب پیتہ چلا کہ حضرت عثمان غنی بنائیؤ نے محمد بن ابی بکر کومصر کا نیا گورز مقرر کیا ہے اور حضرت عبداللہ بن سعد بن ابی سرح بنائیڈ کومعزول کر دیا تو اس نے چلا کی سے ایک نقلی خط تیار کیا جس میں حضرت عبداللہ بن سعد بن ابی سرح دالفیڈ کے نام سے پیغام لکھا۔

" محمد بن ابی بکر اور فلال فلال چھ بندے جیسے ہی تمہارے پاس مہنچ ان کا سرقلم کر دینا۔"

مروان بن الحكم نے اس خط پر حضرت عثمان غنی وظائفتہ کی جعلی مہر بھی لگا دی۔ مروان بن الحکم کا خط جو شخص لے کر مصر حضرت عبداللہ بن سعد بن ابی سرح بنائفتہ کے پاس جا رہا تھا اسے راستہ میں شرپندوں نے پکڑ لیا اور اس سے دریافت کیا کہ وہ کدھر جا رہا ہے۔ اس نے کہا میں حضرت عثمان غنی وٹائفتہ کا پیغام لے کر مصر جا رہا ہوں۔ ان شرپندوں نے جب اس شخص کی تلاشی کی تو مروان بن الحکم کا وہ خط برآ مدہو گیا جس سے بیالوگ طیش میں آ گئے اور واپس مدینہ منورہ پہنچ گئے اور حضرت عثمان غنی وٹائفتہ کو وہ خط دیتے ہوئے کہا کہ حضرت عثمان غنی وٹائفتہ نے ہم حضرت عثمان غنی وٹائفتہ کو وہ خط دیتے ہوئے کہا کہ حضرت عثمان غنی وٹائفتہ نے ہم سے دھوکہ کیا الرتضلی وٹائفتہ کے الرتصلی میں الرتصلی وٹائفتہ کے الرتصلی وٹائفتہ کے ال سے کہا۔

'' بجھے تو سیتم لوگوں کی کوئی حیال گلتی ہے کیونکہ تمہمار ۔۔ اراد ۔۔ معکمی نہیں ہیں۔''

شرببندوں نے حضرت علی المرتضی والنیخ کی بات سننے کے بعد کہا بات جو بھی ہوہم حضرت علی المرتضی والنیخ کے بعد کہا بات جو بھی ہوہم حضرت عثمان عنی والنیخ کو ہٹا کر ہی دم لیں گے۔حضرت علی المرتضی والنیخ کے ان کا لہجہ دیکھتے ہوئے فرمایا۔

" تم صبرے کام لومیں اس بارے میں تفتیش کرتا ہوں کہ بیہ

المنت على المراق المالية والمالية المالية الما

خط کس نے لکھا ہے؟"

مؤرضین لکھتے ہیں حضرت علی المرتضی طِلْائِنْ نے حضرت عثمان عَنی طِلْائِنْ کے بال فِی طِلْائِنْ کے بال واقت میں معاملے۔ آپ طِلْائِنْ نے اس خط سے لاعلمی کا اظہار کیا اور قسم کھا کر کہا۔

"میرادامن اس سازش ہے یاک ہے۔"

پھر جب خط کی تحریر پرغور کیا گیا تو وہ تحریر مروان بن الحکم کی تھی۔ مروان بن الحکم اس وقت اپنے گھر میں موجود تھا۔ شریبندول نے حضرت عثان غنی والفنی اس مطالبہ کیا کہ وہ مروان بن الحکم ان کے حوالے کر دیں گر آپ والنی نے اس مطالبہ کو مانے سے انکار کر دیا۔ حضرت علی المرتضی والفنی فیانی نے شریبندول کو سمجھانے مطالبہ کو مانے سے انکار کر دیا۔ حضرت علی المرتضی والفنی کی کوشش کی لیکن انہوں نے حضرت علی المرتضی والفنی کی بات مانے سے بمرانکار کردیا۔

حضرت عثان غنی برانیز نے مروان بن افکام کوشر پسندوں کے حوالہ کرنے سے انکار کر دیا تھا چنا نچہ آپ بڑائیز کے اس انکار کے بعد ان شر پسندوں نے مدینہ منورہ میں ڈیرے ڈال لئے اور وہ اب مدینہ منورہ کے بازاروں اور گلیوں میں سرعام پھرتے تھے اور اپنا مطالبہ دہراتے تھے کہ ہم آپ بڑائیز کو منصب خلافت سے معزول کروائیں گے۔ آپ بڑائیز نے اس دوران صبر کا دامن ہاتھ سے نہ چھوڑا اور ان شر پسندوں سے نداکرات کی کوشش کی تا کہ صورتحال بہتر ہواور امت مسلمہ انتظار کا شکار نہ ہو گر ان شر پسندوں کا کہ آپ بڑائیز منصب خلافت اختار کا شکار نہ ہو گر ان شر پسندوں کا یہی مطالبہ تھا کہ آپ بڑائیز منصب خلافت سے دستبردار ہو جا کیں وگرنہ ہم مدینہ منورہ سے کسی بھی صورت نہیں جا کیں گے۔ آپ بڑائیز منصب خلافت سے دستبردار ہو جا کیں وگرنہ ہم مدینہ منورہ سے کسی بھی صورت نہیں جا کیں گے۔ آپ بڑائیز نے ان شر پسندوں کے اس مطالبہ پر کہا میں حضور نبی کریم سے بھی تا

المناسر على المنافي المانية كي يسل المنافية المانية ال

کئے گئے عہد پر قائم رہوں گا اور حضور نی کریم میں کی اند عزوجل ایک خلعت عطا کرے گا اور لوگ تم سے مطالبہ کریں گے کہ اس خلعت کو اتار دومگرتم ان کی خواہش پر اس خلعت کو ہر گز ندا تارنا چنانچہ میں منصب خلافت سے کسی بھی طرح دستبردار نہ ہوں گا۔

مؤر خین لکھتے ہیں حضرت عثمان غنی بڑاتھ کی جانب سے دوٹوک جواب ملنے کے بعد ان شریبندوں نے کہا ہم یہاں جنگ کریں گے۔ آپ بڑاتھ نے ان کی بات می تو فرمایا اگر میں چا ہوں تو مسلمانوں کو اکٹھا کر کے تم مٹھی بھر لوگوں کو ہمیشہ کے لئے صفح ہستی سے مٹا دوں مگر میں نہیں چا ہتا کہ میری وجہ سے ایک مسلمان ہمیشہ کے لئے صفح ہستی سے مٹا دوں مگر میں نہیں چا ہتا کہ میری وجہ سے ایک مسلمان دوسرے مسلمان پر تکوار اٹھائے اور امت مسلمہ انتشار کا شکار ہو۔ آپ بڑاتھ نے کی بات من کرشر پہندوں نے ایک ہنگامہ کھڑا کر دیا اور آپ بڑاتھ نے گھر کا محاصرہ کرلیا۔ دوایات میں آتا ہے کہ حضرت علی الرتضی بڑاتھ نے ان نا مساعد حالات روایات میں آتا ہے کہ حضرت علی الرتضی بڑاتھ نے بڑو نے رہے چنا نچہ مصالحق کوششیں مزید تیز کر دیں مگر شریبندا پی بات پر ڈیٹے رہے چنا نچہ مصالحق کوششیں کچھ کام نہ آسکیں اور شریبندوں نے حضرت عثان غنی بڑاتھ کے گھر کا محاصرہ شدید کر دیا۔

حضرت شداد بن اوس والنفيه فرماتے ہیں کہ یوم دار جب حضرت عثان غنی دار بند کے گھر کا محاصرہ باغیوں بنے شدید کر دیا تو ہیں نے دیکھا حضرت علی الرتضی ولائنی البی الله فی دائنی البی کے گھر کا محاصرہ باغیوں بنے شدید کر دیا تو ہیں نے دیکھا حضرت علی الرتضی ولائنی البی کی البی کے گھر سے نگلے۔ آپ والنی نی کریم مطابق کا عمامہ سر پر باندہ رکھا تھا اور ہاتھ میں تکوار پکڑی ہوئی تھی۔ آپ والنی نی کے ہمراہ حضرت سیدنا امام حسن اور حضرت عبداللہ بن عمر وہی تی می دیا ہے والنی نی محضرت عثان عنی والنی والی کے گھر کے اور شرید دوں کو وہاں سے بھا دیا۔ پھر آپ والنی والنی محضرت عثان عنی ولی النی والنی کے اور شرید دوں کو وہاں سے بھا دیا۔ پھر آپ والنی والنی محضرت عثان عنی ولی والنی والنی

الناسة على المراقع المالية كي فيها المالية الم

یاس مہنچے اور سلام کرنے کے بعد کہا۔

"امير المومنين! بلاشبه حضور نبي كريم بطفي النبية بيدامراس وقت تك حاصل نبيل كيا جب تك كه آپ بطفي النبية في اين المرابيول سميت ان كا مقابله جوشكست كهانے والے تصف نه كرليا اور خدا كي تسميت ان كا مقابله جوشكست كهانے والے تصف نه كرليا اور خدا كي تسم اس قوم كے متعلق اس كے سوا اور كوئى گمان نبيل كه بيه آپ رئا تا يا كوئى كمان نبيل كه بيه آپ رئا تا يا كوئى كرنے والے بيں، آپ رئا تا تا جمیں تلم دیں كه بهم ان سے لویں۔"

حضرت عثان غي ظائنة نے فرمایا۔

"اے علی (وظائنو)! تم جانے ہوجس آدمی نے اللہ عزوجل کے لئے حق کو دیکھا اور اس بات کا اقرار کیا میں تمہیں ستم دے کئے حق کو دیکھا اور اس بات کا اقرار کیا میں تمہیں ستم دے کر کہتا ہوں کہ میرے بارے میں نہ تو کسی کا خون بہایا جائے۔"

"اےاللہ! توجانا ہے میں نے کوشش کرلی۔"

پھر حصرت علی الرتضای والنوائی فرال نیکی کے لئے مسجد نبوی مضائی میں داخل ہو کے سکے سے مسجد نبوی مضائی میں داخل ہوئے۔ لوگوں نے آپ والنواؤ سے امامت کے لئے درخواست کی لیکن آپ والنواؤ نے امامت کرانے سے اٹکار کر دیا اور فر مایا۔



" میں ایسی حالت میں تمہاری امامت کروں جبکہ تمہارا امام موجود ہواور اے قید کر دیا جائے۔"

پھر حضرت علی المرتضی و النیز نے تنہا نماز ادا کی ادر گھر چلے گئے۔ آپ والنیز ابھی گھر بہنچ ہی تھے کہ حضرت سیدنا امام حسن و النیز ابھی گھر بہنچ ہی تھے کہ حضرت سیدنا امام حسن و النیز ابھی گھر بہنچ اور آپ و النیز کو بتایا کہ حضرت عثمان غنی و النیز کے گھر کا محاصرہ شدید ہو گیا ہے۔ آپ و النیز نے بیان کرفر مایا۔

" شرپندانہیں شہید کردیں گے۔"

لوگوں نے بوجیما آپ رہائٹؤ ، حضرت عثان غنی رہائٹؤ کو شہادت کے بعد کس مقام پر دیکھتے ہیں؟ حضرت علی الرنضی رہائٹؤ نے فر مایا۔ ''میں انہیں جنت کے باغات میں دیکھتا ہوں۔''

لوگوں نے پوچھا ان باغیوں کا کیا انجام ہوگا؟ خضرت علی المرتضلی نیائیڈ نے فرمایا۔

> '' انہیں تاحق شہید کرنے والے ذلت اور آگ کے گڑھوں میں بھیکے جا کیں گے۔''

روایات میں حضرت علی المرتضلی طلختان کے جانے کے بعد شریبند حضرت علی المرتضلی طلختان کے جانے کے بعد شریبند حضرت عثمان غنی دلائنڈ کے گھر میں داخل ہوئے اور انہیں قرآن مجید کی تلاوت کے دوران شہید کر دیا۔

حضرت عثمان غی ذائنی کوشہید کرنے کے بعد ان کاجسم مبارک تین دن تک بغیر کفن کے پڑا رہا۔ تین دن بعد کچھ جا نثاروں نے اپنی جانوں کی پرواہ کئے بغیر رات کے اندھیرے میں گھر میں داخل ہو کر آپ ذائنیٰ کے جسم مبارک کوخسل

المناسر على المالي الما

دیا اور کفن بہنا کر جنت البقیع لے گئے اور رات کے اندھیرے میں قبر کھود کر آپ بالنیز کو فن کر دیا۔ جس وقت بیہ جانثار جنت آبقیع میں داخل ہوئے تو انہوں نے سواروں کی ایک جماعت کو دیکھا جسے دیکھ کر بیگھیرا گئے اور جنازہ چھوڑ کر بھا گئے کا ارادہ کیا۔ ان سواروں کے سردار نے کہا کہ ہم سے ڈرونہیں ہم تو ان کی تہ فین میں شامل ہونے آئے ہیں۔ پھر وہ سوار آپ رائٹین کی نماز جنازہ اور تہ فین تک وہیں موجود رہے۔ جولوگ آپ رٹائٹین کی تہ فین میں شامل تھے وہ قتم کھا کر کہتے تھے کہ موجود رہے۔ جولوگ آپ رٹائٹین کی تہ فین میں شامل تھے وہ قتم کھا کر کہتے تھے کہ وہ سوار درحقیقت ملائکہ تھے۔

مؤرضین لکھتے ہیں حضرت عثمان غنی بڑائنٹو کو ناحق شہید کیا گیا اور پھر آپ بڑائنٹو کو شہید کیا گیا اور پھر آپ بڑائنٹو کو شہید کرنے کے بعد شریسند پورے مذیبہ منورہ میں دند ناتے پھرتے ہے اور ان کے ہنگاہے کی وجہ ہے آپ بڑائنٹو کی تذفین عمل میں نہ آسکی۔ آپ بڑائنٹو کا جسم بغیر کفن وغسل کے گھر کے اندر ہی بڑا رہا۔ آپ بڑائنٹو کی شہادت کے چوشے دن حضرت جبیر بن مطعم اور حضرت کیم بن جزام بڑائنٹو ، حضرت علی المرتضی بڑائنٹو کی شرات جبیر بن مطعم اور حضرت کیم بن جزام بڑائنٹو ، حضرت علی المرتضی بڑائنٹو کی ہی اور انہیں کے پاس گئے اور عرض کیا آپ بڑائنٹو ان شریسندوں سے مذاکرات کریں اور انہیں سمجھا کیں کہ میں حضرت عثمان غنی بڑائنٹو کی تدفین کرنے دیں۔

مؤرضین لکھتے ہیں حضرت علی المرتضلی وظاہنیڈ اٹھے اور شربیندوں کے پاس
پہنچ تا کہ انہیں سمجھا کیں۔ پھر آپ دنائیڈ نے راستہ میں حضرت زبیر بن العوام وٹائیڈ اور اپنے فرزند حضرت سیّدنا امام حسن وٹائیڈ کو دیکھا جن کے ہمراہ پچھ دیرلوگ بھی ستھے اور وہ سب حضرت عثمان غنی وٹائیڈ کا جنازہ لا رہے تھے۔ جنازہ کے ہمراہ حضرت عثمان غنی وٹائیڈ کا جنازہ لا رہے تھے۔ جنازہ کے ہمراہ حضرت عثمان غنی وٹائیڈ کا جنازہ دیکھا تو جنازہ کی کوشش کی۔ آپ وٹائیڈ کے مدینہ منورہ کے چند جنازہ دیکھا تو جنازہ کو روکنے کی کوشش کی۔ آپ وٹائیڈ کے مدینہ منورہ کے چند

المناسبة على المنافعة في المنا

نو جوانوں کو بلایا اور انہیں کہا کہ اگر شریبندوں میں سے کوئی حضرت عثمان غنی شاہنڈ کا جنازہ رو کنے کی کوشش کرے تو ان کے ساتھ تحتی سے پیش آجائے۔

حضرت عِنَانَ عَنى شِلْ النَّيْرُ كَ جِنَازُه كُو جَنت البقيع ہے المحقہ باغ حش كواكب ميں لايا گيا جواب جنت البقيع كا حصہ ہے۔حضرت جبير بن مطعم طِلْ النَّهُ نَهُ آپ طِلْانَهُ وَ اللهِ عَلَى المام حسن طِلْانِهُ وَ وَيَكُر فِي آپ طِلْانَهُ كُو قبر من منازُ جنازُه بِرُهَا فَى اور حضرت سيّدنا امام حسن طِلْانِهُ وَ وَيَكُر فِي آپ طِلْانَهُ كُو قبر من مناز جنازَه بِرُهَا فَى اور حضرت سيّدنا امام حسن طِلْانِهُ وَ وَيَكُر فِي آپ طِلْانَهُ كُو قبر من مناز جنازَه بِرُهَا فَى اور حضرت سيّدنا امام حسن طِلْانِهُ وَ وَيَكُر فِي آپ طِلْانَهُ كُو قبر

حضرت على المرتضلي طالفة كاعم:

حضرت عثمان عنی طالغین کی شہادت کے بعد عم و غصے کی کیفیت پورے مدینہ منورہ پر طاری تھی لیکن اکا برصحابہ کرام دی گئیز نے آپ دلائی کا واسطہ دے کر لوگوں کے غصے کو کم کیا۔ آپ دلائی کی شہادت کی اطلاع ملتے ہی حضرت علی الرتضی ، لوگوں کے غصے کو کم کیا۔ آپ دلائی کی شہادت کی اطلاع ملتے ہی حضرت علی الرتضی ، حضرت طلحہ بن عبیداللہ، حضرت زبیر بن العوام مِن اُنٹیز اور دیگر اکا برین سکتے میں آگئے۔

مؤرخین لکھتے ہیں حضرت علی المرتضلی ڈالٹنڈ نم و غصے کی حالت ہیں حضرت علی المرتضلی ڈالٹنڈ نم و غصے کی حالت ہیں حضرت عثمان غنی ڈالٹنڈ کے گھر کی حفاظت پر مامور اپنے دونوں مینوں کا حجمر کئے ہوئے قرمایا۔

'' میں نے تم دونوں کو ان کی حفاظت کے لئے مامور کیا اور تمہارے ہوتے ہوئے وہ شہید کردیئے گئے۔'' میں علی اقتلال ماند میں میں میں خور ماند سے سے ا

حضرت علی المرتضی النفظ نے حضرت عثمان غنی طالفظ کے وصال کے وقت

فرمایا۔

"خدا كى شم! ميس آب ذائن كى مرح كيم بيان كرول؟ مجه

المناسر على المراقع المنافز كر فيعلى المنافز كر في المنافز كر فيعلى المنافز كر في المنافز كر فيعلى المنافز كر في المنافز كر

ایسی کوئی بات معلوم نہیں جے آپ رڈائٹوڈ نہ جانے ہوں۔ میں ایسی کوئی بات معلوم نہیں جانی رڈائٹوڈ نہ جانی جا آپ رڈائٹوڈ سے کی بات میں سبقت نہیں رکھتا۔ میں نے حضور نبی کریم میٹوٹیڈ سے ایسا کوئی علم حاصل نہیں کیا جے آپ رڈائٹوڈ نہ جانے ہواور آپ رڈائٹوڈ نے اے حضور نبی کریم میٹوٹیڈ سے حاصل نہ کیا ہو۔ جس طرح میں نے حضور نبی کریم میٹوٹیڈ سے حاصل نہ کیا ہو۔ جس طرح میں نے حضور نبی کریم میٹوٹیڈ سے سا ای طرح آپ رڈائٹوڈ نے سا اور جس طرح میں ایسی طرح میں نے حضور نبی کریم میٹوٹیڈ کی صحبت پائی ای محسور آپ رڈائٹوڈ یقینا ہم سے افضل جی اور آپ رڈائٹوڈ نے ہم مشکل طرح آپ رڈائٹوڈ یقینا ہم سے افضل جی اور آپ رڈائٹوڈ نے ہم مشکل وقت میں اپنی جان و مال سے دین اسلام کی خدمت کی۔''

فضيلت عثمان عنى طالبنة بربان على المرتضى طالبنة:

روایات میں آتا ہے کہ ایک خص نے حضرت علی المرتفایی بڑائیڈ کے سامنے کہا حضرت عثمان غی بڑائیڈ (نعوذ باللہ) جہنمی ہیں۔ آپ بڑائیڈ نے فرمایا تھے کیسے معلوم ہوا؟ اس نے کہا انہوں نے ٹی بات ایجاد کی۔ آپ بڑائیڈ نے فرمایا اگر تیری کوئی بٹی ہوتو کیا تو اس کی شادی بغیر مشورہ کئے ہوئے کرے گا؟ اس نے کہا ہر گز نہیں۔ آپ بڑائیڈ نے فرمایا تو کیا حضور نبی کریم سے بھٹا کا فیصلہ جو انہوں نے اپنی دو بیس ۔ آپ بڑائیڈ نے فرمایا تو کیا حضور نبی کریم سے بہتر ہے اور تو مجھے حضور نبی کریم سے بھٹا کے اللہ بیٹیوں کے بارے میں کیا میری بات سے بہتر ہے اور تو مجھے حضور نبی کریم سے بھٹا کی میں بتا کہ جب حضور نبی کریم سے بھٹا کی میں کام کا ارادہ فرماتے تھے تو اللہ کی میں بتا کہ جب حضور نبی کریم سے بھٹا کی میں کام کا ارادہ فرماتے تھے تو اللہ کی میں بتا کہ جب حضور نبی کریم سے بھٹا کی میں کام کا ارادہ فرماتے تھے تو اللہ کی میں بتا کہ جب حضور نبی کریم سے بھٹا

المناسر على المراق المناع المن

رجوع کرتے تھے۔ آپ بڑائیڈ نے فرمایا کیا اللہ عزوجل نے آپ سے بھی کو خیر کی رائے وی کے بھی کے ایک کے بھی کے خیر کی رائے وی یا نہیں؟ اس نے کہا ہے شک اللہ عزوجل نے حضور نبی کریم سے بھی کے ایک کو خیر کی رائے وی۔ آپ بڑائیڈ نے فرمایا۔

"تو پھرتو مجھے بتا کیا اللہ عزوجل کی رائے حضور نبی کریم ملے ہوئے۔
کی دونوں بیٹیوں کی شادی کے معالمے میں درست نہ تھی اور اگرتو نے دوبارہ حضرت عثمان عنی رٹائٹوز کی شان میں گستاخی کی اور تو میں تیری گردن اڑا دوں گا۔"

حضرت علی المرتضی طالخیز نے حضرت عثمان غنی طالغیز کے اشاعت قرآن کے عظیم کارنا ہے کئے بارے میں فرمایا۔

"اے لوگو! تم عثمان (فران فرز) کے بارے میں خیر کے سوا اور پر کھو مت کہا کرو، خدا کی شم! انہوں نے جو پچھ کیا وہ ہم سب کے مشورہ اور اتفاقی رائے سے کیا اور قر آن مجید میں رائے زائد لغات کو منسوخ کر کے اسے اصل قریش لغت میں جمع فر مایا کیونکہ مجھے خوب معلوم ہے کہ اس اختلاف قر اُت کی صورت میں ایک دوسرے کو کہنے لگا کہ میری قر اُت تجھ سے بہتر ہے میں ایک دوسرے کو کہنے لگا کہ میری قر اُت تجھ سے بہتر ہے اور میں جو پڑھتا ہوں وہ سجے ہو در بہ فندعنقریب تھا جے اور میں خو پڑھتا ہوں وہ سجے سے اور بیہ فندعنقریب تھا جے

النست على المراق المالي المنافع المالية المالي

آب بنائیز نے اپنی فہم وفراست سے ختم کیا اور لوگوں کو قرآن مجید کو ایک قرائت پر جمع کیا تا کہ سی میں کوئی اختلاف باقی نہ میں ہے۔''

حضرت على المرتضى بنالفيز فرمات بين-

حضرت علی المرتضی بڑائنؤ فرماتے ہیں۔ ''جس نے حضرت عثمان غنی بڑائنؤ کے ساتھ بغض رکھا وہ دین اسلام سے خارج ہوگیا۔''

O....O....O



چھٹا باب:

حضرت على المرتضى وثالثة كا منصب خلافت برفائز ہونا

منصب خلافت پر فائز ہونا، خلیفہ بننے کے بعد خطبہ ارشاد فر مانا، حضرت عثمان غنی رہائیڈ کے قصاص کا مطالبہ، جنگ جمل، حضرت عثمان نحنی رہائیڈ کے قصاص کا مطالبہ، جنگ جمل، جنگ صفین ، فتنه خوارج کو کیلنا، دورِ خلافت کے اہم واقعات

O___O



د کیے اے قاری قرآن علی طالغین کے در پر آ بیتیں چڑھتی ہیں بروان علی طالغین کے در پر اصل جنت کی زیارت کے لئے جاتے ہیں اصل جنت کی زیارت کے لئے جاتے ہیں کہد کہ یہ آتے ہیں رضوان علی طالغین کے در پر



منصب خلافت برفائز ہونا

حضرت عثمان عنی بڑائیڈ کی شہادت کے بعد شریند پورے مدیند منورہ میں وندنانے پھردے ہے۔ اس دوران انصار و مہاجرین کا ایک گروہ حضرت علی الرتضی وندنانے پھردے ہے۔ اس دوران انصار و مہاجرین کا ایک گروہ حضرت علی الرتضی و النظی کی خدمت میں حاضر ہوا اور آپ بڑائیڈ کو خلیفہ بننے کا مشورہ دیا۔ آپ بڑائیڈ کی خلیفہ بننے سے یکسرانکار کر دیا۔ اس دوران حضرت طلحہ بن عبیداللہ، حضرت زبیر بن العوام، حضرت عبداللہ بن عمر اور حضرت سعد بن ابی وقاص بڑی ٹیٹم کو خلیفہ بننے کی بھی پیش کش کی گئی لیکن ان حضرات نے بھی خلیفہ بننے سے انکار کر دیا۔ جب ان ان اکا برصحابہ کرام بڑی ٹیٹم میں سے کوئی بھی منصب خلافت پر بیٹھنے کو تیار نہ ہوا تو مشرب خلافت پر بیٹھنے کو تیار نہ ہوا تو مشربیند پریشان ہو گئے۔ معاملات اب ان کے ہاتھ سے نکلتے جا رہے سے اور مشربیند پریشان ہو گئے۔ معاملات اب ان کے ہاتھ سے نکلتے جا رہے سے اور مساری قوم بھٹکتے والی تھی۔ ان شربیندوں میں اکثریت مصربوں کی تھی انہوں نے ساری قوم بھٹکتے والی تھی۔ ان شربیندوں میں اکثریت مصربوں کی تھی انہوں نے اٹل مدینہ کو مخاطب کرتے ہوئے اعلان کیا۔

"" م دودن کے اندرا پے خلیفہ نامزد کرلو کیونکہ تمہاراتکم امت محمد مید مطابقت کر کے محمد مید مطابقت کر کے والیس جلے جا کی ورنہ ہم تمام اکا برصحابہ کرام شائیم کوئل والیس جلے جا کیں ورنہ ہم تمام اکا برصحابہ کرام شائیم کوئل کردیں گے۔"

المنت على المالي المالية المال

ابل مدینہ نے جب باغیوں کا بداعلان سناتو وہ ایک مرتبہ پھر حضرت علی المرتضی بن نیز کی خدمت میں حاضر ہوئے اور انبیں خلافت کے لئے قائل کرنا شروع کر دیا یہاں تک کہ آپ بڑائنڈ نے منصب خلافت قبول کرلیا۔

طبری میں ابوبشیر عابدی ہے منقول ہے فرماتے ہیں جب حضرت عثان غنی نبیسی کوشبید کیا گیا میں مدینه منوره مین موجود تھا مہاجرین وانصار جمع ہوئے جن میں حضرت طلحہ بن عبیداللہ اور حضرت زبیر بن العوام مِنْ اَمْنِمْ بھی ہے اور ان سب نے حضرت علی الرتضى طالفيُّ كى خدمت ميں حاضر ہوكر كہا اپنا ہاتھ لائے ہم آب بنائن کی بیت کرتے ہیں۔آب بنائن نے فرمایا مجھے خلافت کی حاجت نہیں ہے تم جے بھی خلیفہ بناؤ کے میں اس کی اطاعت کروں گا۔مہاجرین و انصار کی جماعت نے کہا ہم آپ رٹائنڈ کے علادہ کسی ادر کو خلیفہ شلیم نہیں کریں گے۔ پھر مہاجرین وانصار کی جماعت متواتر آپ رظافیہ کے یاس آتی رہی اور آپ رظافیہ کو منصب خلافت قبول کرنے پر آمادہ کرتی رہی مگر آپ طالفن مرمزتبد انہیں انکار کر دية - جب معامله طول اختيار كرتا جلا كيا تو آب بالنفط في ان سے فرماياتم مجھ اس منصب کو قبول کرنے پر آمادہ کرتے ہواور میں اس منصب کو اس وقت قبول کرول گا جب تم میری بات مانو گے؟ مہاجرین وانصار کی جماعت نے کہا آپ بنائن جو كہيں كے ہم است مانيس ك_ آب طائف نے ان كى بات سى تو مسجد نبوى جمع ہو گئے۔آپ رہائنڈ نے فرمایا میں تمہارے اصرار پر اس منصب کو قبول کرتا ہوں تمرمیری شرط میہ ہے کہ بیت المال کی جابیاں اگر چہمیرے یاس ہوں گی مگر میں تہماری رضا کے بغیراس ہے ایک درہم بھی نہلوں گا۔مہاجرین وانصار کی جماعت

الانتستاع الله المنتائي المائية كي فيعل المنتائية كي فيعل المنتائية كي فيعل المنتائية المنتائية

نے آپ بڑائیڈ کی بات مان لی۔ آپ بڑائیڈ نے آسان کی جانب نگامیں بند سے ہوئے آب بڑائیڈ میں جند سے میں ہوئے فرمایا اے اللہ! تو گواہ رہنا۔

ابن عساكر مُتَانَةً كَ مُوايت ہے كه حضرت امام حسن بھرى بَن الله فرمایا حضرت على المرتضى مُتَافِعُ كُوفلافت كاقطعى شوق نہيں تھا۔ ایک مرتبہ آپ بَن عباده دورانِ خلافت بھرہ مِن تشریف لائے تو حضرت ابن الکواء اور حضرت قیس بن عباده بن أَنْهُمُ نَے آپ بَانُهُمُ نَے آپ بِن اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ اللّٰ عَلَى اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰمُ اللّٰهُ الل

" بیہ بات تطعی غلط ہے۔حضور نبی کریم سے بیٹے ہی ہے اس فتم کا کوئی وعدہ نہیں کیا تھا۔ اگر حضور نبی کریم منتے ہیں مجھ سے اس فتم کا کوئی وعدہ کرتے تو میں حضرت ابو بمرصدیق ،حضرت عمر فاروق اورحصرت عثمان غني شأنتن كومنبر رسول الله ينضأ يتأثير نہ چڑھنے دیتا خواہ اس معاملہ میں میرا کوئی اور ساتھ نہ ہوتا۔ حضور نبی کریم من النام النام بحالت مرض وصال فرمایا اور این مرض کے دوران حضرت ابو بکر صدیق بٹائنٹنے کو امام مقرر فر مایا جس سے حضرت ابو بکر صدیق طافنے کی خلافت کی تصدیق موئى اور حضرت ابو بمرصد لق والنفيظ بلاشبه حضور نبي كريم يضايقك كے بہترين جانشين تھے۔حضرت ابو بكرصديق طالفيز نے اسے وصال کے وقت حضرت عمر فاروق ڈالٹنٹ کوخلیفہ نامز د کیا اور حضرت عمر فاروق رہائیں، حضرت ابو بکر صدیق بٹائیں کے سے

المناسر على المنافئ المنافئ كي فيعلى المنافئ كي فيعلى المنافئ كي فيعلى المنافئ كي فيعلى المنافئ كي المنافئ كي

جانشین اور سنت نبوی منت این این این این این این این اور آمد کرنے والے تھے اور انہوں نے خلیفہ بننے کے بعد منصب خلافت کا بھر پور حقّ أدا كيا- حضرت عمر قاروق طلعنيٌّ كا جب وقت شهادت قریب آیا تو آپ شائنڈ نے مجھسمیت جھ افراد کو خلافت کے کئے نامزد کیا کیونکہ وہ نہیں جائتے تھے کہ کسی ایسے خص کوخلیفہ نامزد کریں جس کے بارے میں انہیں جوابدہ ہونا پڑے اور ، انہوں نے اسیے بیٹے عبداللہ بن عمر (راللہ) جو کہ خلافت کے بہترین امیدوار ہو سکتے تھے انہیں منصب خلافت سے باہر کر دیا۔ پھر ہم چھ ارکان کی مجلس منعقد ہوئی جس میں حضرت عبدالرحمن بن عوف رالنفو في حضرت عثان عني والنفو كالحاسب حق پر بیعت کر لی اور پھر میں نے بھی حضرت عثان عنی طالغین کے دست حق پر بیعت کی اور میرے جوحقوق تھے وہ میں نے ادا كرنے كے لئے بھر يوركوشش كى۔ان كى قيادت ميں جنگيں لڑیں۔ان کے عطیات کو قبول کیا اور مجرموں کو شرعی سزائیں

محمد بن سیرین و و النفی فرماتے ہیں حضرت علی المرتضی و النفی ، حضرت طلحہ بن عبیدالللہ و النفی میں آپ و النفی کی بیعت عبیدالللہ و النفی کے اور فرمایا ہاتھ آگے بردھا کیں میں آپ و النفی کی بیعت کرتا ہوں۔ حضرت طلحہ بن عبیداللہ و النفی نے فرمایا نہیں آپ و النفی اس منصب کے اہل ہیں اور پھرانہوں نے آپ و النفی کی بیعت کرلی۔

O___O



خلیفہ بننے کے بعدخطبہ ارشادفرمانا

منصب خلافت قبول کرنے کے بعد حضرت علی المرتضی مظامنہ مسجد نبوی "اما بعد! اے لوگو! مجھ بر کسی کا کوئی حق نہیں ہے سوائے اس کے کہتم نے مجھے خلافت کے لئے اہل قرار دیا ہے۔ لوكو! كمّاب الله اور سنت رسول الله منظ يَهُم كومضبوطي سے بكر ہے ركھو۔ ہروہ مخص جو خالی دعو ہے كرتا ہے وہ اپنے نفس كا نقصان کرتا ہے۔ ہر محض ایک ذمہ داری ہے گزرتا ہے۔ جنت اور دوزخ اس کی نظروں کے سامنے ہے۔ انسانِ تنین قشم کے ہوتے ہیں ایک وہ جو کوشش کر کے دین اسلام پر قائم ہے۔ دوسرا وہ جو بھلائی کا طلبگار ہے اور اللہ عز وجل کی رحمت سے امیدلگائے بیٹھا ہے اور تیسرا وہ شخص ہے جو نیک اعمال میں کوتا ہی کرتا ہے اور ایباشخص دوزخی ہے۔ یا در کھو! یا نچ کے سواکوئی چھٹانہیں۔جس شخص نے گمراہی میں قدم رکھا وہ ہلاک ہوا اور جوصراط منتقیم نے بھٹک گیا وہ ہریاد ہوگیا۔سیدھاراستہ صراط متنقیم کا راستہ ہے اور اس کے دائیں

المناسر على المالية والمالية المنافعة والمنافعة والمنافع

۔ بائیں تمام رائے گراہی کے ہیں۔

الله عزوجل نے اس قوم کو دو چیزوں کے ذریعہ سے تہذیب سکھائی۔ اوّل تکوار اور دوم کوڑا۔ خلیفہ پر فرض ہے کہ وہ ان دونوں چیزوں کا استعال کرے اور دین کے معاملے میں کسی فتم کی رعایت سے کام نہ لے۔

الله عزوجل سے دعا ہے کہ وہ جمارے ماضی کو درگزر فرمائے۔
اور جمیں مستقبل میں سیدھی راہ پر چلنے کی توفیق عطا فرمائے۔
راستے صرف وہی ہیں ایک حق کا اور دوسرا باطل کا۔ اگرتم نے
حق کو را جنمائی کا موقع فراجم کیا تو خیر ہے اور جو چیز جا چکی
ہے وہ لوٹ کرنہیں آئے والی۔''

حضرت علی الرتضی طافنو کے اس خطاب کے بعد اہل مدید بیعت کے لئے آگے برطے اور آپ طافنو کے دست حق پر بیعت کرنا شروع کر دیا۔ حضرت طلحہ بن عبیداللہ اور حضرت زبیر بن العوام فری اُنٹو نے آپ طافنو سے بیعت کرتے وقت یہ شرط رکھی کہ آپ والنو سنت و شریعت رسول اللہ مطابق فیلے مطابق فیلے کریں گے اور حضرت عثان غنی والنو کو کا تکوں سے قصاص طلب کریں گے۔

O___O



حضرت عثمان غنى طالتيه كي قصاص كالمطالبه

مؤرضین لکھتے ہیں حضرت علی المرتضی مٹائٹیڈ خطبہ خلافت سے فارغ ہونے کے بعدا پنے گھرتشریف لائے تو حضرت زبیر بن العوام اور حضرت طلحہ بن عبیداللہ مخالفہ کم تشریف لائے تو حضرت زبیر بن العوام اور حضرت طلحہ بن عبیداللہ مخالفہ کم آپ مٹائٹی ہے حضرت عثمان مخالفہ کے قاتلوں سے قصاص کا مطالبہ کیا اور کہا۔

"مم نے آپ رظافی کی بیعت اس شرط پر کی تھی کہ آپ رظافی ہے ۔ اس شرط پر کی تھی کہ آپ رظافی ہے ۔ اس مصرت عثمان غنی رطافی کے قاتلوں سے قصاص لیس گے۔ "
حضرت علی المرتضی رطافین نے فرمایا۔

" مجھے بذات خود حضرت عثمان غنی دلائنٹ کی شہادت پر دکھ ہے اور میں کوشش کروں گا کہ جلد از جلد حضرت عثمان غنی دلائنڈ کے اور میں کوشش کروں گا کہ جلد از جلد حضرت عثمان غنی دلائنڈ کے قاتموں کو گرفتار کروں۔"

روایات میں آتا ہے حضرت علی المرتضی والنیو نے حضرت عثان عنی والنیو کے قاتلوں کی پہچان کے لئے حضرت عثان عنی والنیو کی زوجہ حضرت نا کلہ والنیو کی زوجہ حضرت نا کلہ والنیو کی اور ان سے قاتلوں کے بارے میں دریا فت کیا۔ حضرت نا کلہ والنیو کا اور ان سے قاتلوں کے بارے میں دریا فت کیا۔ حضرت نا کلہ والنیو کا اس واقعہ کی گواہ تھیں انہوں نے بتایا کہ حضرت عثان عنی والنیو کو شہید کرنے کی غرض سے محمد بن ابی بکر اور دو هخص گھر کے اندر داخل ہوئے۔ محمد بن ابی بکر کے غرض سے محمد بن ابی بکر اور دو هخص گھر کے اندر داخل ہوئے۔ محمد بن ابی بکر اور دو هخص گھر کے اندر داخل ہوئے۔ محمد بن ابی بکر کے



ساتھ جو دوشخص تھے انہیں میں نہیں پہچانی۔ آپ رٹی ٹیڈ نے محمد بن ابی بکر کو طلب کیا تو انہوں نے سے داخل ہوئے تو انہوں نے سے داخل ہوئے تھے ایکن حضرت عثمان غنی رٹیائیڈ کے شرم دلانے پر واپس چلے آئے تھے اور ان کے ساتھ جو دوشخص تھے وہ باغیوں میں سے تھے اور وہ انہیں نہیں جانے چنانچہ ان تمام بیانات کی روشنی میں قاتلوں کی شناحت کرنا بہت مشکل ہوگیا جس کی وجہ سے یہ معاملہ الجھ کررہ گیا۔

مغيره بن شعبه رضاعة كامشوره:

حضرت مغيره بن شعبه رئائني بلنديابيه صحابي تصاوره هيس دائره اسلام میں داخل ہوئے تنھے۔ آپ بڑائنز نے حضور نبی کریم مظیر کیٹانے شانہ بشانہ غزوات میں شرکت فرمائی اور دادشجاعت یائی۔آپ طالفنا کوفہ اور بصرہ کے گورنر بھی رہے۔ آب طالنیز نے حضرت علی الرتضی طالفیز کے دست حق پر بیعت کی اور انہیں مشورہ ویا که حضرت عثمان عَنی شائنیز کی جانب ہے مقرر کردہ گورنروں کو برقر ار رکھا جائے خاص طور پرحضرت امیرمعادیه برنانیز کوشام کا گورنر برقر ار رکھا جائے یہاں تک کہ وه بیعت کرلیں۔حضرت طلحہ بن عبیداللہ طالفیئؤ کوکوفہ کا اور حضرت زبیر بن العوام طالننی کو بصرہ کا گورنر نامز د کریں۔حضرت علی المرتضنی طالنیز نے آپ طالنیز کے اس مشورہ کو ماننے سے انکار کر دیا اور فر مایا امیر معاوید منافقہ کی گورنری پر جھے اعتراض ہے جبکہ باقی دونوں صحابہ کرام بنی آئیز کی گورنری کے بارے میں وہ غور کریں گے۔ حضرت مغیرہ بن شعبہ رہائین وراندیش تھے انہوں نے حضرت علی المرتضی بنائن کے روب سے اس بات کا اندازہ کرلیا کہ وہ حضرت امیر معاویہ بنائن کومعطل كرديں چنانچەانہوں نے اپنی قسمت حضرت اميرمعاويه رظائف سے وابسة كرلى۔

مزید کتب پڑھنے کے لئے آن بی وزٹ کریں: www.iqbalkalmati.blogspot.com

النست على المراق المحالي المحالية المحالية

ا گلے دن حضرت مغیرہ بن شعبہ جالین نے حضرت علی المرتضی بہائین کی خدمت میں حاضر ہو کرعرض کیا کہ حضرت عثمان غنی جالین کے گورنروں کو معزول کردیں۔ حضرت عبداللہ بن عباس جائی جائے ہے جب حضرت مغیرہ بن شعبہ جن شور کی بات سی تو انہیں جھڑ کتے ہوئے کہا۔

'' کل تم نفیحت کرتے تھے آج دھوکہ دیتے ہو۔''

حضرت عبدالتد بن عباس خالفنها كالمشوره:

حضرت عبداللہ بن عباس بنائنہ جو کہ حضرت علی المرتضلی بنائنہ کے چیر کے بھیا ہو کہ حضرت علی المرتضلی بنائنہ کے چیر کے بھائی شخصے اور صاحب علم و حکمت سنھے انہوں نے جب حضرت مغیرہ بن شعبہ بنائنہ کو ٹوکا تو حضرت علی المرتضلی بنائنہ نے ان سے دریافت کیا تمہارہ مشورہ کیا ہے؟ حضرت عبداللہ بن عباس بنائنہ نانے عرض کیا۔

''مناسب تو بیتھا کہ آپ بڑائیؤ کہ کرمہ چلے جاتے لیکن اب ایبانہیں ہوسکتا گراب بہتریبی ہے کہ حضرت عثان غنی بڑائیؤ کے مقرر کردہ گورنروں بالخصوص حضرت امیر معاویہ بڑائیؤ کو برقرار رکھیں تا کہ حکومت مضبوط ہو سکے۔ اگر ایبا نہ کیا گیا تو بی امیہ لوگوں کو دھوکہ میں بہتلا کر دیں گے کہ ہم قاتلین عثان بڑائیؤ سے قصاص طلب کرنے کا حق رکھتے ہیں جس طرت ابل مدید کا دعویٰ ہے اس طرح آپ بڑائیؤ کی خلافت ختم ہو جا۔ گی اور آپ بڑائیؤ ان کوروک نہ کیل گے۔''

حضرت على المرتضى طِلْهَا فَيْ فِي حضرت عبدالله إبن عباس بِالبنيماك جواب

میں فرمایا۔

المناسر على المناس المن

''اگرایسے حالات ہوئے تو ہم امیر معاویہ (خالفہٰ) کوتکوار کے سوا کچھ نہ دیں گے۔''

حصرت عبدالله بن عباس را الخينا في عرض كيا ...

د آب وظائفة شجاع ضرور بي ليكن لرائي بيس صائب الرائے نبيس اور كيا آپ وظائفة في مائن بيس اور كيا آپ وظائفة في منافقة كا فرمان نبيس سنا كه الحرب خدمت ...

سنا كه الحرب خدمت ...

حضرت على المرتضى طالفين فقرمايا

"" تم سيح كبتي بو_"

حضرت عبدالله بن عباس والفيناف في عرض كيا-

''والله! اگرات بنائن میرے مشورے پر عمل کریں تو میں آپ بنائن کو ایسے راستے پر چلاؤں گا جس میں آپ رنائن کا ذرا برابر بھی نقصان نہ ہوگا۔''

حضرت على الرتضى والفنظ في قرمايا

''مجھ میں تمہاری طرح اور امیر مغناویہ (رٹائٹۂ) کی طرح کی خصلتیں نہیں ہیں؟''

حضرت عبدالله بن عباس ظافئنا في مشوره ويا

''آپ مٹائٹڑ ینوع چلے جا کیں اور اپنے اوپر وروازہ بند کر لیں اس طرح اہل عرب پریشان ہو جا کیں گے اور وہ آپ مٹائٹ کے سواکسی کوخلافت کا اہل نہیں یا کیں گے لین اگر آپ مٹائٹڈ کے سواکسی کوخلافت کا اہل نہیں یا کیں گے لیکن اگر آپ مٹائٹڈ ان کے ساتھ اٹھیں گے تو یہ حضرت عثمان غنی مٹائٹڈ کے ساتھ اٹھیں گے تو یہ حضرت عثمان غنی مٹائٹڈ کے

المناسرة على المراق المنافية ا

خون کا الزام آپ طائفیڈ پر عائد کریں گے۔' حضرت علی المرتضی طائفیڈ نے فرمایا۔ ''تم وہ کرو جو میں تنہیں کہتا ہوں، میں تنہیں امیر معاویہ (طائفیڈ) کی جگہ شام کا گورنر مقرر کرتا ہوں، تم سامانِ سفر تیار کرواور شام روانہ ہو جاؤ۔''

حضرت عبدالله بن عباس طافخناف عرض كيا-

''یہ مناسب نہیں ہے۔ امیر معاویہ (رڈالٹیز؛)، حضرت عثمان غنی دالتیز؛ کے رشتہ دار ہیں وہ مجھے ملک شام جنبیج ہی تنل کروا دیں گے۔ اس کے بہتر یہی ہے کہ آپ دلائٹی؛ ان کے ساتھ خط وکتابت کریں اور ان سے بیعت لیں۔'' حضرت علی المرتضی دلائٹی؛ نے فر مایا۔ ''میں ایہا ہر گزنہیں کروں گا۔''

حضرت عثمان عنى والنفيذ كم مقرره كورزول كى معزولى:

حضرت علی المرتضی و النفظ نے حضرت عثمان عنی و النفظ کے مقر دکر دہ گور نرول کو معز ول کرتے ہوئے نے گور نر تعینات کئے۔ حضرت عثمان بن حنیف و النفظ کو بھرہ کا گور نرمقر رکیا گیا۔ حضرت عبداللہ بن عباس و النفظ کو بیمن کا گور نرمقر رکیا گیا۔ حضرت عبداللہ بن عباس و النفظ کو بیمن کا گور نرمقر رکیا گیا۔ حضرت میں بن شہاب و النفظ کو کو ف کا گور نرمقر رکیا گیا۔ حضرت میں بن سعد و النفظ کو مقر رکیا گور نرمقر رکیا گیا۔ حضرت قیس بن سعد و النفظ کو مقر کا گور نرمقر رکیا گیا۔

حضرت مهمل بن صنیف والفنهٔ جب این گورنری کا پروانه لے کر ملک شام

النات على المسترضى المانية كي فيصل المسترك الم

روانہ ہوئے تو راستے میں ان کی ملاقات حضرت امیر معاویہ طفیقیڈ کے چند سواروں سے ہوئی جن کے پوچھنے پر آپ طابقیڈ نے بتایا کہ مجھے ملک شام کا گور زمقرر کیا گی ہے۔ ان سواروں نے آپ طابقیڈ کو دھمکی دی اگر تمہیں حضرت عثمان غنی طابقیڈ کے علاوہ کی نے گور زمقرر کیا ہے تو آپ طابقیڈ کے لئے بہتر یہی ہے کہ واپس چلے علاوہ کی نے گور زمقرر کیا ہے تو آپ طابقیڈ کے لئے بہتر یہی ہے کہ واپس چلے جا کیں چنانچہ آپ طابقیڈ واپس مدینہ منورہ آگئے اور حضرت علی المرتضی طابقی کی گوش گرار تمام حالات بیان کر دیتے۔

حضرت مارہ بن شباب بڑائٹؤ جب کوفہ روانہ ہوئے تو راستے میں ان کی ملا قات حضرت طلیحہ بن خویلد بڑائٹؤ سے ہوئی۔ حضرت طلیحہ بڑائٹؤ نے حضرت ممارہ بن شہاب بڑائٹؤ سے دریافت کیا کہ وہ کہاں جارہے ہیں؟ تو انہوں نے جواب دیا مجھے کوفہ کا گورنر مقرر کیا گیا ہے۔ حضرت طلیحہ بڑائٹؤ نے کہا تمہارے لئے بہتر بہی ہے کہتم واپس چلے جاؤ کیونکہ اہل کوفہ حضرت ابوموی اشعری بڑائٹؤ کے علاوہ کسی کو گورنر ماننے کو تیار نہیں ہیں۔ حضرت ممارہ بن شہاب بڑائٹؤ بھی اس واقعہ کے بعد واپس لوٹ گئے اور مدید منورہ پہنچ کر حضرت علی الرتضلی بڑائٹؤ کوتمام حالات سے واپس لوٹ گئے اور مدید منورہ پہنچ کر حضرت علی الرتضلی بڑائٹؤ کوتمام حالات سے واپس لوٹ گئے اور مدید منورہ پہنچ کر حضرت علی الرتضلی بڑائٹؤ کوتمام حالات سے واپس لوٹ گئے اور مدید منورہ پہنچ کر حضرت علی الرتضلی بڑائٹؤ کوتمام حالات سے واپس لوٹ گئے اور مدید منورہ پہنچ کر حضرت علی الرتضلی بڑائٹؤ کوتمام حالات سے آگاہ کیا۔

حضرت علی المرتضی بنالفند بند جب به حالات دیکھے تو آپ بنالفند کو الدت کو جان لیا کہ حالات کو جان لیا کہ حالات مالات کی سنگینی کا اندازہ ہو گیا اور آپ بنالفند نے اس بات کو جان لیا کہ حالات آ سانی سے قابو میں نہیں آنے والے ہیں۔

حضرت علی المرتضی بران فیز نے حضرت ابوموی اشعری بران کو خط حضرت معبد اسلمی بران فیز کے اسلامی بران کی المرت امیر معاوید بران بیز کو خط حضرت جریر بن عبدالله بران کی بر

الناسترع الدر تضى يُنْ تَنْ كُر فيعلى السَّالِي اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ

ہوئے لکھا کہ اہل کوفہ نے میرے ہاتھ پر بیعت کر لی ہے اور انہوں نے یہ بیعت اپنی مرضی اور خوشی سے کی ہے۔

حضرت على المرتضلي منالتفنَّه نے جو خط حضرت امیر معاویہ منالہوز کی جانب بھیجا تھا اس کے جواب میں حضرت امیر معاویہ بنائیڈنے اینے خاص قاصد کے ہاتھ ایک لفافہ بھیجا۔ اس قاصد نے وہ لفافہ جب آپ بٹائنڈ کو دیا اور آپ بٹی سیڈ نے اے کھول کر دیکھا تو وہ خالی تھا۔ آپ بڑائٹیڈ کوغصہ آ گیا۔حضرت امیر معاویہ طلان کا قاصد بہت ہوشیار تھا اس نے آب طالنے سے امان طلب کر لی۔ قاصد نے کہا کہ ملک شام میں کوئی بھی آپ طالفنڈ کے دست حق پر بیعت نہ کرے گا کیونکہ حضرت عثمان غنی طالفیز کی خون آلود قبیص جامع مسجد دمشق کے منبر پر رکھی ہے اور ان لوگوں نے عہد کیا ہے کہ جب تک حضرت عثمان غنی مِنالِنَیْن کی شہاوت کا قصاص منہیں لیں گے ان کی تلواریں نیام میں واپس نہیں جا ئیں گی۔ حضرت على المرتضى بنائنيز نے قاصد كى بات سننے كے بعد فرمايا۔ '' وہ لوگ مجھے ہے حضرت عثمان غنی بٹائٹنڈ کے خون کا قصاص ما سنگتے ہیں واللہ! میں ان کے خون سے بری الذمہ ہول۔'' حضرت علی المرتضلی بڑائیز کے جواب کے بعد حضرت امیر معاویہ بٹیلنز کا قاصد واپس شام رواند ہو گیا۔

ای دوران حضرت طلحہ بن عبیداللہ اور حضرت زبیر بن العوام بن نئیم نے حضرت علی الرتضلی طالبی طالب کی کہ انہیں مدینہ منورہ سے جائے و یا المرتضلی طالب کی کہ انہیں مدینہ منورہ سے جائے و یا بات المرت کی انہیں مدینہ منورہ سے جائے و یا بات سے جائے ۔ آپ بیان نو انکار کر دیا جس کے بعد بید دونوں حضرات مکہ کمر مدم ہ و ارادہ سے تشریف لے گئے۔ اس دوران ان دونوں حضرات کی جانب سے آساس

المنت على المالية الما

كامطالبه برابر جاري تقا_

حضرت علی المرتضی و المنظم نے حضرت سہیل بن حنیف و الفیز کی ملک شام سے واپسی کے بعد شام پر فوج کشی کی تیاریاں شروع کر دیں۔ اہل مکہ کواس کی خبر ہوئی تو انہوں نے مخالفت کی جس برآب و الفیز نے ملک شام پر حملہ کا فیصلہ فی الوقت منسوخ کر دیا اور مکہ کرمہ روانہ ہونے کا فیصلہ کیا۔

ام المومنين حضرت سيّده عا تشه صديقه راينها كارديل:

شام میں حضرت علی المرتضی و النیز کی خلافت کے خلاف محاذ کھڑا ہو چکا تھا۔ ام المونین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقتہ و النیز جو جج کہ ادا یک کے لئے مکہ کرمہ میں موجود تھیں انہیں حضرت عثان غنی و النیز کی شہادت کی خبر مکہ مکر مہ سے واپسی پر سرف کے مقام پر ہوئی۔ آپ و النیز نے اس خبر کو سنتے ہی فر مایا۔

"مفیدین نے وہ خون بہایا جے اللہ عزوجل نے حرام کیا۔
مفیدین نے وہ خون بہایا جے اللہ عزوجل نے حرام کیا۔
مفیدین نے اس مقدس شہر کی حرمت کو داغدار کیا جوحضور نبی

المناسر عمل المناسل ال

کریم مضطیقیم کی آماجگاہ تھا۔ انہوں نے اس مہینے میں خونریزی کی جس میں خونریزی کی جس میں خون بہانامنع تھا اور انہوں نے وہ مال لوٹا جس کا لینا ان کے لئے کسی طور جائز نہ تھا۔''

مورضین لکھتے ہیں اس خبر کے بعدام المونین حضرت سیدہ عائشہ صدیقہ خاتیجا کمہ مکرمہ واپس لوٹ گئیں۔

ام المومنین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقد زبان کی مکرمددایس پہنچیں تو لوگ آپ ذبان کی مکرمددایس پہنچیں تو لوگ آپ ذائع کی سواری کے گردا تعظیم ہو گئے۔ آپ ذبائع کی سواری کے گردا تعظیم ہو گئے۔ آپ ذبائع کی سواری کے اس مجمع عام سے تقریر کرتے ہوئے فرمایا۔

حضرت عثمان عنی والنفی و النفی کی جانب سے حضرت عبداللہ بن عامر حضری والنفی کو مکہ مکر مدکا گورزم مقرر کیا گیا تھا۔ انہوں نے ام المونین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ والنفی کی مان جوشی باتوں کو سنا تو انہوں نے کہا۔

"حضرت عثمان عنى (طلعن) كے خون كا بدله سب سے پہلے ميں لينے والا ہوں۔"

روایات بیل آتا ہے اس دوران حضرت سعید بن العاص اور حضرت ولید بن عقبہ زخانیم بھی مکہ مرمہ بیج گئے۔حضرت طلحہ بن عبیداللہ اور حضرت زبیر بن العوام المنت على المراقع المائية كرفيه لله المائية ال

بن النوم جب مكه مكرمه بنیج تو انهول نے بھی مدینه منورہ کے حالات بیان کئے۔ ام المومنین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقه بنائی آئے ان حضرات کو بھی اپنے ساتھ حضرت عثمان عنی بنائی کے خون کا قصاص لینے کی دعوت دی جسے انہوں نے قبول کر لیا اور حضرت عثمان عنی بنائی کے خون کا قصاص لینے کی دعوت کی ایک زبردست جمعیت مکه حضرت عثمان عنی بنائی کے خون کا قصاص لینے والوں کی ایک زبردست جمعیت مکه مکرمه میں تیار ہوگئی۔

ام المونین حظرت سیّدہ عائشہ صدیقہ فرای نی ان حفرات سے مشورہ کیا تو کچھ نے ملک شام جانے کا مشورہ دیا لیکن حضرت عبداللہ بن عامر بن کر بن فرانی نی اس سے اختلاف کرتے ہوئے کہا ملک شام میں حضرت امیر معاویہ فرانی نی اس سے اختلاف کرتے ہوئے کہا ملک شام میں حضرت امیر معاویہ فرانی نی این باغیوں کورو کئے کے لئے کافی ہیں ہمیں بصرہ کی جانب جانا جا ہے کیونکہ بعرہ کے لئے کافی ہیں ہمیں بصرہ کی جانب جانا جا ہے کیونکہ بعرہ کے لئے کافی ہیں ہمیں بورہ کی جانب جانا جا ہے کیونکہ بعرہ کے لئے کافی ہیں ہورہ کی ہارے بعرہ ہمی ہمارے مراسم بھی گہرے ہیں۔ جب بعرہ پر ہماری گرفت مضبوط ہوگی تو پھر اہل بعرہ بھی ہمارے ساتھ مل کر قصاص کا مطالبہ کریں گے اور اس طرح ہم بہتر طور پر حصرت عثان غی ساتھ مل کر قصاص کا مطالبہ کریں گے اور اس طرح ہم بہتر طور پر حصرت عثان غی

مكه مكرمه ے بھرہ كى جانب سفر شروع ہوا تو ام المونين حضرت سيدہ

ع کشه صدیقه طلاقهٔ کاشکر کی تعداد قریباً ڈیڑھ ہزارتھی۔ بھرہ پراس وقت حضرت عثمان بن حنیف طرح ہے واپس جیے عثمان بن حنیف طرح ہے واپس جیے جانبوں نے کوشش کی کہ سی طرح ہے واپس جیے جانبوں کے کیشش کی کہ سی طرح ہے واپس جیے جانبوں کی کہ سی مارٹ کال گئیں۔

حضرت عثمان بن حنیف را النفظ کی ان کوششوں کا فائدہ یہ ہوا کہ آپ را النفظ کا النفظ کے مؤقف کو درست رفی نفظ کا النفظ و حصول میں تقسیم ہو گیا۔ آیک گروہ آپ رفی نفظ کے مؤقف کو درست سلیم کرتا تھا جبکہ دوسرا گروہ حضرت عثمان بن حنیف رفی نفظ کے مؤقف کو درست سلیم کرتا تھا جبکہ دوسرا گروہ حضرت عثمان بن حنیف رفی نفظ کے مؤقف کو درست سلیم کرنے لگا۔

حضرت عثمان بن حنیف رئی نئی نئی نے ام المونین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ والنی نئی حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ والنی نئی کے نظر کے راہ فرار پر مجبور کرنا جا ہا لیکن اس میں حضرت عثمان بن حنیف والنی کے نام المونین ہوئی اور وہ قیدی بنا لئے گئے۔اس لڑائی کے بعد بصرہ پرام المونین جفرت سیّدہ عائشہ صدیقہ والنی کا قبضہ ہوگیا۔

حضرت على المرتضلي طالنين كا جوابي رويمل:

حضرت علی المرتضی و النفظ کو جب بصرہ پر ام الموشین حضرت سیّدہ عاکشہ صدیقہ و النفظ کے قبضہ کی خبر ملی تو انہوں نے محمد بن ابو بکر اور محمد بن جعفر میں النفظ کو ایک خط دے کر حضرت ابوموی اشعری و النفظ کے پاس بھیجا اور ان سے جنگ کی صورت میں بھر پور تعاون کا دعدہ لینا چاہا۔ حضرت ابوموی اشعری و النفظ نے آپ و النفظ کا بیغام ملنے کے بعد تعادن کرنے سے انکار کر دیا اور کہا جنگ کے لئے تکانا دنیا کی راہ ہے اور بیٹھے رہنا آخرت کی راہ ہے۔

المنت على المن المانية كي فيها المناق المناق

قاتلین سے کیونکہ انہوں نے حضرت عثمان غنی وٹائٹیڈ کو ناحق شہید کیا۔ محمد بن ابی بکر اور حضرت علی الرفضی بٹائٹیڈ کو حضرت علی الرفضی بٹائٹیڈ کو حضرت اور محمد بن جعفر بٹی المرتضی بٹائٹیڈ کو حضرت اور محمد بن جعفر بٹی المرتضی بٹائٹیڈ کے مؤقف سے آگاہ کیا۔

حضرت علی المرتضی و الفیز نے حضرت عبداللہ بن الله اور حضرت مالک بن اشتر بنی النیز کو حضرت ابوموی اشعری و الفیز کے پاس بھیجا لیکن یہ حضرات بھی اپنی بہترین صلاحیتوں کے باوجود حضرت ابوموی اشعری و الفیز کو ان کے مؤقف سے نہ ہٹا سکے ۔حضرت ابوموی اشعری و الفیز کا ایک ہی مؤقف تھا کہ جب تک یہ فتنے ختم نہیں ہوجاتا ہیں خاموش رہون گا۔

حضرت علی المرتضی طافنی طافنی فی المرتضی طافنی نے اس وفد کی ناکامی کے بعد اپنے صاحبز اوے حضرت سیّدنا امام حسن اور حضرت عمار بن یاسر دی اُنتی کو کوف بھیجا۔ جب بید دونوں حضرات کوف پہنچ تو حضرت ابوموی اشعری طافنی کوف کی جامع مسجد میں لوگول کے اجتماع سے خطاب کررہے تھے اور فرمارہے تھے۔

"دخضور نی کریم میضائی ان جس فتنه کی پیشین گوئی کی تھی وہ آ چکا ہے اپنے ہتھیار ضائع کر دواور گوشہ بینی اختیار کرلو کیونکہ حضور نی کریم میضائع کر دواور گوشہ بینی اختیار کرلو کیونکہ حضور نی کریم میضائی ان فر مایا تھا اس موقع پر سونے والا ہمضے والے سے بہتر ہے۔"

حضرت سيّدنا امام حسن اور حضرت عمار بن ياسر بني أنه اس وقت مسجد ميل داخل ہوئے الله امام حسن اور حضرت عمار بن ياسر بني أنه اس وقت مسجد ميل داخل ہوئے اور حضرت ابوموی اشعری برانتی سے سلام کرنے کے بعد ان سے گفتگو شروع کی۔

حضرت ابوموی اشعری مالفن نے حضرت عمار بن یاسر مالفن کو مخاطب

الان سترع الله المنافئ الماتين كي فيصل المنافقة كي فيصل المنافقة كي فيصل المنافقة ال

کرتے ہوئے کہا۔

" تم نے عثمان (طَلِيْنَةُ) کی کوئی مدد نہیں کی اور فاجروں کے ساتھ شامل ہو گئے۔"

حضرت عمار بن باسر رٹائٹٹ کو ریان کر غصہ آ گیا۔ حضرت سیّد نا امام حسن طالغیّز نے ان دونوں کے مابین مداخلت کرتے ہوئے فرمایا۔

''لوگوں نے اس بارے میں ہم ہے مشورہ نہیں کیا اور سوائے اصلاح کے ہمارا کوئی مقصد نہیں اور امیر المومنین اصلاح امت کے کاموں میں کسی سے خوف نہیں کھاتے۔''

حضرت ابوموی اشعری طالغیز نے جب حضرت سیّدنا امام حسن طالغیز کی بات سی تو کہا۔

"میرے مال باپ آپ دلینٹو پر قربان ہوں آپ دلینٹو نے درست فرمایا محرکمام مسلمان آپس میں بھائی بھائی ہوں اور بھائی کا خون ومال حرام ہے۔"

O.....O......O



جنگ جمل

ام المومنین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ بی بی اگر چہ بھرہ پر قابض اور پی سی سی ایک گروپ سیسے سی ایل بھرہ تین واضح گروپوں میں تقسیم ہو چھے سیے۔ ان میں ایک گروپ ام غیر جانبدار تھا۔ دوسرا گروہ حضرت علی المرتضی بی بی بی کا حامی تھا جبکہ تیسرا گردپ ام المومنین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ بی بی بی ایک ساتھ تھا۔ وہ گروپ جو غیر جانبدار تھا اس نے جب دیکھا کہ مسلمانوں کے ہی دوگر وہوں کے درمیان لڑائی کا خطرہ بڑھ رہا ہے تو اس نے مصالحت کروانے کی کوششیں شروع کر دیں۔ حضرت علی المرتفیٰی رہا ہے تو اس نے مصالحت کروانے کی کوششیں شروع کر دیں۔ حضرت علی المرتفیٰی موائن بھی دور اسلام کے اس نازک موقع کو سمجھ رہے سے اس لئے انہوں نے بھی خضرت تعقاع بڑائیڈ کو بھرہ ام المومنین حضرت عائشہ مدیقہ بڑائیڈ کے پاس بھیجا حضرت تعقاع بڑائیڈ کو بھرہ ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ بڑائیڈ کا کے پاس بھیجا تاکہ بات چیت سے معاملہ طے کیا جا سکے۔

حضرت قعقاع بنائن العمره پنج اورام المومنین حضرت سیده عائشه صدیقه بنائن کی خدمت میں حاضر ہوکران کا مؤقف سنا۔ آپ بنائن انے فرمایا۔

" ہم لوگوں کے اختلاف اوران کی اصلاح کے لئے خروج کا مطالبہ کرتے ہیں اور ہم چاہتے ہیں کہ قاتلین عثان (بنائن اللہ کرتے ہیں اور ہم چاہتے ہیں کہ قاتلین عثان (بنائن اللہ کرتے ہیں اور ہم چاہتے ہیں کہ قاتلین عثان (بنائن کی تصاص لیا جائے اور اگر ایسا نہ کیا گیا تو بیقر آن مجید کی تعلیمات کے خلاف ہوگا۔"



المناسر على المنافع ال

حضرت قعقاع والنفظ في حضرت زبير بن العوام اور حضرت طلحه بن عبيد الله وخفرت قعقاع والنفظ في النفظ في المواتيم كا مؤقف ب خلفه كا مؤقف جاء المومنين حضرت سيّده عائشه صديقه والنفظ كا ب-

حضرت قعقاع بڑائیڈ نے ان حضرات کا جواب سننے کے بعد کہا کہ آپ تمام حضرات درست فرماتے ہیں اور ہم بھی اس بات پر شفق ہیں کہ حضرت عثان غنی مڑائیڈ کے قاتلین سے قصاص لیا جائے لیکن آپ حضرات کا میطریقہ درست نہیں اور آپ نے بھرہ کے چھسوافراد کوئل کر ڈالا جبکہ وہ حضرت عثان غنی مڑائیڈ کے قاتل نہیں اور آپ نے بھرہ کے چھسوافراد کوئل کر ڈالا جبکہ وہ حضرت عثان غی مڑائیڈ کے قاتل نہیں سے اور ایسی کاروائیاں امت میں اختلاف ہم کرنے کی بجائے اختلاف بوھائیں گی۔

ام المونین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ ذائفیا نے حضرت قعقاع دائیا کہا آپ بات سننے کے بعد فرمایا کہ تمہارا کیا مشورہ ہے؟ حضرت قعقاع دائیا نئے نے کہا آپ دلائی ہارے لئے باعث خیر وہرکت ہیں آپ ذائفیا ہمیں اس خیر سے محروم نہ کریں اور مصالحت سے کام لیس تا کہ فتنہ دم تو ڈ جائے اور ہم بھی قرآن مجید کی تعلیمات پر عمل کرتے ہوئے حضرت عثمان غی دلائی کے قاتلوں سے قصاص وصول کرسیس۔ عمل کرتے ہوئے حضرت عثمان خی دلائی کے قاتلوں سے قصاص وصول کرسیس۔ ام المونین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ دلائی ان مشورہ کو پسند کیا اور حضرت قعقاع دلائی سے فرمایا۔

"میں تمہاری بات مانے کے لئے تیار ہوں تم علی (ملائنیز) کو مجمی اس برآمادہ کرو۔"

حضرت قعقاع والنيئون ما المونين حضرت سيده عائشه صديقه والنوا كا جواب سناتو آب والنيئون فرش ہوتے ہوئے کہائے۔

المستعلى المستفى المانين في المستعلى ال

'' مجھے یقین ہے حضرت علی المرتضلی شائنۂ کو اس پر بچھے اعتراض نہ ہوگا۔''

حضرت قعقاع طالفظ كى مصالحتى كوشش كامياب موئيس تو عبدالله بن سبا نے جب دیکھا کہ ان دونوں کشکروں کے مابین سلح ہور ہی ہے تو اس نے سوچا کہ اگر انہوں نے سکے کر لی تو پھر ہیہ حضرت عثمان غنی بڑاٹنے؛ کے قاتلوں کی تلاش شروع كردي اور پهرېميں كوئى نہيں ہيا سكے گا چنانچەاس نے منصوبہ تيار كيا كداس صلح كو كامياب نه ہونے ديا جائے۔عبدالله بن سبانے اينے بيروكاروں كوتكم ديا كه وه رات كى تاريكى مين ام المونين حضرت سيده عائشه صديقة والنفظ كالشكر يرشب خون ماریں۔عبداللہ بن سیا کے پیروکاروں نے رات کی تاریکی میں ام المومنین حضرت سيده عائشه صديقد والنجئاك كفكر برحمله كردياجس سام المونين سيده حضرت عائشه صدیقه منافظا کے نشکر نے سمجھا کہ حضرت علی الرتضی طافنیانے معاہدہ کی خلاف ورزى كى ب چنانجدانبول في حضرت على الرتضى طائفي كالتكرير ملدكر ديا-منافقین کی کوششیں کامیاب ہو چکی تھیں اور مسلمانوں کے دونوں گروہ آپس میں لڑنا شروع ہو گئے تھے۔ام الموشین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقتہ ذاتیجا نے ا بے نشکر کورو کنے کی کوششیں شروع کر دیں تا کہ معاملہ ملے وصفائی سے نب جائے۔ حضرت على المرتضى والفيز في على التي فوج كو جنك سے روكنے كى كوشش كى ليكن اس دوران جنك كا دائره وسبع مو چكا تھا۔حضرت على الرتضلي طائنز نے جب تمام معامله ر یکھا تو آپ ملافن نے میدان جنگ میں موجود حضرت طلحہ بن عبیداللہ طالفہ سے

"اے طلحہ (النفو)! تم نے میری مخالفت میں بیسب کیاتم اللہ

مخاطب ہوکر فر مایا۔



المناسبة على المنافعة ال

عزوجل کوکیا جواب دو گے؟ کیا میں تمہارا دینی بھائی نہیں؟ کیا تم پر میرااور مجھ پر تمہارا خون حرام نہیں ہے؟"
حضرت طلحہ بن عبیدالللہ رہ لا تنظیفی نے جوابا کہا۔
" کیا آپ رہ الفینیو نے حضرت عثمان غنی رہ الفینیو کے قبل کی سازش نہیں کی؟"
حضرت علی المرتضلی رہ الفینوو نے فرمایا۔
حضرت علی المرتضلی رہ الفینوو نے فرمایا۔
" اللہ بہتر جانیا ہے اور اس کی لعنت قاتلین عثمان (رہ الفینوو) پر

حضرت طلحہ بن عبیداللہ والنّئظ کے انکار کے بعد حضرت علی الرّنظی والنّظ کے انکار کے بعد حضرت علی الرّنظی والنّظ کے انکار کے معرمت زبیر بن العوام والنّظ کومخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

"اے زبیر (رافظیہ)! تہہیں وہ دن یاد ہے جب حضور نبی کریم سطانظیہ نے تم سے بوچھا تھا کہ کیا تم مجھے (علی دافیہ) کو دوست رکھتے ہوتو تم نے کہا تھا ہاں! یارسول اللہ مطابی اور حضور نبی کریم مطابع کے الما تھا تم ایک دن مجھ سے ناحق لڑو گے۔' حضرت زبیر بن العوام دافیہ نے جب حضرت علی الرتضلی والفیہ کی بات سن تو آپ والفی کی آنکھوں میں آنسوآ گئے اور آپ والفیہ نے کہا۔ "ابوالحن (والفیہ)! آپ والفیہ اگر مجھے یہ بات مدینہ منورہ "ابوالحن (والفیہ)! آپ والفیہ اگر مجھے یہ بات مدینہ منورہ

میں یاد دلاتے دیتے تو میں ہر گز آپ دلائن کے مقابلے کے لئے نہ لکاتا۔''

اس تمام منتگو کے بعد حضرت زبیر بن العوام طالفیداس جنگ سے علیحدہ

المناسرة على المنافئة كي فيعلى المنافئة كي فيعلى

ہو گئے۔ آپ رظافنہ نے اپنے صاحبزادے عبداللہ بن زبیر رظافہ کو بھی تھم دیالیکن انہوں نے جنگ سے علیحدہ ہونے سے انکار کر دیا۔

حضرت زبیرین العوام مالٹنی میدان جنگ سے علیحدہ ہو کر تنہا بھرہ ردانہ ہو گئے۔ راستے میں احنف بن قبیں کے لشکر کا ایک بدبخت عمرو بن الجرموز، آپ ر النفر کے تعاقب میں روانہ ہو گیا۔ آپ طالفتو نے اس سے دریافت کیا کہ تو میرے ساتھ کیوں آتا ہے؟ اس نے کہا: مجھے آپ ملائن سے ایک مسلد یو چھنا ہے۔ آپ ملائن نے فرمایا میں نماز کی ادائیگی کے بعد تیرے سوال کا جواب دوں گا۔ بیا کہد کر آب بڑائن مناز کے لئے کھڑے ہو گئے اوراس بدبخت نے آپ مالٹن کوشہید کر ديا اور حضرت على الرتضلي مالغنه كي خدمت مين حاضر ہوا۔ آپ مالفنه كو جب خادم نے عمرو بن الجرموز کے آنے کی خبر دی تو آپ دالٹن نے فرمایا اس بد بخت کوجہم کی بثارت کے ساتھ اندر آنے کی اجازت دو۔عمرو بن الجرموز جب آب طالفن کی خدمت میں حاضر ہوا تو آپ مالفن نے اس کے ہاتھ میں حضرت زبیر بن العوام الطنا کی تکوار دیکه کرفر مایا او بد بخت! به وه تکوار تھی جوعرصه دراز تک حضور نبی کریم مِصْ الله كل عناظت فرماتى ربى -عمره بن الجرموز في جب آب مالنفه كا كلام منا تو آپ النفظ کو بھی برا بھلا کہنا شروع کر دیا اور اینے پیپ میں وہی تکوار مار کرخودشی

حفرت زبیر بن العوام والنفیظ کی جنگ سے علیدگی کے بعد حفرت طلحہ
بن عبیدالللہ والنفیظ سوچ میں پڑ گئے کہ انہیں بھی میدانِ جنگ چھوڑ وینا چاہے۔ ابھی
آپ والنفیظ ای سوچ میں شھے کہ مروان بن الکم نے آپ والنفیظ کو تیر مارا جس سے
آپ والنفیظ شدید زخی ہو گئے۔ آپ والنفیظ کو اس مالت میں بھرہ نے جایا گیا جہاں

المناسر على المنافع ال

آپ رالنین بہت زیادہ خون بہہ جانے کی وجہ سے وصال فر ما گئے۔

حضرت کعب بن مالک و النین جوام الموشین حضرت سیّده عائشه صدیقه و النین کے ادنے کی مہار پکڑے ان کی حفاظت کررہے تھے آپ والنین نے انہیں تھم دیا کہ وہ قرآن مجید بکڑ کراس بات کا اعلان کریں کہ جمیں قرآن مجید کا فیصلہ منظور ہے تم بھی قرآن مجید کا فیصلہ منظور کرلو۔ حضرت کعب بن مالک و النین نے اپنی جان کی پرواہ کئے بغیر اعلان کرنا شروع کر دیا۔ عبداللہ بن سبانے جب دیکھا حالات کی پرواہ کئے بغیر اعلان کرنا شروع کر دیا۔ عبداللہ بن سبانے جب دیکھا حالات ایک مرتبہ پھر قابو میں آنے والے ہیں تو اس نے اپنے ساتھیوں کو تیروں کی بارش کرنے کا تھم دے دیا جس پرآپ والنی نے اپنے ساتھیوں کو تیروں کی بارش کرنے کا تھم دے دیا جس پرآپ والنی نے اپنے ساتھیوں کو تیروں کی بارش

جنّك كے تم ہوتے ہى حضرت على الرتضى والفيز، ام المونين حضرت سيده

عائشه صدیقه خانفهٔ کی خدمت میں حاضر ہوئے اور ان سے حال دریافت کیا۔ پھر دونول فریقین کے مابین صلح کا معاہرہ طے پایا گیا۔حضرت علی المرتضی دلائنیز نے ام المومنين حضرت سيّده عا مُشهمد يقه ولينجنّا كوبصره كي جاليس عورتوں اورمحرين ابي بكر کے ہمراہ بھرہ روانہ کر دیا۔حضرت علی المرتضی طالفین، ام المومنین حضرت سیّدہ عاکشہ صدیقتہ ذالغینا کو بہل منزل تک چھوڑنے خود آئے اور دوسری منزل تک حضرت سیدنا الأم حسن طليني في حيورا - ام المونين حصرت سيده عاكثه صديقه والنفي بعره من مچھ عرصہ قیام کرنے کے بعد مکہ مرمہ تشریف کے کئیں جہاں ج کی ادا لیگی کے بعد ام المومنين حضرت سيّده عائشة صديقه بنافخ اددباره مدينه منوره تشريف لے كئيں۔ جنگ جمل میں شہید ہونے والوں کی تعداد کے بارے میں مختلف روایات موجود ہیں۔منتدروایات کے مطابق اس جنگ میں دس ہزارمسلمان شہید ہوئے جن میں حضرت طلحہ بن عبیداللہ، حضرت زبیر بن العوام اور حضرت کعب بن مالک ون الذي جيد اكابر صحابه كرام ون الذي تهيد موائد مواسك جنگ جمل تاريخ اسلام كا ايك نہایت ہی افسوسناک پہلو ہے جس میں بے شارمسلمان ناحق مارے سکتے۔

O___O





جنگ صفين

حضرت علی المرتضی و الفیز جمل ہے بھرہ روانہ ہوئے جہاں لوگ جوق درجوق آپ والفیز ہے بیعت کے لئے حاضر ہونے گئے۔ آپ والفیز نے حضرت، عبداللہ بن عباس والفیز کو بھرہ کا گورزمقررفر مایا اورخودکوفہ تشریف لے گئے۔ کوفہ کو وارالخلافہ بنانے کا فیصلہ:

حضرت علی الرفضی و النفظ نے کوفہ جانے کے بعد اسے دارالخلافہ مقرر کیا اور اس بات کا اعلان کیا کہ تمام امور خلافت اب مدینہ منورہ کی بجائے کوفہ سے انجام دیئے جائیں گے۔ اس دوران آپ دی تی نف انظامی امور میں بھی مختلف تبدیلیاں فرما کمیں۔ مدائن پر برزید بن قیس کو گورز مقرر کیا گیا، خراسان پر ضلید بن کاس کو گورز مقرر کیا گیا، خراسان پر ضلید بن کاس کو گورز مقرر کیا گیا، موسل اور شام سے متصل دیگر علاقوں پر اشتر نخی کو گورز مقرر کیا گیا اور اصفہان پر محد بن سلیم کو گورز مقرر کیا گیا۔

حضرت علی المرتضی و الفید نے حضرت قیس بن سعد انصاری برانی کو ملک مصر کا گورزم تفرد کیا۔ حضرت قیس بن سعد انصاری برانی نئی نئی کو ملک مصر کا گورزم تفرد کیا۔ حضرت قیس بن سعد انصاری برانی نئی نئی کو خلیف سلیم کر حکمت عملی ہے اہل مصر کو اس بات پر آبادہ کر لیا کہ وہ آپ برانی کو خلیف سلیم کر لیں چنا نچہ بچھ ہی عرصہ میں سوائے خربتہ کے تمام مصری قبائل نے آپ برانی کو اپنا خلیف سلیم کر لیا۔ خربتہ نے حضرت قیس بن سعد برانی کو اس بات کی یقین و ہائی خلیف سلیم کر لیا۔ خربتہ نے حضرت قیس بن سعد برانی کو اس بات کی یقین و ہائی

المسترع الدر تضى في تنزير كي فيصل المسترع المال المسترع المال المسترع المسترع

کروائی کہ وہ امورِخلافت میں کسی متم کی مداخلت نہ کریں گے لیکن ابھی اس وقت انہیں بیعت کے لیکن ابھی وال وقت انہیں بیعت کے لئے نہ کہا جائے۔حضرت قیس بن سعد رشائنڈ نے اپنی دو اندیش کی بدولت ان برزیادہ دباؤ ڈالنا مناسب نہ سمجھا۔

حضرت امير معاويه طالفيٌّ كي تشويش:

جنگ جمل کے اختتام پذیر ہونے کے بعد حفرت علی المرتضیٰ والفیٰ واللہ کوفہ کو دارالخلافہ بتایا تو حفرت امیر معاویہ والفیٰ کواس بات کا خطرہ لاحق ہوا کہ کہیں آپ والفیٰ ملب شام پر چڑھائی نہ کر دیں۔اس دوران اہل مصرفے جب آپ والنین کی اطاعت کر لی تو حضرت امیر معاویہ والفیٰ کواس بات کا شدید خطرہ لاحق مولین کی اطاعت کر لی تو حضرت امیر معاویہ والفیٰ کواس بات کا شدید خطرہ لاحق ہوگیا کہ اب آپ والفیٰ کوفہ اور مصر دونوں جانب سے شام پر حملہ کر دیں گے۔ مصرت امیر معاویہ والفیٰ نے حضرت قیس بن سعد والفیٰ کوایک خط لکھا اور ان سے اس بات کا مطالبہ کیا کہ وہ حضرت عثمان غن والفیٰ کے قصاص کا مطالبہ کو ایک دو ان کی مدد کریں۔حضرت قیس بن سعد والفیٰ کے اس بات کا مطالبہ کیا کہ وہ حضرت عثمان غن والفیٰ کے قصاص کا مطالبہ کیا کہ وہ حضرت عثمان غن والفیٰ کے قصاص کا مطالبہ کیا کہ وہ حضرت عثمان غن والفیٰ کے جواب میں اس لئے وہ ان کی مدد کریں۔حضرت قیس بن سعد والفیٰ کا کے جواب میں لکھا۔

'' حضرت علی المرتضی و النین کسی بھی طرح حضرت عمان عنی و النین الله میلی کسی بھی طرح حضرت عمان علی شہادت میں ملوث نہیں ہیں اور جب سب لوگ حضرت علی المرتضی و النین کی بیعت کر رہے ہیں تو وہ اور اہل شام بھی ان کے دست حق پر بیعت کریں تا کہ حضرت علی المرتضی و النین میں کسی میں حضرت عمان عنی و النین کی شہادت کی تحقیقات کر سکیں۔'' حضرت امیر معاویہ و النین کو جب حضرت قیس بن سعد و النین کا جواب ملا تو انہوں نے ایک و همکی آمیز خط حضرت قیس بن سعد و النین کو جس میں ان سعد و النین کو جس میں انہوں نے ایک و همکی آمیز خط حضرت قیس بن سعد و النین کو جس میں انہوں نے ایک و همکی آمیز خط حضرت قیس بن سعد و النین کو جس میں انہوں نے ایک و همکی آمیز خط حضرت قیس بن سعد و النین کو جس میں انہوں نے ایک و همکی آمیز خط حضرت قیس بن سعد و النین کو جس میں انہوں نے ایک و همکی آمیز خط حضرت قیس بن سعد و النین کو جس میں انہوں نے ایک و حضرت کیں جس میں سعد و انہوں نے ایک و حضرت کیں جس میں سعد و انہوں نے ایک و حضرت کیں جس میں سعد و انہوں نے ایک و حضرت کیں جس میں سعد و انہوں نے ایک و حضرت کیں جس میں سعد و کانین کو جس میں سعد و کیں کو جس میں انہوں نے ایک و جس میں سعد و کسید کی تو تا کہ دورت کیں جس میں سعد و کسید کیں جس میں سعد و کسید کی تو تا کہ کی جس کی تو تا کہ کی تو تا کہ کی تا کہ دورت کی جس میں سعد و کسید کیں جس میں کسید کی تو تا کہ کی تو تا کہ کی کی کسید کی تو تا کہ کی تا کی کسید کی تو تا کہ کی کسید کی تو تا کہ کی کسید کی تو تا کہ کی کی کسید کی تو تا کہ کی کسید کی تو تا کہ کی کی کسید کی تو تا کہ کی تو تا کہ کی کسید کی تو تا کہ کی کسید کی تو تا کہ کی کسید کی کسید کی تو تا کہ کی تو تا کہ کی کسید کی تو تا کہ کی کسید کی کسید کی کسید کی کسید کی کسید کی تا کہ کی کسید کی کسید

المنت المستفى فاتنز كرفيعلى المستفى فاتنز كرفيعلى

نہیں دھمکی دی اگر انہوں نے ان کا ساتھ نہ دیا تو وہ مصر پر چڑھائی کر دیں گے۔ حضرت قبیس بن سعد خلافۂ نے جواباً تحریر کیا۔

"میں تمہاری و همکیوں ہے خوفز دہ نہیں اور اگر اللہ عز وجل نے جا ہاتو جلد تمہیں خود اپنی جان ہجانا مشکل ہو جائے گی۔"

حضرت امير معاويه رظافين نے جب حضرت قيس بن سعد رظافين کا خط پڑھا

تو تشويش ميں جتلا ہو گئے۔اگر وہ مصر پر حملہ کرتے ہتے تو حضرت على المرتضى طافين في کوفہ ہے شام پر حملہ آور ہو جاتے ہے اس لئے الي صورت ميں ملک شام پر ان کا قضہ برقرار نہ رہتا چنانچہ انہوں منے حضرت قيس بن سعد رظافين پر اپنا د باؤ جارى رکھنے کے لئے وقا فو قامز يد کئی خطوط کھے۔حضرت على المرتضى رظافين کو اس خط و کتابت کی خبروں کے ذریعے ہوگئی۔اس دوران حضرت امير معاويه بطافين کا ہر مناويہ بطافین کے بیم میں سعد بلافین کے میں بن سعد بلافین کے اس دوران حضرت امير معاويہ بطافین کے بیم میں سعد بطافین کے بیم میں بن سعد بلافین نے ان کی اطاعت پر آبادگی ظاہر

حضرت قبيس بن سعد ريانغيز كي معزولي:

حضرت علی المرتضی و النفی علی المرتضی و النفی کو بید پیغام بھیجا کہ وہ خربتہ والوں کو جلد از جلد بیعت پر قائل کریں اور اگر وہ بیعت نہ کریں تو ان سے تحق سے خبٹا جائے۔ حضرت قیس بن معد و النفی نے اپنی دوراند کیشی کریں تو ان سے تحق سے خبٹا جائے۔ حضرت قیس بن معد و النفی نے اپنی دوراند کیشی بناء پر اس تھم پر فی الفور عمل درآ مد کرنا مناسب نہ سمجھا اور آپ و النفی کو جوابا تحریر فرمایا۔

"خربته والول کی آبادی قریباً دس ہزار ہے اور بیہ تجربہ کارجنگجو بیں اس لئے فی الحال ایسے وفت میں ان کے ساتھ سخت روبیہ

المسترس المستران المس

رکھنا نقصان دہ ٹابت ہوسکتا ہے۔"

حضرت علی المرتضلی و النفاذ کو جب حضرت قیس بن سعد و النفاذ کا جواب ملا تو آپ و النفاذ کے ساتھیوں نے آپ و النفاذ کو حضرت قیس بن سعد و النفاذ سے بدخلن کرنا شروع کردیا۔ اس دوران حضرت امیر معاویہ و النفاذ کی جانب سے یہ افواہیں بھی تیز ہو گئیں کہ حضرت قیس بن سعد و النفاذ ان کے ساتھ مل چکے ہیں۔ آپ والنفاذ کو چونکہ حضرت قیس بن سعد و النفاذ کے مرتبہ کا اندازہ تھا اس لئے آپ و النفاذ نے انہیں معزول کر دیا اور انہیں مدینہ منورہ جانے کا حکم دیا۔ حضرت قیس بن سعد و النفاذ کی معزول کر دیا اور انہیں مدینہ منورہ جانے کا حکم دیا۔ حضرت قیس بن سعد و النفاذ کی معزول کر دیا اور انہیں مدینہ منورہ جانے کا حکم دیا۔ حضرت قیس بن سعد و النفاذ کی معزول کر دیا اور انہیں مدینہ منورہ جانے کا حکم دیا۔ حضرت قیس بن سعد و النفاذ کی معزول کی بعد محمد بن الی بکر کو معر کا گور فرمقرر کر دیا گیا۔

حضرت قیس بن سعد و الفیز جب مدینه منوره پنیج تو مدینه منوره کے گورز مردان بن الحکم نے آپ والفیز کو سخت ذینی اذینوں میں مبتلا کیا جس پر آپ والفیز کو سخت ذینی اذینوں میں مبتلا کیا جس پر آپ والفیز کوف سیلے گئے اور حضرت علی الرتضی و الفیز کی خدمت میں حاضر ہو کر تمام ماجراان کے گوش گزار کر دیا۔ حضرت علی الرتضی و الفیز نے آپ والفیز کی تمام باتوں کو خور سے سنا اور آپ و الفیز کو ابنا مشیر خاص مقرر کر دیا۔

حضرت امير معاويه بالنين كو جب حضرت قيس بن سعد والنين كى كوفه جانے اور حضرت على الرتضنى والنين كے مشير خاص مقرر ہونے كى اطلاع على تو انہوں انے اور حضرت على الرتضنى والنين كے مشير خاص مقرر ہونے كى اطلاع على تو انہوں انے ایک خط مروان بن الحکم كولکھا جس میں اسے كہا گیا كہ جھے يہ بات گوارہ تقی كہ تو حضرت على الرتضنی والنين كی مدد ایک لا كھ سیا ہموں سے كرتا نہ كہ يہ تو حضرت قيس بن سعد والنين كودوبارہ ان كی خدمت میں جانے و يتا۔

المناسرة على المنافعة كو يعلى المنافعة كو يعلى المنافعة كو يعلى المنافعة كو يعلى المنافعة كالمنافعة كالمنا

کرنے کے ان کے خلاف محاذ شروع کر دیا جس کی وجہ سے حضرت عثمان غنی رٹائنڈ کے قاتلین سے قصاص کی وصولی کا معاملہ لٹک گیا اور مسلمانوں دوگر وہوں میں تقسیم ہوکر ایک ووس سے کے قابلہ میں صف آراء ہو گئے۔

حضرت عمروبن العاص طالفين كا اقدام:

حضرت عمرو بن العاص طالفين جو كه حضرت عثمان غني ظالفين كمرك محاصرہ کے وفت مدیندمنورہ میں موجود تھے وہ ان شرپندوں کے شرکی دجہ سے مدینه منورہ سے فلسطین جلے گئے۔ آپ الٹنڈ کے ہمراہ آپ بٹالٹنڈ کے دونوں فرزند محمد اور عبدالله بهي يتھے۔حضرت عثان عن ملائنو كي شهادت كي خبر آپ طالف كوفلسطين میں ہی ملی جہاں سے آپ والٹنو مشق حلے گئے۔ پھر جب آپ والٹنو کوحضرت علی المرتضى ولنانتن كخليفه بنتے اور حضرت امير معاديه ولائن كے انكار كا بينة چلا تو آپ طالفن انے اسے بیوں کو بلایا اور ان سے بوجھا کہ انہیں کیا کرنا جا ہے؟ عبدالله نے جواب دیا ہمیں اس وفت گھر میں بیٹھا رہنا جا ہے یہاں تک کہمسلمان کسی ایک پر متفق نہیں ہوجاتے۔محمد نے کہا آپ طالفنا کا شارعرب کے سرداروں میں ہوتا ہے بيد مسكله تب تك حل نهيس موسكتا جب تك آپ منافظية اس ميس مداخلت نه كرير آب بالنفظ في السيخ دونول بيول كاجواب سننے كے بعد كہا كه عبدالله في محصاس بات كامشوره دياجس ميں آخرت كى بھلائى بے جبكه محد نے مجھے اس بات كامشوره دیا جس میں دنیا کی بہتری ہے۔اس کے بعد آب طالفیٰ احضرت امیر معاویہ بنائیٰ کے پاس سے اور انہیں اسیے تعاون کی یقین دہانی کروائی۔

حضرت امیر معاویہ دلائنڈ کو جب حضرت عمر و بن العاص بڑی ہے۔ سے حمایت کا یقین ہو گیا تو انہوں نے حضرت عثمان غنی ڈلینڈ کے قصاص کے مطالبہ

المناسبة على الله الفي المائية كرفيعلى المناسبة على المناسبة على المناسبة على المناسبة على المناسبة ال

کومزیدتیز کر دیا اورلوگوں کی حمایت حاصل کرنے لگے۔

حضرت امير معاويه وظائفيّه في اپنج رفقاء كو مدايت كى كه وه حضرت عثان غنى نونفيّه كى خون آلود قبيص اور حضرت نائله وظافيّه كى كى بهوكى انگلياں لے كر ملك شام كے كونے كونے ميں جائيں اور لوگوں كواس بات برآماده كريں كه وه حضرت عثان غنى ولينه في خون كا بدله ليس گه

حالات و واقعات آ ہستہ آ ہستہ مزید اہتر ہونا شروع ہو گئے اور ایک بہت بڑی جنگ کا پیش خیمہ بنے گئے۔ اس دوران منافقین نے اپنی سازشیں جاری رکھیں اور دونوں گروہوں کے درمیان تنازعات پیدا کرنے شروع کر دیئے۔ حضرت ناکلہ طالعین کا حضرت امیر معاوید طالعین کو مکتوب:

حضرت عثمان عنی رفائنی کی تدفین کے بعد حضرت ناکلہ رفائنی کے دخرت امیر معاویہ بلائنی کے نام ایک خط لکھا تھا اور اپنی کئی ہوئی انگلیوں کو اس خط سمیت حضرت نعمان بن بشیر بفائنی کے ہاتھ ملک شہم روانہ کی تضیں۔ اس خط میں حضرت ناکمہ فرائنی کے ہاتھ ملک شام روانہ کی تضیں۔ اس خط میں حضرت ناکمہ فرائنی کے دور حضرت امیر معاویہ وزائنی کولکھا تھا کہ وہ حضرت عثمان عن وزائنی وزائنی کی مطالبہ کریں۔

''نا نلہ (النفیا) بنت فرافصہ کی جانب ہے معاویہ بن ایوسفیان طافقہ کے جانب ہے معاویہ بن ایوسفیان طافقہ کے تام!

میں تم لوگوں کو اس خط کے ذریعے اس پروردگارِ عالم کی طرف بلاتی ہوں جس نے تم پر کئی احسانات کئے۔عثمان (ملائنیڈ) کو شہید کر دیا جمیا۔

كياتم برعثان (والنفذ) كے بحد مقوق تبيں؟ عثان (والفذ) كى

الانتساس تفي الانتوك في المعلى المعلى

شہادت میری آنکھوں کے سامنے ہوئی اور اہل مصر کے شریبند جو دین اسلام کے بدترین دشمن ہیں انہوں نے عثان (والنہذ) کو نہایت بے دردی کے ساتھ شہید کیا گیا۔ اکا برصحابہ کرام فرائیز نے ان شریبندوں کو سمجھانے کی کوشش کی لیکن وہ اپنے ناپاک ارادوں ہے بازند آئے۔

میں اس خط کے ساتھ اپنی کئی ہوئی انگلیاں اور عمّان (وَالنَّفَيْهُ)
کا خون سے رَبّین کرتہ تہہیں بھیج رہی ہوں اور ہم پر جومصیبت
ٹوٹی ہے اس کی فریاد اللّٰہ عزوجل سے کرتی ہوں۔اللّٰہ عزوجل عمّان (وَاللّٰهُورُ) پررحم فرمائے اور ان کے قاتلوں پر اس کی لعنت ہوں۔

حضرت اميرمعاويه راينت كومكتوب تحريركرنا:

حضرت المير معاديد والنفيظ كوايك كمتوب لكها جيد حضرت جرير بن عبدالله بكل والنفيظ معاديد والنفيظ كوايك كمتوب لكها جيد حضرت جرير بن عبدالله بكل والنفيظ لله النفيظ جب حضرت المير معاديد فائم رواند بهو ي - حضرت جرير بن عبدالله بحلى والنفيظ جب حضرت المير معاديد والنفيظ كم بالله يجني تو وه الله وقت در بارسجائ بينه متحد انبول نے حضرت على المرتضى والنفيظ كا مكتوب با آواز بلندخود بير ها مكتوب ميں تحرير تقا۔ "الله عزوجل كى حمد و ثناء اور حضور نبى كريم مين المرتب با آواز بلندخود بير ها ورحضور نبى كريم مين المرتب با آواز بلندخود بير ها ورحضور نبى كريم مين المرتب با آواز بلندخود بير ها ورحضور نبى كريم مين المرتب با آواز بلندخود بير ها ورحضور نبى كريم مين المرتب بير بير شار

تم اور تنہارے تالع تمام مسلمانوں پر میری بیعت کرنا لازم ہے کیونکہ تمام مہاجرین و انصار نے اتفاق رائے سے مجھے

المسترع الدر تفي المانية كرفيه لي

خلیفہ تنظیم کیا ہے۔ حضرت ابو بکر صدیق، حضرت عمر فاردق اور حضرت عثمان غنی می اُنٹیج کو بھی انہی لوگوں نے بالا تفاق خلیفہ منتخب کیا تھا ہی می مہاجرین اور انصار کی طرح میری بیعت کے لئے آبادہ ہو جاؤے تم مجھ سے حضرت عثمان غنی و اُلائیڈ کے قالین سے قصاص کا مطالبہ کرتے ہوتم میری بیعت کرواور مجھ سے لی کراس کا ضابطہ طے کروتا کہ میں کتاب اللہ اور سنت رسول اللہ مطابق فیصلہ کرسکوں ورنہ تم نے جو طریقہ اختیار کیا ہے وہ سراس دھوکہ ہے۔ "

حضرت علی الرتضی ولائٹر نے اس سے پہلے جو مکتوب حضرت امیر معاویہ ولائٹر نے اس سے پہلے جو مکتوب حضرت امیر معاویہ ولائٹر نے ولائٹر کو بیعت کے لئے لکھا تھا اس کے جواب میں حضرت امیر معاویہ ولائٹر نے ایک خالی کاغذ بھجوا دیا تھا جس سے ظاہر ہوتا تھا کہ دہ بیعت نہیں کرنا جا ہے۔

حضرت امير معاويه رئائن كاجواب:

حضرت امير معاويه والنفؤ في حضرت على المرتضى والنفؤ كم مكتوب كے محتوب ميں اپنے سابقه مؤتف كو دہرايا اور حسب معمول اس بات پر قائم رہے كه پہلے حضرت عثمان غنی والنفؤ كے قاتكوں كو ان كے حوالے كيا جائے۔

حضرت امیر معاوید را نفیز نے اپنا مکتوب ابوسلم کے ہاتھ بھیجا جس میں

فخريرتھا۔

المناسر على المناخ المن

أب رالله كاردٍ ل:

حضرت على المرتضى طالقين في السيمة الله المرتضى المنظم المنظم المنظم المرتضى المنظم ال

ا گلے دن جب ابومسلم، حضرت علی المرتضی طالفتے ہاں گئے تو دس ہزار مسلم المرتضی طالفتے ہاں گئے تو دس ہزار مسلم افراد موجود تھے جنہوں نے باآ دانے بلند کہا۔

''جم عثمان (طالنیئو) کے قاتل ہیں۔' حضرت علی المرتضلی طالنیئو نے ابومسلم سے فر مایا۔ ''تم دیکی رہے ہوعثمان (طالنیؤ) کے قاتلوں پر میرا کتنا اختیار ہے تم امیر معاویہ (طالنیؤ) سے کہو کہ وہ اپنا مطالبہ ججوڑ دیں کیونکہ میں ہرگز عثمان (طالنیؤ) کے قال میں یا کسی قتم کی نمازش میں ملوث نہیں ہول۔''

حضرت امير معاويه طالفين كي سياسي بصيرت:

حضرت امير معاويد ذافخذ كے لئے كى بھى طوريد قابل قبول نہ تھا اور وہ حضرت عمر فاروق دائف كے دور خلافت سے ملک شام كے گورنر تھے جہاں انہوں سے اپنے قدم اس قدر مضبوط كر لئے تھے كہ اہل شام ان كے ساتھ ہر مشكل سے مشكل وقت ميں بھى چلنے كو تيار تھے۔ اس كے علاوہ بہت سے جيد صحابہ كرام بن أتذ محمد مشكل وقت ميں بھى چلنے كو تيار تھے۔ اس كے علاوہ بہت سے جيد صحابہ كرام بن أتذ وحضرت على المرتفى دائم سے اختلاف ركھنے كى وجہ سے ملک شام آ گئے تھے ان ميں حضرت عمر و بن العاص دی أتذ ميں حضرت عبد الله بن عمر اور حضرت عمر و بن العاص دی أتذ میں حضرت عبد الله بن عمر اور حضرت عمر و بن العاص دی أتذ میں حضرت علی المرتفئی دائم میں العظم و المولی گورنر جنہیں حضرت علی المرتفئی دائم فی المرتفئی دائم میں اکتھے ہو گئے تھے اور المرتفئی دائم فی المرتفئی دائم میں اکتھے ہو گئے تھے اور المرتفئی دائم فی المرتفئی دائم میں اکتھے ہو گئے تھے اور

الانتستان المستفى الأنواك فيصل المستفى المنافية كالمستفى المنافية كالمستفى المنافية المنافية

حضرت امیر معاویہ رٹائٹیئے نے اپنی سیاسی بصیرت کی وجہ سے ان تمام حضرات کواپنے ساتھ شامل کرلیا تھا۔

شام کی جانب پیش قدمی کا فیصله:

ہرتم کی سفارتی کوششوں کی ناکامی کے بعد حضرت علی المرتفعی والی المرتفعی والی المرتفعی و اللہ النظمی و اللہ النظم کی تیاریاں شروع کر دیں۔ حضرت عبداللہ بن عباس و النظم اللہ اللہ النظم کی تیاریاں شروع کر دیں۔ حضرت میں حاضر ہوئے۔ آپ و النظم نے حضرت البومسعود النساری و النظم کی خدمت میں اپنا قائم مقام فرمایا اور خودای ہزار کا ایک لشکر لے کر کوفہ سے روانہ ہوئے۔ آپ والنظم کے لشکر میں ستر اصحاب بدر و النظم اور سات سوصحابہ کرام و کا ایک النظم وہ تھے جنہوں نے بیعت رضوان کا اعزاز حاصل کیا تھا شامل تھے۔ کرام و کا المرتفعی و النظم و کا بیعت رضوان کا اعزاز حاصل کیا تھا شامل تھے۔ حضرت علی المرتفعی و النظم و کا مفرت زیاد بن نصر اور حضرت شریح بن ہائی و کا نب حضرت میں بارہ ہزار سیا ہیوں کے ایک لشکر کو مقدمتہ الحیش کی جانب و کا کا کرنے کا تھی دیا اور ان سے فرمایا

"اور نہاں وقت تک جنگ نہ کرنا جب تک کہ وہ پہل نہ کریں اور انہیں بار بارسلی کی دعوت دیتے رہنا اور ان کے زیادہ نزدیک نہ جانا جس سے وہ مجھیں کہتم جنگ کے ارادہ سے آئے ہو اور نہاں قدر دور رہنا کہ وہ مجھیں کہتم بزدل ہو۔"

حضرت علی المرتضی ولی فی القید التیکر لے کر نخیلہ کے راستے مدائن پہنچے اور مدائن میں حضرت مسعود ثقفی ولی فی کو گور فر مقرر کرنے کے بعد حضرت معقل بن قیس ولی فی میں تین بزار سیا ہوں کے لئکر کو آگے روانہ کیا اور خود باتی لئکر کے تیاں ولی نے دوانہ کیا اور خود باتی لئکر کے ہمراہ دریا کے فرات کو عبور کرنے کے بعد ملک شام کی سرحد میں وافل ہوئے۔

المناسبة على المراق المناسبة ا

حضرت امیر معاویہ مٹائنے اس دوران اینے کشکر کے ہمراہ پہلے ہی دریائے فرات کے کنارے واقع ایک میدان صفین میں پہنچ کیے تھے۔ انہوں نے دریائے فرات کے بانی پر بھی قبضہ کرلیا اور اپنی مورچہ بندی اس طریقے سے کی کہ حضرت على المرتضلي مِثَالِفَيْهُ جب صفين مِبنجين تو أنبين ما في كے حصول ميں دشواري ہو۔ حضرت علی الرتضلی والنفنهٔ جب اینے لشکر کے ہمراہ مقام صفین پر بہنچے تو حضرت امیر معاویہ رٹائٹنڈ کالشکر پہلے ہی یانی پر قبضہ کر چکا تھا۔ آپ رٹائٹنڈ نے اپنے لشکر کو تھم دیا کہ جیسے بھی ہو یانی پر قبضہ کیا جائے چنانچہ آپ رالٹیؤ کے کشکر نے پانی کی جانب پیش قدمی کی جہاں حضرت امیر معاویہ را الفیز کے تعینات کشکر نے آپ بالٹنؤ کے لشکر پر تیروں کی ہارش شروع کردی۔ آپ براٹٹنؤ کے لشکرنے ڈٹ کرمقابلہ کیا اور یانی پر قبضہ کر لیا۔ آپ طالفنو نے یانی پر قبضہ کرنے کے بعد شامی کشکر پر بإبندى نداكائي بلكه بإنى كااستعال دونوں كے لئے كيسال ركھنے كى ہدايت كى۔ سفارتي وفد تصحيح كا فيصله:

پانی پر حضرت علی المرتضی والفیز کے قبضہ اور شامی اشکر کو پانی کی سپلائی بند نہ کرنے کی ہدایت پر ایسالگا جیسے جنگ نہ ہوگی اور دونوں فریقین میں سلح ہو جائے گی۔ آپ والفیز نے حضرت بشیر بن عمرو بن محصن انصاری، حضرت زید بن قیس، حضرت عدی بن حاتم، حضرت زیاد بن حفصہ اور حضرت شیث بن ربعی وی الفیز پر مضرت عدی بن حاتم، حضرت امیر معاویہ والفیز کے پاس بھیجا تا کہ معاملہ سلح و صفائی

حضرت بشیر بن عمرو ولائفیٔ نے حضرت امیر معاویہ ولائفیُ کے پاس جا کر حضرت علی الرتضی ولائٹیؤ کا پیغام پہنچایا کے مسلمانوں کی تفریق ہے باز آ جا کمیں تا کہ

ہے حل ہوجائے۔ '

المناسر على المناخ المن

خوزیزی نہ ہو۔ حضرت امیر معاویہ رظائی نے کہاتم اپنے امیر کو بھی اس کی نصیحت کرو۔ حضرت بشیر بن عمرو رڈائٹو نے جواب دیا وہ تمہاری طرح نہیں ہیں۔ حضرت امیر معاویہ طالب ہے؟ حضرت بشیر بن امیر معاویہ طالب ہے؟ حضرت بشیر بن عمرو رظائف نے کہا۔

'' وہ سابق الاسلام ہیں اور انہوں نے حضور نبی کریم بیفی ہے گئے گئے ہے ۔
صحبت پائی ہے۔ وہ حضور نبی کریم بیفی ہے داماد ہیں اور ہم
سب میں خلافت کے سب سے زیادہ اہل ہیں۔''
حضرت امیر معاویہ رفائن نے کہا تمہارا مطلب کیا ہے؟ حضرت بشیر بن
عمرہ رفائن نے کہا۔

'' وہ تمہیں راوحق کی دعوت دیتے ہیں تم ان کی دعوت قبول کر لوتا کہ امت انتشار سے نکے جائے۔'' حضرت امیر تمعاویہ دلائٹنؤ نے کہا۔

"اس کا مطلب ہے کہتم جاہتے ہو میں عثان (مطالب) کے قصاص کا مطالبہ ترک کردوں؟"
حضرت بشیر بن عمرو دالنیز نے کہا۔

"معادیه (طالفینه)! تم عثان (طالفینه) کا قصاص چند کمینول کے ذریعے مانگتے ہو ہمیں تمہارے مطلب کا علم ہے اس لئے تمہیں اللہ عزوجل کا خوف ولاتے ہیں تم اینے ذبین سے ان خوف ولاتے ہیں تم اینے ذبین سے ان خیالات فاسدہ کو نکال دواور حضرت علی المرتضلی دائفینہ کی بیعت خیالات فاسدہ کو نکال دواور حضرت علی المرتضلی دائفینہ کی بیعت کرلویہ"

المناسر على المناع المن

حضرت امیر معاوید دنالفنائے تے حضرت بشیر بن عمرو دنالفنا کی بات سن کر

کہا۔

"تم یہاں سے چلے جاؤ تمہارے اور ہمارے درمیان تلوار ہے جوفیصلہ کرے گیا۔"

سفارتی وفد کی تا کامی:

اس سفارتی وفد کے ناکام ہونے پرایک مرتبہ پھراس بات کا خطرہ لاخل ہوگیا کہ جلد ہی مسلمانوں کے بید دونوں گروہ آ منے سامنے ہوں گے۔حضرت ملی الرفظی والٹینڈ نے اس موقع پر ہمت نہ ہاری اور جنگ ہے نیچنے کی ہرممکن کوشش کرتے ہوئے ایک اور وفد حضرت امیر معاویہ والٹینڈ کے پاس بھیجا۔ اس وفد کے سر براہ حضرت عدی بن حاتم والٹینڈ تھے جنہوں نے حضرت امیر معاویہ والٹینڈ سے گفتگو کا آغاز کرتے ہوئے کہا۔

"معاویہ (دالٹی اسم امیر المونین حضرت علی الرضی دالٹی کا اسم المونین کے بعد مسلمان کچر ہے متحد اطاعت قبول کرلوتمہاری بیعت کے بعد مسلمان کچر سے متحد ہوجا کیں گے اور وہ ملوار جو کبھی باطل کے لئے اٹھتی تھی اب وہ مسلمانوں کے لئے اٹھ رہی ہے۔ اگرتم نے بیعت سے انکار مسلمانوں کے لئے اٹھ رہی ہے۔ اگرتم نے بیعت سے انکار کیا تو پھرتمہارے ماتھ بھی وہی چیش آسکتا ہے جو جمل والوں کو چیش آیا۔"

حضرت امير معاوليه والنفية نے حضرت عدى بن حاتم والنفيذ كى بات س كر

کہا۔

"اے عدی (الفظ)! تم صلح کے لئے آئے ہو یا الرنا جا ہے



ہو؟ تم نہیں جانے کہ میں حرب کا بیٹا ہوں اور مجھے لڑائی سے
کوئی خوف نہیں۔ تم بھی عثان (رٹائٹیڈ) کے قاتلوں میں سے
ہوا ورعنقریب اللہ تمہیں بھی قتل کرائے گا۔''
اس تلخ ماحول کو دیکھتے ہوئے حضرت یزید بن قیس مٹائٹیڈ آگے ہو ہے اور
انہوں نے کہا۔

" "ہم لوگ سفیر بن کر آئے ہیں اور ہمارا کام تمہیں نصیحت کرنا تھا۔"

اس کے بعد ان حضرات کے درمیان ایک مرتبہ پھر تنگی کلامی ہوگئی اور سفارتی کوششیں دم تو در گئیں۔

جنگ صفین:

حضرت علی الرتضی را النو اور حضرت امیر معاویه را النو کے درمیان سفارتی کوششیں قریباً تین ماہ تک جاری رہیں لیکن ان کا کوئی بتیجہ برآ مد نہ ہوا بالآخر کیم صفر المنظفر سے کو دونوں فریقین کے درمیان با قاعدہ جنگ شروع ہوگئی۔ جنگ کے دوران آہتہ آہتہ شدت آتی گئی اور بے شارمسلمان مارے گئے۔اس دوران جنگ کا ساتوال روز آن پہنچاس دن کو تاریخ میں لیلۃ البریر کے نام سے یاد کیا جاتا ہے۔ اس ایک دن میں بزاروں کی تعداد میں مسلمان مارے گئے۔اس جنگ میں قریباً سربر ایک دن میں بزاروں کی تعداد میں مسلمان مارے گئے۔اس جنگ میں قریباً سربر ارمسلمان مارے گئے۔

روایات میں آتا ہے حضرت علی المرتضی دائنٹن کا پلہ جنگ میں بھاری تھا۔
اس دوران حضرت عمرو بن العاص دائنٹن نے حضرت امیر معاویہ دائنٹ کومشورہ دیا جس سے شامی فوج ایک بہت بردی شکست فاش سے زیج می اور جنگ ختم ہوگئی۔

المناسرة على المنافي المنافي كي فيها المنافي المنافي كي فيها المنافي المنافي كي فيها المنافي ا

مؤر خین لکھتے ہیں حضر تعمر و بن العاص وظافیۃ نے اس بات کا اندازہ کر الیا تھا کہ حضرت علی الرتضی وظافیۃ اور ان کے لشکر کوشکست دینا ان کے بس کی بات نہیں اس لئے انہوں نے حضرت امیر معاویہ وظافیۃ کومشورہ دیا جس پر انہوں نے امیر معاویہ وظافیۃ کومشورہ دیا جس پر انہوں نے اپنے لشکر کو تھم دیا کہ وہ نیز وں پر قرآن مجید اٹھائے میدانِ جنگ میں داخل ہوئے اور باآ واز بلنداعلان کرنے لگے۔

"اے عربو! اپ بچوں اور عورتوں کو رومیوں اور ایرانیوں کی بلغار ہے بچانے کی تدبیر کرواگر ہم ختم ہو گئے تو رومی اور ایرانی پیر سے عروج حاصل کرلیں گے۔ قرآن مجید ہم سب کے لئے قابل احترام ہے اس لئے اس کا تھم مان لو اور اس کا فیصلہ قبول کرلو۔"

حضرت عبداللہ بن عباس ڈاٹھ نین اس موقع پر اپنے لشکر کو مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

''بیشامیوں کی ایک جنگی جال ہے۔''
اشتر مخفی جو اس وقت حضرت علی الرتفنی والنیو کے عظم پر لفکر کی قیاوت کر
رہا تھا اس نے شامیوں پر تا ہو تو ڈھلے شروع کر دیئے۔ عبداللہ بن سبا منافق اپنے
سرکر دہ ساتھیوں کے ہمراہ حضرت علی الرتفنی والنیو کے پاس آیا اور کہنے لگا۔
'' آپ والنیو اشتر مخفی کو واپس بلا لیس اور جنگ بندی کا اعلان
کریں نہیں تو ہم آپ والنیو کے ساتھ بھی وہی سلوک کریں
گے جو ہم نے حضرت عثمان غنی والنیو کے ساتھ کیا تھا۔''
سے جو ہم نے حضرت عثمان غنی والنیو کے ساتھ کیا تھا۔''
محضرت علی الرتفنی والنیو پر فقتہ کا وروازہ کھل چکا تھا آپ والنیو نے اشتر

المناسر على المالية والمالية المالية ا

تخعی کومیدانِ جنگ سے واپس بلالیا چنانجہ اشتر نخعی کے واپس آنے پر جنگ عملاً ختم ہوگئی۔

حضور نبی کریم بھے کے کنارے صفین کے مقام پرخون میں رنگین تھیں۔ روایات کے مطابق اس جنگ میں سر ہزار مسلمان شہید ہوئے جن میں مہاجرین اور انصار کی ایک کیر تعداد بھی شامل تھی۔ مسلمان شہید ہوئے جن میں مہاجرین اور انصار کی ایک کیر تعداد بھی شامل تھی۔ جنگ صفین اسلامی تاریخ کا ایک ایبا المناک پہلو ہے جس میں وہ مسلمان جو بھی حق کے لئے لڑتے ہوئے مارے گئے۔ حق کے لئے لڑتے ہوئے مارے گئے۔ جنگ صفین سے مملکت اسلامیہ دوحصوں میں تقسیم ہوگئی اور خلافت دوگر وہوں میں تقسیم ہوگئی اور خلافت دوگر وہوں میں تقسیم ہوگئی اور اسلامی فتو حات جو بندیوں کا آغاز شروع ہوگیا اور اسلامی فتو حات جو بندری ساری دنیا میں کھیل رہی تھیں ختم ہوگئیں۔

امن معاہدہ تحریر کیا جانا:

اشترنخعی کی واپسی کے بعد حضرت اشعث بن قیس مٹائٹیؤ نے حضرت علی الرنضنی مٹائٹیؤ سے کہا۔

''امیرالمونین! لوگوں نے قرآن مجیدکوتکم مان لیا ہے اور جنگ

بند ہو چکی ہے لہٰذا اگر آپ رظافیٰ کی اجازت ہو تو میں امیر
معاویہ (رٹائیٰ کے پاس جا کران کا ارادہ معلوم کروں؟''
حضرت علی المرتضٰی رٹائیٰ نے اجازت دے دی اور حضرت الحدث بن
قیس رٹائیٰ نے حضرت امیر معاویہ رٹائیٰ کے پاس جا کران ہے کہا۔
قیس رٹائیٰ نے حضرت امیر معاویہ رٹائیٰ کے پاس جا کران ہے کہا۔
''ہم اور تم اللہ عزوجل اور اس کے حبیب سے کھا کے کم کی
جانب رجوع کریں اور دونوں جانب ہے کئی ایسے محفل کو

المنت تعلى المنتواع في المنتواع المنتوا

فریق منتخب کریں اور ان سے حلف لیس کہ وہ قرآن مجید کے موافق فیصلہ ہوا ہے دونوں موافق فیصلہ ہوا ہے دونوں موابق قبول کریں۔'' فریق قبول کریں۔''

خفرت امير معاويه برالفيز نے حضرت عمرو بن العاص برالفیز کو نامزد کيا۔
حضرت اشعث بن قيس برالفیز نے حضرت علی المرتضی برالفیز کو تمام صورتحال سے
آگاہ کیا اور اہل عراق کی جانب سے حضرت ابوموی اشعری برالفیز کا نام پیش کیا۔
آپ برالفیز نے اس نام سے اختلاف کرتے ہوئے حضرت عبداللہ بن عباس برالفیز کا نام پیش کیا۔
کا نام پیش کیا جس پر حضرت اشعث بن قیس برالفیز نے کہا۔

" آپ طالفن این رشته دار کو نامزد کرتے ہیں جبکہ ہم ایسے مخص کو نامزد کرتے ہیں جبکہ ہم ایسے مخص کو نامزد کرتا جا ہے ہیں جس کا آپ طالفن اور حصرت امیر معاوید طالفن ہو۔ "

اس پرحضرت علی الرتضلی طالفنز نے اشتر نخعی کا نام لیالیکن حضرت اشعث بن تیس طالفنز نے اسے بھی قبول کرنے ہے انکار کر دیا اور کہا۔

> " حصرت ابوموی اشعری دانشهٔ مصور نبی کریم مشیر کیا کے صحبت یا فتہ ہیں جبکہ اشتر نخعی کو ان کی صحبت نہیں ملی ۔ "

چنانچه حضرت على الرتضلى والنفظ في عضرت ابوموى اشعرى والنفظ كو تامزد

کر دیا۔

اس دوران حضرت عمرہ بن العاص طافنۂ اقرار نامہ کی تحریر کے لئے حضرت علی العاص علی المنٹۂ اقرار نامہ کی تحریر کے لئے حضرت علی حضرت علی المرتضٰی طافنۂ کے پاس بہنچ گئے۔کا تب نے تحریر کے آغاز میں حضرت علی المرتضٰی طافنۂ کے اسم مبارکہ کے ساتھ امیر المونین کے الفاظ کھے تو حضرت عمرہ بن

المناسر على المناع المن

العاص طالتن نے اس پر اعتراض کرتے ہوئے کہا ہم ابھی آپ طالتن کو خلیفہ تسلیم نہیں کرتے چنانچہ امیر المونین کے لفظ کومٹا دیا گیا اور ذیل کا معاہدہ تحریر ہوا۔ "بيه اقرار نامه على (مِنْ النُّهُورُ) بن ابي طالب اور معاويه بن ابي سفیان (مُلْ مُنْ الله مُنا) کے مابین ہے۔علی (مِلْ النَّنَّةِ) نے اہل عراق اور ان تمام لوگوں کی جانب ہے ایک منصف مقرر کیا ہے جبکہ معاویہ (﴿ النَّهُونُ ﴾ نے اہل شام کی جانب سے ایک منصف مقرر کیا ۔ سرے بے شک ہم لوگ اللہ عزوجل کے تھم اور اس کی کتاب کا فیصلہ مانتے ہیں اور اس بات کا اقرار کرتے ہیں کہ الله عزوجل اور كماب الله كے سوائسي بات كو داخل نہيں كريں کے یہاں تک کہ ہم قرآن مجید کے حکم کو زندہ کریں اور اس بات پر عمل کریں جس پر عمل کرنے کا تھم دیا گیا ہے اور جس کام سے منع کیا گیا اس سے باز رہیں اور دونوں حضرات لیعنی ابوموى إشعرى اور عمرو بن العناص وخافتهم جو فيصله قرآن مجيد میں یا کیں اس کے مطابق فیصلہ کریں کے اور اگر قرآن مجید میں نہ یا کی تو سنت رسول الله مطابق فیصله كریں

اقرار نامد کی تحریر کے بعد دونوں جانب سے فریقین نے اس پر دستخط کے اور اس کے بعد دونوں جانب سے فریقین نے اس پر دستخط کے دوران اور اس کے بعد دونوں مصفین کو چھ ماہ کی مہلت دی گئی کہ وہ اس مدت کے دوران دومتہ الجند ل کے مقام پر دونوں فریقین کوطلب کر کے اپنا فیصلہ سنا کیں گے اور اس دوران اہل عراق اور اہل شام کے چار چار سولوگ بھی ان کے ہمراہ ہوں گے جو



الناسة على السريقين الماتين في ال

تمام مسلمانوں کے قائم مقام تصور کئے جائیں گے۔ منصفین کا اجتماع:

امن معاہدہ کے مطابق دونوں جانب کے منصفین کا اجتماع دومتہ الجند ل
کے نزدیک اذرج کے مقام پر ہوا۔ حضرت علی الرتضی بڑائٹیؤ نے حضرت ابوموی الشعری بڑائٹیؤ کے ہمراہ چارسوافرادروانہ کر دیئے اوران پر حضرت شریح بن ہانی بڑائٹیؤ کے ہمراہ چارسوافرادروانہ کر دیئے اوران پر حضرت شریح بن ہانی بڑائٹیؤ کے سپر د
کو سردار مقرر کیا جبکہ امامت کی ذمہ داری حضرت عبداللہ بن عمر، حضرت مغیرہ کی۔ اس اجتماع بین حضرت عبدالرحمٰن بن ابوبکر، حضرت عبداللہ بن عمر، حضرت مغیرہ بن شعبہ، حضرت عبداللہ بن تر بحضرت عبدالرحمٰن بن الحرث بڑائٹیؤ ودیگر اکا ہر جو اپنے زہد وتقوی کی بنیاد پر امت مسلمہ بیں اتحاد کی بن الحرث بڑائٹیؤ ودیگر اکا ہر جو اپنے زہد وتقوی کی بنیاد پر امت مسلمہ بیں اتحاد کی نشانی ہے اور وہ اس تمام خوزین کی اور جنگ سے علیحہ ہ رہے جے بحیثیت مبصر شامل ہوئے۔ اس دوران حضرت عمرو بن العاص بڑائٹیؤ بھی چارسو افراد کے ہمراہ اذرج ہوئے۔ اس دوران حضرت عمرو بن العاص بڑائٹیؤ بھی چارسو افراد کے ہمراہ اذرج ہوئے۔ اس دوران حضرت عمرو بن العاص بڑائٹیؤ بھی چارسو افراد کے ہمراہ اذرج ہوئے۔ اس دوران حضرت عمرو بن العاص بڑائٹیؤ کے اور پھر دونوں حضرات کے مابین با قاعدہ گفتگو کا آغاز ہوا۔

حضرت عمرو بن العاص والنفيظ في حصرت ابوموى الشعرى والنفظ سے مما۔ "" تم جانبے ہوعثمان (والنفظ) كوشهيد كيا عميا اور معاويد (والنفظ) ان كے وارث بيں۔"

حضرت ابوموی اشعری دانشنه نے کہا۔

"يچې-"

حضرت عمرو بن العاص والفنظ چونکہ سیای امور کے ماہر ہے اس لئے انہوں نے حضرت ابوموی اشعری والفنظ کو اپنا ہم خیال بناتے ہوئے کہا۔ پھرتہہیں کون می چیز معاویہ (والفنظ) کو خلیفہ بنانے سے روک

المسترف المسترف المنافظة كرفيعل المسترف المنافظة كرفيعل المسترف المنافظة كالمسترف المنافظة ال

ربی ہے؟ معاویہ (رفائین)، حضور نبی کریم مضور کے خط و
کتابت بھی کر چکے ہیں اور وہ حضور نبی کریم مضور کی زوجہ ام
المومنین حضرت سیدہ ام حبیبہ رفائین کے بھائی ہیں۔ معاویہ (طائن کو سیاست اور نظام چلانے کا وسیح تجربہ ہے اور اگر تم
انہیں خلیفہ منتب کرلوتو وہ تمہیں بھی حکومت میں شامل کرلیں
گے۔''

حضرت ابوموی اشعری مٹائٹیؤ نے حضرت عمرہ بن العاص مٹائٹیؤ کی بات سننے کے بعد کہا۔

"اے عمره (رخانین)! الله سے ڈرو۔ خلافت کی بنیاد تقوی پر بے نہ کہ سیاست پر اور علی (رخانین) بن ابی طالب این تقوی کی کی بنیاد پر اس کے زیادہ حقد ارجی اور جہاں تک کسی علاقے کی بنیاد پر اس کے زیادہ حقد ارجی اللہ عزوجل کے کاموں میں کی گورنری کا حصول ہے تو میں اللہ عزوجل کے کاموں میں رشوت لین پینر نہیں کرتا۔"

حضرت عمر و بن العاص والنيئؤ نے کہا۔ '' میں تمہاری اس رائے ہے اتفاق نہیں کرتا۔'' حضرت ابومویٰ اشعری والنیئؤ نے کہا۔ '' نو پھرعبداللہ بن عمر والنیئؤ کے بارے میں کیا خیال ہے؟''

حضرت عمرو بن العاص ملاتنه نے کہا۔ دنتہ کا تمہم میں مدعی دیا دیالتناں کے اس معر

''تو پھرتمہیں میرے بینے عبداللہ (ملائٹو؛) کے بارے میں کیا اختلاف ہے؟''

المناسبة على المنافع ا

حضرت ابوموی اشعری طافئو نے کہا۔ ''وہ واقعی نیک اور شریف تھا لیکن تمہاری وجہ سے وہ بھی فتنہ میں مبتلا ہوگیا۔''

حضرت عمرو بن العاص مثالثن نے کہا۔ ''تو گویا تم بیراس کے سپرد کرنا جاہتے ہوجس کے منہ میں

الو تویام بیرای کے سپرد کرنا جائے ہو جس کے منہ میں دانت ندہوں۔''

حضرت ابوموی اشعری اور حضرت عمرو بن العاص شی این که در نمیان بید گفتگوتنها کی میں ہور ہی تقی دحضرت ابوموی اشعری شائیڈ نے کہا۔

> ''اے عمرو (طالفن)! پہلے ہی بہت خون خرابہ ہو چکا ہے اب بیہ قوم مزید آز مائش برواشت نہیں کر سکتی۔''

> > حضرت عمروبن العاص طالفيز نے کہا۔

" پھرتم كيا كہتے ہو؟".

حضرت ابوموی اشعری داننظ فرن کیا۔

'' پھر دونوں کومعزول کر کے لوگوں کو اس کا اختیار ویتے ہیں

كەدە جەچابى اپناخلىفەمقرركرلىس-"

حضرت عمروبن العاص طالفنا نے کہا۔

'' مجھے منظور ہے۔''

حفرت ابوموی اشعری داننی کوروانه کرنے کے بعد حضرت علی الرتضی داننی کوروانه کرنے کے بعد حضرت علی الرتضی داننی کے بعد حضرت میں دانند بن عباس خانفی سے خط و کتابت جاری رکھی تھی تا کہ تمام بی معاملہ سے آگاہ رہیں۔اس دوران حضرت امیر معاوید داننی کے خطوط براہ راست

المناسبة على المنافعة المنافعة

حضرت عمر و بن العاص والنفؤ كے نام آتے تھے۔حضرت مغيره بن شعبہ والنفؤ جوكه معاملہ فہم تھے انہوں نے اذرح بجنچنے برحضرت الوموی اشعری اورحضرت عمر و بن العاص وی انتج سے علیحدہ علیحدہ ملاقا تمل کی تھیں تا كه انہیں اندازہ ہو سكے كه ان حضرات كی رائے كیا ہے لیكن وہ ان كی تھتگو سے صرف يہی اندازہ كر پائے كه معاملہ بے حد بیجیدہ ہے اور دونوں فریقین کے درمیان اتفاق مشكل ہے۔

حضرت ابوموی اشعری اور حضرت عمرو بن العاص وی فیزی کا جب اس بات پراجتاع ہوگیا کہ دونوں حضرات کومعزول کر دیا جائے تو دونوں حضرات معجد میں تشریف لے گئے۔ دونوں جانب کے تمام افراد بھی معجد میں تشریف لے آئے۔ مسجد میں بینج کر حضرت ابوموی اشعری والٹین نے حضرت عمرو بن العاص والٹین سے کہا۔

'' وہ فیصلے کا اعلان کریں۔''

حضرت عمرو بن العاص المافيظ في السموقع يربحي حالا كى دكھاتے ہوئے

کہا۔

" دنہیں آپ طالغی کے نصائل بے شار ہیں اس کے آپ طالغید وضلے کا اعلان کریں۔"

حضرت ابوموی اشعری بلاطنی منبر پرتشریف کے سے سے محصے اور اللہ عزوجل کی حمد و ثناء کے بعد قرمایا۔

"وه فيهله جس بريس ادر عمره (الخافية) دونول متفق موئے بيں وه ميہ ہے كہ بم دونوں كومعزول كرتے بيں اور مجلس شورى كو اس بات كا اختيار ديتے بيں كه ده مسلمانوں كى رائے عامه

المناسرة على المنافع ا

سے نئے خلیفہ کا انتخاب کریں۔''

حضرت ابوموی اشعری طالفین اس اعلان کے بعد منبر سے بنیج اتر آئے تو حضرت عمرو بن العاص طالفین فورا منبر پرچ سے اور اعلان کیا۔ حضرت عمر و بن العاص طالفین فورا منبر پرچ سے اور اعلان کیا۔
'' حضرت ابوموی اشعری طالفین نے حضرت علی المرتضی طالفین کو معزول معزول کردیا ہے اور میں بھی حضرت علی المرتضی طالفین کومعزول

کرتا ہوں کیکن میں معاویہ بن سفیان (ڈاٹٹٹٹن) کومعزول نہیں کرتا اور انہیں حضرت عثان غنی طائٹٹ کے بعد خلافت کا سب

ے زیادہ حقدار ہونے کی وجہ سے اس منصب پر برقرار رکھتا

ہول۔''

حضرت عمرو بن العاص والنيئ کی اس تقریر سے ایک ہنگامہ کھڑا ہو گیا۔
حضرت عبداللہ بن عباس والغین و دیگر نے حضرت ابوموی اشعری والنیئ کو ملامت کیا
کہتم دھوکہ کھا گئے۔حضرت ابوموی اشعری والنیئ چونکہ شریف النفس ہے اس لئے
انہیں بھی حضرت عمرو بن العاص والنیئ کی اس تقریر پر بہت غصہ آیا۔ انہوں نے
حضرت عمرو بن العاص والنیئ کی اس تقریر پر بہت غصہ آیا۔ انہوں نے
حضرت عمرو بن العاص والنیئ سے کہا۔

"م نے ہمارے مابین متفقہ فیصلے کے خلاف اعلان کیا ہے۔"
اس دوران حضرت شریح بن ہانی راٹیئ نے حضرت عمر و بن العاص راٹیئو پر جملہ کر دیا اور حالات خراب ہونا شروع ہو گئے چنانچہ اس معاملہ کے بعد اہل عراق کوفہ کی جانب چلے گئے جبکہ اہل شام نے دمشق کی راہ لی۔ حضرت ابوموی اشعری راٹیئو نے اس واقعہ کے بعد گوشہ شینی اختیار کر لی اور اپنی باقی تمام زندگی مکہ مکر مہ میں گزار دی۔

الانتسترع الدر تفي المانية كرفيعل المعلق المحالات المعلق المحالات المعلق المحالات ال

خلافت دوحصوں میں تقسیم ہوگئی:

حضرت عمرو بن العاص والفيئة نے دمشق جا كرخلافت حضرت امير معاويه طالفة كسيروكيوں حضرت عبدالله بن عباس والفيئة نے كوفد جا كر حضرت على المرتضى طالفة كو جاكرتمام واقعه بتايا جس پر آپ والفيئة نے اس وقت دعائے قنوت پڑھنا شروع كروى۔

اس فیطے کے بعد خلافت دوحصوں میں تقسیم ہوگئی۔حضرت علی المرتضی فرالنین اہل عرب وعراق کے خلیفہ منتخب ہوئے۔ایران کے مفتوحہ علاقوں پر بھی آپ فرالنین کا کنٹرول رہا۔ آپ والنین کا دارالخلافہ کوفہ تھا جبکہ حضرت امیر معاویہ والنین کے ملک شام وفلسطین پر اپنے حکومت قائم کی جس میں بعدازاں مصر کو بھی اپنی حکومت بیں شامل کرلیا۔

فلافت کی واضح تقتیم کے بعد حضرت امیر معاویہ رٹائٹو نے حضرت علی الرتضی والفو کی کرویں۔ خلافت کی الرتضی والفو کی کرویں۔ خلافت کی اس تقتیم کے بعد مملکت اسلامیہ بحران کا شکار ہوگئی۔ ایرانیوں نے بعاوت شروع کردی اور رومیوں نے بھی سراٹھانا شروع کردیا۔ جب صورتعال خراب ہونا شروع ہوئی تو دونوں گروہوں کے درمیان اس بات پراتفاق ہوگیا کہ دونوں گروہ اپنی اپنی مرگرمیاں اپنے اینے علاقوں تک محدودر کھیں ہے۔

O___O



فتنه خوارج كونجلنا

مؤر خین لکھتے ہیں حصرت علی المرتفئی و الفؤ نے جب حضرت امیر معاویہ و الفؤ کے ساتھ معاہدہ کیاتو آز الفؤ کے گروہ میں شامل ہو تمیم کے ایک شخص غزویہ بن ادیہ نے اپنے ساتھیوں کے ہمراہ اس بات پر اعتراض کیا اور اپنے ساتھیوں کو لے کر کوفہ چلا گیا۔ آپ رٹی ٹیؤ جب کوفہ پہنچ تو آپ رٹی ٹیؤ نے ان کو سمجھانے کی کوشش کی لیکن انہوں نے آپ رٹی ٹیؤ کی بات کو سفنے سے انکار کر دیا اور بحث پر اتر آئے۔

میں مجھدار کون ہے؟ انہوں نے عبداللہ بن الکواء کو سفنے سے انکار کر دیا اور بحث پر اتر آئے۔

آپ رٹی ٹیؤ نے ان سے کہا کہ تم میں مجھدار کون ہے؟ انہوں نے عبداللہ بن الکواء کو آپ رٹی ٹیؤ کے باس مجھے دیا۔

حضرت علی الرتضی والنی نے عبداللہ بن الکواء سے پوچھاتم نے میر سے دست حق پر بیعت کی اب اس خروج کی وجہ کیا ہے؟ عبداللہ بن الکواء نے کہا آپ والنی کے عمل کی وجہ کیا ہے؟ عبداللہ بن الکواء نے کہا آپ والنی کے عمل کی وجہ سے۔ آپ والنی نے فرمایا میں اللہ کی قتم کھا کر کہتا ہوں کہ میر ادادہ جنگ رو کئے کا نہ تھا مگرتم نے اصرار کیا جس پر میں نے جنگ ختم کی اور پھر مجھے مجبوراً مصالحت کے لئے بھی راضی ہونا پڑا۔ اب دونوں جانب کے مصفین نے اس بات کا عہد کیا ہے کہ وہ قرآن مجید اور سنت کے خلاف فیصلہ نہیں کریں گے اور اس بات کا عہد کیا ہے کہ وہ قرآن مجید اور سنت کے خلاف فیصلہ نہیں کریں گے اور اگرانہوں نے ایسا نہ کیا تو پھر ہماری تکوار اس کا فیصلہ کرے گی۔

حضرت على المرتضى والثنة كى بات من كرعبدالله بن الكواء نه كها امير معاويه

الناسة على المالية والمالية المالية والمالية وال

(منائن اوراس کے ساتھیوں نے بغاوت کی اور قراآن کی روسے وہ واجب القبل ہیں اس لئے ہم کسی منصف کے فیصلے کونہیں مانتے۔ آپ منائن نے سمجھایا کہ فیصلہ کسی منصف کا نہیں قرآن مجید کا ہوگا جس پر عبداللہ بن الکواء راضی ہو گیا اور اپنے تمام ساتھیوں کو بھی اس بات پر راضی کرلیا۔

منصفین کے فیطے کے بعد حضرت علی الرتضائی والنیز نے ایک مرتبہ پھر ملکہ،
شام پر حملہ کرنے کا ارادہ کیا تو خارجیوں نے لیڈر حرقوس بن زہیر اور ذائد بن
البرح نے آپ والنیز سے کہا کہ آپ والنیز نے پہلے ہمارے مشورے کو محکرا دیا اور
اب خود وہی کام کرنا چاہتے ہیں جب تک آپ والنیز اپنی غلطی تسلیم نہیں کریں مج
ہم آپ والنیز کا ساتھ نہیں دیں گے۔ آپ والنیز نے آئیوں قائل کرنے کی کوشش کی
لیکن انہوں نے آپ والنیز کا مؤقف مانے سے انکار کر دیا۔

روایات میں آتا ہے ایک دن حضرت علی الرتضی مراتینی جامع معجد کوفہ میں خطبہ دے رہے تھے کہ ایک خارجی نے نعرہ لگایا لاتھم الا للہ۔ آپ درائینی نے فرمایا اللہ اکبر! تم کلہ حق کہ ایک خارجی نے نعرہ لگایا لاتھم الا للہ۔ آپ درائینی کی خطبہ دینے لگے۔ اس دوران ایک اور خارجی نے بہی نعرہ بلند کیا۔ آپ درائینی نے فرمایا تم لوگ الیا کیوں کرتے ہو؟ ہم تمہارے خیرخواہ ہیں۔ پھر آپ درائینی ان کو مجھانے کے بعد واپس چلے جبکہ بیا خارجی عبداللہ این وہب کے پاس جمع ہوئے اوراسے بعنادت برآمادہ کیا جس کے جبکہ بیا خارجی عبداللہ این وہب کے پاس جمع ہوئے اوراسے بعنادت برآمادہ کیا جس کے بعد برائی جس کے بحد انہوں نے یہ فیصلہ کیا کہ وہ کوفہ سے فی الوقت نکل جا کیں جب پڑتا دہ کیا جس کے بائی خبروان کی جانب نکلنا شروع ہو گئے اور کیا تو تی تو گئے اور کیا تو کی خوالیاں بنا کر بیتمام باغی خبروان کی جانب نکلنا شروع ہو گئے اور کی تو تی تو تی جس کے دی کرنا شروع کردی۔

نہروان بہنے کر کوفہ کے باغیوں نے خط لکھ کر بھرہ کے باغیوں کو بھی

المناسبة عمل المنافعة والمستونع المنافعة والمنافعة والمن

نہروان بلالیا اور جنگی تیاریاں شروع کر دیں اور ساتھ ہی ساتھ انہوں نے حضرت علی الرتضی مٹائٹ اور آپ مٹائٹ کے تابعین بر کفر کے فتو سے لگانا شروع کر دیئے اور اس دوران انہوں نے حضرت عبداللہ بن خباب مٹائٹ کو ان کی اہلیہ اور دیگر ساتھیوں کے ہمراہ شہید کر دیا۔

حضرت عبداللہ بن عباس رہ النہ ہے مروی ہے فرماتے ہیں جب خوارج نے علیحدگی اختیار کی تو میں حضرت علی المرتضی رہ النہ ہوئی ہے پاس گیا اور عرض کیا آپ رہائی نماز پڑھیں میں خارجیوں کے پاس جاتا ہوں اور انہیں قائل کرنے کی کوشش کرتا ہوں۔ آپ دالنی نے فرمایا مجھے اندیشہ ہے وہ تمہیں نقصان پہنچا کیں گے۔ میں نے عرض کیا اللہ عزوجل نے چاہا تو وہ ایسا ہر گزنہ کرسکیں گے۔ پھر میں گھر آیا میں نے عرض کیا اللہ عزوجل نے چاہا تو وہ ایسا ہر گزنہ کرسکیس گے۔ پھر میں گھر آیا اور نفیس لباس زیب تن کیا اور اان خوارج کے پاس گیا۔ اس وقت وہ خارجی قیلولہ کررے تھے۔

حضرت عبداللہ بن عباس فی فی فرماتے ہیں میں ان لوگوں کے پاس گیا تھا جنہیں میں جانتا نہ تھا اور وہ بکثرت عبادت کرنے والے تھے اور ان کے ہاتھ کثرت عبادت کی مانند پھٹے ہوئے تھے اور ان کے چرے بکثرت مجدہ کرنے کی وجہ سے اونٹ کے بدن کی مانند پھٹے ہوئے تھے اور ان کے چرے بکثرت مجدہ کرنے کی وجہ سے نشان زدہ تھے۔ میں جب ان کے پاس گیا تو وہ مجھے دیکھتے ہی ہولے اے ابن عباس (فی فینا) آ آپ رٹی فینا کا آنا مبارک ہو۔ میں نے کہا میں تمہارے ساتھ بات کروں اور تم جانے ہو صحبت رسول اللہ مضافی کا کو اس شرف صحابہ کرام جی فینا کو حاصل ہوا اور صحابہ کرام جی فینا وی کے مقصد اور مغہوم شرف صحابہ کرام جی فینا کو حاصل ہوا اور صحابہ کرام جی فینا ہو گئی ہو ہے بہت کہ بات سے چھ بات کہ اس سے چندلوگ ہولے ہمیں آپ دی کے مقصد اور مغہوم سے بخوبی آگاہ ہیں۔ ان میں سے چندلوگ ہولے ہمیں آپ دی فینا ہو ہیں۔ ان میں سے چندلوگ ہولے ہمیں آپ دی فینا ہو ہیں۔

الان المراق المالي الما

حضرت عبدالله بن عباس مُنْ فَيْهُنا فرمات بين مين نے كہاتم حضور نبي كريم من وایمان لانے والے ان کے چیرے بھائی اور ان کے داماد پر الزام لگاتے ہواورطعن وتشنیع کرتے ہو جبکہ حضور نبی کریم مطابح تیا کے تمام صحابہ کرام من النام مجل ان کے ساتھ ہیں۔ وہ پولے ہم حضرت علی الرتضٰی ڈاٹٹیڈ پر ان کی تین باتوں کی وہ ہے تنقید کرتے ہیں۔ میں نے کہا وہ تنن باتیں کون می ہیں؟ وہ بولے ان کی مہی بات جس کی وجہ سے ہم ان پر تنقید کرتے ہیں وہ بد ہیں کدانہوں نے علم خدادندی کے معاملہ میں مردوں کومنصف بنایا جبکہ اللہ عزوجل کا فرمان ہے کہ تمام حکم و فیصلہ كا اختيار الله كے ياس ہے۔ ان كى دوسرى بات جس كى وجہ سے ہم ان پر يول تنقيد كرتے ہيں وہ بدہ كەحبىرت امير معاديد النيز كے ساتھ قال تو كرتے ہيں مگر ان کے بچوں اور عورتوں کو قیدی نہیں بناتے اور نہ ہی ان کے اموال کو مال غنیمت تصور کرتے ہیں ہیں اگر وہ کا فر ہیں تو پھران کی عورتیں، بے اور مال ہمارے لئے حلال ہیں اور اگر وہ مسلمان ہیں تو پھران کے خلاف ہماری تکوار کا اٹھنا حرام ہے۔ ہاری ان پر تنقید کی تیسری وجہ بیے کہ انہوں نے امیر المونین کا لقب اسیے ساتھ ختم کردیا تو کیا پھروہ (معاذ اللہ)امیرالکافرین ہوئے۔

حضرت عبداللہ بن عباس خانجہ فرماتے ہیں میں نے خارجیوں کے نتیوں اعتراضات کا جواب دیتے ہوئے ان سے کہا تمہارے پہلے اعتراض کے جواب میں اللہ عزوجل کا فرمان ہیہ ہے۔

> "اے ایمان والو! جبتم حالت احرام میں ہوشکار کولل نہ کرو اور وہ مخص جو جان ہو جھ کر قل کرے گا اس پر اس کا فدیہ واجب ہوگا اور اس (فدیہ) کا فیصلہ تم سے معتبر لوگ کریں

المناسة على المنافظة كرفيعل

نیز ارشادِ باری تعالی ہوتا ہے۔

''اگر تمہیں میاں ہوی کے مابین جھڑے کا اندیشہ ہوتو پھر ایک منصف مقرر کرومرد کی جانب سے اور ایک منصف مقرر کروعورت کی جانب سے ان کے گھر والوں ہیں ہے۔''

حفرت عبداللہ بن عباس ولی کہا فرماتے ہیں پھر میں نے ان سے کہا میں متمہیں فتم دے کر بوچھتا ہوں کہتم مجھے بتاؤ مردوں کے مال وعزت کی حفاظت کے لئے اوران کے باہمی امور کی اصلاح کے لئے کسی مردکومنصف بنانا جائز ہوایا پھرکسی ایسے خرگوش کومنصف بنایا جائے جوشکار کیا گیا ہواور اس کی قیمت کسی بھی طرح جارورہم سے زیادہ نہ ہو؟

حضرت عبدالله بن عباس وظافین فرماتے ہیں میری بات س کر وہ خارجی
بولے آپ والنیئ درست کہتے ہیں اور مردوں کے معاملہ میں مردوں کو ہی منصف
بنانا چاہئے تا کہ ان کے باہمی امور کی اصلاح ہو۔ میں نے کہا پس تم حضرت علی
الرفظی والنیئ پر جو پہلا اعتراض کرتے تھے وہ خارج ہوگیا اور میں تمہارے پہلے
المرفظی والنیئ پر جو بہلا اعتراض کرتے تھے وہ خارج ہوگیا اور میں تمہارے پہلے
اعتراض کے جواب سے بری الذمہ ہوگیا۔

جضرت عبدالله بن عباس فی فی ات جی پھر میں نے فارجیوں کے دوسرے اعتراض کے جواب میں ان سے فرمایا تم کہتے ہو حضرت علی الرتضلی والنین میں ان سے فرمایا تم کہتے ہو حضرت علی الرتضلی والنین محضرت امیر معاویہ والنین سے قال کرتے ہیں گر ان کی عورتوں اور بچوں کو قیدی نہیں بناتے اور نہ ہی ان کے مال کو مال غنیمت سجھتے ہیں تو پھر میں تم سے پوچھتا ہوں کہ کیا تم اپنی ماں کو قید کرو گے اور تم اپنی ماں سے اپنے جسمانی تعلقات کو موں کہ کیا تم اپنی ماں کو قید کرو گے اور تم اپنی ماں سے اپنے جسمانی تعلقات کو

المناسر على المنافظ كر فيعلى المنافظ كر فيعلى المنافظ كر فيعلى المنافظ كر فيعلى

علال جانو کے اور تم بی کہتے ہو کہ ام المونین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ خالیجیّا اس وقت حضرت امیر معاوید خالیّن کے ساتھ بیں تو کیا وہ تمہاری ماں نہیں ہے؟ اور تم اللّٰه عزوجل کے فرمان سے آگاہ ہو۔اللّٰہ عزوجل فرما تا ہے۔

> ''نبی کا حق مومنول پر ان سے زیادہ ہے اور نبی کی بیویاں مومنوں کی مائیں ہیں۔''

حضرت عبداللہ بن عباس رہ الخفیٰ فرماتے ہیں میں نے ان سے کہاتم اگر ایسا کرو گے تو تم صریحاً گراہ ہو۔ میری بات من کر خارجی بولے آپ رہ الفیٰ نے یہ بھی درست فرمایا۔ میں نے کہا پس تم حضرت علی الرتفنی رہ الفیٰ پر جو دوسرا اعتراض کرتے ہے وہ خارج ہوگیا اور میں تمہارے دوسرے اعتراض کے جواب سے بھی بری الذمہ ہوگیا۔

حضرت عبداللہ بن عباس فرائخہا فرماتے ہیں ہیں نے خوارج کے تیسر کے اعتراض کے جواب میں فرمایا تم اعتراض کرتے ہو حضرت علی الرتفنی والتونئ نے امیر المونیون کا لقب ختم کر دیا تو اس کا جواب بیہ ہے کہ حضور نبی کریم بط نظر نے بھی صلح حدید بیہ کے موقع پر کفار کے اعتراض پر حضرت علی الرتفنی والتی والت کھو یہ معاہدہ محمد بط نظر کیا بن عبداللہ والتی فرایا تھا لکھو یہ معاہدہ محمد بط نظر کیا بن عبداللہ والتی والتی والتی مطابع اللہ مطابع کی ایس حضور نبی کریم بط نظر آپ والتی اس میں کریم بط نظر آپ والتی اللہ مطابع کی ایس کے ساتھ خود بی محمد رسول اللہ بط نظر آپ کے الفاظ فرت موقع کود کھتے ہوئے اپ نام کے ساتھ خود بی محمد رسول اللہ بط نظر آپ کے الفاظ ختم کر دیے تو آپ والتی نے اگر اپنے نام کے ساتھ امیر المونین نہیں لکھا تو اس میں حرج بی کیا ہے؟

حضرت عبدالله بن عباس والفيئة فرمات بين مين نے كہا يس تم حضرت على



المنت على المراق المنافية كرفيه لي المنافية كوفيه المنافية كوفيه المنافية كوفيه المنافية كالمنافية كالمناف

الرتضٰی طالغیز پر جو تبسرااعتراض کرتے تھے وہ بھی اب خارج ہو گیا اور میں تمہارے تبسر ہےاعتراض کے جوانب سے بھی بری الذمہ ہو گیا۔

حضرت عبداللہ بن عباس فرائے ہیں میں نے خارجیوں کے ان تین میں نے خارجیوں کے ان تینوں اعتراضات کے جوابات دیئے تو ان میں سے بیس ہزار خارجیوں نے رجوع کرلیا اور تائب ہو گئے جبکہ جار ہزار خارجی ایسے تھے جوا پے مؤقف پر قائم رہے جنہیں بعد میں قبل کردیا گیا۔

روایات میں آتا ہے حضرت علی المرتفظی والیت کو جب خارجیوں کی اس مرتشی کی خبر ہوئی تو آپ والیت نے اس بات کا خطرہ محسوں کیا تو آپ والیت نے اس بات کا خطرہ محسوں کیا تو آپ والیت کا الشکر اپنے لشکر کو نہروان کی جانب پیش قدمی کرنے کا تھم دیا۔ جب آپ والیت کا الشکر نہروان کی جانب والیت کا اعلان کردیا کہ جنگ شروع ہونے سے نہروان پہنچا تو آپ والیت کا اس بات کا اعلان کردیا کہ جنگ شروع ہونے سے خارجیوں کی ایک بڑی تعداد آپ والیت کے ساتھ آن ملی۔ اب خارجیوں کی تعداد آپ والیت کے ساتھ آن ملی۔ اب خارجیوں کی تعداد میں مردارعبداللہ بن وہب کے ساتھ موجود تھے۔ یہ مردارعبداللہ بن وہب کے ساتھ موجود تھے۔ یہ تمام خارجی اپنی خوف وخطر کے انہوں نے بلاکی خوف وخطر کے آپ والیت کے انہوں نے بلاکی خوف وخطر کے آپ والیت کی ایک خوف وخطر کے ایک کی مراد کی مقابلہ کی اور ایک ایک کر کے تمام خارجی مارے گئے یہاں تک کہ صرف نو خارجی اپنی جانبیں بھا کر بھا گئے میں کا میاب ہوئے۔

خارجیوں کے ساتھ اس جنگ کے نتائج حضرت علی الرتضلی والنفؤ کے حق میں زیادہ مفید ثابت نہ ہوئے۔ آپ والنفؤ نے نتائج حضرت علی المرتضلی میں زیادہ مفید ثابت نہ ہوئے۔ آپ والنفؤ نے نہردان سے ہی ملک شام پرحملہ کرنے کا ادادہ کیا تو آپ والنفؤ کے لشکر کے بہت سے لوگ اس فیصلے کے خلاف

المناسر على المنافي المنافي كي فيعل المنافي كي فيعل المنافي كي فيعل المنافي كي فيعل المنافي كي فيعل

ہو گئے اور وہ واپس کوفہ چلے گئے جس کے بعد آپ والٹن کے لشکر کی تعداد صرف ایک ہزار رہ گئی ارادہ ہمیشہ کے ایک ہزار رہ گئی ارادہ ہمیشہ کے ایک ہزار رہ گئی ارادہ ہمیشہ کے لئے ختم ہوگیا۔ فارجیول کے ساتھ اس لڑائی میں آپ والٹن کے کشکر کے سات افراد نے جام شہادت نوش فرمایا۔

حضرت علی المرتضی و الفرنی بین کریم مضایق کا بینگوئی کے مطابق خارجیوں میں اس محف کو تلاش کیا جس کی نشانی حضور نبی کریم مضایق بنا اس محف کو تلاش کیا جس کی نشانی حضور نبی کریم مضایق بات فتنه کو بیان کرتے ہوئے فرمائی تھی۔ جب آپ والفری نے اس محف کو و مورد لیا تو آپ والفری بنے فرمایا اللہ اکبرا حضور نبی کریم مضایقا بنے درست فرمایا تھا۔ اس کے بعد آپ والفری نبی کریم مضایقا بنے درست فرمایا تھا۔ اس کے بعد آپ والفری نبی کریم مضایقا بنے درست فرمایا تھا۔ اس کے بعد آپ والفری کے بعد آپ والفری کے بعد آپ والفری کے بعد آپ والفری کے بعد ایک کی بیا کوروکفن لاشوں کو میدانی جنگ میں پڑا رہنے دیا اور اپنی کوفہ دوانہ ہو گئے۔

منقول ہے حضرت علی المرتفئی والفئی کی شان میں ایک فار بی نے گتافی اور ہے اولی کی تمان میں ایک فار بی نے گتافی اور ہے اولی کی تمام صدول کو بھلا تھتے ہوئے گالیاں دیں۔ حضرت سعد بن ابی وقاص والفئی کو اس کی خبر ملی تو انہوں نے بارگاہ ضداد ندی میں اپنے ہاتھ بلند کے اور دُعا ما تھی۔

''انی! میہ تیرے نیک بندے کو گالیاں دے رہا ہے تو اسے
المحفل کے فتم ہونے سے قبل اپنے غضب کا نشانہ بنا۔''
حضرت سعد بن الی وقاص دلی تن کی دعا قبول ہوئی اور وہ بد بخت اپنے
محور ہے پرسوار جا رہا تھا کہ اس کا محور البدک گیا اور وہ پخروں کے اوپر منہ کے
بل گرا اور اس کا سراسی وقت دو کھڑے ہوگیا۔

Q___Q



دورِخلافت کے اہم واقعات

جیا کہ گذشتہ اوراق میں بیان ہو چکا حضرت علی المرتضی دائین اور حضوں میں امیر معاویہ دائین کے مابین خلافت کی تقسیم کے بعد مملکت اسلامیہ مملاً دو حصوں میں تقسیم ہو چکی تھی اوراب دونوں حضرات کواپنے اپنے علاقوں پر عملداری قائم کرنے کے لئے محوں اقد امات کرنا ہے کیونکہ عوام الناس بھی دوگر وہوں میں تقسیم ہو چکے ہے۔ حضرت علی الرتضی دائون نے اپنے مقبوضہ علاقوں پر عملداری قائم کرنے کے لئے محوں اقد امات کئے گر چونکہ آپ دائون ساس امور سے زیادہ آگائی نہ رکھتے ہے اس لئے محوں اقد امات کئے گر چونکہ آپ دائون کی سیاسی جالوں اور حربوں نے آپ دائون کی سیاسی جالوں اور حربوں نے آپ دائون کے مقبوضہ علاقوں پر آپ دائون کی گرفت کر در کرنا شروع کردی۔

مصرير حضرت امير معاويه والغيث كافتضه

جیدا کہ گذشتہ اوراق میں بیان البوا حضرت علی الرتضی المی المرتفیٰ کی جانب
سے حضرت قیس بن سعد والفیٰ کومعر کی گورنری سے معزول کئے جانے کے بعد محمد
بن ابی بکرمعر کے گورنرمقرر کئے گئے تھے۔ محمد بن ابی بکر نے اہل خربتہ کو آپ
والفیٰ کی بیعث کے لئے زبردی آ مادہ کرنا جا ہا تو انہوں نے آپ والفیٰ کے خلاف
علم بغاوت بلند کر دیا جس سے معر کے حالات خراب ہونا شروع ہو گئے۔ اس دوران
حضرت امیر معادیہ والفیٰ نے جگ صفین کے بعد جب معرکی صورتحال کی تھینی کا

المسترف المسترف الماني المانية كي فيعلى المسترف المحال الم

اندازہ کیا تو انہوں نے اہل خربتہ کو مدد کی یقین دہائی کرواتے ہوئے حضرت عمرہ بن العاص طالعیٰ کومصر پر حملہ کرنے کا حکم دیا۔ محمد بن ابی بکر نے حضرت کنانہ بن بشیر طالعیٰ کی قیادت میں فوج کا ایک دستہ حضرت عمرہ بن العاص طالعیٰ سے مقابلہ کے لئے بھیجالیکن حضرت عمرہ بن العاص طالعیٰ نے اس الشکر کوشکست سے دوجار کیا اور حضرت کنانہ بن بشیر طالعیٰ شہید ہو گئے۔

حفرمت كنانه بن بشير رئائنو كى شهادت كى خبر سننے كے بعد محد بن ابى بكر الك لشكر كے ہمراہ حفرت عمرو بن العاص رئائنو سے مقابلہ كے لئے نكلے ليكن شكست سے دوچار ہوئے۔حفرت عمرو بن العاص رئائنو نے محد بن ابى بكركو ايك مردہ گھوڑے كى كھال بيں بحركر زندہ جلا ديا۔ محد بن ابى بكركى موت كے بعد حفرت عمرو بن العاص رئائنو كا قبضہ مصر پر ہو گيا۔ حضرت امير معاويہ رئائنو نے حضرت عمرو بن العاص رئائنو كو مصر كا قبضہ مصر پر ہو گيا۔ حضرت امير معاويہ رئائنو كے حضرت عمرو بن العاص رئائنو كو مصر كا گورنر مقرر كيا۔

حضرت علی الرتضی و النیز کو جب مصر پر حضرت عمر و بن العاص و النیز کے قضہ کی خبر ہوئی تو آپ و النیز نے اہل کو فہ کو مخاطب کرتے ہوئے سے سے کہالیکن اہل کو فہ کو مخاطب کرتے ہوئے سے سے کہالیکن اہل کو فہ کو مخاطب کرتے ہوئے سے مصراور شام پر حملے اہل کو فہ پر آپ والنیز کی تقریر کا کی کھاڑ نہ ہوا اور آپ والنیز نے مصراور شام پر حملے کا خیال دل سے نکال دیا۔

أہل بھرہ کی بغاوت:

حضرت امير معاويه بنائن نے مصري قضه کے بعد حضرت عبدالله بن الحضر می بنائن کو بصرہ بھيجا تا کہ وہ وہاں جا کرلوگوں کو اس بات پر آمادہ کريں کہ حضرت عثمان غنی بنائن کے خون کا تصاص ليما جائز ہے۔ حضرت عبدالله بن الحضر می بنائن جب بصرہ پہنچے تو اس وقت بصرہ کے حضرت عبدالله بن الحضر می بنائن جب بصرہ پہنچے تو اس وقت بصرہ کے

المن ترضى فالمؤرك يعلى المنظمة والمعلى المنظمة والمعلى المنظمة والمنظمة ولالمنظمة والمنظمة والمنظمة والمنظمة والمنظمة والمنظمة والمنظمة ول

ما کم حفرت عبداللہ بن عباس فرائفٹنا کوفہ حضرت علی المرتضی فرائنیڈ کے باس گئے ہوئے تھے۔ حضرت امیر معاویہ ہوئے تھے۔ حضرت عبداللہ بن الحضر می فرائنیڈ کے مناقب و وفضائل بیان فرائنیڈ کا ایک خط وکھایا جس میں حضرت عثمان غنی فرائنیڈ کے مناقب و وفضائل بیان کئے گئے تھے اور لوگوں کو حضرت عثمان غنی فرائنیڈ کے خون کا قصاص طلب کرنے پر اکسایا گیا تھا۔ حضرت عبداللہ بن الحضر می فرائنیڈ کی ان کوششوں سے بنوتمیم اور دیگر الل بھرہ اس بات پر آمادہ ہو گیا اور انہوں نے حضرت علی المرتضی فرائنیڈ کے خلاف علم بغاوت بلند کر دیا۔

حضرت علی المرتضی و المرتضی و جب ان کے ناپاک ارادوں کی خبر ہوئی تو آپ و النین نے عین بن ضبعیہ کو بھرہ بھیجا جنہوں نے ایک زبردست مقابلہ کے بعد حضرت عبداللہ بن الحضر می و النین کوتل کر دیا اور بنوتمیم کے تمام سرکردہ لیڈروں کو مار دیا۔ حضرت عبداللہ بن الحضر می والنین اور دیگر سرداروں کے قبل کے بعد اہل بھرہ نے دوبارہ حضرت علی المرتضی والنین کوائی تمایت کا یقین دلایا جس سے بھرہ میں بھر سے امن قائم ہوگیا۔

اہل اران کی بغاوت:

حضرت امير معاويير ولالنفؤ كى ان سياى جالوں كى وجه سے مسلمان آپس ميں لڑنا شروع ہو گئے تھے۔ ايرانيوں نے جب ديكھا كەمسلمان آپس ميں لار ہے بيں تو انہوں نے علم بغاوت بلند كر ديا اور حضرت على المرتضلی ولائفؤ كى جانب سے نامزد گورنر حضرت مهيل بن صنيف ولائفؤ كوايران سے نكال ديا۔

حضرت علی المرتضی والنفظ نے حضرت زیاد بن حفصہ والنفظ کو ایک الشکر عظیم کے ساتھ ان کی سرکوئی کے لئے بھیجا۔ امرانی اس بات پرخوش نتھے کہ مسلمان آپس

المنتسر على المنتاع ال

میں الر رہے ہیں اس لئے اب وہ دوبارہ ان کی جانب توجہ نہیں کریں گے۔حضرت زیاد بن حفصہ طالفہ نے ان کی اس بے خبری کا خوب فائدہ اٹھایا اور اپنی طاقت کو جمر پور استعال کرتے ہوئے انہیں پھر سے اطاعت سلیم کرنے پر مجبور کر دیا۔حضرت بریاد بن حفصہ طالفہ کی بہترین حکمت عملی سے ایک مرتبہ پھر ایران پر مسلمانوں کا تسلط قائم ہوگیا۔

حضرت امير معاويه والثنيز كے سياى حربے:

حضرت امير معاويد والخفيظ من حصرت على الرتضلي والفيظ كو كمزور كرف ك کئے مختلف سیای جالیں کھیلنا شروع کر دیں ادر عراق کے مختلف صوبوں میں علم بغاوت بلند كروانا شروع كر ديا۔ جب آب طافئة كى تمام توجه عراق اور ايران كى جانب مبذول ہو تی تو حضرت امیر معادیہ والنظر نے یمن اور جاز مقدس پر قضه کر لیا۔ مکہ مکرمہ اور مدینہ منورہ کے لوگوں کو زبردی حضرت امیر معاویہ والطن کی بیعت كرواني كئى۔جس كے بعد آپ والنيز كى خلافت عراق اور ابران تك محدود ہوگئى۔ يمن اور حجاز مقدى برحضرت امير معاويه والفئ كے قبضے كى ايك وجه بيد مى تھی کہ حضرت علی المرتضی ملافقہ نے جنگ جمل کے بعد کوفہ کو دارالخلافہ قرار دے دیا تفا اور آپ مالفن کوف میں مقیم ہو گئے ہتے اور مکہ طرمہ اور مدینه منورہ کی جانب سے طريقے سے توجہ نہ دی تی جس کی وجہ آئے رہائی کو مختلف فتنوں اور بعاوت کا مقابلہ تفا-حضرت امير معاويد والفيز جوان تمام بعناوتوں كوشروع كرنے والے تھے انہوں نے جب آپ بڑائن کی تمام توجدان یا غیوں کے خلاف دیکھی تو انہوں نے مکہ مرمد اور مدیند منورہ پر چڑھائی کر دی اور لوگوں کو ڈیردی بیٹت پر مجبور کیا جانے لگا۔ دوسری جانب اہل عراق تھے جنہوں نے حضرت علی الرتضى دالنے كواس

المنت على المنافية كي يعلى المنافية كي يعلى المنافية كي يعلى المنافية كي يعلى المنافية كي المنافية كي

بات پر مجبور کیا تھا کہ وہ کوفہ میں رہیں کیونکہ کوفہ کو اسلامی سلطنت میں یہ مقام حاصل تھا کہ یہاں بیٹے کرتمام اسلامی صوبوں کی گرانی کی جاسکتی تھی گرانہوں نے آپ دافٹی سے وفا نہ کی اور آپ دافٹی کی رفاقت کا وہ حق ادانہ کیا جس کا ان سے فطری طور پر تقاضہ کیا جا سکتا تھا یہاں تک کہ اہل عراق کی جانب ہے آپ دافتی کے فیصلوں پر تقاضہ کیا جا سکتا تھا یہاں تک کہ اہل عراق کی جانب سے آپ دافتی کے فیصلوں پر تقیدی نظرا ور انہیں مستر دکیا جانے لگا۔

خلافت على المرتضى والنفية براجمالي جائزه:

حفرت علی الرتفنی والفی کا زمانہ خلافت خانہ جنگی ، شورشوں اور بغاوتوں کی نذر رہا۔ اسلام وشمن تو تیں اور مسلمانوں کے اندرونی اختلافات کی وجہ سے فقو حات کا سلسلہ رک گیا۔ خلافت عملاً دو حصوں میں تقسیم ہو چک تھی۔ آپ ہلائین سیاسی امور کے ماہر نہ سے جبکہ حضرت امیر معاویہ والٹین سیاسی امور کے ماہر شے۔ حضرت امیر معاویہ والٹین کو ان کی سیاسی چالوں کے ساتھ ساتھ اپنے رفقاء کا بھی اعتاد حاصل تھا جبکہ آپ والٹین کے رفقاء میں ماسوائے چند ایک کے دولوگ سے جو آپ والٹین کے رفقاء میں ماسوائے چند ایک کے دولوگ سے جو تنے دفاع کی مرتبہ فرمایا۔

آپ والٹین کو پہلے تو کسی کام پر آمادہ کرتے اور پھر خود اس کام سے منہ موڑ لیتے سے چنا نچہ بھی دجہ ہے کہ آپ والٹین نے ایک مرتبہ فرمایا۔

" جبرا تھی کی بات ہے جمیرے ساتھی میری نافر مانی کرتے ہیں جبکہ ایمیر معاویہ والی کی اطاعت ادر فرمانہ دواری

(زجين جلد دوم صفحه ١٢٩)

حضرت علی الرتضیٰ دلی خواند خلافت قریباً پارنج برسوں پرمحیط کے مگریہ دورمملکت اسلامیہ میں افراتفری کا دور تھا اور اس زمانہ میں فتو حات کا دروازہ بند ہو



چکا تھا۔ آپ بڑائیڈ کے زمانہ میں چونکہ امن وامان کی صورتحال زیادہ بہتر نہ تھی اس لئے وہ عوامی اور فلاحی کام جو دیگر خلفاء کے زمانہ میں جائے ترقی آنے کے زوال آتا چلا گیا۔ آپ بڑائیڈ اگر چہوای فلاحی منصوبوں برکام کرتا چاہتے تھے گرملکی صورتحال کی وجہ سے آپ بڑائیڈ اس جانب توجہ نہ دے سکے۔ عبار مؤرضین لکھتے ہیں حصرت علی المرتضی بڑائیڈ کی شخصیت اور حصرت عمر فاروق بڑائیڈ کی شخصیت اور حصرت عمر فاروق بڑائیڈ کی شخصیت میں بڑی حد تک مماثلت پائی جاتی تھی اور آپ بڑائیڈ اس جانب تھی اور آپ بڑائیڈ اس جانب کے خواہاں مجھے کہ ملکی نظام دور فاروقی بڑائیڈ کی طرز پر چلائیں گر حصرت عمر فاروق بڑائیڈ کی طرز پر چلائیں گر حصرت عمر فاروق بڑائیڈ کی طرز پر چلائیں گر حصرت عمر فاروق بڑائیڈ کی طرز پر چلائیں گر حصرت عمر فاروق بڑائیڈ کو آپ بڑائیڈ جیسے مشیر کی خدمات حاصل تھیں اور آپ بڑائیڈ کے مشیر فاروق بڑائیڈ کو آپ بڑائیڈ جیسے مشیر کی خدمات حاصل تھیں اور آپ بڑائیڈ کے مشیر فاروگ شے۔

روایات میں آتا ہے جب حضرت علی المرتضی والنین نے کوفہ کو دارالخلافہ بنایا اور کوفہ تشریف لائے تو لوگوں نے آپ والنین سے کہا کہ آپ والنین قصرشاہی میں قیام نہیں میں قیام نہیں میں مرگز قیام نہیں کروں گا۔

O___O



ساتوا<u>ل باب:</u>

حضرت على المرتضلي طالتين كفضائل ومناقب

فضائل ومناقب، سیرت مبارکہ کے درختال پہلو، دورِخلافت میں کئے گئے اجتہادی وفقہی فیلے، خلفائے ثلاثہ دِی اُنٹیم کے ساتھ تعلقات، کشف وکرامات کا بیان





آئے بھی ہے مطلع علم و ادب پر ضوّلین میدر کرار بڑائٹیڈ کا خورشید افکار و علوم جس کے ملی بیل بڑائٹیڈ، مشکل کشا شیر خدا اس یہ غالب آ نہیں سکتے حوادث کے ہجوم اس یہ غالب آ نہیں سکتے حوادث کے ہجوم



فضائل ومناقب

حضرت علی المرتضی طالعین کا شارعشرہ میں ہوتا ہے۔ آپ طالعین کے فضائل ومنا قب بہ اللہ واللہ کے فضائل ومنا قب بے شار ہیں۔حضور نبی کریم مطبقہ بھتا کی آپ طالعین سے مجبت بے مثال ہے۔حضور نبی کریم مطبقہ بھتا ہے۔

"الله عزوجل نے بچھے جار آدمیوں سے محبت رکھنے کا تھم دیا ہے جن میں سے ایک علی طالغتیا ہیں۔"

مہاجرین و انصار میں حضرت علی المرتضی طاقتی طاقتی الاسلام ہیں اور جو نوگ آپ طاقتی الاسلام ہیں اور جو نوگ آپ طاقتی ہے۔ آپ طاقتی و شخص نوگ آپ طاقتی ہے۔ آپ طاقتی و شخص ہیں جنہوں نے حضور نبی کریم میضی ہی دعوت پر لبیک کہا اور اللہ عزوجل کی رضا اور جنت کی نعمتوں کے حقد ارتفہرے۔

سور ممل میں ارشاد باری تعالی موتا ہے۔

"جب موی (علیاتیم) نے اپنی گھر والی سے فرمایا مجھے ایک آگ نظام ق

نظرآتی ہے۔

اس آیت میں اللہ عزوجل نے حضرت موی علیائی کی زوجہ حضرت صفورہ فلائی کی آوجہ حضرت صفورہ فلائی کی آئی کی آئی کی اللہ علیائی کا اہل بتایا ہے چنانچہ اللہ عزوجل نے سورہ احزاب میں ارشاد فرمایا۔

الناسة على المالية الم

''اے نی (ﷺ) کے گھر والو! اللہ تو یہی چاہتا ہے وہ تم ہے
ہرتم کی ناپا کی کو دور کر دے اور تمہیں پاک صاف کروے''
یعنی اللہ عزوجل نے ہروہ کام جو کہ شریعت کے خلاف ہے، ہروہ کام جو
بارگاہِ خداوندی میں ناپندیدہ ہے، اہل بیت حضور نبی کریم میں کی ایش کو ان سے پاک
کرنے پر قادر ہے اور اس ضمن میں حضور نبی کریم میں کی ایش کا فرمان عالیشان ہے۔
کریے سے اور اس ضمن میں حضور نبی کریم میں کی گئے کا فرمان عالیشان ہے۔
''میں اور میرے اہل بیت گناہوں سے پاک ہیں۔''

ام المومنین حضرت سیّدہ ام سلمہ ذاتی بین کہ سورہ احزاب کی آیت
میرے گھر پر نازل ہوئی تھی اور جب بیہ آیت نازل ہوئی بیں اس وقت درواز ب
پر بیٹھی ہوئی تھی۔ بیس نے حضور نبی کریم مطابقی کی خدمت عرض کیا کہ یارسول الله
میشانی کی ایس اہل بیت سے ہوں؟ حضور نبی کریم مطابقی النے فرمایا۔

''میری از واج بھی اہل ہیت ہیں۔''

حضرت ابوسعید خدری و الفتون سے مرونی ہے فرماتے ہیں جب سورہ الاحزاب کی بیہ آیت نازل ہوئی تو حضور نبی کریم مضطر کی بیٹے کا لیس روز تک فجر کے وقت مسلسل ابنی بیٹی حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا و الفیانی کے دروازے پر تشریف لے جاتے رہے اور فرماتے رہے۔

''اے میرے اہل بیت! تم پر اللہ کی سلامتی، رحمت اور برکت نازل ہو، نماز پڑھوتا کہ اللہ تم پر رحم فر مائے۔'' حضرت انس بن مالک ڈائٹوئؤ سے مروی ہے فر ماتے ہیں اس آیت مبارکہ کے نزول کے چھ ماہ بعد تک حضور نبی کریم مضطح تا پی بیٹی حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فران نجنا کے گھر فجر کے وقت جاتے رہے اور با آواز بلند فرماتے۔

المنت على المراقع المائة كرفيها كالمعالي المنتاج المنت

ام المونین حفرت سیدہ عائشہ صدیقتہ فران شیا ہے مروی ہے فرماتی ہیں کہ حضور نی کریم ہے ہے منقشی چا در اوڑھ رکھی تھی۔ یہ چا در سیاہ بالوں ہے بی ہوئی تھی۔ حضرت سیدنا امام حسن فران ہیں ۔ آپ سے بھی اسے بھی ہے ہے ہیں آئے تو آپ سے بھی ہے ۔ نے انہیں اپنی چا در میں داخل کر لیا۔ پھر حضرت سیدنا امام حسین فران ہی تا ہے تو آپ سے بھی ہے اور میں داخل کر لیا۔ پھر حضرت سیدہ فاطمہ الز ہرا فران ہی تشریف سے بھی جا در میں داخل کر لیا۔ پھر حضرت سیدہ فاطمہ الز ہرا فران ہی الرتفلی لئے بھر حضرت سیدہ فاطمہ الز ہرا فران ہی الرتفلی لئے بھر حضرت سیدہ فاطمہ الز ہرا فران ہی الرتفلی دائیں تھی الرتفلی الرتفلی الرتفلی فران کر لیا اور پھر فرانا۔

''اللّٰدعز وجل حابتا ہے میزے گھر دالوں سے ہرفتم کی نایا کی کو دور کر دیے اور تنہیں صاف ستھرا کر دے۔''

ودعلى، فاطمه،حسن اورحسين مني أنتنا-

روایات میں آتا ہے کہ حضور نبی کریم مضافیۃ اللہ خطرت علی المرتضلی ذالفہٰ ، مصرت سیدنا امام حسن دالفہٰ الرتضلی المرتضلی ذالفہٰ امام حسن دالفہٰ الرہراذالفہٰ المرت سیدنا امام حسن دالفہٰ اور حضرت سیدنا امام حسین دالفہٰ کو بلایا اور اللہ عزوجل کے حضور یوں گویا ہوئے۔

"اے اللہ! بیمیرے اہل بیت ہیں۔"

حضرت جابر بن عبداللہ رہائیں ہے روایت ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم مضار کیا ہے جنہ الوداع کے موقع پر فرمایا۔

'' میں تمہارے لئے دو چیزیں چھوڑے جارہا ہوں ایک اللہ کی کتاب اور دوسرا میرے اہل ہیت۔'' حضرت عبداللہ بن عباس زائنجنا ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم

ين كين المايار

"الله عزوجل سے محبت کرو کہ وہ تہہیں تمام نعتوں سے سرفراز فرما تا ہے اور بھی سے محبت اللہ عزوجل کی خاطر کرو جبکہ میر ب اہل بیت سے محبت میر بے سبب سے کرو۔" تفییر کبیر میں منقول ہے کہ حضور نبی کریم میضور نبی کریم میضور نبی کریم میضور نبی کریم میضور نبی کریم میضورت فرمایا۔ "جو میر ب اہل بیت کی محبت میں فوت ہوا اس نے شہادت کی موت یائی اور جو محص میر ب اہل بیت سے بغض رکھ کر مرا وہ کا فر ہو کر مرا۔"

حضرت عبدالله بن عباس فی نیاس می است مروی ب فرمات میں کہ حضور نی کرمیم میں کہ حضور نی کرمیم میں کہ حضور نی کرمیم میں مونق افروز شخصہ انسار مدینہ نے جب و یکھا آپ میں کا کا میں میں مونق افروز شخصہ انسار مدینہ نے جب و یکھا آپ میں کا کا میں میں مونق افروز شخصہ انسار مدینہ نے جب و یکھا آپ میں کا کا میں میں مونق افروز شخصہ انسار مدینہ نے جب و یکھا آپ میں کا کا میں میں مونق افروز شخصہ انسار مدینہ نے جب و یکھا آپ میں کہ میں مونق افروز شخصہ انسار مدینہ نے جب و یکھا آپ میں کے میں کہ میں کہ میں کہ میں کہ میں میں کہ میں کہ کا کہ کہ کا کہ کہ کا کہ کی کہ کا کہ

الانتست على المرتبي الماسين ال

کے مصارف بہت زیادہ ہیں لیکن آپ میضؤیڈ کی آمدن کی خیمیں تو انہوں نے اپنا مال واسباب جمع کر کے آپ میضؤیڈ کی خدمت میں پیش کیا اور عرض کیا۔

"یارسول اللہ میضؤیڈ آپ میضؤیڈ کی تبلیغی کاوشوں اور نظر کرم
ہے ہمیں ہدایت نصیب ہوئی، ہم دیکھتے ہیں کہ آپ میشؤیڈ کے اخراجات زیادہ ہیں لیکن آمدنی کی تھیں ہے آپ میشؤیڈ کے اخراجات زیادہ ہیں لیکن آمدنی کی تھیں ہے آپ میشؤیڈ کے اخراجات زیادہ ہیں لیکن آمدنی کی تھیں ہے آپ میشؤیڈ کی جانب سے بیرمال ہدیۂ قبول فرمالیں۔"

حضرت عبدالله بن عباس رافظینا فرماتے ہیں جس وقت انصاریہ بات کر رہے ہے۔ اسے کر رہے ہے۔ اسے کر کے بیٹے کی آیت ذیل نازل ہوئی۔ رہے تھے اس وقت حضور نبی کریم میٹے کی آپرسور استعراء کی آیت ذیل نازل ہوئی۔ '' (یا رسول الله میٹے کی آپر ما دیجئے کہ میں اس دعوت حق پرکوئی معاوضہ نبیس ما نگتا بجز اپنے قرابت داروں کی محبت کے۔''

حطرت عبدالله بن عباس والنجان فرمات بی ایک مرتبه نجران کے عیسا یوں کا ایک وفد حضور نبی کریم مطابق کی خدمت میں حاضر ہوا اور ان کا مقصد آپ مطابق ایک وفد حضور نبی کریم مطابق کی خدمت میں حاضر ہوا اور ان کا مقصد آپ مطابق کی خدمت میں حاضر ہوا اور ان کا مقصد آپ مطابق کی خدمت میں کا ایک مناظرہ کرنا تھا۔ ان عیسا نیوں نے حضور نبی کریم مطابق بنے حضرت عیسی علیان کا کہ متعلق دریافت کیا؟ آپ مطابق نبی کریم ایا۔

"وہ اللہ عزوجل کے بندے اور رسول بیں اور کنواری مریم مینا) کی جانب القا کئے محصے "

عیسائی بولے وہ تو (نعوذ باللہ) اللہ کے بیٹے ہیں۔حضور نبی کریم منطقہ اللہ کے بیٹے ہیں۔حضور نبی کریم منطقہ اللہ کے فرمایا وہ کیسے؟ عیسائی بولے کیا آپ منطقہ اللہ نے کوئی بندہ ایسا دیکھا جو بغیر باپ کے بیدا ہوا ہو؟ آپ منطقہ الے فرمایا۔

"اكريدليل بوحضرت آدم علياته كمتعلق تم كياراك

الناست كالسر أنها بنافؤ كرفيعل

رکھتے ہو وہ بغیر مال باپ کے بیدا کئے گئے جبکہ حضرت عیسیٰ علیائلام کی تو مال تھیں اور باپ نہ تھے۔''

ان عیسائیوں کے پاس حضور نبی کریم مین پیشنی کی بات کا کوئی جواب نہ تھا گر وہ اپنی ہٹ دھرمی کی بناء پر جھکڑنے گئے۔ آپ مین پیشنی بنے فرمایا تم مباہلہ کرلو جو سے ہوا وہ نبی جائے گا ور جو غلط ہوا وہ بر باد ہوگا اور حق و باطل ظاہر ہو جائے گا۔ حصرت عبداللہ بن عباس میان نبی فرمائے ہیں اس موقع پر اللہ عز وجل نے سورہ آل عمران کی آیت ذیل نازل فرمائی۔

'' پھراے محبوب (منے بھٹے) جوتم سے عیسیٰ غلالٹلا کے بارے میں جست کریں بعداس کے کہ تہمیں علم آچکا تو ان سے فرما دوآؤ ہم میں بعداس کے کہ تہمیں علم آچکا تو ان سے فرما دوآؤ ہم بلائیں اپنے بیٹے اور تہماری میٹے اور اپنی عور تیں اور تہماری عور تیں اور تہماری عور تیں اور اپنی جانیں کھر مبللہ کریں تو جھوٹوں پر اللہ کی لعنت ڈالیں۔''

عیسائی وفد نے حضور نبی کریم مضرکا کی بات می تو کہا ہمیں تین دن کی مہلت دیں۔ آپ مضرکا نے انہیں تین دن کی مہلت دی اور پھر تین دن گزرنے کے بعد وہ عیسائی وفد عمرہ قبائے زیب تن کے اپنے نامور پادر یوں کے ہمراہ واپس لوٹا۔ آپ مضرکا تا اس نے اور آپ مضرکا ہے اور آپ مضرکا امام حسن بڑائیڈ کا کود میں حضرت سیدنا امام حسین بڑائیڈ کا مصرت سیدنا امام حسن بڑائیڈ کا ہم حضرت سیدنا امام حسن بڑائیڈ کا ہم تھام رکھا تھا جبکہ حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا فرائیڈ اور حضرت علی الرتضی بڑائیڈ، آپ مضرکی المرتضی بڑائیڈ، آپ مضرکی المرتض کی دوران تو تم سب آ مین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران تو تم سب آمین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران کی مسب آمین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران کی المرتف کے دوران کی سب آمین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران کی مسب آمین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران کی مسب آمین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران کی مسب آمین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران کی مسب آمین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران کی کے دوران کی مسب آمین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران کی کے دوران کی مسب آمین کہنا۔ پھر آپ مضرکی کے دوران کی کوران کی کے دوران کی کی کوران کی کے دوران کی کے دوران کی کی کوران کی کوران کی کار کی کوران کی کار کی کی کوران کی کار کی کوران کی کی کوران کی کوران کی کوران کی کوران کی کوران کی کی کوران کی کوران کی کوران کی کھر کی کی کی کوران کی کوران کی کر کی کوران کی کی کوران کی کوران

الانت ترسيل المنافعة كي يعلى المنافعة كي يعلى المنافعة كي يعلى المنافعة كي يعلى المنافعة المن

"اے اللہ! میرے اہل بیت ہیں۔"

یں موجود بڑے یا دری نے جب حضور نبی کریم ہے ہے۔ عیسائی وفد میں موجود بڑے پادری نے جب حضور نبی کریم ہے ہے۔ اپنے اہل بیت کے ہمراہ دیکھا تو بکاراٹھا۔

"بااشبہ میں ایسے چبرے دیکھا ہوں اگریہ ہاتھ اٹھا کر بارگاہ خداوندی میں دعا کریں اے اللہ! ان پہاڑوں کو اپنی جگہ سے ہٹا دے تو وہ ان پہاڑوں کو ان کی جگہ سے ہٹا دے اور تم ان سے ہرگز مبللہ نہ کرو ورنہ ہلاک کردیئے جاد کے اور پھر روئے زمین برکوئی بھی عیسائی باتی نہ رہے گا۔"

عیمائی وفد نے جب اپنے بڑے پادری کی بات می تو حضور نبی کریم عضائی کی بارگاہ میں عرض کیا ہم آپ مضائی کے مباہلہ نبیں کرتے ،آپ مشائی اپنے اپنے اسٹے کی اسٹے کی اسٹے کی اسٹے کی اسٹے دنین پر رہیں گے۔ پھر ان عیمائیوں نے جزیہ کی شرط پر صلح کرلی۔

> جعنور نی کریم مضطح نیاز اس موقع پر فرمایا۔ دونتم ہے اللّٰہ عزوجل کی جس کا عذاب ان کے سروں پر تھا اور اگر میمباہلہ کرتے تو یہ بندر اور خنز پر بن جاتے اور ان کے گھر جل کر خاکمتر ہو جاتے اور ان کے چرند و پرندسب نمیست و علامہ میں استان

حضور نبی کریم مین کی کا فرمانِ عالیشان ہے۔ ''جس نے نماز پڑھی اور اس نے مجھ پر اور میرے اہل بیت پر درود نہ پڑھا تو اس کی نماز قبول نہ ہوگی۔''

الناسترعس الدر النفي الماتين كي فيعلى المسترع المالية المسترع المالية المسترع المسترع

صواعق محرقه میں منقول ہے کہ حضور نی کریم مضائق ہے ارشادفر مایا۔ ''مومن اور متقی شخص مجھ ہے اور میرے اہل بیت سے محبت ر کھتا ہے جبکہ منافق اور شقی القلب ہم سے بغض رکھتا ہے۔" ایک اور موقع پرحضور نی کریم منظری نے فرمایا۔ "جومير كابل بيت كے ساتھ بغض ركھتا ہے وہ منافق ہے۔" حضور نبی کریم مضایقاً کا ارشاد گرامی ہے۔ ''روزِ حشر میں جارلوگوں کی سفارش کروں گا۔اڈل وہ جومیرے اہل ہیت سے محبت رکھے، دوم وہ جوان کی ضروریات کو بورا كرنے والا ہو، سوم وہ جب ميرے اہل بيت بحالت مجبوري اس کے باس آئیں تو ان کے معاملات احس طریقے ہے ا نپٹائے اور چہارم وہ جو دل و زبان سے ان کی محبت کا اقرار كرنے والا ہو۔''

حضرت سعد بن الی وقاص ولینی سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی

کریم سے الحقظ انے غزوہ ہوک کے موقع پر حضرت علی الرتضی وظافی کو مدید منوزہ میں
اپنا قائم مقام مقرر فرمایا۔ آپ ولینی نے حضور نبی کریم سے کینی کی خدمت میں عرض
کیا کہ یارسول اللہ سے کینی آپ سے کینی المجھے عورتوں اور بچوں پر خلیفہ بنا کر جا رہے
ہیں؟ حضور نبی کریم سے کینی آپ فرمایا۔

''کیاتم اس بات پر راضی نہیں میں تنہیں اس طرح جھوڑ ہے جا رہا ہوں جس طرح مویٰ (علیاتیا) نے ہارون (علیاتیا) کو چھوڑا جبکہ فرق صرف میہ ہے میرزے بعد کوئی نی نہیں ہوگا۔''

الناسة عمل المان ا

ام المومنین حضرت سیدہ ام سلمہ بنائجنا سے مروی ہے فرماتی ہیں کہ حضور نبی کریم مضاعیا۔

> "منافق على (طالفظ) مع محبت نہيں ركھتا اور مومن على (طالفظ) منافق على (طالفظ) معربت نہيں ركھتا اور مومن على (طالفظ) معربین ركھتا "

حضرت عبداللہ بن عباس فرائی اسے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم مضور نبی مرحی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم مضورت ملی الرتضی الرقبی الرقبی الرقبی الرقبی الرقبی الرقبی ہے کیا تو حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا فرائی النبی نے عرض کیا کہ آپ مضافی المرتبی النبی میرا نکاح اس محض کے ساتھ کر دیا جس کے پاس نہ مال ہے نہ گھر؟ اس پر آپ مضافی کا حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا فرائی اسے فرمایا۔

"اے فاطمہ (خلی فیا)! میں نے تیرا نکاح ایسے خص سے کیا جو مسلمانوں میں علم وضل کے لحاظ سے سب سے وانا اور افضل مسلمانوں میں علم وضل کے لحاظ سے سب سے وانا اور افضل ہے۔"،

حضرت سعد بن الى وقاص والنفاؤ فرمات بين كه حضور نبي كريم ملط وقاص والنفاؤ فرمات بين كه حضور نبي كريم ملط وقام كرمه سے والى مدينه منوره تشريف لا رہے تھے۔ آپ ملئ وقام كم مقام برائے تمام صحابه كرام وجي النقام كي اور يو جيما تمبارا ولى كون ہے؟ صحابه كرام ولى أنتا كو جمع كيا اور يو جيما تمبارا ولى كون ہے؟ صحابه كرام ولى أنتا في تمن مرتبه جواب ميں كبا جمارے ولى الله اور اس كے رسول ملے وقاب بيں۔ آپ ملئے وقاب في كبا جمارے ولى الله اور اس كے رسول ملے وقاب بيں۔ آپ ملئے وقاب في كرام الله اور اس كے رسول ملے وقاب الله والله الله اور اس كے رسول ملے وقاب الله والله الله الله الله الله الله والله وقاب الله والله وا

''جس کا ولی اللہ اور اس کا رسول ہے اس کا ولی علی (مِنْ لِنَهُوَ ؛) بھی میر ''

حضرت ابوالطفيل والنفظ سے مروی ہے فرماتے ہیں کدحضرت علی الرتضلی

المناسر على المنافع بالماني ألماني المنافع الم

طبرانی کی روایت ہے حضور نبی کریم این فر مایا۔

''جس نے علی (رائی تعین کی اس نے جھ سے محبت کی اس نے جھ سے محبت کی اس نے جھ سے وشمنی کی اور جس اور جس نے بھی سے محبت کی اس نے اللہ سے محبت کی اور جس نے بھی سے وشمنی کی اس نے اللہ سے وشمنی کی ۔''

''اے علی (مِرْالْنَوْ)! تم میرے دنیا اور آخرت کے بھائی ہو۔''
ام المومنین حضرت سیّدہ ام سلمہ رِنْائَوْ فَر ماتی ہیں حضور نبی کریم مِنے وَقِیْلِ نے فرمایا کہ جس نے علی (رِنْائِوْ) کو برا کہا اس نے مجھے برا کہا چنانچہ حب رسول اللہ میں کیا تقاضہ یہ ہے کہ ہم حضرت علی المرتفعٰی رِنْائِوْ کی شان میں گتا خانہ کلمات کی میائے ان سے اپنی عقیدت کا اظہار کریں اور ان کے فضائل ومتا قب کو بیان کرنے میں کی میں کے بخل سے کام نہ لیس کے

الناسة على المنافع المنافعة كي المنافعة المنافعة

حضرت ابوہر برہ طالعین ہے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت عمر فاروق میلینئ نے فرمایا۔

" حضرت علی المرتضی رہائیڈ کو تین بہترین فضیلتیں ایسی عطاکی سیکٹیں جن میں سے ایک بھی اگر مجھے مل جاتی تو وہ میرے نزدیک دنیا ہے زیادہ محبوب ہوتی۔"

لوگوں نے پوچھا وہ تمین قضیاتیں کون سی ہیں؟ حضرت عمر قاروق شالننوز

نے فرمایا۔

" بہلی فضیلت ہے کہ حضور نبی کریم مضیقہ نے اپنی صاحبزادی حضرت سیدہ فاطمہ الز ہراؤلی بنا کا نکاح ان سے کیا۔ دوسری فضیلت ہے کہ ان دونوں کومسجد میں رکھا اور جو بچھ انہیں وہاں حلال ہے کہ ان دونوں کومسجد میں رکھا اور جو بچھ انہیں وہاں حلال ہے مجھے حلال نہیں۔ تیسری فضیلت ہے کہ غزوہ مجیمے حلال نہیں۔ تیسری فضیلت ہے کہ غزوہ مجیمے حلال نہیں۔ تیسری فضیلت ہے کہ غزوہ مجیمے حلال نہیں ہے تیسری فضیلت ہے کہ غزوہ مجیمے حلال نہیں ہے مطافر مایا۔"

حضرت عبدالرحن بن لیلی دانین فرمات بیل که حضرت علی الرتضی دانین فرمات بیلی دانین فرمات بیلی دانین فرمات بیلی دانین که حضرت علی الرتضی دانین شدید گرمی کے موسم میں ہمارے پاس تشریف لائے۔ آپ دانین شدید گرمی لباس زیب تن کر رکھا تھا۔ ہم نے آپ دانین شرمار کھا ہے۔ آپ دانین شدید گرمی میں آپ دانین نے مردیوں کا لباس زیب تن فرمار کھا ہے۔ آپ دانین نے فرمایا۔

میں آپ دانین نے مردیوں کا لباس زیب تن فرمار کھا ہے۔ آپ دانین نے فرمایا۔

مریم موقع پر جب میری آئیس دکھتی تھیں تو حضور نی کرمی میری آئیس کو دور فرما اور دعا فرمائی اے اللہ! علی (دانین میری آئیس و مردی کو دور فرما و کے درمائی اے اللہ! علی (دانین کے بعد مجھے گرمی وسردی کی تکلیف نہ رہی۔''

المناسر على الماني الما

روایات میں آتا ہے کہ حضرت علی المرتضی و النفظ ایک مرتبہ بیار ہو گئے تو حضور نبی کریم مضریح آپ والنفظ کی عیادت کے لئے تشریف لائے اور آپ والنفظ کی عیادت کے لئے تشریف لائے اور آپ والنفظ کو اپنی جا در میں لے کر دعا فرمائی جس سے آپ والنفظ تندرست ہو گئے۔حضور نبی کریم مضریح بھائے آپ والنفظ کو خاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

"اے علی (طالبین)! میں نے اللہ عزوجل سے جو ما نگا اس نے مجھے عطا کیا میں نے اللہ عزوجل سے اپنے لئے وہ ما نگا ہے جو میں سے اپنے لئے وہ ما نگا ہے جو میں نے تمہمارے لئے ما نگا ہے۔"

حضرت سلیمان بنائن سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم مضافیا ا

فرمایا_

''جوکوئی میری بیٹی فاطمہ (بنائیا) سے محبت کرے گا وہ جنت میں میر سے ساتھ ہوگا اور جوکوئی اس سے دشمنی رکھے گا وہ جہنم واصل ہو گا اور میری بیٹی فاطمہ (بنائیا) کی الفت سو جگہ نفع پہنچاتی ہے اور این جگہوں میں سے چند ایک موت کے وقت قبر میں حساب و کتاب کے وقت، میزان اور بل صراط کے وقت اور روزِ حشر حساب کے وقت شامل ہیں اور میری بیٹی فاطمہ (بنائیا) جس سے خوش ہوگی میں اس سے خوش ہوں گا اور اللہ بھی اس سے خوش ہوگا اور میری بیٹی فاطمہ (بنائیا) جس سے ناراض ہوگی اس سے میں بھی ناراض ہوں گا اور اس سے اللہ بھی ناراض ہوگا اور جوشخص ان کے شربر علی (بنائیا) اور ان کی اولاد برظم کر سے باس کے لئے با اس سے۔'

الناسة على المالية الم

حضرت علی المرتضی برالینی سے منقول ہے کہ ایک مرتبہ میں گھر میں داخل
ہوا تو دیکھا کہ حضور نبی کریم بیضے بیٹی تشریف فرما ہیں اور حضرت سیّدنا امام حسن برالینی آب بیضی بیٹی کی وائیس اور حضرت سیّدنا امام حسین بڑالینی آب بیضی بیٹی کی بائیس جانب گود میں تشریف فرما ہیں جبکہ حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤالینی آب بیضی بیٹی کے ما میں سامنے تشریف فرما ہیں۔ آپ بیضی بیٹی نے مجھے دیکھ کر فرمایا۔
ما منے تشریف فرما ہیں۔ آپ بیضی بیٹی نے مجھے دیکھ کر فرمایا۔

"اے علی (خرائین)! حسن (خرائین) اور حسین (خرائین) دونوں
میزان کے بلڑے ہیں جبکہ فاطمہ (خرائین) اس کا ترازو ہے اور
ترازودو بلڑوں پر ہی قائم رہنا ہے جبکہ تم روزِ حشر لوگوں کا اجر
تشیم کرو گے۔''

حضرت عبداللد ابن عباس فران فرماتے بیں کہ حضور نبی کریم مضری اللہ بیت جنت کے باغات میں ہول کے کہ اتنے میں ایک نور بلند ہوگا۔ گمان بہی ہوگا کہ سورج طلوع ہوا ہے۔ پھر اہل بیت ایک دوسرے سے کہیں گے التدعز وجل کا فرمان ہے کہ جنت میں سورج نہیں ہے تو پھر اللہ عز وجل انہیں فرمائے گا کہ یہ نور حضرت سیّد و فاطمہ الز برا فرائی بنا اور حضرت علی الرتضی فرائی کی مسکرا ہے کا نور ہے جس سے جنت کے باغات چمک المصر بیں۔

ایک دن حضرت جمرائیل علیانلم ایک طباق لے کرآئے جو جنت کے سیبوں سے لبریز تھا۔ انہوں نے وہ طباق حضور نبی کریم بینے پہلے کے سامنے رکھ کر عرض کیا یارسول اللہ بینے پہلے آپ بینے پہلے اس میں سے اُس شخص کوعنایت سیجے جو آپ مینے پہلے کہ کہ اللہ بینے پہلے آپ مینے پہلے آپ مینے پہلے کے ایک نورانی خوان پوٹی سے ڈھکا ہوا تھا حضور نبی کریم مینے پہلے نے اپنا دست انوراس میں داخل کر کے ایک سیب نکالا دیکھتے کیا ہیں کریم مینے پہلے نہالا دیکھتے کیا ہیں

المناسر الله المناطقة المناطقة

كەاس كى ايك جانب تولكھا ہوا تھا۔

ھٰذِۃٖ ھَدِیّۃ مِّنَ اللّٰہِ لِاَہِیِ بِکُرِ نِالصِّرِیْقِ لیعنی یہ خدا کا تخفہ ہے ابو بکر صدیق طِلْنَیْز کے لیے اور اس کی دوسری جانب یہ عبارت لکھی ہوئی تھی۔

مَنْ اَبْغُضَ الصِّرِيقِ فَهُو زِنْدِيق

لینی صدیق بناتین سے بغض رکھنے والا بے دین ہے۔ پھر حضور نبی کریم

هٰذِهٖ هَدِيَّةً مِنَ الْوَهَابِ لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ

لینی میه خدائے وہاب کا تحقہ ہے عمر بن خطاب دالنے کے لیے اور دوسری

جانب بدلكها تفايه

مَن أَبغُضَ عَمَر فَهُوفِي سُقَر

یعنی عمر بنانین کے وشمن کا ٹھکانا جہنم میں ہے۔ بعدزاں حضور نبی کریم

النا اورسيب اللهاياجس كايك جانب بدلكها تقال

هٰذِهٖ هَدِيّةٌ مِنَ اللّهِ الْحَنّانِ الْمَنّانِ لِعُثْمَانَ بْنِ

عَفَانَ

کینی میہ خدائے منان وحنان کا تحفہ ہے عثمان بن عفان مِنالِغَیْز کے لئے اور

اس کی دوسری طرف بیلکھا تھا۔

من أيغض عثمان فخصمه الرحمن

لینی عثان والنفی کاوشن رحمن کا وشن ہے۔ پھر حضور نی کریم مضافیانے نے

طباق میں سے ایک ادرسیب اٹھایا جس کے ایک جانب تو بہلکھاتھا۔

المناسر على المراكبي المنافز كرينيل المنافز كرينيل المنافز كرينيل المنافز كرينيل المنافز كرينيل المنافز كالمنافز كالمناف

ھٰذِہ ھَدِ یَّہ مِّنَ اللّٰہِ الْغَالِبِ لَعَلِیّ بْنِ اَبِی طَالِبِ لیمن یہ خدائے غالب کا تخفہ ہے علی ابن ابی طالب طِلْسَنَ کے لیے اور دوسری جانب بیلکھا تھا۔

مَنْ أَبْغُضَ عَلِيًّا لَّمْ يَكُنْ لِلَّهِ وَلِيّاً

لیعنی علی طلقنوز کا وشمن خدا کا دوست نہیں۔حضور نبی کریم میشے پیجیز نے ان عبارات کو ہڑھ کر اللّٰدعز وجل کی بے حد حمدوثناء بیان کی۔

حضرت جاہر بن عبداللہ والنہ اللہ عمروی ہے فرماتے ہیں ایک مرتبہ حضور نبی کریم مضاعظ نہنے فرمایا۔

> "تمام لوگ مختلف درختوں کی شاخیس ہیں جبکہ میں ادر علی (طِنْ اَنْ مُنْهُ؛) ایک ہی درخت کی شاخیس ہیں۔"

حضرت ابو بمرصدیق داننیز نے حضرت علی الرتضلی دلائیز کے فضائل و مناقب کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا۔

"ابوالحن (المُنْفَقُونَ) کی فضیلت سب لوگوں سے زیادہ ہے اور اس کی وجہ بیہ ہے کہ انہوں نے حضور نبی کریم میضا ایک کی وجہ بیہ ہے کہ انہوں نے حضور نبی کریم میضا ایک سب سے سایہ تربیت پائی اور حضور نبی کریم میضا اللہ اللہ الله الله کا نکاح بیاری بیٹی فاتون جنت حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا الله بیا کا نکاح الن سے کیا اور حضرت علی المرتضلی بیانی اور حضور نبی کریم میضا بیانی المرتضلی بیانی المرتضور نبی کریم میضا بیانی کے درمیان جوروابط تھے دہ معنوی نہ تھے۔"

روایات میں آتا ہے کہ حضور نبی کریم منظے کیڈانے ایک مرتبہ فرمایا۔ ''اللّٰدعز وجل ابو بکر دلائنو پر رحمت فرمائے جنہوں نے اپنی بیٹی

المسترع الدر تفي الماتين كرفيعل المستوع الماتين كرفيعل

کومیرار فیق بنایا اور مجھے دار ہجرت سے مدیند منورہ لائے اور بلال منافیٰ کوخرید کر آزاد فر مایا۔ اللہ عز وجل عمر منافیٰ پر رحمت فر مائے جنہوں نے ہمیشہ حق بات کہی ادر حق کا ساتھ دیا۔ اللہ عز وجل عثمان منافیٰ پر رحمت فر مائے جن کی حیاء سے فر شنے بھی حیاء کرتے ہیں۔ اللہ عز وجل علی منافیٰ پر رحمت فر مائے جو بھی حیاء کرتے ہیں۔ اللہ عز وجل علی منافیٰ پر رحمت فر مائے جو بھی حیاء کرتے ہیں۔ اللہ عز وجل علی منافیٰ پر رحمت فر مائے جو بھی حیاء کرتے ہیں۔ اللہ عز وجل علی منافیٰ پر رحمت فر مائے جو بھی حیاء کرتے ہیں۔ اللہ عز وجل علی منافیٰ بر رحمت فر مائے جو بھی حیاء کرتے ہیں۔ اللہ عز وجل علی منافیٰ بر رحمت فر مائے جو

يرحضورني كريم من والمان فرمايا

"روز حشر میں بول آؤل گا کہ ابو بحر دنائن میرے دائیں جانب عبرے دائیں جانب عبر میں اور کی جانب میرے دائیں جانب میرے بائیں میرے بائیں جانب جبکہ عثان دلی نظر میرے بیجھے اور علی دنائن میرے آئے ہول گے۔"

> "میراعلم علی (دلائنز) کے ہاتھ میں ہوگا اور تمام خلائق میرے اس علم کے سائے تلے ہوں سے۔"

> > O___O



خلافت کی تائیراحادیث سے

حضرت علی المرتضی رئی نیز بلاشبہ منصب خلافت کے حقدار سے اور آپ رہائی ان چھ لوگوں میں بھی شامل سے جنہیں حضرت عمر فاروق بڑائی نے بوقت شہادت منصب خلافت کے لئے نامزد کیا تھا اور پھرا تھاقی رائے سے حضرت عثان غنی والی کی خلافت کے بعد انصار و مہاجرین نے خلیفہ سلیم کر لیا گیا۔ آپ رڈائی کو شہادت عثان رڈائی نے بعد انصار و مہاجرین نے خلیفہ مقرر کیا۔ آپ رڈائی کی خلافت کے متعلق احادیث نبوی میں کے مہاجرین نے خلیفہ مقرر کیا۔ آپ رڈائی کی خلافت کے متعلق احادیث نبوی میں کے جمعی وارد ہوئی ہیں ذیل میں ان احادیث میں سے چنداحادیث بطور مونہ بیان کی جارتی ہیں۔

حضرت سمرہ بن جندب ران فرا ہے مردی ہے فرماتے ہیں کہ ایک فحف حضور نبی کریم بیض فریم ہے ہیں جانکہ ہیں حضور نبی کریم بیض فریم ہے ہیں خدمت ہیں حاضر جوا اور عرض کیا یار سول اللہ بین بین اللہ اللہ فرات ہیں خواب دیکھا کہ ایک و ول آسان سے لئکا یا گیا اور حضرت ابو بکر صدیق واللہ نوان نوان نوان و اس و ول کو کناروں سے پکڑ کر بمشکل بیا اور پھر حضرت عمر فاروق والی نواز و اس و ول کو کناروں سے پکڑ کر بیا اور پھر حضرت عثمان غنی و ول کو کناروں سے پکڑ کر بیا پھر جب حضرت علی الرتضی والی و الی و کناروں سے بکڑ کر بیا اور ابھی وہ پی برای آئی تو انہوں نے بھی اس و ول کو کناروں سے بکڑ کر بیا اور ابھی وہ پی در سے شعرت علی الرتضی والی کی باری آئی تو انہوں نے بھی اس و ول کو کناروں سے بکڑ کر بیا اور ابھی وہ پی در سے شعرکہ وہ والی کی باری آئی تو انہوں نے بھی اس و ول کو کناروں سے بکڑ کر بیا اور ابھی وہ پی در سے شعرکہ وہ والی الی تو انہوں نے بھی اس و ول کو کناروں سے بکڑ کر بیا اور ابھی وہ پی در سے شعرکہ وہ و ول بی باری آئی تو انہوں نے بھی ای جضرت علی المرتضی والیون برگر کیا۔



حضرت ابوذر غفاری جائفی ہے مروی ہے فرماتے ہیں میں غزوہ حنین کے موقع پر جب حق و باطل ہیں گھسان کی لڑائی جاری تھی اس وقت حضور نبی کریم سے بھی کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا یارسول اللہ منے بھی ہمیں بتائے کہ ہم آپ منے بیٹی کے بعد کے خلیفہ منتخب کریں؟ حضور نبی کریم منظ بیٹی ہوں گ ''میرے بعد ابو بکر صدیق جائی جائی میں مقام ہوں گ ان میرے بعد ابو بکر صدیق جائی جائی میں میں گے اور ان کے بعد عثمان وائنٹ ہوں گے اور ان کے بعد عثمان میں میرے مصاحب ہوں گے۔''

O....O....O

المناسرة على المالية ا

سیرت مبارکہ کے درختال بہلو

حفرت علی الرتفنی و النیزو نے حضور نی کریم مطفی خیر کے ذریر سابہ تربیت پائی۔ آپ والنیزو کا بچپن اور جوانی حضور نی کریم مطفیکا کے سائے گزرے۔ آپ بائی۔ آپ والنیزو کا بچپن اور جوانی حضور نی کریم مطفیکا کے سائے گزرے۔ آپ والنیزو مصور نی کریم مطفیکا کی سیرت کا آئینہ تھے یہی وجہ ہے کہ نضور نی کریم مطفیکا کی سیرت کا آئینہ تھے یہی وجہ ہے کہ نضور نی کریم مطفیکا کی سیرت کا آئینہ تھے یہی وجہ ہے کہ نضور نی کریم مطفیکا کی سیرت کا آئینہ تھے یہی وجہ ہے کہ نضور نی کریم مطفیکا کے فرایا۔

"علی (طالفنه) کے چبرے کود کھنا بھی عبادت ہے۔"

حضرت علی المرتضی والفیئ قرآن مجید کے حافظ سے اور قرآن مجید کے مافظ سے اور قرآن مجید کے معانی ومطالب برآپ والفیئ کوعبور حاصل تھا۔ آپ والفیئ علم فقہ کے ماہر ہے اور مشکل مشکل سے مشکل فیصلے بھی قرآن وسنت کی روشی میں صل کر لیتے ہے۔ آپ والفیئا کے بارے میں حضور نبی کریم مطابقاتم کا قرمان ہے۔

"میں علم کا شہر موں اور علی (دان نے اس کا درواز ہے۔"

حضرت على المرتضى ولافتظ من پانچ سوچمياى احاديث بعى مروى بين-

سارى زندگى رزق طلال كمايا:

حضرت علی الرتضی والفی می ساری زندگی رزق حلال کما کر کھایا۔ آپ والفیز محنت مزدوری میں مجھ عارمحنوس نہ کرتے ہے۔ ایک مرتبہ کھر میں کھانے کو بھی نہ کھانے کہ ایک مرتبہ کھر میں کھانے کو بچھ نہ تھا۔ آپ والفیز کھ بینہ منورہ کے اطراف میں تشریف لے مجے۔ ایک

المنترع المرتفى الماتين الماتين المنافع المناف

بوڑھی عورت نے آپ رٹائٹؤ کو کھیت میں بانی لگانے کے عوض چند کھجوری بطورِ مردوری دینے کے ایک کہا جسے آپ رٹائٹؤ نے قبول کر لیا۔ آپ رٹائٹؤ شہنشا و فقر سے۔ آپ رٹائٹؤ بظاہر خالی لیکن باطنی طور پر زہد وتقوی، قناعت وصبر کے خزانوں سے بھر بور تھے۔

میں اس چیز کو گوارانہیں کرتا:

حضرت اعمش والتفيظ سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت علی المرتضی والتفیظ والتفیظ والتفیظ والتفیظ والتفیظ والتفیظ والتفیظ والتفیظ والتفیظ و آپ والتفیظ ون میں صرف دو مرتبہ کھانا کھاتے ہے اور اس چیز سے کھانا کھاتے جو مدیند منورہ سے آتی تھی۔

حضرت عبدالله بن شریک میند ایند وارت کرتے ہیں حضرت علی المنظمی الله المرتفظی دارا سے دوایت کرتے ہیں حضرت علی المرتفظی دارا کے باس ایک مرتبہ فالودہ لایا گیا۔ آپ دارا نے فالودہ کو د کھے کر فرمایا۔

" تقریبت اچھا، خوشبودار اور بہترین ذاکفتہ والا ہے لیکن میں اس چیز کو گوارانہیں کرتا کہ میرانفس اس کا عادی بن جائے۔' خلیفہ کے لئے کیا حلال ہے؟:
خلیفہ کے لئے کیا حلال ہے؟:

حفرت عبداللہ بن زرین ذائین فرماتے ہیں جس حفرت علی الرتفنی ذائین فرماتے ہیں جس حفرت علی الرتفنی ذائین فرماتے ہیں جس حدمت جس برو نے عبد حاضر ہوا۔ آپ دائین نے ہمارے سامنے میم پیش کی۔ ہم نے عرض کیا اللہ عز دجل نے آپ دائین کو صلاحیت کے ساتھ باتی رکھا ہے اگر آپ دائین ہم کو بلخ کھلاتے تو بہت اچھا تھا۔ آپ دائین نے فرمایا۔ آپ دائین نرین (دائین)! جس نے حضور نبی کریم مضابقت ہے ساتھ کہ خلیفہ کے لئے اللہ کے مال سے بجر دو بیالوں کے سنا ہے کہ خلیفہ کے لئے اللہ کے مال سے بجر دو بیالوں کے

المناسبة على المنافئة كل يعلى المنافئة كل يعلى المنافئة كل يعلى المنافئة كل يعلى المنافئة كل المنافئة

حلال نہیں۔ ایک پیالہ جو وہ خود کھائے اور اپنے اہل کو کھلائے جبکہ دوسرا پیالہ وہ جسے لوگوں کے سامنے رکھے۔''

اگر جار درجم موتے تو میں ازار بندخر بدلیتا:

حضرت بمحمع بن سمعان تميمي والنفيظ سے مروى ہے فرماتے ہیں كد حضرت على الرفضي والنفیظ سے مروى ہے فرماتے ہیں كد حضرت على الرفضي والنفیظ الى المرفضی والنفیظ الى المرفضی والنفیظ الى المرفضی والنفیظ الله والنفیظ والنفیظ والنفیظ والنفیظ والنفیظ والنفیظ و النفیظ و ال

''کون ہے جو مجھ سے اسے خرید کے کیونکہ اگر میرے پاس چار درہم ہوتے تو میں ازار بندخرید لیتا۔''

ايك درجم كانفع:

امام بیمی روایت میں ہے ایک فخص نے حضرت علی الرتضی المرتضی واللہ فخص نے حضرت علی المرتضی واللہ فلین کواس حالت میں و یکھا آپ واللہ فران کے پاس ایک موٹی چا درتھی اور آپ واللہ فلین کواس حالت میں و یکھا آپ واللہ فران ہے جواس جا در کو مجھے سے پانچ درہم میں خریدے اور مجھے ایک درہم کا نفع دے تا کہ میں اس کے ہاتھ اسے بیوں۔

میں صرف دو کیڑے پہنتا ہوں:

حضرت زید بن وجب ولائفی فرماتے بیں ہمارے پاس حضرت علی الرتضی وجب ولائفی فرماتے بیں ہمارے پاس حضرت علی الرتضی ولائفی تشریف لائے۔ آپ ولائفی کے جسم پر ایک جا درتھی جبکہ ایک جا در کا آپ ولائفی نے تہدند باندھ رکھا تھا۔ آپ ولائفی سے اس بارے میں دریافت کیا گیا تو آپ ولائفی نے تہدند باندھ رکھا تھا۔ آپ ولائفی سے اس بارے میں دریافت کیا گیا تو آپ ولائفی نے فرمایا۔

"میں مسرف دو کیڑے پہنتا ہوں تا کہ متکبر نہ بنوں اور بیددو کیڑے میری نماز کے لئے بہتر ہیں۔"

المناسر على المناس

معمولی غذا:

ثقیف کے ایک آومی سے مروی ہے فرماتے ہیں ان کوحضرت علی الرتضلی طالنیز نے ایک ویہات کا عامل بنایا چونکہ دیہات میں نمازی تھرانہیں کرتے تھے اس کئے آپ طالنیز نے مجھے تھم دیا کہ جب ظہر کا وقت ہوتو میرے یاس جلے آٹا چنانچہ میں آپ سالنی کے یاس گیا تو آپ مالنی کے یاس کوئی در بان موجود ندتھا جو مجھے آپ بنائنی تک جانے سے روکتا۔ میں آپ بنائنی کی خدمت میں حاضر ہوا۔ آب طالفن سك ياس اس وفت ايك پالداور ايك كوزه ياني كا تعارآب طالفن ف ایک چھوٹی تھیلی منگوائی۔ میں جھما کہ شاید جواہرات کی تھیلی ہے اور آپ داللہ اللہ نے مجصے امین سمجھا ہے اور یہ تھیلی میرے لئے متکوائی ہے۔ آپ دالفن نے اس تھیلی کو كولاتواس ميستو يقي-آب طالفيز نے ان ستوول كونكالا اور بيالے مي الثا اور اس میں یانی ڈال کر مجھے بلایا اور خود بھی بیا۔ میں نے عرض کیا کہ آپ والنظو ایسا كيول كرتے بيں جبكہ عراق كا كھانا بہترين ہے؟ آپ النيو نے فرمايا۔ ''میں ہراں کھانے کو جومیرے پیٹ میں جانے کروہ سجمتا ہوں سوائے رزق طلال کے اور میں ای تھیلی برمبر لگاتا ہوں تا كه بيد دوسرى تفيليول من شال جائد اور من دوسرى تفيلى استعال کرلوں ہے''

حضرت علی المرتضی و فائن کی خوراک نہایت سادہ تھی آپ وائن روئی کے خشک کلڑے بانی میں بھلو کر زم کر کے کھایا کرتے تھے۔ اکثر و بیشتر نمک کے ساتھ دوئی کھاتے تھے۔ اکثر و بیشتر نمک کے ساتھ روئی کھاتے تھے۔ ایک مرتبہ آپ وائن کی صاحبز اوی نے آپ وائن کے سامنے بوگی کی مساجبز اوی نے آپ وائن کے سامنے جو کی روٹیاں، دودھ کا بیالہ اور نمک لا کر رکھا۔ آپ وائن نے دودھ کا بیالہ واپس

الناست على المناع الماني المان

کرتے ہوئے فرمایا میرے لئے یہ جو کی روٹیاں اور نمک ہی کافی ہے۔ کئی مرتبہ ایبا ہوتا کہ آپ بٹائٹیڈ محض چند تھجوریں کھا کرگز ارا کر لیتے تھے۔ وہ بیرکھانا نہیں کھاتے:

حفرت علی الرتفنی و النین کا لباس بھی نہایت معمولی ہوتا تھا۔ آپ والنین کے پاس اور صنے کے لئے صرف ایک جا ورتھی جس سے سر چھپاتے تھے تو پاؤں کھل جاتے تھے اور اگر پاؤں و معا نکتے تھے تو سر زکا ہو جاتا تھا۔ مدینہ منورہ کے ایک معمولی مکان میں رہائش پذیر تھے۔ عالی شان محلوں سے آپ والنین کوشد ید نفرت تھی کی وجہ ہے کہ جب آپ والنین کو قد تشریف لے گئے تو دارالا مارت میں قیام کرنے کی بجائے ایک میدان میں خیمہ لگا کراس میں قیام پذیر ہوئے۔ آپ قیام کرنے کی بجائے ایک میدان میں خیمہ لگا کراس میں قیام پذیر ہوئے۔ آپ

المناسبة على المنافعة كي فيعل المنافعة كي فيعل المنافعة كي فيعل المنافعة كي فيعل المنافعة الم

طِلْنَهُ لَهُ مِنْ مِنْ اللَّهِ اللَّالِكُلْفُ فَرَثِ خَاكَ بِرِلِيثِ جَاتِے <u>تھے۔</u>

جماعت اہل حق کے اجتماع کا نام ہے:

روایات میں آتا ہے ایک مرتبہ ابن الکوائر نے حضرت علی المرتفیٰی والنظم وا

"سنت حضور نی کریم مطفظ کا طریقہ ہے۔ بدعت اس شے کا نام ہے جوسنت کو ترک کرنے والی ہے۔ جماعت اہل حق کے اجتماع کا نام ہے اور اختلاف اہل باطل کے اجتماع کا نام ہے خواہ ان کی تعداد کتنی ہی ہو۔"

مال كى تقتيم ميں مساوات كولموظ ركھنا:

حفرت عبداللہ ہائی بھائی اپنے والد سے روایت بیان کرتے ہیں کہ حضرت علی الرتفنی داللہ کا بیاں دوعور تیں آئیں اور وہ دونوں عرب کی رہنے والی تقییں ۔ آپ رہائی ایک عورت دوسری عورت کی آزاد کردہ غلام تھی۔ آپ رہائی نے ایک ایک بوری غلہ اور چالیس چالیس درہم ان دونوں عورتوں کو دیئے ۔ غلام عورت ایک ایک ایک بوری غلہ اور چالیس چالیس درہم ان دونوں عورتوں کو دیئے ۔ غلام عورت وہ مال لے کر چلی گئی جبکہ دوسری عورت نے آپ رہائی نے شکوہ کرتے ہوئے کہا میں عرب کی رہنے والی ہوں جبکہ دہ میری آزاد کردہ غلام ہے۔ آپ رہائی نے فرمایا۔ میں عرب کی رہنے والی ہوں جبکہ دہ میری آزاد کردہ غلام ہے۔ آپ رہائی نے فرمایا۔ میں سے اولا یو اسلامی کو کی بات نہیں دیکھی جس سے اولا یو اسلامی کو کی بات نہیں دیکھی جس سے اولا یو اسلامی عیارتی عیارتی میں یکھی اس میں ہوئی ہو۔''



اس بات كاانبيس اختيار نبيس:

حضرت اصبغ بن نباتہ رہ النہ ہے روایت ہے فرماتے ہیں میں حضرت علی الرتضلی والنہ کے ہمراہ بازار گیا۔ ہم نے بازار والوں کو دیکھا تو وہ اپنی دکا نوں سے تباوز کئے ہوئے تھے۔ آپ وٹائٹ کی خدمت میں چندلوگوں نے عرض کیا بازار والے اپنی جگہوں سے آگے بڑھ گئے ہیں۔ آپ وٹائٹ نے فرمایا۔
اپنی جگہوں سے آگے بڑھ گئے ہیں۔ آپ وٹائٹ نے فرمایا۔
"اس بات کا انہیں اختیار نہیں، مسلمانوں کا بازار نمازیوں کی مسجد کی طرح ہے جو آدمی جس جگہ پہلے پہنچ گیا وہ اس کے مسجد کی طرح ہے جو آدمی جس جگہ پہلے پہنچ گیا وہ اس کے لئے ہے جب تک کداس جگہ کوچھوڑ سے نہیں۔"

روفی کے سات مکڑے:

حضرت کلیب و النون فرماتے ہیں اصبهان سے حضرت علی المرتضی و النون کے پاس مال آیا۔ آپ و النون نے اس مال کوسات حصول میں تقسیم کیا۔ اس مال میں انک روثی ہمی تھی۔ آپ و النون نے اس روٹی سے بھی سات کو سے کئے اور ہر حصہ میں اس کو کرے کو بھی شامل کرلیا۔ پھر آپ و النون نے حصہ پانے والے ساتوں اشخاص کو بلایا اور ان سے درمیان قرعدا ندازی کی کہ سے پہلے حصہ دیا جائے۔

ونیا ہے بے رغبتی:

حضرت علی المرتضی و المنظم المرتضی و النظم المرتفی المرتبی الم

"اے دنیا! کیا تو میرے سامنے بن سنور کر آتی ہے اور مجھ پر

المناسر على المناخ المن

ڈورے ڈالتی ہے؟ میں تجھے ہمیشہ کے لئے خود سے جدا کر چکا
ہوں اور تیری محفل حقیر ہے اور تیری ہلا کت آسان ہے۔''
حضرت علی المرتضٰی رہائیڈ کا دنیا سے بے رغبتی کا یہ عالم تھا کہ فاتون جنت
حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا رہائیڈ بطور جہیز جوسامان لائی تھیں اس میں ان کے وصال
تک کی بھی قشم کا اضافہ نہ ہو سکا۔

بھلائی کو پیش نظر رکھو:

حضرت مہاجر عامری ٹائٹنڈ ہے مردی ہے فرماتے ہیں حضرت علی الرتضلی ٹائٹنڈ نے اپنے مقرر کردہ گورنروں کو ہدایت کرتے ہوئے فرمایا۔

"این رعایا پراپ پرده کولمیا نہ کرنا اور حالات سے باخبر رہنا۔
لوگوں کی اکثر ضرور یات کا تعلق تم سے ہے اور اگر کوئی تم سے
انصاف طلب کرے تو اس سے انصاف کرنے میں کوئی مشقت
نہیں میں تہ ہیں جو نصیحتیں کرتا ہوں ان پر عمل پیرا رہو اور
بھلائی کو پیش نظر رکھوتا کہ لوگ تم سے ناامید نہ ہوجا کیں۔"

كھانا كھلانا:

حضرت علی البرتفای و النفاز فرماتے تھے مجھے یہ بات زیادہ پند ہے کہ میں اپنے ساتھیوں میں سے پھھ لوگوں کو ایک صاع کھانے کے لئے جمع کروں اس سے کہ میں اور ایک غلام فرید کر آزاد کروں۔

سال میں تین مرتبہ مال تقسیم کرتے تھے:

حضرت على المرتضى والفنز اين دور خلافت ميں ايك سال ميں تين مرتبه

المناسبة على المنافعة كالمعلى المنافعة كالمعلى المنافعة كالمعلى المنافعة كالمنافعة كالمنافعة المنافعة المنافعة المنافعة المنافعة كالمنافعة المنافعة كالمنافعة المنافعة كالمنافعة كالمنافعة

مال تقسیم کرتے تھے۔ آپ مٹائٹی کے پاس ایک مرتبہ اصبہان سے بچھ مال آیا۔ آپ مٹائٹی نے کو جاؤ چنانچہ لوگ مٹائٹی نے سے جمع ہو جاؤ چنانچہ لوگ مٹائٹی نے سے جمع ہو جاؤ چنانچہ لوگ اکٹھے ہو گئے اور آپ مٹائٹی نے وہ تمام مال تقسیم فرما دیا حتی کہ رس کو بھی آپ مٹائٹی نے تقسیم فرما دیا حتی کہ رس کو بھی آپ مٹائٹی نے تقسیم فرما دیا۔

حضرت عنترہ شیبانی والیت بیان کرتے ہیں کہ حضرت علی المرتضی والیت بیان کرتے ہیں کہ حضرت علی المرتضی والی والین بی بیشہ در کے بیشہ سے تیار شدہ چیز کو لے لیا کرتے تھے اور پھر اس کولوگوں میں تقسیم فرما دیتے تھے۔ آپ والین بیت المال میں ایک رات کے لئے بھی مال نہ چھوڑتے تھے اور سارا مال تقسیم فرما دیتے تھے اور کہا کرتے تھے۔ اس کے لئے بھی مال نہ چھوڑتے تھے اور سارا مال تقسیم فرما دیتے تھے اور کہا کرتے تھے۔ "اے دنیا! تو مجھے دھو کہ نہ دے بلکہ میرے غیر کو دھو کہ دے۔"

مجھے تیری مال مم کرے:

حضرت عشر و رائنی سے مروی ہے فرماتے ہیں میں حضرت علی الرتضی المرتفیٰ یک خدمت میں حاضر ہوا۔ آپ رائنی نے پاس قئم نے آکر کہا امیر الموشین!

آپ رائنی اکہ ایسے آدی ہیں کہ بھی باتی نہیں چھوڑتے۔ آپ رائنی کے گھر والوں کا بھی اس مال میں حصہ ہے اور میں نے آپ رائنی کے لئے بھی چھپار کھا ہے۔ آپ رائنی نے نے پوچھا دہ کیا ہے؟ قسم نے آپ رائنی اور دکھے لیجے کہ وہ کیا ہے؟ پھر آپ رائنی کو ایک کو فوری میں لے گیا جہاں ایک بردی گئن سونے اور جا ندی کے برتوں سے بھری ہوئی تھی ۔ آپ رائنی نے اسے دیکھا تو قسم سے فرمایا۔ کے برتوں سے بھری ہوئی تھی ۔ آپ رائنی نے اسے دیکھا تو قسم سے فرمایا۔ آگ داخل ہوں کی اس کم کرے تو نے ارادہ کیا تھا کہ میرے گھر میں آگے داخل ہو۔ '

پھر حصرت علی المرتضلی والفیظ سنے ان کا وزن کروایا اور اس کوتفتیم فر ما ویا۔

المنتسر على المسترفي بالمنظر كي فيصل المنتسر على المنتسر المنتسل المنت

عمر كوضائع كرنے والاتوبد كى تمنا كرے گا:

حضرت مدائن رشائن فرماتے ہیں حضرت علی الرتضلی والنیز نے فرمایا۔
''ساری باتوں کو چھوڑ کرتم انتہاء کو پہنچ چکے ہوتمہارے اعمال
تمہارے سامنے الی جگہ بیش کئے جائیں گے جہاں دنیا کے دھوکہ میں پڑا ہوا ہائے حسرت پکارے گا اور عمر کو ضائع کرنے والا تو بہ کی تمنا اور کافر واپسی کی تمنا کرے گا۔''

مجھے تمہارے مال غنیمت سے ایک شیشی کے سوا پھھ بیس ملا:

حضرت معاذبین علاء برخانیہ اپنے دادا سے روایت بیان کرتے ہیں کہ حضرت می المرتضی بنائیز نے ایک مرتبہ فرمایا مجھے تمہارے اس مال غنیمت سے ایک شیشی کے سوا کی بین ملا جو مجھے ایک د بھان نے بدید دی تھی۔ پھر آپ بنائیز بیت المال تشریف کے اور اس میں جو پچھ تھا اسے تقسیم فرما دیا۔ پھر آپ بنائیز نے المال تشریف کے اور اس میں جو پچھ تھا اسے تقسیم فرما دیا۔ پھر آپ بنائیز نے بیہ کہنا شروع کر دیا۔

''وہ آدمی فلاح پاگیا جس کے پاس ایک ٹوکری ہوجس میں سے دہ ہردن میں ایک مرتبہ کھائے۔''

بر^دائی اور قضیلت:

حضرت ام موی رفتین سے مروی ہے فرماتی ہیں حضرت علی الرتضی والنیئ والنیئ کو اطلاع ملی کہ عبداللہ بن سبا ان کو حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق وی النیئ کو فقیت دیتا ہے تو آپ والنیئ نے اسے تل کرنے کا ارادہ کیا۔ لوگوں نے عرض کیا آپ والنیئ ایسے خص کو تا ہے تیں جو آپ والنیئ کی بروائی اور فضیلت بیان آپ والنیئ ایسے خص کو تا کہ والے کہ اور فضیلت بیان

المناسرة على المنافية كرفيعلى المنافية كرفيعلى المنافية ا

کرتا ہے؟ آپ ڈلٹٹئے نے فرمایا۔ ''بیضروری ہے کہ دہ شخص میرے ساتھ اس شہر میں نہ رہے

جہاں میں رہوں۔''

عمر فاروق طالفين كے بعد ہم فتنوں میں مبتلا ہو گئے:

حضرت علقمہ والفنو سے مروی ہے فرماتے ہیں حضرت علی الرئضی والفنو المراضی والفونو کے ہم لوگوں کو خطبہ دیا اور فرمایا۔

" بجھے اطلاع ملی ہے کہ پچھ لوگ جھے حضرت ابو برصدیت اور حضرت عمر فاروق جی گئے ہو قیت دیتے ہیں۔ اب اگر آج کے بعد کی فضل نے ایسی بات کہی تو اس پر صدقائم کی جائے گی۔ بعد سب سے بہترین شخص بے شک حضور نبی کریم سطانی آئے ہے بعد سب سے بہترین شخص حضرت ابو بکر صدیت والنی المنظم اور حضرت ابو بکر صدیت والنی المنظم اور حضرت ابو بکر صدیت والنی المنظم فاروق والنی المنظم فاروق والنی المنظم فاروق والنی بہترین بعد ہم فتوں میں مبتلا ہو گئے اور بے شک اللہ عزوجل بہترین فیصلہ کرنے والا ہے۔ "

عبادت میں خشوع وخضوع:

حضرت علی المرتضی را النفی المرتفی شب بیدار اور عبادت گزار ہے۔ آپ براتی کو عبادت بین اس قدر خشوع وضوع حاصل تھا کہ آپ رٹائی نماز کے کھڑے ہوتے تو اپنے اردگرد کی کچھے خبر ندر ہتی بہاں تک کہ جسم پر ہونے والی کسی واردات کی خبر نہ ہوتی تھی۔ ایک مرتبہ آپ رٹائی نو تیراگ گیا جو جسم میں اتن گہرائی تک چا گیا کہ اس کا نکالنا مشکل ہو گیا۔ آپ رٹائی نو نے فرمایا جب میں نماز کے لئے کھڑا ہوں تو

المناسبة على المنافئة كرفيعلى المنافئة كرفيعلى المنافئة كرفيعلى المنافئة كرفيعلى المنافئة كالمنافئة كالمنا

تم اس تیرکو نکال لینا چنانچہ آپ ڈائٹنڈ نماز کے لئے کھڑے ہوئے اور اس تیرکو نکال دیا گیا یہاں تک کہ آپ ڈائٹنڈ نے اف تک نہ کی۔

روایات میں آتا ہے کہ ایک مرتبہ حضرت علی المرتضی والینی نماز کے لئے کھڑے تھے کہ آپ والینی کھر کو آگ لگ گئی۔ آگ اس قدر پھیل گئی کہ بی خطرہ لاحق ہو گیا کہ بین آپ والینی کہ بی خطرہ لاحق ہو گیا کہ کہیں آپ والینی میں الوگ آپ والینی کو برابر آوازیں دیتے رہے لیکن آپ والینی ایپ والینی الین الدی اور کرو کے ماحول سے بے خبر نمازی اوائیگی میں مصروف رہے۔ جب آپ والینی نے نمازختم کی تو آپ والینی کومعلوم ہے کہ گھر کو آگ لگ گئی ہے۔

حضرت علی الرفضی و الفظائے ذوق عبادت کا اندازہ اس سے لگایا جاسکا بہا کہ جب نماز کا وفت ہوتا تو آپ والفظائے چبرے کا رنگ متغیر ہو جاتا اور بدن پرلرزہ طاری ہوجاتا تھا۔ ایک مرتبہ کس نے بوچھا کہ آپ والفظ کی یہ کیفیت کیسی ہے؟ آپ والفظ نے نے فرمایا۔

'نیاانت کے اداکرنے کا دفت ہے اور بیروہ امانت ہے جے زین و آسان بھی اٹھانے سے قاصر تھے اور میں بھی اس وجہ سے کانپ اٹھتا ہوں کہیں میں اس امانت کاحق سے طریقے سے ندادا کریاؤں۔''

حضرت علی المرتضی مزائنی پابند صوم وصلوۃ تھے۔ آپ بڑائنی رمضان المبارک کے فرض روز وں کے علادہ بھی اکثر و بیشتر روز ہے رکھا کرتے تھے۔ ام المومنین حضرت سیدہ عائشہ صدیقتہ ذائنی فرماتی ہیں حضرت علی المرتضی والنی بورے روزہ دار اور عبادت گزار تھے اور گھوڑے کی پشت پر سوار ہوتے یہاں تک کہ قرآن مجید فتم

المناسة على المنافي المائية كل المعلى المنافية كل المعلى المنافية كل المعلى المنافية كل المنافية كالمنافية كالمنافية

كرليتے تھے۔

حكمت و دانا كي:

حضرت عبدالله بن عباس خلافینا کا قول ہے حضرت علی المرتضی خلافین کی عباس خلافینا کا قول ہے حضرت علی المرتضی خلافین کی عباس خلافینا کا ایک عالم قائل تھا اور الله عزوجل نے علم کے دس حصول میں سے نو جھے آب خلافین کو عطا فرمائے تھے۔

حضرت علی الرتضیٰی والنفوز کا قول ہے کہ قرآن مجید کی کوئی آیت الی نہیں ہے جس کے بارے میں مجھے معلوم نہ ہو کہ وہ کب اور کہاں نازل ہوئی اور اس آیت کے معانی ومطالب کیا ہیں؟

ام المومنين حعررت سيده عائشه صديقه في الشيئات بوجها كياكه وضوك بعد كتف ونول تك موزول برسم كيا جا سكنا هي؟ آب في في أن فراياتم بيد مسئله على كتف ونول تك موزول برسم كيا جا سكنا هي؟ آب في في أن فراياتم بيد مسئله على (المالفة) سے بوجهو؟ جب حضرت على الرتضى والفيئ سے بوجها كيا تو آب والفيئون فرايا۔
فرايا۔

''مسافر پرتین دن اور تین رات اور مقیم پر ایک دن اور ایک زات موزول پرمسح کرنا جائز ہے۔''

الچھی اور خراب زمین:

روایات میں آتا ہے ایک مرتبہ ایک یہودی حضرت علی المرتضی بڑائیڈیا کی خدمت میں حاضر ہوا اس کی داڑھی مختفر تھی۔اس نے آپ بڑائیڈیا ہے کہا آپ بڑائیڈیا کی داڑھی مختفر تھی۔اس نے آپ بڑائیڈیا ہے کہا آپ بڑائیڈیا کا دعویٰ ہے کہ قرآن مجید جامع العلوم ہے اگر قرآن مجید جامع العلوم ہے اگر قرآن مجید جامع العلوم ہے تو کیا قرآن مجید میں آپ بڑائیڈیا کی تھنی داڑھی اور میری مختفر داڑھی کا علم موجود ہے؟ آپ بڑائیڈیا نے قرآن مجید کی آیت ذیل کی تلاوت

المنتسر على المنتاح ال

"جواجھی زمین ہے اس کا سبزہ اللہ کے علم سے خوب نکایا ہے۔ اور جوخراب زمین ہے اس میں سے تھوڑ امشکل سے نکایا ہے۔" پھر آب رشائنۂ نے فرمایا۔

"اے یہودی! وہ اچھی زمین میری تھوڑی ہے جبکہ خراب زمین تیری تفور ی ہے۔"

مهمان نوازی:

حضرت علی الرتضی و النفی میں مہمان نوازی کے اوصاف بدرجہ اتم موجود سے ۔ آپ والنفیز ایک مرتبہ بیٹے رور ہے تنے کہ پاس سے گزر نے والے ایک شخص نے آپ والنفیز سے رونے کی وجہ دریافت فرمائی۔ آپ والنفیز نے فرمایا۔
نے آپ والنفیز سے رونے کی وجہ دریافت فرمائی۔ آپ والنفیز نے فرمایا۔
''سات روز سے میر ہے گھر ٹیس کوئی مہمان فیس آیااور میں اس لئے روز ہا ہوں کہ ہیں اللہ نے جھے ذیل تو نہیں کر دیا۔'

مسلمان كى عزت وتو قيركرنا:

حضرت البرجعفر والتنوز فرماتے میں کہ حضرت علی الحرت فی والتنوز کے پاس دو

آدی آئے۔آپ والتنوز نے ان دونوں کے لئے گدا بچھایا۔ ایک فخص گدے پر بیٹے

گیا جبکہ دوسرا شخص زمین پر بیٹے گیا۔ آپ والتنوز نے زمین پر بیٹے ہوئے فخص سے

کہاتم بھی گدے پر بیٹھو۔ پھرآپ والتنوز نے ان کی خاطر تو اضع کی۔

ستر ہزار فرشتے:

حضرت عبدالله بن نافع وللفؤة فرمات بي حضرت ايوموى اشعرى والفؤة

الانسترع الله يقل المانية كرفيها

حضرت سیّدنا امام حسن مِنْ النَّفِيْ كى عيادت كے لئے آئے تو حضرت على المرتضى مِنْ النَّهُ مُنْ مِنْ اللَّهُ عَل نے فرمایا۔

"جب كوئى كسى مسلمان بھائى كى عيادت كے لئے آتا ہے تو اس كے ساتھ ستر ہزار فرشتے بھى عيادت كے لئے آتے ہيں اور عيادت كرنے والے كے لئے كثرت سے استغفار كرتے رہے دہتے ہيں اور اگر شخے عيادت كى تو يہ فرشتے شام تك استغفار كرتے ہيں اور اگر شام كے وقت عيادت كى تو يہ فرشتے شام تك استغفار كرتے ہيں اور اگر شام كے وقت عيادت كى تو يہ فرشتے ميں اور اگر شام كے وقت عيادت كى تو يہ فرشتے كے استغفار ميں مشغول رہتے ہيں اور عيادت كى كے استغفار ميں مشغول رہتے ہيں اور عيادت كے لئے جنت ميں باغ ہوگا۔"

تواضع:

حضرت صالح مُراث ہے دادی ہے مردی ہے فرماتی ہیں میں نے حضرت علی الرفضی طالغین کو دیکھا کہ انہوں نے ایک درہم کی تھجوری خریدیں اور اسے اپنی علی الرفضی طالغین کو دیکھا کہ انہوں نے ایک درہم کی تھجورین خریدیں اور اسے اپنی علی الرفضین! لایئے میں اسے اٹھا کر علی اللہ جاتا ہوں۔ آپ طالغین نے فرمایا۔

« «نهيس! بال بچول واله لي اينا بوجمه خود انهانا جا هيئ["]

حضرت زازن والنفوز سے روایت ہے حضرت علی الرتضلی والنفوز تنہا بازار تشریف لے النفوز سے اور بھوکے بھٹکے ہوئے لوگوں کو راستہ بتاتے تھے، کمشدہ مال کا اعلان کرتے تھے، کمزور کی اعانت کرتے تھے، مبزی فروشوں اور تاجروں کے باس سے گزرتے اور آئیں اللہ عزوجل سے ڈراتے تھے حالانکہ آپ والنفوذ مسلمانوں کے امیر تھے۔



ناپ تول بورا کرو:

حضرت جرموذ طالنے فرماتے ہیں میں نے حضرت علی المرتضی والنے واللہ و یکھا کہ وہ گھر سے نکلتے اور ان کے اوپر دوسرخی مائل موٹی چاوریں ہوتی اور ان کا تہدند نصف بنڈلی تک ہوتا اور چاور ہی زیادہ لمبی نہ ہوتی تھی۔ آپ والنی کے پاس ایک ورہ ہوتا تھا اور آپ والنی بازار میں جا کرلوگوں کو اللہ کے تقوی اور اچھی خرید و فروخت کا تھم دیتے اور فرماتے کہ ناپ تول پورا کرد اور گوشت میں چونک لگا کرا سے نہ چھلاؤ۔

الله كاحق:

> ''تمام تعریفیں اللہ عزوجل کے لئے ہیں اللہ کی تعمقوں پر کامل ہونے بر۔''

حضرت على المرتضى ولي في فرمات بين مين في عرض كيا يارسول الله يضفي في المرتضى في المرتفظة في الم





سورج واليس لوث آيا:

غزوہ خیبر سے واپسی پر مقام صہبا پر حضور نبی کریم سے بیٹانے خطرت علی الرتضلی بڑاتھیٰ کی گود میں سر رکھا اور سو گئے یہاں تک کہ سورج غروب ہو گیا۔ آپ بڑاتیٰ نے عصر کی نماز اوا نہیں فرمائی تھی اس لئے آپ بڑاتیٰ نیر بیٹان تھے۔حضور نبی کریم میٹے بیٹنا کی آپ بڑاتیٰ کو پر بیٹان د کھے کر کریم میٹے بیٹنا کی آئی کھلی تو حضور نبی کریم میٹے بیٹنا نے آپ بڑاتیٰ کو پر بیٹان د کھے کر پر بیٹان کی وجہ دریافت کی۔ آپ بڑاتیٰ نے عرض کیا کہ میری عصر کی نماز فوت ہوگئی ہے۔ حضور نبی کریم میٹے بیٹنا نے اللہ عز وجل کے حضور دعا کی اور سورج پلٹ آیا اور آپ بڑاتیٰ نے اللہ عز وجل کے حضور دعا کی اور سورج پلٹ آیا اور آپ بڑاتیٰ نے نماز عصر اوا فرمائی۔

O.....O.....O



دورِخلافت میں کئے گئے اجتہادی فقہی فضلے اجتہادی وفقہی فضلے

الله عزوجل نے حضرت علی المرتضی و النفظی و درست فیصله کرنے میں ملکه عطافر مایا تھا۔ کرنا ہے الاستعیاب میں منقول ہے حضور نبی کریم مضطفی ہے ایک مرتبہ الستعیاب میں منقول ہے حضور نبی کریم مضطفی ہے ایک مرتبہ این صحابہ کرام وی انتخاب کے بارے میں فرمایا۔

"میرے تمام صحابہ دی اُنٹی میں درست فیصلہ کرنے کی سب سے زیادہ صلاحیت علی (دائین میں ہے۔"

کتاب الاستعیاب میں ہی حضرت انس بن مالک ولائنو سے منقول ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم مضر کے فرمایا۔

"میری امت مین سب سے زیادہ درست فیصلہ کرنے کی صلاحیت علی (طابقین) میں ہے۔"

حضرت علی بن رہید والفی فرماتے ہیں کہ حضرت جعدہ والفیز بن ہیرہ فرماتے ہیں کہ حضرت جعدہ والفیز بن ہیرہ فرماتے میں حاضر ہوکر عرض کیا کہ امیر المومنین! دو آدی آتے ہیں جن میں سے ایک آپ والفیز کو اس قدر محبوب ہے کہ اتن محبوب ایک آپ والی قدر محبوب ہے کہ اتن محبوب ایک والی بیات ہیں جن میں سے ایک آپ والی قدر محبوب ہے کہ ایک آپ والی بیات ہیں جن میں سے کہ ایک ایک آپ والی میں بیان ہیں اور دوسرے کا حال بیہ ہے کہ اگر اسے آپ والی بیات کے ذریح کرنے پر

الناست على النافي في في النافي في ال

قدرت مل جائے تو وہ آپ ر خلائی کو ذرج کر دے اور آپ ر خلائی فیصلہ اس محبت رکھنے والے کے خلاف دیتے ہیں؟ آپ ر خلائی نے فرمایا۔
"اگر فیصلہ میری چیز ہوتی تو میں تیری منشاء کے مطابق فیصلہ کرتا لیکن ہے ایک ایسی شے ہے جو صرف اللہ کے لئے ہے۔"
فرمیوں کو حقوق و سے کا فیصلہ:

حفرت علی المرتضلی و الفیئو ذمیوں کے حقوق کا بہت خیال رکھتے تھے۔ آپ والفیئو نے اپنے ایک مقرر کردہ گورز کے نام ایک خطاتح ریفر ماتے ہوئے لکھا۔
''تمہارے علاقے کے زمینداروں نے تمہاری بختی، سنگدنی،
تحقیر اور بے پروائی کی شکایت کی ہے۔ بیشک بیاوگ مشرک بین مگران کے ساتھ نارواسلوک ندر کھنا اور ان کے لئے نرمی کا لباس پہننا اور ایساسلوک کرنا جس سے بیتمہارے نزدیک آجا کیں نہ کہ دور ہوجا کیں۔''

منقول ہے ایک مرتبہ ایک مسلمان نے ایک ذی کوئل کر دیا۔ حضرت علی المرتضیٰ والنین نے اس مسلمان کو قصاص کے بدلے قل کرنے کا تھم دیا۔ مقتول کے عزیز وا قارب آپ والنین کے باس آئے اور کہا ہم نے اسے معاف کیا۔ آپ والنین نے ان سے بوجھا کہیں وہ ایسا کسی دباؤ کے تحت تو نہیں کر رہے؟ انہوں نے کہا نہیں ہم اپی مرضی سے بیخون معاف کرتے ہیں۔

حدود كا فيصله خود بى كراميا كرو:

حضرت ابومطر والفئ فرمات میں میں نے حضرت علی الرتضی طالفہ کو دیکھا آپ مطار والفئ فرمات میں اسے حضرت علی الرتضی والفؤ کو دیکھا آپ والفئ کے باس ایک آ دمی لایا گیا اور لوگوں نے کہا اس نے اونٹ چرایا

المستريخ المستريخ المنافع المن

ہے۔ آپ طالفنے نے اس آ دمی سے کہا میر اخیال ہے کہ تو نے نہیں چرایا؟ اس نے کہا میں نے چرایا ہے۔ آپ بڑائٹن نے فرمایا شاید تھے اس اونٹ کے بارے میں شبہ ہو گیا ہو؟ اس نے کہانہیں بلکہ میں نے ہی اونٹ جرایا ہے۔ آپ منافظ نے نے حکم دیا که آگ جلاؤ اور کائے والے کو بلاؤ تا کہ وہ اس کا ہاتھ کائے یہاں تک کہ میں آجاؤں۔آب رہائن والیس آئے اور اس سے پوچھا کیا تونے چوری کی ہے؟ اس نے کہانہیں پس آپ مٹائٹۂ نے اسے چھوڑ دیا۔لوگوں نے عرض کیا کہ امیر المونین! آب بناتن نے اسے چھوڑ دیا؟ آپ بنائن نے فرمایا میں نے اس کے کہنے براسے پکڑا اور اس کے کہنے پر ہی اسے جھوڑ دیا۔ پھر آپ مٹائٹڈ نے فرمایا حضور نبی کریم مُنْ يَعَلَىٰ كَ يَاسَ الكِ مُحْفَى كُولا يا كِياجِس كا باته كا نا كيا تقا-حضور نبي كريم مِنْ يَعَلَمْ رو يراع - ميس في عرض كيا يارسول الله مطفيقة آب مطفيقة كيول روت مود عضور نی کریم مضایقاتم نے فرمایا میں کیوں نہ روؤں کہتم لوگوں کے درمیان میری امت کا باتھ كانا جار ہا ہے۔ صحابہ كرام وكالمئيز نے عرض كيا يارسول الله مضفيقة آپ مضفقة نے معاف کیوں نہ کر دیا؟ حضور نبی کریم مطابع کا بنے خرمایا بدترین حاکم وہ ہے جو حدود کومعاف کرے تم آپس میں ہی حدود کے کام کی معافی کرلیا کرواور معاملہ جھے تک نەلا يا كروپ

روٹیوں کا فیصلہ:

روایات میں آتا ہے کہ دو مسافر اسمے سن کر رہے تھے۔ میں کے وقت
دونوں ایک جگہ پر کھانا کھانے کے لئے بیٹھ سے۔ ان میں سے ایک مسافر کے
پاس پان کی دوئیاں تھیں جبکہ دوسرے کے پاس تین روٹیاں تھیں۔ اس دوران ایک مخص
کا گزراس جگہ سے ہوا۔ اس مخص نے ان دونوں کوسلام کیا۔ ان دونوں حضرات



المناسبة على المنافعة كل المعلى المنافعة كل المعلى المنافعة كل المعلى المنافعة كل المنافعة المنافعة كل المنافعة كل

نے اے کھانے کی وعوت دی چنانچہ وہ شخص ان کے ساتھ کھانے میں شریک ہو ۔ ' گیا۔کھانا کھانے کے بعد اس شخص نے ان دونوں کو آٹھ درہم دیئے اور کہا ہیآ ٹھ درہم میں تنہیں دیتا ہوں کہتم نے مجھے کھانا کھلایا۔اس کے بعد وہ تنخص چلا گیا۔ اس شخص کے جانے کے بعد ان دونوں مسافروں کے درمیان رقم کی تقسیم پر جھکڑا شروع ہو گیا۔ جس شخص کی یانج روٹیاں تھیں وہ کہنا تھا کہ میرے یاس یانج روٹیاں تھیں اس لئے یانچ درہم میرے ہیں جبکہ دوسراتشخص کہنا تھا کہ نبیں رقم دونوں میں برابرتقسیم ہونی جاہئے۔ جب بیرمعاملہ حد سے زیادہ بڑھ گیا تو دونوں شخص اپنا مقدمہ كر حضرت على المرتضى والنفؤ كى خدمت ميس حاضر موئے آپ والنفؤ نے ان وونوں کی بات غور سے من اور فرمایا جس شخص کی یانج روٹیاں تھیں اسے یانج درہم ملنے جا ہمیں۔ دوسرے مخص نے آپ دائنی کے فیصلے پر اعتراض کیا تو آپ طالندہ نے فرمایا بیر منصفانہ فیصلہ ہے اور اگر میں فیصلہ کروں تو حمہیں ایک درہم ملے گا۔ آپ والنين كى بات كوس كر حاضرين محفل بهى حيران مو كئے۔ آب والنيز نے اس مخف كو مخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

"تم دونوں کی روٹیوں کے کل چوبیں ٹکڑے ہوئے اور ہر شخص کے جصے بیں آٹھ آٹھ ٹکو کٹرے آئے۔ اب تمہاری تین روٹیوں کے کل نو گئرے ہوئے جن میں سے آٹھ تم نے کھا لئے اور ایک نی گئرے ہوئے جن میں سے آٹھ تم نے کھا لئے اور ایک نی میا جبکہ دوسرے شخص کی پانچ روٹیوں کے پندرہ ککڑے ہے جس میں سے اس نے آٹھ کھا ہے اور سات نی گئرے ہے جس میں سے اس نے آٹھ کھا ہے اور سات نی گئرے ہے لہذا تمہارے ایک کلڑے کے بدلے تمہیں ایک درہم اور اس کے سات درہم ملیں گے۔"

المناسرة على المنافعة كرفيعلى المنافعة كرفيعلى المنافعة كالمنافعة كالمنافعة

خواب برحد قائم کرنا:

روایات میں آتا ہے کہ ایک مرتبہ ایک شخص حضرت علی المرتضی مزالین کی خدمت میں حضرت علی المرتضی مزالین کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کرنے لگا فلال شخص کہتا ہے کہ میں نے خواب میں تیری مال کے ساتھ زنا کیا ہے؟ آپ مڑائین نے اس شخص کو بلایا اور تھم دیا کہ اس شخص کو دھوپ میں کھڑا کر دواور اس کوسوکوڑے مارو۔

لوگول كاحق بورا ادا كرو:

حضرت علی الرتضی و التا مرتبہ بازار تشریف لے گئے۔ آپ و النظام نے ایک لونڈی کو دیکھا جو مجمور قروش کی دوکان پر کھڑی رور ہی تھی۔ آپ و النظام نے ایک لونڈی کو دیکھا جو مجمور قروش کی دوکان پر کھڑی رور ہی تھی۔ آپ و النظام اس لونڈی سے رونے کی وجہ دریافت کی تو اس نے کہا جس نے اس دوکا ندار سے ایک درہم کے عوض یہ مجبوری لیس لیکن میر ہے آتا نے ان مجموروں کو واپس کر دیا اب یہ دوکا ندار ان مجموروں کو واپس لینے پر راضی نہیں۔ آپ و النظام نے اس لونڈی کی سفارش اس دوکا ندار سے کی تو دوکا ندار جو آپ و النظام کو جانتا نہ تھا اس نے انکار کر دیا۔ اس دوران چند لوگ اس دوکان پر ایسٹے ہو گئے اور انہوں نے آپ و النظام کر دیا۔ اس دوران چند لوگ اس دوکان پر ایسٹے ہو گئے اور انہوں نے آپ و النظام کی کہا ہے ایم المونیمن ہیں۔ دوکا ندار یہ بات من کر کہا ہے اس دوکا ندار یہ بات من کر گھرا گیا۔ آپ و النظام نے قرمایا۔

"لوگول كاحق بورا بورا ادا كرد_"

دوکا ندار نے اس عورت سے تھجوریں لے کر ایک درہم واپس کردیا اور حضرت علی المرتضلی طالفنۂ سے کہنے لگا۔

المناسر على المالية ال

"امير المونين! آب طالفيظ محصد راضى موجائيل-"
حضرت على الرتضى طالفيظ في في المؤلف في ا

قاضی شریخ کے فیصلے کو قبول کرنا:

حضرت علی الرتضی رئی تین کی زرہ بازار میں گر پڑی جو ایک غیر مسلم کے ہاتھ گئی۔ آپ بڑی تین الرتضی رئی تین کی عدالت میں دعویٰ دائر کر دیا حالانکہ آپ رٹی تین و دائی کی عدالت میں دعویٰ دائر کر دیا حالانکہ آپ رٹی تین خود امیر الموشین ہے۔ قاضی شریح نے آپ بڑی تین سے زرہ کا شوت مانگا تو آپ رٹی تین شوت پیش نہ کر سے۔ قاضی شریح نے مقدے کا فیصلہ اس غیر مسلم کے حق میں کردیا۔ اس غیر مسلم نے جب فیصلہ سا تو مسلمان ہوگیا اور کہنے لگا بیا نہاء میں کر دیا۔ اس غیر مسلم نے جب فیصلہ سا تو مسلمان ہوگیا اور کہنے لگا بیا نہاء میں کے انسان جو کی عدالت میں کے انسان جیس انسان ہوئی عدالت میں انسان جیس انسان کے حال نے ایک امیر المونین مجھا پی بی بنائی ہوئی عدالت میں این قاضی کے سامنے پیش کرتا ہے ادر قاضی اس امیر المونین کے خلاف فیصلہ ان و تا ہے۔

كاوَل كوآك لكانے كا فيصله:

کنزالعمال میں رہید بن ذکار سے مروی ہے کہتے ہیں کہ حضرت علی المرتضلی بلائیڈ نے ایک گاؤں کی جانب نگاہ دوڑائی اور پوچھا یہ کیسا گاؤں ہے؟ آپ بلائیڈ کو بنایا گیا یہ زرارہ گاؤں ہے اور بہاں کیڑا بنتا ہے اور شراب فروخت کی جاتی ہے۔ آپ بلائیڈ اس گاؤں ہے اور آگ منگوا کرتھم دیا کہ اس گاؤں کو جلا کی جاتی ہے۔ آپ بلائیڈ اس گاؤں کو آگ دیا گئی تو آپ بٹائیڈ نے فرمایا۔

المنت على المانية كي فيلي المانية كي فيلي المنظمة المانية كي فيليل المنظمة المنطقة المنظمة المنطقة الم

" خبیث شے کا ایک حصہ دوسرے حصہ کو کھا جاتا ہے۔"

اس مال میں اس کا بھی حصہ ہے:

کنزالعمال میں منقول ہے کہ ایک مرتبہ حضرت علی المرتضیٰ وہائیڈ کھلی جگہ مال تقسیم فرمار ہے تھے اور اس موقع پر ایک شخص نے ہتھیاروں میں سے کوئی ہتھیار ایٹ کی مرتبہ حض نے دیکھ لیا اور آپ وہائیڈ ایٹ کیٹر سے میں چھپالیا۔ اس شخص کو کسی دوسر سے شخص نے دیکھ لیا اور آپ وہائیڈ اور فرمایا سے اس کی شکایت کر دی۔ آپ وہائیڈ نے اس کا ہاتھ کا نے کا تھم نہ دیا اور فرمایا اس مال میں اس کا بھی حصہ ہے۔

سے تیری جرائت کی سزاہے:

بحار الاتواريس منقول ہے ايک خص نے رمضان المبارک کے مہينے ميں شراب ہی۔ حضرت علی الرتضی والفؤ کی خدمت میں اسے پیش کیا گیا تو آپ والفؤ کے خدمت میں اسے پیش کیا گیا تو آپ والفؤ کے حکم دیا کہ اسے ای کوڑے مارے جا ئیں اور قید کر دیا جائے۔ اس فض کو ای کوڑے مارے گئے اور قید کر دیا گیا۔ ایکے دن آپ والفؤ نے اس فض کو بلایا اور بیں کوڑے مزید لگوائے۔ وہ فض کہنے لگا شراب پینے کی سزا تو ای کوڑے ہیں پھر بیس کوڑے مزید لگوائے۔ وہ فض کہنے لگا شراب پینے کی سزا تو ای کوڑے ہیں پھر جھے ہیں کوڑے مزید کیوں مارے گئے؟ آپ والفؤ نے فرمایا۔
جھے ہیں کوڑے مزید کیوں مارے گئے؟ آپ والفؤ نے دمضان المبارک کی مزا ہے جو تو نے دمضان المبارک کی

بیمجنون نہیں بلکہ نازک ہے:

حضرت شاہ ولی الحق محدث وہلوی میسند اپنی تصنیف ''ازالۃ الحفاء میں بیان کرتے ہیں ایک المرتضٰی مٹاہند کے پاس آیا بیان کرتے ہیں ایک محض اپنی بیوی کو لے کر حضرت علی المرتضٰی مٹاہند کے پاس آیا



اورعرض کیا ہمارے مابین فیصلہ کریں اور اس عورت نے بوقت نکات ابنا عبب مجھ سے بوشیدہ رکھا؟ آپ بولینیڈ نے بوجھا اس میں کیا عیب ہے؟ وہ شخص بوالا یہ مجنون ہے۔ آپ بڑائیڈ نے اس عورت سے کہا تیراشو ہر تیرے متعلق کیا کہتا ہے؟ وہ بولی مجھے جنون نہیں بلکہ مجامعت کے وقت مجھ پرغشی طاری ہو جاتی ہے۔ آپ بڑائیڈ نے اس شخص سے فرمایا۔

''تو اسے لے جا اور بیر مجنون نہیں بلکہ نازک ہے تو اس کے ساتھ عمدہ برتاؤ کرو۔'' ہے.

عدل و انصاف کا اعلیٰ معیار ، حیدر کرار علوم ظاہری و باطنی کے منبع ، حیدر کرار

O.....O.....O

المناسر على المنافعة كرفيعلى المنافعة كرفيعلى المنافعة كرفيعلى المنافعة كالمنافعة كالمنافعة المنافعة ا

خلفائه مناته من التنفيخ كيساته وتعلقات

حضرت علی المرتضی رفائنی کے خلفائے علاقہ رفی النظم سے بہت اجھے مراسم علی المرتضی رفائنی کے خلفائے علاقہ رفی النظم سے اور جیسا کہ گذشتہ اور اق میں بیان ہو چکا آپ رفائنی کو خلفائے علاقہ رفی النظم اللہ آپ رفائنی ان کی مجلس مشاورت کا حصہ ہے۔ خلفائے علاقہ النظم المور بین آپ رفائنی سے مشورہ کرتے ہے اور آپ رفائنی کے مشوروں کو مقدر کی نگاہ ہے در آپ رفائنی کے مشوروں کو تقدر کی نگاہ ہے در کی نگاہ ہے در کی تھے۔

روایات میں آتا ہے ایک موقع پر حضرت ابو بکر صدیق وظافیظ نے فر مایا۔
"اس ذات کی قتم جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے
حضور نبی کریم میطے تھینا کی رشتہ داری وقر ابت کا لحاظ جھے اپنی
قرابت داری سے زیادہ محبوب اور مقدم ہے۔"
حضرت علی المرتضٰی وظافیٰ نے جب حضرت ابو بکر صدیق وظافیٰ کا یہ کلام سافہ فر مایا۔

'' بے شک حضرت ابو بکر صدیق طالبنی کی فضیلت و شرافت ہم سب سے زیادہ ہے۔''

حضرت عقبہ بن حارث وٹائنڈ فرماتے ہیں حضور نبی کریم مضططر ہے وصال میں کی کہ میں مضطرفی ہے وصال کے کہ کہ کا تعدید کے کچھ عرصہ بعد میں حضرت ابو بکر صدیق وٹائنڈ کے ہمراہ نماز عصر پڑھ کر باہر نکلاتو

المناسبة على المنافعة ال

حضرت علی المرتضی طالفنظ بھی آپ طالفظ کے ہمراہ تھے۔ اس دوران آپ طالفظ کا گزر حضرت سیّد تا امام حسن طالفظ کے نزد یک سے ہوا جو اس وقت چنداڑکول کے ہمراہ کھیل رہے تھے۔ آپ طالفظ نے حضرت سیّد تا امام حسن طالفظ نے حضرت سیّد تا امام حسن طالفظ کو گود میں اٹھا لیا اور یمارکرتے ہوئے فرمایا۔

"الله عزوجل كى فتم! تم حضور نبى كريم منطق الله مواور اسيخ باب على الفنه كم مشابه بيس مو-"

حضرت عقبہ بن حارث والنفظ فرماتے ہیں حضرت علی الرتضلی والنفظ نے جب حضرت علی الرتضلی والنفظ نے جب حضرت ابو بمرصد بق والنفظ کا کلام سنا تومسکرا دیئے۔

روایات میں موجود ہے کہ حضرت اساء ذائنے ہی بنت عمیس جو حضرت ابو بکر صدیق الو بکر صدیق اللہ بھی موجود ہے کہ حضرت اساء ذائنے ہی دائنے کی المیہ تھیں ان کا تکاح آپ رہی ہی وصال کے بعد حضرت علی الرتضلی دلائنے ہے وصال کے بعد حضرت علی الرتضلی دلائنے ہے اولا دبھی ہوئی۔ الرتضلی دلائنے ہے اولا دبھی ہوئی۔

حفزت عروہ والنفز سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک مخص نے حضرت عمر فاروق والنفز کے سامنے حضرت علی المرتضلی والنفز کے بارے میں پچھ کہا۔ آپ والنفز اس کا ہاتھ پکڑ کرروضہ رسول اللہ ملائے تاہم کے اور فرمایا۔

"کیا تو اس قبر والے کو جاتا ہے؟ پس تو علی (طالفیٰ اِ) کا ذکر برائی کے بجز بھلائی کے جمعی نہ کر اگر تو نے علی (طالفیٰ کے بھی نہ کر اگر تو نے علی (طالفیٰ کے بھی نہ کر اگر تو نے علی (طالفیٰ کے کہ برائی کے ساتھ کیا تو نے آبیں تکلیف پہنچائی۔"

کنزالعمال میں معفرت ابوجعفر والتناؤ ہے منقول ہے حضرت عمر فاروق والتناؤ ہے منقول ہے حضرت عمر فاروق والتناؤ ہے منقول ہے حضرت علی المرتضی والتناؤ کو ان کی صاحبزادی حضرت سیّدہ ام کلثوم ولی نہاؤ کی صاحبزادی حضرت علی المرتضی والتناؤ نے فرمایا میں نے فیصلہ کیا تھا کہ سے نکاح کا پیغام بھیجا۔ حضرت علی المرتضی والتناؤ نے فرمایا میں نے فیصلہ کیا تھا کہ

الانستة على المنافعة كي يليل المنافعة كي يليل المنافعة ال

حضرت عثمان غنی ر النین کے سالا رحضرت عبداللہ بن عامر بن کریز والنین فنے کیا تو بادشاہ یز دجرد کی دو بیٹیاں قیدی بنائی گئیں۔انہوں نے دہ دونوں لڑکیاں آپ و بالنین کے پاس مدیند منورہ روانہ کرویں۔آپ والنین نے ان دونوں لڑکیاں آپ و بالنین کے پاس مدیند منورہ روانہ کرویں۔آپ والنین نے ان دونوں لڑکیوں کو حسنین کریمین و النین کے حوالے کرویا جن سے انہوں نے نکاح کر لیے۔ حضرت سیّدنا امام حسین و النین نے جس لڑکی سے نکاح کیا اس سے حضرت سیّدنا امام زین العابدین و النین تو لد ہوئے۔

O___O

المناسر على المنافع ال

عهدمرتضوي طالثيث كالمخضرجائزه

حضرت علی المرتفعی رہ النین کا دور خلافت خانہ جنگی، بغاوتوں اور شورشوں کی نظر رہا۔ آپ رہ النین کو ایک لیے کے لئے بھی ملکی نظم ونسق کے قیام اور بیرونی فتوحات کی جانب توجہ کرنے کی فرصت بنہ ملی یہی وجہ ہے کہ آپ رہ النین کے دور خلافت میں نقر آتے تھیں کہ خلفائے ثلاثہ رہی گئی کے دور میں نظر آتے تھیں کہ خلفائے ثلاثہ رہی گئی کے دور میں نظر آتے ہیں۔ ان تمام مشکلات کے باوجود آپ رہائین کا دور خلافت کی کارناموں سے بھر پور ہے۔

حضرت علی المرتضی والفیز جب منصب خلافت پر فائز ہوئے تو آپ والفیز کے دہانہ خلافت کے آخری دور میں امویوں کا مملکت نے حضرت عثمان عنی والفیز کے زمانہ خلافت کے آخری دور میں امویوں کا مملکت اسلامی میں بردھتا ہوا عمل دخل دیکھ کر آئیس صراط منتقیم پر لانے کی بھر پورکوشش کی۔ حضرت علی المرتضی والفیز نے شام کی سرحداور دیگر علاقوں میں کثرت سے فوجی چوکیاں قائم کیس۔ بیت المال کی حفاظت اور جنگ کے دنوں میں عورتوں اور بچوں کی حفاظت کے لئے قلعے تغییر کروائے۔

حضرت علی المرتضی و الفیز نے بیت المال میں ایسی اصلاحات نافذ کیں جن سے آمدنی میں انسان میں انسان میں افاد کیں جن سے آمدنی میں اضاف ہوا۔ آب والفیز نے کئی جیزوں سے محصول منا لیا اور حضرت عمر فاروق والفیز کے زمانہ میں تجارتی محمود وں پر جوز کؤ قالگائی گئی تھی وہ بھی

المناسر على المالي المنافئة كرفيه لله المنافئة كرفيه لله المنافئة كرفيه لله المنافظة كرفيه لله المنافظة كرفيه لله المنافظة المنافظة كرفيه لله المنافظة كرفيه ك

منسوخ کر دی۔

حفرت علی المرتضی و النیز این مقرر کردہ گورزوں سے حق سے آمدنی کا حساب لیا کرتے تھے۔ ایک مرتبہ حضرت بزید بن قیس والنیز نے خراج بھیجنے میں تاخیر کی تو آپ والنیز نے انہیں لکھا۔

"اما بعد! تم نے خراج بھیجنے میں تاخیر کی اور اس تاخیر کا سبب معلوم نہیں لیکن میں تہہیں اللہ سے ڈراتا ہوں اور تہہیں اللہ سے ڈراتا ہوں اور تہہیں اس کام سے بھی ڈراتا ہوں جو تہہیں راوح ق سے ہٹا دے اور تہہارے اجرکو برباد کردے۔ اللہ سے ڈرتے رہواورا پے نفوس کو حرام مال سے بچائے رکھو۔ معاہدہ کرنے والوں سے زیادتی نہرو اور اللہ نے تہہیں جو کچھ دیا ہے اسے حصول آخرت کا فرریعہ بناؤ اور دنیا کے جھے کو بھی فراموش نہ کرو۔"

حضرت علی المرتضی و الفیز این مقرره کرده گورفروں کی اخلاقی گرانی بھی کرتے اور جب بھی کی گورفرمقرر کرتے تو اس کوعوام الناس کے ساتھ حسن سلوک اور شفقت سے چیش آنے کا تھم دیتے تھے۔ ایک مرتبہ آپ رفیانی نے حضرت کعب والنی کوعراق کے گورفروں کی تحقیقات کا تھم دیا اور انہیں ہدایت کی کہ وہ اپنی ساتھیوں کو لے کر جا کی اور عراق کے جر گورفر کی تحقیق کریں اور ان کے حالات ساتھیوں کو لے کر جا کی اور عراق کے جر گورفر کی تحقیق کریں اور ان کے حالات کے متعلق انہیں آگاہ کریں۔

O____O



كشف وكرامات كابيان

حضرت علی المرتضی و النفیز صاحب کشف و کرامت منصے اور آپ و النفیز سے بیان کی بیان کی جند کرامات علی المرتفیز کی چند کرامات بیان کی جند کرامات بیان کی جارہی ہیں تا کہ قار کین کے لئے ذوق کا باعث بنیں۔

اہل قبور ہے گفتگو:

حضرت سعید بن سیب بران نوئے ہے منقول ہے جم حضرت علی الرتضای بران نوئے ہے ہم حضرت علی الرتضای بران نوئے ہے۔ آپ بران نوئے نے اہل قبور کو مخاطب کرتے ہوئے با آواز بلند سلام کیا اور ان لوگوں ہے ان کے حالات دریافت فرمائے۔ قبرول سے وعلیک السلام کی آوازیں بلند ہو کیں۔ اہل قبور نے آپ بران نوئے ہے والوں کے حالات دریافت کے ۔ آپ بران نوئے نے فرمایا تبہار ہے جبوبوں نے نکاح کر لئے ، تمہارے مال کو وارثوں نے تقسیم کر دیا ، تمہارے جبور نے بچے میتم ہونے کے بعد در بدر پھرنے گئے ، تمہارے مضبوط او نچے محلوں میں تمہارے وشن آرام سے زندگی بسر کرنے گئے۔ آپ بران نوئے کو اس میں تمہارے وشن آرام سے زندگی بسر کرنے گئے۔ آپ بران نوئے جواب میں اہل قبور نے کہا امیر المونین! ہماری خبر بسر کرنے گئے۔ آپ بران نوئے ہو کر بھٹ گئے اور ہم نے جو پچھ دنیا میں خرج کیا وہ یہ بیاں پالیا اور ہم جو پچھ دنیا میں خرج کیا وہ یہاں پالیا اور ہم جو پچھ دنیا میں خرج کیا وہ یہاں پالیا اور ہم جو پچھ دنیا میں خرارہ اٹھانا پڑا۔



گرتی د بوار هم گئی:

حفزت امام جعفر صادق و النفاذ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ حفزت علی الرتضلی و النفاذ ایک و بور کے نیچے بیٹے مقدمہ کا فیصلہ فرما رہے تھے جو کمزور تھی۔ لوگوں نے آپ و النفاذ سے کہا مید و بوار کمزور ہے آپ و النفاذ یہاں سے اٹھ جا کیں مگر آپ و النفاذ نے فرمایا مقدمہ کی کاروائی جاری رکھواللہ عزوجل بہنزین محافظ ہے چنا نچے مقدمہ کی کاروائی جاری وہی۔ جب آپ و النفاذ نے مقدمہ کا فیصلہ سنا دیا اور وہاں سے اٹھ کر چلے گئے تو وہ و بوار گریزی۔

فالح زده نهيك هو كيا:

علامہ تاج الدین کی کتاب ''طبقات' میں حضرت علی المرتضلی والنون کی ایک کرامت کا تذکرہ موجود ہے۔ آپ والنون ایخ این دونوں شغرادوں حضرت سیّدنا امام حسین وزائی نی ہے ہمراہ خانہ کعبہ میں موجود ہے۔ آپ والنون نے ایک شخص کو گر گڑا کر مناجات کرتے ہوئے سنا جو بارگاہ النی میں زاروقطار وقطار دوتے ہوئے دعا کر دہا تھا کہ النی ! تو تاریکیوں اور اندھروں میں بے چین دلوں کی دعا کی سنتا ہے۔ النی ! تو تاریکیوں اور اندھروں میں بے چین دلوں کی دعا کی سنتا ہے۔ النی ! تو تاریکیوں اور اندھروں میں ہے چین دلوں کی دعا کی سنتا ہے۔ النی ! تو تیاروں کی تکلیف وور فرما تا ہے۔ اے حرم کعبہ کے مالک ! تو بھی نہیں سویا جبکہ تیرے گھر کے اردگر در ہنے والے تمام سو گئے۔ النی ! تیری ذات پاک کی امیدیں لے کرمخلوق تیرے حرم میں اعظمی ہوتی ہے میری خطا کو بھی معاف فرما اور تیرے سواکون نعتوں کی بارش کرنے والا ہے۔ آپ وٹائنون کی معاف فرما اور تیرے سواکون نعتوں کی بارش کرنے والا ہے۔ آپ وٹائنون کی خدمت میں حاضر نے اس مخص کو ایخ پاس بلایا تو وہ شخص رینگتا ہوا آپ وٹائنون کی خدمت میں حاضر ہوا۔ آپ وٹائنون نے اس کا قصہ دریافت کیا تو اس شخص نے کہا امیر الموشین ! میں اس بلایا تو وہ شخص رینگتا ہوا آپ وٹائنون کی خدمت میں حاضر ہوا۔ آپ وٹائنون نے اس کا قصہ دریافت کیا تو اس شخص نے کہا امیر الموشین ! میں ہوا۔ آپ وٹائنون نے اس کا قصہ دریافت کیا تو اس شخص نے کہا امیر الموشین ! میں ہوا۔ آپ وٹائنون نے اس کا قصہ دریافت کیا تو اس شخص نے کہا امیر الموشین ! میں

المناسر على المنافعة كي يعلى المنافعة كي يعلى المنافعة كي يعلى المنافعة كي يعلى المنافعة كي المنافعة ك

بڑی ہے باکی کے ساتھ دن رات گناہ کرتا تھا اور میر اباپ نہایت صالح مخص تھا وہ مجھے گناہوں سے رو گنا تھا۔ ایک دن میں نے اپنے باپ کی نصیحتوں سے ننگ آکر اپنے باپ کو مارا جس پر میرے باپ نے حرم کعبہ میں آکر میرے حق میں بددعا کی اور اس کے بعد مجھ پر فالح کا حملہ ہوا اور میں زمین پر گھسٹ گھسٹ کر چلنے لگا۔ میں نے اپنے باپ سے روروکر معافی ما تھی اور انہوں نے مجھے معاف کر دیا اور کہا حرم کعبہ چلو میں وہاں جا کر تمہارے حق میں دعا کرتا ہوں اللہ عز وجل تمہیں صحت کا ملہ عطا فرمائے چنانچہ میں اپنے باپ کے ہمراہ حرم کعبہ میں اپنی راباپ اور تمہا ہے گر پڑا اور فوت ہو گیا۔ اب میں تنہا حرم کعبہ میں اپنی صحت یا بی کے لئے اللہ عز وجل کے حضور دعا کیں ما نگنا ہوں۔

حضرت علی البرتفنی و الناز نے ال محفی کی بات سننے کے بعد فرمایا اگر تیرا باپ بخھ سے خوش ہوگیا۔ ال محفی نے تم کھا کر کہا کہ میرا باپ بھے نے فش ہوگیا۔ ال محفی نے تم کھا کر کہا کہ میرا باپ بھے سے خوش ہوگیا تھا۔ آپ والناز نے اس کی بات سننے کے بعد دورکعت نماز اداکی اور اس کے حق میں دعائے خیر فرمائی جس کے بعد وہ محفی تندرست ہوگیا۔ آپ والنائ نے فرمایا اگر تیرا باپ تھے سے راضی نہ ہوتا تو میں تیرے لئے ہرگر دعا نہ کرتا۔

خاوند تبين بيثا:

مولانا عبدالرحمٰن جامی میشد اپنی کتاب "شوام الدوة" میں لکھتے ہیں کہ حضرت علی الرتضائی والفرز نے خلافت کے زمانہ میں کوفہ میں قیام کے دوران ایک مخص کو بلایا اور اس سے فرمایا کہ وہ قلال مکان میں جائے اور وہال جا کرایک مرد اور عورت آپس میں جھڑا کر ہے ہیں انہیں لے کر میرے پاس آئے۔ جب وہ اور عورت آپس میں جھڑا کر ہے ہیں انہیں لے کر میرے پاس آئے۔ جب وہ

المنترع الدرين الأفرك يعلى المالية

دونوں مرد ادر عورت آپ رٹائٹؤ کی خدمت میں عاضر ہوئے تو آپ بٹائٹؤ نے دریافت فرمایاتم دونوں کیوں جھٹاڑ نے دریافت فرمایاتم دونوں کیوں جھٹاڑ رہے ہو؟ مرد نے کہا امیر الموشین! میرااس عورت سے نکاح کل ہوا۔ رات کو جب میں اس کے نزد یک جانے لگا تو مجھے اس سے نفاح کم جس پر ہمارے درمیان جھٹڑا شردع ہوگیا۔

حضرت علی الرتضی و النفی نے حاضرین محفل کو جانے کا کہا۔ جب تمام حاضرین محفل کو جانے کا کہا۔ جب تمام حاضرین محفل چلے گئے تو آپ والنفیز نے اس عورت سے پوچھا تم اس مرد کو جانتی ہو؟ اس عورت نے کہا میں کل سے پہلے اسے نہیں جانتی۔ آپ والنفیز نے فر مایا کہ تم اب اسے جان لوگ کیکن تمہیں وعدہ کرنا ہوگا کہ تم جھوٹ نہیں بولوگ ؟ اس عورت نے آپ والنفیز سے وعدہ کرلیا۔

حضرت علی المرتضی و و النین نے فرمایاتم فلال شخص کی بیٹی ہواور تمہارانام یہ ہے۔ عورت نے اس بات کا اقرار کیا۔ آپ و و النین نے فرمایا کہ تم جوانی بیس بہت خوبصورت تھیں اور تمہارا پچا ذاد بھائی تم پر جان چیز کتا تھا اور تم بھی اس سے مجت کرتی تھیں۔ اس عورت نے اس بات کا بھی اقرار کرلیا۔ آپ و والنین نے فرمایا ایک روزتم دونوں نے زنا کیا جس سے تم حاملہ ہو گئیں اور تمہاری مال نے تمہاری پر وہ پوٹی کی اور تم ان نے خفیہ طور پر ایک بچہ جنا جے تم نے ایک و بوار کے بینچ و ال ویا پھر جسبتم اس بچ کو چھوڑ کر جانے لگیں تو ایک کتا اس بچ کی جانب لیکا جے تم نے بچر مارا اور وہ نوٹی ہوگیا۔ تم نے بچر مارا اور وہ نوٹی ہوگیا۔ تم نے ایک کتا اس بچ کی جانب لیکا جے تم نے ایک کتا اس بچ کی جانب لیکا جے تم نے ایک کتا اس بچ کی جانب لیکا جو تم نے بچر مارا اور وہ نوٹی ہوگیا۔ تم نے بچر مارا اور وہ نوٹی کی بوگیا۔ تم نے ایک کتا اس بچ کی بی کی جو تم نے ایک ورت نے اعتراف کیا اس سے یہ میں مرز د ہوا اور اس نے کی کی بچر جر نہ ہوئی۔ اس عورت نے اعتراف کیا اس سے یہ مقال مرز د ہوا اور اس نے ایک کی بی جو جنا جے اس نے ایک د بوار کے بیٹی و ال و یہ اس نے ایک بی جو تا ہے اس نے ایک د بوار کے بیٹی و ال دیا تھا۔

الانتساس الفي المالي المعلى المعلى

حضرت علی المرتضی والفیئونے فرمایا اس بچے کو فلاں قبیلے والے اٹھا کر لے گئے اور اس کی پرورش کی۔ وہ بچہ جوان ہونے کے بعد دوبارہ واپس ای شہرآ گیا اور اب تمہارے سامنے کھڑا ہے۔ پھرآپ والفیئونٹ نے اس شخص کو تھم دیا کہ وہ اپنا سر کھول تو اس کے ماشتے پر زخم کا نشان موجود تھا۔ کھولے۔ اس محفول نے جب اپنا سر کھول تو اس کے ماشتے پر زخم کا نشان موجود تھا۔ آپ والفیئونٹ نے فرمایا۔

" بہتمہارا خاوندنہیں بیٹا ہے اور اللہ عزوجل نے تم دونوں کو حرام کاری سے بچالیا۔"
کے ہوئے ہاتم کا جوڑنا:

روایات میں آتا ہے کہ حضرت علی الرتضی و الی عبشی غلام تھا جو نہایت محب اور وفادار تھا۔ ایک مرتباس نے چوری کرلی لوگوں نے اس کو پکر کرآپ نہایت محب اور وفادار تھا۔ ایک مرتباس نے چوری کرلی لوگوں نے اس کو پکر کرآپ و الینی نے خالی کی خدمت میں چیش کیا جہاں اس نے اپنے جرم کا اقرار کرلی۔ آپ و الینی نے اس کا ہاتھ کاٹ دیا۔ جب وہ اپنے گھر روانہ ہوا تو راستے میں اس کی ملا قات ابن الکواء سے ہوئی۔ اس نے جب بوچھا کہ تمہارا ہاتھ کیے گٹا؟ تو اس نے بتایا میں نے چوری کی تھی۔ ابن الکواء نے بوچھا کہ تمہارا ہاتھ کس نے کاٹا؟ اس نے کہا میرا ہاتھ کس نے کاٹا؟ اس نے کہا میرا ہاتھ امیر الموشین، دامادرسول اللہ بھی تھی کہا ۔ ابن الکواء نے کہا کہ انہوں نے تمہارا ہاتھ کا ٹالیکن تم ان کا تذکرہ خیر سے کرتے ہو؟ اس غلام نے کہا انہوں نے میرا ہاتھ کی کاٹا گئی تی خداب سے بچا لیا۔ ابن الکواء نے میرا ہاتھ کی کاٹا ور جھے جہنم کے عذاب سے بچا لیا۔ ابن الکواء نے حضرت علی المرتفیٰ والمنی والمند فرمایا اور اس کا کٹا ہوا ہاتھ اس کی کلائی پر رکھ کر رومال نے اپندھ دیا اور دعا فرمائی۔ جب آپ والی تھ اس کی کلائی پر رکھ کر رومال سے باندھ دیا اور دعا فرمائی۔ جب آپ والمنظون نے رومال کھولاتو اس کا ہاتھ دوبارہ سے باندھ دیا اور دعا فرمائی۔ جب آپ والی تو اس کا کہا ہوا ہاتھ اس کی کلائی پر رکھ کر دوبارہ سے باندھ دیا اور دعا فرمائی۔ جب آپ والی تو اس کا کہا ہوا ہاتھ اس کی کلائی پر کھ کر دوبارہ سے باندھ دیا اور دعا فرمائی۔ جب آپ والمنے دوبارہ

المناسر على المنافع ال

جر چکا تھا اور ایسامعلوم ہوتا تھا کہ ہاتھ بھی کثانہ ہو۔

قرآن مجيد لمحول مين ختم كرنا:

مجیح روایات سے میہ بات ٹابت ہے کہ حضرت علی المرتضی والنین مھوڑے
کی ایک رکاب پر پاؤل رکھتے اور قرآن مجید شروع کرتے۔ جب آپ والنین کا
دوسرا پاؤل گھوڑے کی رکاب میں جاتا اس وقت آپ والنین قرآن مجید ختم کر کے
ہوتے۔

دريا كى طغيانى ختم موگئى:

ایک مرتبہ دریائے فرات میں تخت طغیانی آگئی جس سے سیاب آگیا اور تمام کھیت پائی میں ڈوب گئے۔ لوگوں نے حضرت علی المرتفئی والنین کی خدمت میں حاضر ہو کر تمام ما جرا بیان کیا۔ آپ والنین اٹے اور حضور نبی کریم مضرک کا جب مبارک و عمامہ شریف اور چا در زیب تن فرمائی اور گھوڑے پرسوار ہو کر دریائے فرات کی جانب روانہ ہو گئے۔ آپ والنین کے ہمراہ حسنین کریمین و کا فرات کی جانب روانہ ہو گئے۔ آپ والنین کے ہمراہ حسنین کریمین و کا فرات کی جانب سے۔ آپ والنین نے دریائے فرات کی جانب اشارہ کیا جس سے دریائے فرات کی جانب اشارہ کیا جس سے دریا کا پائی کم ہوتا شروع ہو گیا یہاں تک کہ لوگوں نے شور سےا

"اميرالمونين! بسيجة اتناكافي ب-"

درندول کی اطاعت:

ایک مرتبہ ایک فخص حضرت علی المرتضی طاقتن کی خدمت میں حاضر ہوا اور کہنے لگا کے خدمت میں حاضر ہوا اور کہنے لگا کہ امیر المومنین! میں سغر پر جانا چاہتا ہوں لیکن مجھے جنگلی در ندوں سے ڈر لگتا ہے۔ آپ طالفنی نے اپنی انگوشی اس مخفس کو دیتے ہوئے فر مایا۔

المناخ الله الفي المالية المال

"جب بھی تمہارے نزویک کوئی درندہ آئے تم اسے میری ہے۔

انگوشی دکھانا اور کہنا یہ حضرت علی الرتضلی ڈاٹٹٹڈ کی انگوشی ہے۔

چنانچہ وہ شخص سفر پر روانہ ہوا۔ راستے میں ایک خونخوار درندہ اس پرحملہ
آور ہوا۔ اس شخص نے اس درندہ کو حضرت علی الرتضلی ڈاٹٹٹڈ کی آنگوشی دکھائی اور

کہا۔

" يه حضرت على المرتضى طافين كى انگوشى ہے۔" وہ درندہ حضرت على المرتضى طافین كى انگوشى د كيے كر بھاگ كيا۔

چشمه جاری موگیا:

مقام مفین پر حضرت علی الرتفنی وافظ کا گزرلشکر سمیت ایسی جگہ سے ہوا جہاں یائی دستیاب نہ تھا۔ لفکر سے ہوا جہاں یائی دستیاب نہ تھا۔ لفکر نے آپ دانشو سے پانی کی تایابی پر فکوہ کیا تو آپ دانشو نے ایک میاند کا در ایا۔

"يهال كمداني كرو-"

چنانچہ اس جگہ زمین کی کھدائی کی گئی لیک بھاری پھر آئے۔
حضرت علی الرتفنی والٹون نے آھے ہو ہ کر اس پھر کو ایک ہی جھکے میں باہر نکال دیا
جسے ہی دہ پھر باہر نکلا دہاں سے پانی کا ایک چشمہ جاری ہو گیا۔ آپ والٹون کے لشکر
نے اور جانوروں نے سیر ہو کر وہ پانی پیا۔ جب لشکر نے اپنی تمام مشکیس پانی سے
محرلیں تو آپ والٹون نے دوبارہ پھر ای جگہ پررکھ دیا جس سے پانی کا وہ چشمہ بند
ہو گیا۔

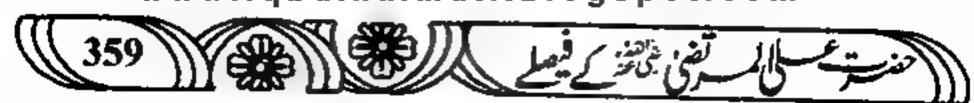
حضرت على المرتفى والفن كى اس كرامت كود كيدكر قريب واقع أيك كرجا كا يادرى حاضر خدمت بوا اور درخواست كى كه مجصد دائراه اسلام ميس داخل فرما كيس-

المناسر على المنافي ال

آب رالنفوز نے دریافت کیاتم ابھی تک مسلمان بھی ہوئے؟ اس پادری نے کہا۔

"میں نے الہامی کتابوں میں پڑھا ہے کہ اس جگہ ایک پوشیدہ
چشمہ ہے جے وہ جاری کرے گاجو نی آخری الزماں کا وسی ہو
گا ور آب رالنفی یقینا نی آخر الزماں کے وسی ہیں۔"
گا ور آب رالنفی رالنفی رالنفی خی تی اس پادری کا کلام سنا تو آب رالنفی کی اسکام سنا تو آب رالنفی کی اسکام سنا تو آب رالنفی کی الرقائی رالنفی میاں تک کہ داڑھی مبارک تر ہوگئی۔

O___O



أشفوال بأب:

حضرت على المرتضلي طالفين كي شهاوت

حضرت على المرتضى والنفط كي والمنافظ مله، والنفط كل والمنافظ المرتضى والنفط كل والميت، والنفط كل والمنطق والنفط كل والمنطق والنفط كل والمنطق والنفط كل والنفط كل والنفط كل المرتضى والنفط كل المرتضى والنفط كل المرتضى والنفط كل المنطق المرتب المام حسن والنفط كل منصب خلافت بر فاتز مونا

O___O



ان میں ہے متاز و اعلیٰ مرتضیٰ بڑائین کا مرتبہ وہ جو اصحاب محمد مطاع کی ایس ہدایت کے نجوم ہے علاج وہم و ریب اس کا یقیس افروز علم اس کی حق ہو تا ہی کا تسخد ہے تریاق سموم اس کی حق ہمائی کا تسخد ہے تریاق سموم

المناسبة على المنافظة كرفيعل المنافظة كرفيعل المنافظة كرفيعل المنافظة كالمنافظة كالمنا

حضرت على المرتضى طالعين برقا تلانه حمله

نبروان میں خارجیوں کو شکست فاش ہوئی تھی۔اس جنگ میں جو خارجی نیک فیلے میں کامیاب ہو گئے تھے انہوں نے حضرت علی الرتفنی ،حضرت امیر معاویہ اور حضرت عمرو بن العاص وی فیل کا منصوبہ بنایا۔ ان خارجیوں کا سردار ابن ملجم نامی فیض تھا۔ ابن ملجم نے حضرت علی الرتفنی والین کی شہادت کی حامی بحری۔ عمر بن بکر متبی نے حضرت عمرو بن العاص والین کی شہادت کی حامی بحری جبکہ برک بن بکر متبی نے حضرت عمرو بن العاص والین کی شہادت کی حامی بحری جبکہ برک بن عبداللہ تیسی نے حضرت امیر معاویہ والین کوشہید کرنے کی حامی بحری چنا نچان بن عبداللہ تیسی نے حضرت امیر معاویہ والین کوشہید کرنے کی حامی بحری چنا نچان بن عبداللہ تیسی نے حضرت امیر معاویہ والین کوشہید کرنے کی حامی بحری چنا نچان بن عبداللہ تیسی المبارک بوقت شخری دونت مے کیا اور اپنے اس نا پاک اراد کے لئے سر و رمضان المبارک بوقت فیم کیا اور اپنے ان نہ موم ارادوں کے لئے روانہ ہو گئے۔

عمر بن بكر حميمى مقررہ دفت پر جامع مسجد قاہرہ پہنچا۔ حضرت عمرہ بن الله حبيبہ کو العاص والفائل اللہ خارجہ بن الله حبيبہ کو العاص والفائل اللہ خارجہ بن الله حبيبہ کو نماز بحر کی امامت کے لئے مسجد بھیج دیا۔ جب انہوں نے نماز کے لئے تحبیر کہی اسی دفت عمر بن بکر حمیمی کو دفت عمر بن بکر حمیمی کو دفت عمر بن بکر حمیمی کو بخترت عمرہ بن العاص والفیز کے سامنے پیش کردیا جہاں اس نے اپنے جرم کا اقرار کرتے ہوئے کہا کہ دہ ان کے قبل کی غرض سے آیا تھا لیکن اتفاقا آج وہ خود نماز پڑھانے نہیں آئے۔حضرت عمرو بن العاص والفیز نے اس اقرار کے بعد است فیان پڑھانے نہیں آئے۔حضرت عمرو بن العاص والفیز نے اس اقرار کے بعد است فیان بڑھانے نہیں آئے۔حضرت عمرو بن العاص والفیز نے اس اقرار کے بعد است

الناسية المالية المالي

تقتل کروا دیا۔

برک بن عبدالله تمیمی جو که حضرت امیر معاویه دنانین کیل پر مامور تها وه بھی مقررہ وقت پر جامع مسجد دمشق پہنچ گیا۔حضرت امیر معاویہ مٹائٹنز نے نماز کے کے امامت شروع کی تو برک بن عبداللہ تھی نے آگے بڑھ کر حضرت امیر معاویہ جنین پر دار مُنیا جس پر وہ زخی ہو گئے۔ برک بن عبداللہ تھی پکڑا گیا اور حضرت امیر معاویه بنائن نه است آل کردادیا۔حضرت امیرمعاویہ منافظ کوجوزخم آئے وہ زیادہ ے نہ ہتھ۔ طبیب نے کہا ان زخموں کو داغنا پڑے گا۔ حضرت امیر معاوب النائد نے انکار کردیا جس کے جواب میں طبیب نے کہا کہ پھردوس عطر یقد علاج میں آپ بنائیز کے توالد و تناسل فتم ہوجا کیں گے۔حضرت امیر معاور برالفیز نے کہا مجھاس کی پرواہ نبیں کیونکہ القدعز وجل نے مجھے بزید وعبداللدوے رکھے ہیں۔ حضرت على الرتضى مِنْ عَنْ يرقا علانه حمله كے لئے ابن ملجم كوفد يہنا۔ ابن ملجم معزكار بينه والاتفااس في كوفه جاكرات حاميون كواكشاكرنا شروع كياجونهروان من في سي الله عند الله دوران الله في اينا رازكس سد بيان ندكيا ـ ايك ون الى كى ملاقات شبیب بن تجره سے ہوئی جواسے اسے کام کا آدمی لگا۔ ابن مجم نے جب ات سين منصوب سے آگاہ كيا تو اس نے ابن مجم كو برا بھلا كہنا شروع كروياليكن ان المستحم في نظر المين و الماكر المين ما ته شامل كرابيا - الى دوران ابن علم كي نظر بنوجیم کی سیک حسین دوشیز و برئ اور وہ اسے ویکھتے ہی اس برمرمثا۔ اس حسینہ نے وبن جم و بہجات لیا اور اس کوائے یاس بلایا۔ ابن مجم جب اس کے یاس گیا تو اس ف اس شرط يرابن جم سے كاح كى حامى بحرى كدوه اسے تين بزار درہم ، ايك غلام ، ا يك اوندى اورا ننرت على الرقضي بالهين كاكتابوا سرمبرين ويهاتو وه اس ي تكاح

المسترع المستري الماني الماني المنافع المنافع

کر لے گی۔ ابن ملجم نے کہا کہ اسے آخری شرط منظور ہے باقی کی شرائط وہ پوری
کرنے پر قادر نہیں۔ بنو تمیم کی اس دوشیزہ نے حامی بھرلی۔ ابن مجم نے اس دوشیزہ
سے کہا وہ اسے اپنے قبیلے کا کوئی قابل اعتاد آ دمی دے تاکہ وہ اپنے اس منصوب کو
پایہ تحیل تک پہنچا سکے۔ اس دوشیزہ نے وردان تامی ایک شخص کو ابن کم کے ساتھ
کرویا۔

سترہ رمضان المبارک ہروز جمعہ نماز فجر کے وقت ابن لمجم اپنے دونوں ساتھیوں هبیب اور وروان کے ہمراہ جامع مسجد کوف پہنچا اور یہ تینوں مسجد کی ایک کونے میں جھپ گئے۔ جس وقت حضرت علی المرتضی دائشن نے نماز فجر کے لئے تشریف لائے اس وقت هبیب نے آگے ہوہ کر آپ دائشن پر پہلا وار کیا۔ هبیب کے وار کے بعد ابن ملجم آگے ہو ما اور اس نے آپ دائشن پر دوسرا وار کیا۔ وردان نے یہ ویکھا تو بھاگ کھڑا ہوا۔ هبیب بھی دار کرنے کے بعد بھاگ لکا جبکہ ابن ملجم کے وردان شخ بید بھاگ لکا جبکہ ابن ملجم کر آپ وردان نے بید بھاگ لکا جبکہ ابن کم کر ایا۔ وردان نے دوستوں سے کیا تو انہوں نے اسے تل کر دیا۔

حضرت علی الرتضی و الفیئو نے زخی حالت میں اپنے بھا نے حضرت ام ہانی وران سورج و الفیئو کے بیٹے حضرت جعدہ و الفیئو کو نماز پڑھانے کا تھم دیا۔ اس دوران سورج طلوع ہو چکا تھا۔ لوگ آپ والفیؤ کو زخی حالت میں گھر لے گئے۔ ابن ملجم کو آپ والفیئو کی خدمت میں چین کیا گیا۔ آپ والفیئو نے اس بد بخت ہے پوچھا کہ بھیے والفیئو کی خدمت میں چین کیا گیا۔ آپ والفیئو نے اس بد بخت ہے پوچھا کہ بھیے کی خدمت میں چین کیا گیا۔ آپ والفیئو نے اس بد بخت ہے بوجھا کہ بھیے کی خدمت میں چین کیا گیا۔ آپ والفیئو نے اس بد بخت ہے دول کو نظر انداز کرتے ہو ہے مارنے پر آمادہ کیا؟ این ملجم نے آپ والفیؤ کے سوال کو نظر انداز کرتے ہو ہے کہا۔

"من نے اس موارکو جالیس روز تک تیز کیا اور الله عزوجل

الناسة على المالية الم

ے دعا کی کہ اس ہے وہ مخص مارا جائے جو خلق کے لئے شرکا باعث ہو۔''

قاتل کے متعلق فیصلہ:

حضرت على المرتضى والغنة فرمايا

"مين و كيدر بابول كه تواس مكوارسه مارا جائے گا۔"

بجرحضرت على المرتضى والغنوك في عاضرين محفل بالخصوص اين فرزند حضرت

سيدنا امام حسن والفئه كومخاطب كرتي موئ فرمايا

"اگر میں جانبر نہ ہوسکا تو تم اسے قصاص کے طور پر ای تکوار کے ایک ہی وار سے قل کر ڈالنا۔"

Q___Q



مضرت على المرتضى طالتين كى وصيت اورآب طالتين كى تدفيين اورآب طالتين كى تدفيين

حضرت على المرتضلي والتنفؤ كا خواب:

روایات میں آتا ہے حضرت علی الرتضای و النظام نے سترہ رمضان المبارک کو خواب میں حضور نبی کریم مضاف کے دیکھا۔ آپ والنظام نے اپنا بیدخواب اسپنے فرزند حضرت سیّدنا امام حسن والنظام سے بیان کیا اور فرمایا میں نے حضور نبی کریم مضافی است کا محکوہ کیا کہ آپ مضافی کی امت نے میرے ساتھ نہایت براسلوک روا رکھا اور مجھے تاحق ستایا۔ حضور نبی کریم مضافی کا کریم مضافی کا کہ آپ مضافی کی کریم مضافی کا کہ تاب کے میں ستایا۔ حضور نبی کریم مضافی کا کہ است کے میرے ساتھ نہایہ۔

"ا على (إلفنه) جم الله عدما كرو-"

میں نے اللہ عزوجل سے دعا کی مجھے ان سے بہتر لوگوں میں پہنچا دے اور میری بہنچا دے اور میری بہنچا دے اور میری بجائے ان لوگوں کا ایسے خص سے واسطہ ڈال دے جو مجھے سے برتر ہو۔ روایات میں آتا ہے حضرت سیّدہ ام کلثوم ذائخیا بنت حضرت علی الرتضی دائنی نے ابن مجم سے فرمایا۔

"تونے میرے باپ کوشہید کر کے مجھ نقصان نہ پہنچایا کیونکہ وہ جنت الفردوں میں اعلیٰ مقام پر فائز ہوں سے جبکہ تو روزِ حشر

المنت على المالية الما

ذ^{لي}ل ورسوا ہو گا۔''

حضرت سيدنا امام حسن طالعين كونفيحت:

روایت میں آتا ہے حضرت سیّدنا امام حسن بڑالٹینڈ نے جب والد ہزرگوارکو زخی حالت میں دیکھا تو آپ بڑالٹینڈ رو پڑے ۔ حضرت علی الرتضی بڑالٹینڈ نے پوچھا حسن (بڑالٹینڈ)! تم کیول روتے ہو؟ آپ بڑالٹینڈ نے عرض کیا۔
دسن (بڑالٹینڈ)! تم کیول روتے ہو؟ آپ بڑالٹینڈ نے عرض کیا۔
د'والد ہزرگوار! میں اس بات پر کیوں نہ رووں کہ آپ بڑالٹینڈ دن میں ہیں۔''
دنیا کے آخری دن اور آخرت کے پہلے دن میں ہیں۔''
حضرت علی الرتضی بڑالٹینڈ نے فرمایا۔
دغیرے فرزند! میری چار باتوں کو یا درکھنا ہے جہیں کہی نقصان

"میرے فرزند! میری چار باتوں کو یادر کھنا ہے جہیں بھی نقصان نہ بہنچا کیں گی۔ اوّل تمام دولت سے زیادہ بردی دولت عقل کی ہے، دوم سب سے بردی محال ہے، دوم سب سے بردی محال ہی حالت ہے، سوم سب سے زیادہ وحشت خود بنی ہے اور چہارم سب سے بہتر چیز اخلاق حسنہ ہے۔ چار باتیں ہے بھی ہیں کہ خود کوائمتی کی دوتی سے بچانا کیونکہ دہ تیرے ساتھ نفع کا ارادہ کرے گا اور نقصان پہنچائے گا۔ خود کوجھوٹوں کی دوتی سے بچانا کیونکہ وہ دور کے لوگوں کو تجھ سے دور کرے گا۔ خود قرر کو بخیل کی دوتی سے بچانا کیونکہ وہ دور کے لوگوں کو تجھ سے دور کرے گا۔ خود ورکو بخیل کی دوتی سے بچانا کیونکہ وہ تجھ سے اس چیز کو دور کرے گا۔ کودر کے گا جس کی تجھے زیادہ ضرورت ہوگی۔ خود کو فاست کی دوتی سے بچانا کیونکہ وہ تجھ سے اس چیز کو دور کرے گا۔ کودر کرے گا جس کی تجھے زیادہ ضرورت ہوگی۔ خود کو فاست کی دوتی سے بچانا کیونکہ وہ تجھے معمولی شے کی خاطر بچے دے گا۔ "

مزید کتب پڑھنے کے لئے آج می وزٹ کریں : www.iqbalkalmati.blogspot.com

المناسر على المالي المالي

کی خدمت میں حاضر ہوکرعرض کیا امیر المونین! کیا ہم آپ طلفہ کے بعد حضرت میں حاضر ہوکرعرض کیا امیر المونین! کیا ہم آپ طلفہ نے فر مایا۔
سیدنا امام حسن طلفہ کے دست اقدس پر بیعت کرلیں؟ آپ طلفہ نے فر مایا۔
''میں اس معالمے میں تم سے کچھ نہ کہوں گاتم اپنے بعد ہے۔
بہتر مجھوا ہے اپنا خلیفہ مقرر کرلیںا۔''

صاحبزادول كووصيت:

حضرت علی المرتفعی رفائیؤ کا جب وقت وصال قریب آیا تو آپ خائیؤ نے اپنے صاحبزادوں کوطلب فر مایا اور انہیں ذیل کی وصیت کی۔

''میرے بچو! بیس تمہیں اللہ عزوجل سے ڈرنے کی نصیحت کرتا ہوں۔ میرے بعدتم دنیا کی محبت میں مبتلا نہ ہو جانا۔ کسی دنیاوی شخصول میں ناکامی پر افسوس نہ کرنا۔ حق بات کہنا اور حق کا ساتھ دینا۔ مظلوموں کی امداد کرنا، بیبوں کے ساتھ حسن سلوک سے چیش آنا۔ ظالم کی جمایت نہ کرنا اور بے کسوں کوسہارا دینا۔ قرآن مجید سے ہوایت لیتے رہنا اور اللہ عزوجل

پھر خضرت علی المرتضٰی ٹاٹھٹڑ نے حضرت سیّدنا امام حسن اور حضرت سیّد تا امام حسین ڈیکٹٹنج کو وصیت کرتے ہوئے فرمایا۔

کے احکام کی روشنی میں ملامت کرنے والے کی ملامت کرنے

''اپنے بھائی محمد (ملائنہ) بن صنیفہ کے ساتھ حسن سلوک سے پیش آتا اور اس کے ساتھ عنو و درگز رہے کام لینا۔'' پیش آتا اور اس کے ساتھ عنو و درگز رہے کام لینا۔'' پھر حضرت علی الرتضلی ملائنہ نے اپنے بیٹے محمد بن حنیفہ ملائنہ کو وصیت

الناسة على المالية الم

كرتے ہوئے فرمایا۔

"اپ دونوں بڑے بھائیوں کی عزت وتو قیر کرنا ان کاحق تم پرزیادہ ہے اور ان کی مرضی کے بغیر کوئی کام نہ کرنا۔" حضرت محمد بن حلیفہ رڈائٹیؤ ،حضرت علی الرتضلی رڈائٹیؤ کے چھوٹے فرزند تھے اور حضرت خولہ بنت جعفر رڈائٹیؤ کے بطن سے تولد ہوئے تھے۔ آپ رڈائٹیؤ کا نام ہمر بن علی رڈائٹیؤ ہے۔

حضرت على المرتضلي طالفيز كا وصال:

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا اِلْمَهِ رَاجِعُونَ

تجهيز وتكفين:

حضرت علی الرتضی و النین کو حضرت سیّدنا امام حسن، حضرت سیّدنا امام حسن و النین اسیّدنا امام حسن و النین اور حضرت میّدنا امام حسن و النین کو حسین اور حضرت میّدنا امام حسن و النین کو دارالا مارت کوفه میں سیر و خاک کیا گیا۔

نے نما فر جنازہ پڑھائی اور آپ و النین کو دارالا مارت کوفه میں سیر و خاک کیا گیا۔

پچھروایات کے مطابق حضرت علی الرتضیٰ و النین کوکوفہ کی جامع مسجد میں مدفون کیا گیا۔

مدفون کیا گیا جبکہ پچھروایات کے مطابق آپ والنین کوکوفہ سے ستر ہ کلومیٹر دور وفن کیا گیا۔

O____O



حليهمباركه

روایات کے مطابق حضرت علی المرتضی دالینی کا قد درمیانہ تھا۔ آپ رالینی کا رنگ گندی تھا۔ آپ رالینی کی آئیس بری اور چبرہ پرکشش تھا۔ آپ رالینی کی آئیس بری اور چبرہ پرکشش تھا۔ آپ رالینی جسم مبارک پر بال بے شار تھے۔ باز واور پنڈلیال گوشت سے بھر پورتھیں۔ آپ رالینی کا جسم مبارک پر بال کم تھے۔ کندھے مضبوط اور چوڑے تھے اور آپ رالین کم تھے۔ کندھے مضبوط اور چوڑے تھے اور آپ رالین مبارک تھی ۔ جو فض آپ رالین کے سرایا کو دیکھیا تو وہ آپ رالین کی ریش مبارک تھی ۔ جو فض آپ رالین کے سرایا کو دیکھیا تو وہ آپ رالین کی میں میں میں میں میں جو جاتا تھا۔

حضرت علی الرتعنی و بافت میشد ساده لباس زیب تن فرماتے ہے اور آپ و بالٹی الرتعنی و بافت میشد ساده لباس زیب تن فرماتے ہے اور آپ و بالٹی تہبند و بالٹی کا لباس دو چا دروں سے زیادہ ند ہوتا تھا۔ ایک چا در سے آپ و بالٹی تہبند باند سے جبکہ دوسری چا در سے جبم مبارک کو ڈھانی تھے۔ آپ والٹی ہمیشہ سر مبارک پرعمامہ باند سے رکھتے تھے۔

O___O

المناسبة على المنافئة كرفيع المنافئة كرفيع المنافئة كرفيع المنافئة كرفيع المنافئة كرفيع المنافئة كالمنافئة كالمنافئة

حضرت على المرتضى طالثن كا خاندان

روایات کے مطابق حضرت علی الرتضلی طافیز نے نو شادیاں کیں۔ جن سے آپ طافیز کی کثیر اولا د تولد ہوئی۔ ذیل میں آپ طافیز کی از داج اور اولاد کا مختصراً تذکرہ بیان کیا جا رہا ہے۔

حضرت سيده فاطمه الزبرا فالثبا:

حفرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فران کا نام "فاطمہ" اور لقب "زہرا" ہے۔
آپ فران کا مصنور نی کر مج مطابقاً کی سب سے چھوٹی اور لاڈلی صاجزادی ہیں۔ آپ فران کا ما الموشین حضرت سیّدہ فدیجہ فران کا کے بطن سے انبوی میں تولد ہو کیں۔
روایات میں آتا ہے کہ جس وقت حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فران کا اپنی والدہ ما جدہ ام الموشین حضرت سیّدہ فدیجہ فران کی بطن میں تھیں تو انہیں جنت کی فوشبو آتی تھی۔ ام الموشین حضرت سیّدہ فدیجہ فران کی اور کو جنور نی کریم میں تھی اور پھر جس وقت حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فران کی تذکرہ حضور نی کریم میں تھی اور پھر جس وقت حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فران کی تذکرہ حضور نی کریم میں تھی ہے۔ کی اور پھر جس وقت حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فران کی تو کسور نی کریم میں تھی تا ہے کہ خوشبو آتی ہے۔ کی خوشبو آتی ہے۔ کی خوشبو آتی ہے۔ "

حضور نی کریم مضطحین کو حضرت سیده فاطمه الز ہرا طالخی سے بے بناه محبت تھی۔ آپ دالغی کی سے بی تنہائی پندھیں یمی دجہ ہے کہ بھی کسی کھیل کود

الاستراك المن المالي المنافق ا

میں شامل نہ ہوئیں۔ آب ذاتیجا، اسنے والد بزرگوار حضور نبی کریم مضاعیاتا کے یاس تشریف فرما ہو جاتیں اور ان ہے مختلف فقہی مسائل دریا نت کرتی رہتیں۔ حضرت ستيده فاطمه الزهرا مُالتَّجُنًا كي ذبانتِ كو ويكفت بويخ ام المومنين حضرت سیدہ خدیجہ منافقہانے آپ مالغہا کی تعلیم وتربیت پر فصوضی توجہ دی۔ آپ مناتفا كى عمر مبارك ابھى صرف دى برس بى تقى كدام المومنين حضرت سيّدہ خديجه ذی خیا اس جہانِ فانی ہے کوج فرما تنگیں۔آپ شائغیا کو دالدہ ماجدہ ہے ہے حد لگاؤ تھا اور یمی وجد تھی کہان کے وصال کے بعد آپ دائے ہا ممکنین رہنے لگ گئیں۔ حضور نی کریم مطاع اعلان نبوت کے بعدمشرکین مکہ کے ظلم وستم سہد رہے تھے۔ مشرکین مکہ کے ظلم وستم روز بروز برحتے جا رہے تھے۔حضرت سیدہ فاطمه الزبرا والطافخ اليدموقعول برب حديريتان موجاتي تحيس اور مهدوقت حضورني كريم مطاع المناع المن من كرتى رجى تعيس رجب آب فالنبا اب والديز دكوار کی بیر کیفیت دیکھتیں تو آپ دافخ کی آنکھوں سے آنسو جاری ہو جاتے تھے۔ حضور ني كريم مطيعة أب في في كالمنافئ كودلاسددية اورفر مات-'' بینی! تم غمز دہ نہ ہوا کر د اللہ عز وجل تہارے باب کو تنہانہیں

حاکم کی روایت ہے حضرت عبداللہ بن عباس خالفین سے مروی ہے فرماتے میں کہ ایک دن حضرت ستیرہ فاطمہ ذافعہا روتی ہوئی حضور نبی کریم مضافحہ کے پاس تشریف لائیں۔حضور نی کریم مطابق نے شفقت سے یو جھا۔ "بيني التم كيول روتي مو؟"

حضرت ستیدہ فاطمہ ڈی نے عرض کیا اباجان! میں کیوں نہ رؤں مشرکین

المناسر عبل الفي الماني الماني

قریش کا ایک گروہ حجر اسود کے پاس لات وعزی ومنات کی تشمیں کھار ہا ہے کہ وہ آب مطاب کے ایس کا ایک گروہ حجر اسود کے پاس لات وعزی ومنات کی تشمیں کھار ہا ہے جس آب مطابق کے اور ان میں کوئی بھی ایسانہیں ہے جس نے آب مطابق کے مقدل خون سے اپنا حصہ پہچانا نہ ہو؟ حضور نبی کریم مطابق نے آب مطابق کے مقدل خون سے اپنا حصہ پہچانا نہ ہو؟ حضور نبی کریم مطابق نے اللہ فرمایا۔

"ميرى بى التم ميرے ياس وضوكا برتن لاؤ۔"

پھر حضور نبی کریم مضائقانی نے وضوفر مایا اور مسجد میں تشریف لے گئے۔
جب مشرکین نے آپ مضائقا کو دیکھا تو پکارے بیردہ، پھران کے سر جمک گئے
اور ان کی ٹھوڑیاں ساقط ہو گئیں اور اپنی آ تکھوں کو اٹھا بھی نہ سکے۔ آپ مضائقانے نے
ایک شھی میں خاک لے کران پر ماری اور فر مایا چہرے بجڑ گئے۔ پھر جس جن فخص
کو اس میں سے کوئی کنگری گئی وہ بدر کے دن حالت کفر میں قبل ہوا۔

> ''فاطمہ (فاطنی)! گمنراؤنیں اللہ تمہارے باپ کو بھی تنہائیں چھوڑئے گا۔''

اجرت مدینہ کے دفت معزت سیدہ فاطمہ الزہرا فالخیا من بلوغت کو بھی اللہ الزہرا فالخیا من بلوغت کو بھی تھی تھیں۔ جب اجرت کمل ہوگئ اور قریباً تمام مسلمان مکہ عرمہ سے مدینہ منورہ بہنی گئے تو حضرت ابو بکر صدیق والٹیؤ نے ایک روز حضور نی کریم میں کا خدمت میں سے

آپ بڑا ہے نکاح کی درخواست کی۔حضور نبی کریم ایشے ایک خواہ اللہ عزوجل چاہے گا وہی ہوگا۔ پھر حضرت عمر فاروق رٹائٹے نئے آپ بڑا ہی سے نکاح کی خواہش فلا ہرکی تو حضور نبی کریم میشے ہے ہے انہیں بھی وہی جواب دیا۔ بعدازاں آپ بڑا ہی کا نکاح حضرت علی الرتضی وٹائٹے سے ہوا۔ بوقت نکاح آپ بڑا ہے کا حمر مبارک بیدرہ برس اور حضرت علی الرتضی وٹائٹے کی عمر مبارک اکیس برس تھی۔

حضرت عبداللہ بن عباس والحفیات مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نی کریم مطابقہ آئے جب حضرت سیّدہ فاطمہ الزہراؤالغیا کا نکاح حضرت علی الرتضی المرتفیٰ المرتفور نی اللہ المرتفی کے ساتھ کر دیا جس کے پاس نہ مال ہے بنہ گھر؟ اس پرحضور نی کریم مطابقہ تے اللہ المجانے مرایا۔

"اے فاطمہ (خلفہ) ایس نے تیرا نکاح ایسے تھی ہے کیا جو مسلمانوں میں علم وفضل کے لیاظ سے سب سے دانا اور مسلمانوں میں علم وفضل کے لیاظ سے سب سے دانا اور بہترین ہے۔"

حضرت فاطمہ الزہرا فی کا محمر حضور نبی کریم مضطفیۃ کے محمر سے پچھ فاصلہ پر واقع تھا چونکہ حضور نبی کریم مضطفیۃ کو اپنی لاڈلی صاحبزادی سے بے پناہ محبت تھی اس لئے ایک دن آپ فیلی کے سے فرمایا۔

"بیا! میرادل جاہتا ہے کہ مہیں اپنے نزدیک بلوالوں۔"
حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا ذائی کے عرض کیا۔
"بابا جان! حارثہ ذائی کے بن نعمان کے کئی مکانات آپ مین کا کا کے مکان کے قرب وجوار میں موجود ہوں اگران سے کہا جائے

المنت المستري المالي المنافع ا

تو وہ کوئی مکان خالی کر دیں گے۔'' حضور نبی کریم منطق کی آنے فرمایا۔

'' حارثہ (طالفنو) نے پہلے بھی مہاجرین کو بہت سے مکانات دیئے ہیں اس لئے اس سے کہتے ہوئے عجیب لگتا ہے۔''

حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤی اس داقعہ کے بعد ظاموش ہو گئیں۔ یجھ روز بعد جب جفرت میں مارشہ دالنے ہی نعمان کو اس بات کا علم ہوا تو وہ حضور ہی روز بعد جب جفرت عارشہ دالنے ہی نعمان کو اس بات کا علم ہوا تو وہ حضور ہی کریم مطابق کے مکان سے کریم مطابق کی خدمت میں جاشر ہوئے اور حضور نبی کریم مطابق کے مکان سے متصل اپنا ایک مکان آپ مطابق کے کا خدمت میں جیش کرتے ہوئے عرض کیا۔

حضور نی کریم مطابع الم حضرت علی الرتضلی دانشی سے فرمایا کہ وہ اپنے اہل خانہ سمیت اس مکان میں منتقل ہوجا ئیں۔

حضرے سیّدہ فاطمہ الر ہراؤی کیا نہایت ہی صابر خاتون تعیں۔ آپ بڑی کہا کا کہ گفتگو کا انداز حضور نبی کریم مطابع کیا ہے مشابہ تھا اور آپ بڑی کہا ان کی زندگی کا بہترین نمونہ تعیں۔ آپ بڑی کہا آپ کے گھر کا تمام کام اپنے ہاتھوں سے کرتی تھیں۔ بہترین نمونہ تعیں۔ آپ بڑی کہا آپ ہاتھوں میں کی مرتبہ چھالے پڑ جاتے تھے۔ گھر میں چکی بیستے پیستے آپ بڑی کہا کے ہاتھوں میں کی مرتبہ چھالے پڑ جاتے تھے۔ گھر میں جھاڑ ددیتیں، کبڑے دھوتیں اور اس کے علاوہ رضائے خداو تدی کے لئے بیج وقت نمازوں کی پابندی اور تسبیحات کے لئے بھی وقت نکالتی تھیں۔ حضرت علی الرتعنی منازوں کی پابندی اور تسبیحات کے لئے بھی وقت نکالتی تھیں۔ حضرت علی الرتعنی

المناسبة على المنافظة كالمعلى المنافظة كالمعلى المنافظة كالمعلى المنافظة كالمنافظة كال

طالنہ کے گھریلو حالات زیادہ اچھے نہ نتے اس لئے اکثر گھر میں فاقہ ہوتا۔ اگر حضرت علی الرتضلی طالنی کو کہیں مزدوری مل جاتی تو گھر میں کھانے کا پچھا تظام ہو جاتا۔ آپ طالنی نے بھی حضرت علی الرتضلی طالنی سے ضد نہ کی اور نہ ہی بھی ان جاتا۔ آپ طالنی نے بھی حضرت علی الرتضلی طالنی سے ضد نہ کی اور نہ ہی بھی ان سے کسی چیز کے نہ ہونے کا شکوہ کیا۔

بخاری شریف کی روایت ہے کہ ایک مرتبہ فتوحات کے زمانہ میں بے شاہر غلام اورلونڈیاں بطور مال غنیمت آئیں۔حضرت علی الرتضی مٹائنے نے حضرت سیدہ فاطمه إلز برا فالغجا سے كباكه وه حضور ني كريم يضيَعَيْن كى بارگاه بيس جاكر كمريلوكام كاج كے لئے كوئى لونڈى ما تك ليس تاكه كمريلوكام كاج ميسان كى مدد ہوسكے۔ حضرت سيّده فاطمه الزبرا والفيئ حضور ني كريم الطيئة في خدمت مين يبنيس تو آب ين الله المرموجود ند تنے۔ ام المونين حضرت سيدہ عائشه مديقة ذال أن آب ذلی او بھت کی اور آنے کی وجہ دریافت کی۔ آپ زائفی نے اپناما ما بیان کیا تو ام المونين حضرت سيده عائشه صديقه ذلان النهائد على كريم يضافيا ك آنے پران سے بات کریں گی۔آپ زان این کھروایس تشریف کے کئیں اور بجرحضورني كريم يطفيكة تشريف لائة توام المونين حضرت سيده عائشه صديلته فالثاني نے حضرت سیدہ فاطمہ الز ہران فینا کے آئے کی اطلاع دی اور ان کا مدعا بیان کیا۔ حضور نبی كريم مطاع اس وقت فورا آب ذائفها كر كريم مطاع اور آب ذائفها کومخاطب کرتے ہوئے فرمایا۔

> "بین! میں تہمیں فی الحال کوئی لونڈی یا غلام نہیں دے سکتا کیونکہ ابھی مجھے اصحاب صفہ کی خور دونوش کا بندو بست کرنا ہے اور میں ان لوگوں کو کیسے بھول جاؤں جنہوں نے وین اسلام

المناسبة على المالية ا

كى خدمت كے لئے اينے كھربار كو جھوڑ ديا تاكه اللہ اور اس ك دسول (مطاعظة) كى خوشنودى حاصل كرسكيس" پھر حصنور نبی کریم منظور کھانے فرمایا کہ میں تمہیں آج ایسی بات بتاتا ہوں جو تمہارے کئے نونڈی اور غلام کی نبت ہزار ہا درج بہتر ہے۔حضرت سیدہ فاطمه الزبرا والخالفي أفي كياكه ضرور بتاية _آب مضيكة إفي فرمايا "مم رات کوسوتے وقت اور ہر نماز کے بعد ۳۳ مرتبہ سجان الله، ١٣٣ مرتبه الجمد لله اور ١٣٣ مرتبه الله اكبريره اكروبيمل تہارے کئے لونڈی اور غلام کی نسبنت کئ گنا بہتر ہوگا۔" ايك مرتبه حضرت سيّده فاطمه الزهرافي في مسجد نبوي مطاعيمة من حضور نبي كريم مضاعيًة في خدمت مين تشريف لائمي اورجوكي روفي كا أيك كلوا بيش كيا_ حضرت على الرئضى والفئز تنن ون كے فاقد كے بعد تعور سے جولائے تھے جنہيں

حضور نی کریم مطاع اللے ان ور یافت کیا کہ بہ کہاں سے آیا؟ آپ داللہ نے بتایا کہ بیں کر میں نے رونی بنائی۔ جب میں رونی بچوں کو کھلانے لکی تو خیال آیا کہ آپ مطاعظة كو بھی تھوڑی می روتی دے دوں۔حضور نبی كريم مطابقة نے روتی تناول

كرتے ہوئے فرمایا۔

"اے میری بنی! میں جارروز سے فاقہ سے ہول اور جارروز بعد بدرونی کا پہلانگڑا ہے جومیرے منہ میں پہنچا ہے۔'' أيك مرتبه حضرت سيّده فاطمه الزهران في شديد بيار من مبتلاتيس بنار كى وجد سے البيس منيند بھى نه آر بى تھى -حصربت على الرتضى دالفور بھى آب ذائفواك ساتھ ساری رات جا گئے رہے۔ پچھلے پہر جب آپ ڈاٹنج کی آنکھ لکی تو حضرت علی

المناسرة على المنافظ كي المعلى المنافظ كي المعلى المنافظ كي المعلى المنافظ كي المنافظ كي المنافظ كي المنافظ كالمنافظ كال

المرتضى والتنافي المرتضى والتنافي المرتضى والمنافي والمرتضى والمرتضى والتنافي والمرتضى والتنافي والتن

''میں اپنے فرائض کی اوائیگی ہے بھی غافل نہ ہوں گی یہاں بنک کہ مجھے موت آ جائے۔ مجھے میرے والدحضور نبی کریم بنگ کہ مجھے موت آ جائے۔ مجھے میرے والدحضور نبی کریم بطخ ہوں کے اللہ عزو جل کی عباوت اور آپ (مجھ ننڈ) کی اطاعت کا درس دیا ہے۔''

حفرت سلمان فاری و الفنظ سے منقول ہے کہ ایک مرتبہ حضور ہی کرمی میں معرف ایک مرتبہ حضور ہی کرمی میں کام سے بھیجا میں جب حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤالفی کے گھر کیمین کرمیمین وی اُنظم الز ہراؤالفی کے گھر پہنچا تو حسنین کرمیمین وی اُنظم اس وقت سورے ہے اور حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤالفی اس وقت قر آن مجید کی تلاوت فرما دی تھیں ۔ آپ والفی کی زبان مبارک سے قر آن مجید کے الفاظ من کر مجھ پر رفت طاری ہوگئی جو کافی دیر تک طاری رہی۔

حضرت سيّدنا امام حسن و والفين فرمات مين كه ايك مرتبه جمين كهانا ايك وقت كے بعد ميسر آيا۔ مين، بھائى حسين (والفين اور والد برزر گوار حضرت سيّدناعلى الرفض والله برزر گوار حضرت سيّدة فاطمه الزبرا والفين كهانا المرفض والفين كهانا كها جي اور والده ماجده حضرت سيّده فاطمه الزبرا والفين كهانا تناول فرنانے كي تحصين كها يك سائل نے دروازے پرصدا لگائى كه اے بنت رہول تناول فرنانے كي تحسين كه ايك سائل نے دروازے پرصدا لگائى كه اے بنت رہول

الناسترع الدر تفي الفيزك فيعلى

الله منظ وَلَيْهِ اللهُ مِن مِن مِن ووقت ہے جھوکا ہوں مجھے کھانا کھلا دو۔ والدہ ماجدہ نے جسوکا ہوں مجھے کھانا کھلا دو۔ والدہ ماجدہ نے جب اس سائل کی صداسی تو آب زائے ہانے اپنا کھانا مجھے دیتے ہوئے فر مایا۔
''جاؤیہ کھانا اس سائل کو دے آؤیس نے تو ایک وقت کا کھانا مناسل کو دے آؤیس نے تو ایک وقت کا کھانا مناسل کو دی آؤیس نے تو ایک وقت کا کھانا میں کھایا جبکہ وہ دو وقت سے بھوکا ہے۔''

حفرت عبداللہ بن عباس واللہ اسے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ حضرت علی الرتضی واللہ ان عباس واللہ است محت کر کے ایک باغ سینیا اور اس کی اجرت میں آپ واللہ کو چند جو لے آپ واللہ ان کی ایک باغ سینیا اور روئی تیار کی الز جرافی ان کو دیئے ۔ آپ واللہ ان جو بھی میں چیں کر آٹا بنایا اور روئی تیار کی ۔ جس وقت کھانے کے لئے سب گھر والے جیٹھے تو اس دوران ایک مسکین نے گھر کا دروازہ کھنا میا اور کہا کہ میں جو کا بول ۔ آپ والی نے سارا کھانا اس مسکین کو دے دیا اور دوبارہ کھانا تیار کیا ۔ آپ والی نے سارا کھانا اس مسکین کو وے دیا اور دوبارہ کھانا تیار کیا ۔ آپ والی فرمانے ہی گئے تھے کہ ایک دیا ۔ وروازہ پر آپ والی نے اپنے کے کھانا تیار کیا تو ایک مشرک قیدی نے دروازہ پر اللہ دیا ۔ آپ والی کی دروازہ پر اللہ اس مقرک قیدی کو دے دروازہ پر اللہ اس مقرک قیدی کو دے دیا ۔ اس موقع پر اللہ اس مشرک قیدی کو دے دیا ۔ اس موقع پر اللہ عروصل نے صفور نبی کر یم میں آپ والی اور ان کے گھر والوں کے اس فعل کو پند کرتے ہوئے ارشاد فرمایا ۔

"اور ده الله كي راه يسمسكين اوريتيم اور قيدي كو كهانا كهلات

حضرت انس بن ما لک رہائٹڑ جو کہ حضور نبی کریم مضططیقیم کے خادم خاص شخصے اور حضور نبی کریم مضائلیج کی کھر کے ایک فرد کی مانند شخصے وَہ حضرت سبّدہ فاطمہ

الاستراعي الماني الماني

الزہرا ذائع کے بردہ کے بارے میں بیان کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا ذائع کی بیدہ کے حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا ذائع کی ان کے کسی بچہ کو مانگا تو آپ ذائع کا نے بردہ کے بیچھے کے بید بھرا دیا۔

ام الموسین حضرت سیده عائشه صدیقه ولی بین بین میں نے حضرت سیده فائشی الله الزمرا ولی بین میں نے حضرت سیده فاظمه الزمرا ولی بی سے زیاده کسی کو حضور نبی کریم مضابہ بین دیکھا۔ آپ ولی بی کا مشابہ بین دیکھا۔ آپ ولی بی کو مشابہ بین جال اور اپنے اخلاق میں سب سے زیادہ حضور نبی کریم مشابہت رکھنے والی تھیں۔

مفسرین کرام کی ایک جماعت کا قول ہے کہ حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فاطمہ الزہرا فاطمہ الزہرا فی علیہ اللہ کی عرح حیض و نفاس سے پاک تھیں اس لئے آپ والٹھا کو ان نہا ہوائے کا چونکہ حیض و نفاس سے پاک تھیں اس لئے آپ والٹھا کو ان نہرا'' کہا جاتا ہے۔ آپ فیلٹھا چونکہ حیض و نفاس سے پاک تھیں اس لئے آپ فیلٹھا سے بھی کوئی نماز قضا نہ ہوئی تھی اور جس وقت آپ فیلٹھا کے بچہ کی ولادت ہوتی تو آپ فیلٹھا فورا ہی پاک ہوجاتی تھیں۔

حضرت اساء فلی بنت عمیس جوحضرت ابو برصدین والفظ کی زوج تھیں وہ فرماتی ہیں جب حضرت سیدنا امام حسن والفظ کی ولادت باسعادت ہوئی تو میں اس وقت حضرت سیدنا امام حسن والفظ کی ولادت باسعادت ہوئی تو میں اس وقت حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا والفی کے باس بطور دایہ موجودتی اور میں نے کوئی خون جو بوقت ولادت ہوا کرتا ہے وہ نہ دیکھا تو حضور نبی کریم میلی کی اس کا ذکر کیا۔ آپ میلی کی فرمایا۔

"کیاتم نہیں جانتی کہ میری بٹی طاہرہ مطہرہ ہے اسے حیض کا خون بھی جاری نہیں ہوتا۔"

ام المونين حضرت سيده عائشه صديقه وللفخاس مروى ب فرماتي بي كه

المنت المسلم المنافعة كي فيعل المنافعة كي فيعل المنافعة كي فيعل المنافعة كي فيعل المنافعة الم

حضور نی کریم مضایقات نے فرمایا۔

"اے فاطمہ (رہے ہے) ایما تو راضی ہیں کہ تو جنت کی عورتوں کی سردار ہے۔"

حصرت ابوابوب انصاری والفنظ فرمات بین که حضور نی کریم مطاق ا

فرمايابه

"دو زمخشر ندا کرنے والا ندا کرے گا کہ اے میدان حشر میں جمع ہونے والو اپی نگاہوں کو نیچا کرلو یہاں تک کہ حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فی نگاہوں سے گزرجا کیں۔ روز محشر حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فی نگاہوں کے ہمراہ ستر ہزار جوریں باندیوں کی سیّدہ فاطمہ الزہرا فی نی کے ہمراہ ستر ہزار جوریں باندیوں کی ماند گزر ماند ہوں گی اور آپ فی نی کی مراط ہے بیلی کی ماند گزر جا کیں گی۔"

جائیں گی۔' روایات میں آتا ہے کہ حضور نی کریم مین جب بھی کسی غزوہ میں شمولیت کے لئے یا پھر کسی سنر کی غرض سے نکلتے تو سب سے آخر میں حضرت سیدہ

فاطمد الزبران فالمدالز بران فالم كالمرتشريف لے جاتے اور جلب بھی كسى غزوہ يا سفرسے واپس

لوٹے تو سب سے پہلے حضرت سیدہ فاطمہ الز ہرائی کا سے محری انتریف کے

جائے تھے۔ حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا ذائغ اجب حضور نی کریم مطابع کودیکھیں تو ان کے ہاتھ چوشیں اور آپ مطابع آن کی بیٹانی پر بوسہ ویتے تھے۔

. حضرت سيده فاطمه الزبرا والخافظ اسے دريافت كيا ميا كه جاليس اونوں كى

زكوة كياب؟ آپ ذالغنائ فرمايا۔

" تمہارے کے ایک اونٹ بی زکوۃ ہے اور اگر میرنے پاس

المنترا المنتان المنتال المنتا

جالیس اونٹ ہوں تو وہ میں تمام کے تمام اللہ عزوجل کی راہ میں دے دول۔''

ام المومنین حفرت سیّده عائشه صدیقه فی ایشه صروی ب فرماتی بین که حضور نی کریم بط ایک است منتقل چا در اور هر کلی تلی به بیان این بین که مولی می دخترت سیّدنا امام حسن و این این بین کی ایس آئے تو آپ بط ایک آئے آتا آپ بین کا ایک ایس آئے تو آپ بط ایک آئے آتا امام حسن و این کا ایک ایس آئے تو آپ بط ایک آئے تو آپ بین کا ایک جا در میں وافل کر لیا۔ پھر حضرت سیّدنا امام حسین وافل کر لیا۔ پھر حضرت سیّدہ فاطمہ الر براؤلائی ایک تو آپ بط ایک کا ایک بین بھی اس جا در میں وافل کر لیا۔ پھر حضرت سیّدہ فاطمہ الر براؤلائی تو ایک بین تو آپ بط ایک کی اس جا در میں وافل کر لیا۔ پھر حضرت میں وافل کر لیا۔ پھر حضرت میں وافل کر لیا۔ پھر حضرت کی ایک جا در میں وافل کر لیا۔ پھر حضرت کی ایک بیادر میں وافل کر لیا۔ پھر حضرت کی ایک بیادر میں وافل کر لیا اور پھر فرایا۔

"الله عزوجل جابتا ہے کہ میرے گھر والوں سے ہراتم کی

تاپاکی کو دور کر دے اور تمہیں صاف سخرا کر دے۔"
حضرت علی الرتفنی دائن ہے منقول ہے فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ میں گھر
میں وافل ہوا تو دیکھا کہ حضور ہی کریم ہے تا امام حسین دائن ہیں اور حضرت سیّد تا امام حسین دائن ہوا ہیں اور حضرت سیّد تا امام حسین دائن ہوا ہیں تھریف فرما ہیں جبکہ حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا دائن ہی آپ ہے تاہی ہا کی میں جبکہ حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا دائن ہی آپ ہے تاہی ہے ہیں جبکہ حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا دائن ہی وونوں سامنے تشریف فرما ہیں۔حضور نبی کریم ہے میں تاہم اور حسین (دائن ہی وونوں میں اس کے بلاے ہیں جبکہ فاطمہ (دائن ہی اس کا ترازو ہے اور میزان کے بلاے ہیں جبکہ فاطمہ (دائن ہی اس کا ترازو ہے اور میزان کے بلاے ہیں جبکہ فاطمہ (دائن ہی اس کا ترازو ہے اور ترازو دو بلاوں پر ہی قائم رہتا ہے جبکہ تم روز بحشر لوگوں کا اج

المناسبة عمل المنافعة كالمنافعة كالم

تقسیم کرو گے۔''

ام الموسین حضرت سیده عائشه صدیقد فی این سروی ہے فرماتی ہیں کہ حضور نبی کریم میں ہیں جائے ہیں کہ حضور نبی کریم میں ہیں ہی اور اللہ میں اپنی لا ڈبی صاحبزادی حضرت سیده فاطمہ الزہرافی ہی کو بلا بھیجا۔ جب آپ فی ہی کہ کہا جس پر وہ رو پڑیں۔ پھر دوبارہ حضور نبی کریم میں ہی کہ کہا جس پر وہ رو پڑیں۔ پھر دوبارہ حضور نبی کریم میں ہی کہ کہا جس پر وہ رو پڑیں۔ پھر دوبارہ حضور نبی کریم میں ہی کہ کہا تو وہ مسکرا پڑیں۔ میں نے آپ حضور نبی کریم میں ہی کہ کہا تو وہ مسکرا پڑیں۔ میں نے آپ خات کہا تو وہ مسکرا پڑیں۔ میں دریافت کیا تو آپ فرانی مال کئیں۔ پھر جب حضور نبی کریم میں دریافت کیا تو آپ فرانی مال کئیں۔ پھر جب حضور نبی کریم میں دریافت کیا تو میں نے ایک مرتبہ پھر اصرار کر کے دریافت کیا تو آپ فرانی نہیں نے ایک مرتبہ پھر اصرار کر کے دریافت کیا تو آپ فرانی نہیں نے ایک مرتبہ پھر اصرار کر کے دریافت کیا تو آپ فرانی۔

" حضور نی کریم بط این از میں رودی۔ پہلے جھے اپ وصال کی خبر دی جس کوس کر میں رودی۔ پھر آپ مط ایک جھے سے خبر دی جس کوس کر میں رودی۔ پھر آپ مط ایک جھے سے فرمایا تم جنت کی عورتوں کی سردار ہواور میرے اہل میں سب سے پہلے تم جھے ہے آن ملوگی جس کوس کر میں مسکرا دی۔ "

حضرت عبداللہ بن عباس والحقیظ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نہی کریم مطابق اللہ و روز گریہ میں بسر کریم مطابق کے شب و روز گریہ میں بسر ہونے گئے اور انہوں نے کھانا پینا بھی ترک کر دیا یہاں تک کہ ان کی بینائی بھی کر در یا یہاں تک کہ ان کی بینائی بھی کر در پڑگئ اور نوبت یہاں تک جواب دینا شروع کر دیا۔

حفرت عبدالله بن عباس المنظمة الرمات بين ايك روز رات كاند عبرك مين حفرت سيده مين حفرت سيده مين حفرت سيده

المنترع الدرتفي المنتزك فيعلى المنتوك المنتوك

فاطمہ الزہرا ڈائٹٹٹائے ان کی حالت دیکھی تو ان کی آٹھوں سے آنسو جاری ہو گئے۔ حضرت بلال طائٹۂ نے عرض کیا۔

> > حضرت سيّده فاطمه الزهرا والمنتجاب فرمايا

''اے بلال (طلبین)! الله عزوجل کی تشم جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے میرے گھر میں اس دفت مجھ بھی کھانے کو نہیں۔''

حضرت عبداللہ بن عباس دلی فرماتے ہیں بھرحضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا ذلیجنا نے قدر بے توقف کے بعد فرمایا۔

> ''میں تہہیں اپنی جا در اوڑ خاتی ہوں اس کی برکت ہے تہہیں مجوک اور پیاس کا احساس بھی نہ ہوگا۔''

کھر حضرت سیّدہ فاطمہ ذائع نی آئیں اپی جا در اوڑ ھا دی اور پھر حضرت سیّدنا بلال دلی نی کھوک کا شائبہ بھی ندر ہا اور وہ وہاں سے رخصت ہو گئے۔

حضور نبی کریم مضائے آئے وصال کے بعد حضرت سیّدہ فاطمہ الزہراؤلی ہے اپنی تمام تر توجہ عبادت الی پر مرکوز فرما دی۔ آپ ذائی اپنی بیوں کا ہر طرح سے دھیان رکھتیں اور انہیں مختلف جسم کی تھیمتیں بھی کرتی رہتی تھیں۔ حضرت علی الرتضلی ڈالٹن جسی الا مکان کوشش کرتے کہ وہ آپ ڈالٹن کو خوش رکھیں۔ آپ ڈالٹن کا المرکان کوشش کرتے کہ وہ آپ ڈالٹن کو خوش رکھیں۔ آپ ڈالٹن کا کے گریہ میں روز بروز اضافہ ہوتا جارہا تھا یہاں تک کہ آپ ڈالٹن کو بھی موت کا

بلاوا آگيا۔

حضرت ابو بکرصد بق طالفیهٔ کی اہلیہ حضرت اساء بنت عمیس طالفهٔ کی اہلیہ حضرت اساء بنت عمیس طالفهٔ کا ،حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا طالفهٔ کی اچھی دوستوں میں شارہوتی ہیں۔

حضرت ام جعفر فران کے منقول ہے کہ حضرت سیدہ فاطمہ الز ہراؤالی ا نے ایک روز حضرت اساء بنت عمیس فران ہے ایک کہ جھے یہ بالکل اچھانہیں لگتا جس طرح آج کل عورتوں کا جنازہ لے کر جایا جاتا ہے ان کے او پر ایک چا در باز دیتے ہیں جس سے پردہ نہیں ہوتا اور عورتوں کی جسامت ہمی دکھائی ویتی ہے۔ حضرت اساء بنت عمیس فران کی فرایا کہ میں نے جبشہ کے لوگوں میں دیکھا ہے حضرت اساء بنت عمیس فران کیا جاتا ہے تو اس پر تازہ کھجوروں کی شاخیس منگوار کر کہ جب عورتوں کا جنازہ اٹھایا جاتا ہے تو اس پر تازہ کھجوروں کی شاخیس منگوار کر چواتی ہے کہ یہ عورت کا جنازہ ہے اور پردہ بھی برقر ار رہتا ہے۔ آپ فران کی بیجان فرمایا کہ جب میراوصال ہو جائے تو میرا جنازہ بھی ای طرح اٹھانا اور تہارے اور

حضرت اساء ذائی بنت عمیس فرماتی ہیں کہ حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فرائی ہیں کہ حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا فرائی ہیں ان کے جمرہ سے باہر چلی جاؤں چنانچہ میں باہر چلی گئ اور آپ ذائی نے بارگاہ خدادندی میں مناجات شروع کر دیں۔ میں نے جمرہ کے دروازہ پرکان لگائے تو آپ ذائی ہی کہتے ہوئے سنا۔

المناسرة على المناعظة كي فيعلى المناطقة المناعظة كي فيعلى المناطقة المناطقة

کے غم میں مبتلا ہیں اور حسنین کریمین دی آئیز کے اس غم کے صدقے ہے جو انہیں میری جدائی کی صورت میں انہیں ملنے والا ہے اور میری چھوٹی چھوٹی بچیوں کے صدقہ سے جو میرے غم کو ہر داشت نہ کریا ہیں گی تو میرے بابا جان کی گنہگار! مت کو بخش دے اور ان کے حال پر رحم فرما اور ان سے عفو و درگزر کا معاملہ فرما۔''

حضرت اساء ولخافظ فرماتی ہیں میں نے حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا ولی فظی کی دعامی و عاصی الزہرا ولی فظی کی دعامی تو ہے اختیار میری جیخ نکل گئی۔

حضرت سيّده فاطمه الزبرا فلطخ في عسر رمضان المبارك اله كواس جهان فانى سے كوئ فرمايا۔ آپ فلطخ كى وصيت كے مطابق حضرت اساء بنت عميس فلطخ كان سے كوئ فرمايا۔ آپ فلطخ كان وصيت كے مطابق حضرت اساء بنت عميس فلطخ كان سے آپ فلط كان اور حضرت على الرتضى ولائن سے قبر ميں اتارا۔ آپ فلط كان سے آپ فلط كان ميا اور حضرت على الرتضى ولائن من منون كيا حميا۔

حضرت ام البنين ظافةً بنت حرام كلابيه:

حضرت سيّده فاطمه الرّ براؤان كى زعرگى بين حضرت على الرتفنى والفي والفي في كوئى نكاح نه كيا تقال حضرت سيّده فاطمه الرّ براؤان كاح وصال كے بعد آپ والفي سيّده فاطمه الرّ براؤان كاح وصال كے بعد آپ والفي في سيّد حضرت ام البنين فالفي بنت حرام كلابيہ سے نكاح كيا جن كے بطن سے حضرت عباس، حضرت جعفر، حضرت عبدالله اور حضرت عثمان وَيَ المَّذَمُ عِيار وَر زند تولد ہوئے۔ بي جائى حضرت سيّدنا ام حسين والفي كي بي واروں صاحبزادے ميدان كر بلا ميں اپنے بھائى حضرت سيّدنا ام حسين والفي كي بي الله ميں والفي كي مسرت ميدان كر بلا ميں اپنے بھائى حضرت سيّدنا ام حسين والفي كي مراه شهيد ہوئے۔

روایات میں آتا ہے حصرت سیدہ فاطمہ الزہرا دلافیا کے وصال کے بعد

المناسرة على المناخ الأفيز كرفيعلى المناخ ال

حضرت علی الرتضی والنونو نے اپنے بھائی حضرت عقیل والنونو بن ابی طالب سے نکاح کی خواہش کا اظہار کیا اور کہائم مجھے عرب کی کسی نیک عورت کے متعلق بناؤ۔ حضرت عقیل والنونو کے اندان کو قبائل حضرت عقیل والنونو نے کہائم ام البنین والنونو کے عقد کرلو کہ ان کے خاندان کو قبائل عرب میں نمایاں مقام اور عزت و مرتبہ حاصل ہے چنانچہ آپ والنونو نے اپنے بھائی کے مشورہ پر حضرت ام البنین والنونو کا کے مشورہ پر حضرت ام البنین والنونو کا کے مشورہ پر حضرت ام البنین والنونو کا سے نکاح کرلیا۔

حضرت ام البنین بنائنیا، حضرت علی المرتضی بنائنیا کی منکوحہ کی حیثیت اللہ تضافی بنائنیا کی اولا دکو ایک مال سے گھر آ کیں تو آپ بنائنیا نے حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا بنائنیا کی اولا دکو ایک مال کا بیار دیا اور ان پر اپنی محبت و ایٹار کے پھول نچھا در کئے اور جب آپ بنائیا کے بال بھی اولا د تولد ہوئی تو پھر بھی حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا بنائنیا کے بچوں سے محبت میں پچھ کی نہ آئی بلکہ انہیں اپنی اولا دیر مقدم رکھا۔

واقعہ کر بلا کے وفت حضرت ام البنین ظافی زندہ تھیں اور مدینہ منورہ میں مقیم تھیں۔ جب آب ظافی کو واقعہ کر بلا کی اطلاع ملی تو آپ ظافی جنت البقیع . تشریف لے گئیں اور کافی دیر تک آنسو بہاتی رہیں۔

حصرت ليل والنوائي بنت مسعود:

حضرت علی الرتضی والنفی کا تیسرا نکاح حضرت کیلی والنفی بیات مسعود سے مواجن سے حضرت علی والنفی کے اللہ مسعود سے مواجن سے حضرت عبیداللہ اور حضرت ابو بکر دی النفیز تولد ہوئے۔ آپ دی النفیز کے ان دونوں صاحبزادوں نے بھی میدان کر بلا میں جام شہادت نوش فر مایا۔

حضرت اساء منافقها بنت عميس:

حضرت على الرتضى وللفيئو نے چوتھا تكاح حضرت اساء وللفی بنت عميس

سے کیا جو حضرت ابو بکر صدیق والفن کی زوجہ تھیں اور حضرت ابو بکر صدیق والفن کی خوات کے است کیا جو حضرت ابو بکر صدیق والفن کی کے بعد بیوگی کی زندگی بسر کر رہی تھیں۔ ان سے حضرت محمد اصغر اور حضرت بیلی وی کا انتہا تولد ہوئے۔

روایات کے مطابق ان دونوں صاحبز ادوں نے بھی میدانِ کر بلا میں جامِ شہادت نوش فرمایا۔

حضرت سيده امامه شيخها:

حضرت علی الرتضی رای نیز کا پانچوں نکاح حضرت سیدہ امامہ والی نیا سے ہوا۔ خضرت سیدہ امامہ والی نیا کہ مضور نبی کریم مین کی رختر نیک اختر حضرت سیدہ امامہ والی نیا کہ حضور نبی کریم مین کی میں حضرت سیدہ امامہ والی نیا کہ میں میں میں میں میں کریم مین کی میں حضرت سیدہ امامہ والی نیا کہ میں انہیں اپنے والی کا میں انہیں اپنے کا میں انہیں اپنے کا میں میاتے تو انہیں اتار دیتے اور جب رکوع میں جاتے تو انہیں اتار دیتے اور جب کے بعد دوبارہ تیا م کرتے تو انہیں پھر اٹھا کر کندھوں پرسوار کر لیتے۔ روایات کے مطابق حضرت علی الرتضی والی والی والی میں اللہ میں خاصرت سیدہ فاطمہ الز مراؤی کی وصیت کے مطابق حضرت علی الرتضی والی فین نے حضرت سیدہ فاطمہ الز مراؤی کی وصیت کے مطابق ان سے نکاح کیا۔ حضرت سیدہ امامہ والی نیا کی میں سے حضرت محمد اوسط والی نیا تولد ہوئے۔

حضرت خوله طالعينا بنت جعفر

حضرت علی الرتضی والی کا جھٹا تکاح حضرت خولہ والی بنت جعفر سے موا۔ جن کے بطن سے معظم سے موا۔ جن کے بطن سے حضرت محمد الا کبر والی ہوا۔ جن کے بطن سے حضرت محمد الا کبر والی ہوا۔ جن کے بوتاری میں محمد بن حنفیہ والا بر میں ہور ہوئے ۔
دلانی کے نام سے مشہور ہوئے ۔



حضرت صهبا طالعها بنت ربيعه تغلبيه:

حضرت على المرتضى مثالثة نے ساتوال تكاح حضرت صهبا مثالثة بنت ربیعہ تغلبیہ سے كیا جن سے حضرت رقید مثالثة اتولد ہوئیں۔

حضرت ام سعيد رئي بنا بنت عروه بن مسعود تقفي:

حضرت علی الرتضی طالعین کا آٹھوال نکاح حضرت ام سعید والفیا بنت عروہ بن مسعود تقیقی بنت عروہ بن مسعود تقیقی سے ہوا۔ حضرت ام سعید والفی سے حضرت ام الحسن والفی اور حضرت مرملہ کبری والفی آئولد ہوئیں۔

عفرت مياة طالفينا بنت امراء القيس:

حضرت علی الرفضی دانشن می اینا نوال اور آخری نکاح حضرت محیا آفری بی بنت امراء القیس سے کیا جن سے آپ دانشن کی ایک بیٹی نولد ہوئیں جو بچپن میں بنت امراء القیس سے کیا جن سے آپ دانشن کی ایک بیٹی نولد ہوئیں جو بچپن میں بی اس جہان فانی سے کوچ فرما تمکیں۔

خاتون جنت طلخنا كى اولاد كاتذكره

حضرت علی الرتضی و النفظ کے ہاں خاتون جنت حضرت سیدہ فاطمہ الزہرا و النفظ سے تین بینے حضرت سیدنا امام حسن، حضرت سیدنا امام حسن، حضرت سیدنا امام حسن و النفظ سے تین بینے حضرت سیدنا امام حسن و النفظ بین بین بین وصال فرما امام حسن و کافیظ بین بین بین وصال فرما سید می وصال فرما سیدہ دو بیٹیاں حضرت سیدہ انداز المام حسن و کافیظ اور حضرت سیدہ ام کلوم و کافیظ تولد موسکی۔

ذیل میں حضرت علی الرتفنی والنفظ کی خانون جنت والنفظ ہے اولاو کا تذکرہ مخضراً بیان کیا جارہا ہے تا کہ قارئین کے لئے ذوق کا باعث ہو۔

المناسبة على المنافعة كل المعلى المنافعة كل المعلى المنافعة كل المنافعة كل المنافعة كل المنافعة كالمنافعة كل المنافعة كل المنا

حضرت سيدنا امام حسن طالتُعنهُ:

شبیہ رسول اللہ مضریح الموجم حضرت سیدنا امام حسن بن علی المرتضی والفیما کا شار تابغہ روزگار حضرات میں ہوتا ہے۔ آپ والفیما حضور نبی کریم مضریح آپ والسہ اور شکل وصورت میں حضور نبی کریم مضریح آپ والفیما کے سب سے زیادہ مشابہ ہیں۔ آپ والفیما کی مصرت سیدہ فاطمہ الزہران الفیما کی المحصول کا نور اور حضرت سیدہ فاطمہ الزہران الفیما کی دھر کن جیں۔ آپ والفیما کا نام 'دحسن' حضور نبی کریم الطاقیمانے منجانب اللہ رکھا۔ آپ والفیما کی کنیت ابوجم اور القابات تقی، زکی، مجتبی، سید اور شبیہ رسول اللہ رکھا۔ آپ والفیما کی کنیت ابوجم اور القابات تقی، زکی، مجتبی، سید اور شبیہ رسول اللہ رکھا۔ آپ والفیما کی کنیت ابوجم اور القابات تقی، زکی، مجتبی، سید اور شبیہ رسول

حضرت سیّدنا اہام حسن دائیڈ اس سے آپ دائیڈ طاہری و باطنی علوم ہے آراستہ

اوران علوم پرکامل دسترس رکھتے تھے۔ روایات ہیں آتا ہے کہ جس وقت آپ دائیڈ اللہ اوران علوم پرکامل دسترس رکھتے تھے۔ روایات ہیں آتا ہے کہ جس وقت آپ دائیڈ اللہ اوران علوم پرکامل دسترس رکھتے تھے۔ روایات ہیں آتا ہے کہ جس وقت آپ دائیڈ اللہ اور ہوئے اس وقت حضور نبی کریم مطبق کیا تھریف لائے اور حضرت اساء بنت عمیس دائیڈ اللہ حضرت اساء بنت عمیس دائیڈ اللہ حضرت اساء بنت عمیس دائیڈ اللہ حض دائیڈ اللہ حض دائیڈ کو لاؤ۔ حضرت اساء بنت عمیس دائیڈ اللہ حسن دائیڈ کے دائیڈ کان میں اوان دی ہوئیں۔ آپ مطبق کی خصرت سیّدنا الم حسن دائیڈ کے دائیڈ کان میں اوان دی اور کھر بائیس کان میں تکبیر کہی۔ پھر آپ مطبق کی نے ساتویں روز حضرت سیّدنا الم حسن دائیڈ کا حقیقہ کیا اور آپ دائیڈ کے سر مبارک کے بال منڈ وائے۔ پھر آپ طبی کان میں نیز ای طبی کان کے بالوں کے وزن کے برابر جاندی خیرات کریں نیز ای روز آپ مطبارک رکھا دور آپ میں دور آپ میں دور آپ مبارک رکھا دور آپ میں دور آپ مبارک رکھا دیا تھی دور آپ مبارک رکھا دیا تھی دیا تھی دیا کہ ایک میں میں کہلائی۔

الاستار على المالي الما

روایات میں آتا ہے جس وقت حضرت سیدنا امام حسن وفائی تولد ہوئے حضور نی کریم مطابعی تولد ہوئے حضور نی کریم مطابعی تشریف لائے اور آپ وفائی کے منہ میں اپنا لعاب دہن والا اور آپ وفائی کے منہ میں اپنا لعاب دہن والا اور آپ وفائی کے منہ میں دعائے خیر فرمائی۔

حضرت سيّد تا امام حسن رئالنيو نے اپنی زماند طفوليت کے قريباً آئھ سال اور جار ماہ حضور نبی کريم مضيئونية کے سابيہ عاطفت جي بسر کئے۔ حضرت ابو ہريہ رئالنيو فرماتے بين کہ ميس حضرت سيّد تا امام حسن رئالنيو کو جوب رکھتا ہوں کيونکہ جي نے ديکھا حضور نبی کريم مضيئونية نے آپ رئالنيو کو اپنی گود جي بنھا رکھا تھا اور آپ رئالنيو اس وقت حضور نبی کريم مضيئونية کی رئیش مبارک سے کھيل رہے تھے۔حضور نبی کريم مضيئونية کی رئیش مبارک سے کھيل رہے تھے۔حضور نبی کريم مضيئونية کی رئیش مبارک سے کھيل رہے تھے۔حضور نبی کريم مضيئونية کے مند ميں اپنی زبان دی اور فرمایا۔

کريم مضيئونية نب رئالنيو کے مند ميں اپنی زبان دی اور فرمایا۔

دارے اللہ! میں حسن (رئالنیو) کو مجوب رکھتا ہوں تو بھی اسے اینامجوب بنا لے۔'

حضرت سیّدنا امام حسن و الفیزا کے فضائل و مناقب بے شار ہیں۔ آپ و الفیزا کو فتنہ و فساد اور خون ریزی قطعاً نا پیند تھی۔ آپ والفیزا کی طبیعت میں نری اور برد باری پائی جاتی تھی۔ آپ والفیزا کی طبیعت میں نری اور برد باری پائی جاتی تھی۔ آپ والفیزا کی سخاوت کے قصے بھی زبان زووعام تھے۔ ایک برد باری پائی جاتی تھی۔ آپ والفیزا کی خدمت میں حاضر ہوا اور اپنی حاجت بیان کی۔ آپ

المناسبة على المناخ الم

ظافیٰ کے پاس اس وقت دس ہزار درہم موجود تھے آپ طالفنے نے وہ سب کے سب اس اعرابی کو دے دیئے تاکہ وہ اپنی ضرورت کو پورا کر سکے۔

حضرت سیدنا امام زین العابدین مناتشظ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت سیّدنا امام حسن طالفَیْو نے تیجیس جج با پیادہ کئے اور بیتمام جج آپ دلائٹونے نے برہند یا کئے۔برہند یا طلنے کی وجہ سے آپ النفیز کے یاؤں میں ورم پر جاتے تھے۔ تشجیح بخاری شریف میں حضرت ابو بکر صدیق م^{طالفزی}ز سے مروی ہے فرماتے بين كه حضور نبي كريم مضيّع يَنهُ منبر برتشريف فرما يتصه حضرت سيدنا امام حسن والثنيّة اس وفت حضور نی کریم مطاع الله ایک بہلو میں بیٹے ہوئے تھے۔حضور نی کریم مطابق اللہ آب طالتك كى جانب اشاره كرتے ہوئے فرمایا میرابید بیٹا سید ہے اور الله عزوجل اس کے ذریعے سے مسلمانوں کے دوگر ذہوں میں سلم کردائے گا چنانچہ جب آب طالفن السيخ والد بزر كوار حضرت على الرتضى والفيز ك بعد منصب خلافت بمعمكن ہوئے تو آپ برات نے حضرت امیر معاویہ برات کے کرلی اور مسلمانوں کو پھر سے ایک خلافت پر اکٹھا کیا۔حضرت سیدنا امام حسن داننظ نے منصب خلافت پر فائز ہونے کے بعد ذیل کا خطبہ دیا۔

"دلوگو! تم سے ایک ایساشخص جدا ہوا ہے کہ نداگلے اس سے بردھ سکے اور نہ پچھلے اس کو پا سکے۔حضور نبی کریم بیط کی لئے اس کو با سکے۔حضور نبی کریم بیط کی لئے اس کو اسے ابناعلم عطا فرمایا اور وہ بھی ناکام ندرہا۔ میکائیل و جبرائیل (بین اس کے دست راست تھی۔اس نے بوقت شہاوت سات سو درہم جو اس کی مقرر شخواہ سے نبی رہے تھے کہ سوا پچھ نبیل تجھوڑ ااور بیدرہم بھی ایک خادم کے لئے تھے۔''

المناسر على المناع المن

حفرت سيدتا امام حن رفي شيئ کوف کی جامع مجد کے درواز برتشريف بھی ہوتا ہے کہ ایک مرتبہ آپ رفی شيئ کوف کی جامع مجد کے درواز برتشريف فرما تھے ایک دریماتی آیا اور اس نے آتے ہی آپ رفی شیئ کو اور آپ رفی شیئ کو کالیاں دینا شروع کر دیں۔ آپ رفی شیئ کی بات کو ان کی کرتے ہوئے پھر سے گالیاں دینا شروع کر دیں۔ آپ رفی شیئ کی بات کو ان کی کرتے ہوئے پھر سے گالیاں دینا شروع کر دیں۔ آپ رفی شیئ کی بات کو ان کی کرتے ہوئے پھر سے گالیاں دینا شروع کر دیں۔ آپ رفی شیئ نے آپ رفی شیئ کی بات کو ان کی کرتے ہوئے پھر سے گالیاں دینا شروع کر دیں۔ قرمایا ای وقت میر سے گھر میں صرف بھی موجود ہے تم اسے رکھ لو۔ اس دیماتی نے فرمایا اس وقت میر سے گھر میں صرف بھی موجود ہے تم اسے رکھ لو۔ اس دیماتی نے جب آپ رفی شیئ کو کی کا کمی صدق دل سے گوائی دیتا ہوں جب آپ رفی شیئ خیتی فرز ندر سول اللہ سے تھی ہیں۔

المنت عسل المناع المناع

تاول فرمارہ عظے کہ خادم سالن لے کرآیا۔ جب وہ سالن آپ بڑائنڈ کو پکڑانے لگا تو برتن اس کے ہاتھ سے جھوٹ گیا اور سالن آپ بڑائنڈ پرگر بڑا۔ آپ بڑائنڈ من اس کی جانب دیکھا تو اس نے فوراً قرآن مجید کی آیت پڑھی جس کا مطلب تھا غصہ کو پی جانے والے اور معاف کرنے والے اور احسان کرنے والوں سے اللہ محبت رکھتا ہے۔ آپ بڑائنڈ نے جب اللہ عزوجل کا بے فرمان سنا تو اس کو معاف کرتے ہوئے آزاد فرما دیا۔

حضرت سیّد تا امام حسن و النفوز کی از واج کی تعداد کیر ہے جن ہے آپ دافتن کی سے آپ دافتن کی سے میں ہے آپ دافتن کی سے تاب دافتن کی سے تاب دافتن کی سے تاب دافتن کی سے تاب کی ساجز ادوں نے میدان کر بلا میں جام شہادت نوش فر مایا۔

"اے اللہ! میرے دل میں اپنی امید پیدا فرما اور اپنے ماسوا

المناسة على المنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة كالمنافعة المنافعة ال

سے میری امید کوختم کر دے اور میں تیرے سواکس سے امید نہ رکھوں اور میری قوتوں کو کمزور نہ بنا اور میرے نیک اعمال میں مجھ سے کوتائی نہ کروا اور مجھے الی قوت عطا قرما کہ میں تیری مخلوق کے پاس حاجت لے کر نہ جاؤں اور اے میرے رب ایجھے یقین کی دولت سے مالا مال فرما۔"

ابھی حضرت سیّدنا امام حسن ر النین کو بید دعا پڑھتے ہوئے ایک ہفتہ بھی نہ گزرا تھا کہ حضرت امیر معاوید رائنین کی جانب سے ڈیڑھ لاکھ درہم وصول ہوئے اور ساتھ بی حضرت امیر معاوید رائنین کی جانب سے معذرت کا ایک خط بھی اور ساتھ بی حضرت امیر معاوید رائنین کی جانب سے معذرت کا ایک خط بھی موصول ہوا۔ آپ رائنین نے رقم ملتے ہی الندع وجل کی بارگاہ میں شکرانے کے نوافل اوا کئے۔

حضرت عبدالله بن طلحہ دالین سے مروی ہے کہ شہادت سے کھی عرصہ بل مضرت سیّدنا امام حسن دالین نے خواب میں دیکھا کہ آپ دالین کی دونوں آ کھوں کے درمیان قل حواللہ احدلکھا ہوا ہے۔حضرت سعید بن میتب دالین نے آپ دالین کی کے درمیان قل حواللہ احدلکھا ہوا ہے۔حضرت سعید بن میتب دالین نے آپ دالین کی کے دون باتی رہ گئے اور آپ دالین ہم کا یہ خواب سنا تو کہا آپ دالین کی زندگی کے کھون باتی رہ گئے اور آپ دالین ہم سے عنظریب جدا ہونے والے ہیں۔

حضرت سيدنا امام حسن ولالنفوا كوزمرد ير شهيدكيا كيا. جس وفت آپ ولائنوا كوزمرد يا كيا اس وقت حضرت سيدنا امام حسين ولائنوا نے آپ ولائنوا كه پاس آ كرع ض كيا بها في ا آپ ولائنوا مجھے بتا كيں كرآپ ولائنوا كوزمركس نے ويا ہے؟ آپ ولائنوا نے فرمايا كرا گرميرا كمان ورست ہے تو پھر اللہ عزوجل حقیقی بدلہ لينے آپ ولائنوا نے فرمايا كرا گرميرا كمان ورست ہے تو پھر اللہ عزوجل حقیقی بدلہ لينے اللہ جاورا گرميرا كمان نظو دوا تو پھر ميرى وجہ سے كسى كو بے گناہ نہيں مارا جانا

المناسرة على المنافظة كريميل المنافظة كريميل

عاہئے۔

ایک روایت کے مطابق حضرت سیّدنا امام حسن را الله کو زہر آپ را آپ را الله فی بوی جعدہ بن اشعث بن قیس نے دیا تھا۔ حضرت سیّدنا امام حسن را الله فی نے ۵ ربیع الاول ۲۹ ھے کواس جہانِ فانی سے کوج فرمایا۔ حضرت سیّدنا امام حسین را الله فی نے الله ول ۲۹ ھے کواس جہانِ فانی سے کوج فرمایا۔ حضرت سیّدنا امام حسین را الله فی تاریخ بی نماز جنازہ پڑھائی اور آپ را الله فی کو جنت البقیع میں مدفون کیا گیا جہاں آج بھی آپ را الله فی قرمبارک مرجع گاہ خلائی خاص وعام ہے۔

حضرت سیدنا امام حسن دالینیز کے جنازہ کے متعلق روایات میں آتا ہے کہ آپ دالینیز کے وصال کے بعد مدینہ منورہ کے جرخص کی آپکے اشکبارتھی۔ آپ دلینیز کا جب جنازہ اٹھایا گیا تو اس جنازے میں لوگوں کا اس قدر جموم تھا کہ اگر سوئی بھی زمین پر بھینکی جاتی تو وہ بھی جموم کی وجہ سے زمین پر نہ گرنے یاتی۔ آپ دلینز کا وصال کوئی معمولی واقعہ نہ تھا بلکہ بیصبر وخل، استعناء و بے نیازی اور عفو و درگزری کا وصال تھا۔ آپ دلینز کی وصال پر حضرت ابو جریرہ دلینز لوگوں کو پکار پکار کر مستر سخمے۔

"آج رولو کیونکه آج حضور نبی کریم مطابعین کامجوب ہم سے جدا ہوگیا ہے۔"

سیح روایات کے مطابق حضرت سیدنا امام حسن رائینی کی آنکھیں سیاہ اور بری بری تھیں۔ آپ رائینی کے رخسار پلے اور کلائیاں گول تھیں۔ داڑھی مبارک مخبان اور بل کھائی ہوئی تھی۔ گردن مبارک بلند اور شفاف صراحی کی ماند تھی۔ شانے اور باز و بھرے ہوئے اور سینداقدی چوڑا تھا۔ آپ رائین زیادہ طویل قامت نہ تھے۔ آپ رائین کے مرکے بالے تھنگھر یالے تھے اور آپ برائی حسن و جرال کا منتھ۔ آپ رائین حسن و جرال کا

المناسر على المالي المنافقة كي يعلى المنافقة كي يعلى المنافقة المن

ایک بہترین نمونہ تھے۔ آپ ڈٹائنڈ کی جانب ایک نظر دیکھنے سے گمان ہوتا تھا کہ گویا حضور نبی کریم مضائیڈا کا دیدار ہوا ہے۔

حضرت سيّدنا امام حسن والنّفيّة فصاحت و بلاغت ميں به مثل تھے۔ آپ وَلَائِنَةُ فَن تَقْرِيرِ ہے بھی ہوتا ہے کہ نوجوانی میں حضرت علی الرتضی والنّفی ہے۔ آپ والنّفی ہے فرمایا آج تم خطبہ دواور میں سنوں علی الرتضی والنّفی نے آپ والنّفی ہے فرمایا آج تم خطبہ دیا ہی دے سکوں گا چتا نچہ کا۔ آپ وَلَائِنَةُ نے عرض کیا میں آپ والنّفی کے سامنے خطبہ بیں دے سکوں گا چتا نچہ حضرت علی الرتضی وَلائِنَةُ اوٹ میں چلے گئے اور آپ والنّفی نے نہایت نصیح و بلغ خطبہ دیا جس سے تمام حاضرین بے حدمتا رُب ہوئے۔۔۔
خطبہ دیا جس سے تمام حاضرین بے حدمتا رُب ہوئے۔۔۔
ان کا غلام جو ہوا مل گئیں اس کو رفعتیں

ان کا نلام جو ہوا مل گئیں اس کو رفعتیں انقش قدم بن ہوئی ملتی ہیں سب بلندیاں

حضرت سيدنا امام حسين رالغذي

المناسر على المان المان

ایک بینے کو پیدا کرے گی جسے آپ (فران الله الله علی جنانچہ جب حضرت سیّدنا امام حسین والنفیٰ الله وقت ابھی مدت رضاعت میں خالفیٰ الله وقت ابھی مدت رضاعت میں جے اس لئے حضور نبی کریم مضرک الله الله حسین والنفیٰ کو حضرت سیّدنا امام حسین والنفیٰ کو حضرت سیّدنا امام حسین والنفیٰ کو حضرت سیّدہ امام حسین و میں دے دیا اور یول حضرت سیّدنا امام حسین و النفیٰ نے کو دفترت سیّدنا امام حسین و النفیٰ نے اپنی رضاعت کے دن حضرت سیّدہ ام الفضل و النفیٰ کے بیس بسر کئے۔

حضور نی کریم مضط النام حسین را امام حسین را امام حسین را امام حسین را النام کریم مضط النام کی تربیت خود فرمائی اور حصرت سیّدنا امام حسین را النام حسین را النام کی تربیت خود در مناور نی کریم مضط النام کی بعد حضور نی کریم مضط النام کی بعد حضور ت سیّدنا امام حسین را النام النام و الدین کی زیر تربیت رہے اور الن سے عشق مصطفیٰ مضط النام کی در برتر بیت رہے اور الن سے عشق مصطفیٰ مضط النام کا نیج دل میں ہویا۔ حضور نی کریم مضط کا فرمان عالی شان ہے۔

" دسین (دالفنهٔ) مجھ سے ہے اور میں حسین (دالفهٔ) سے ہوں پس اللہ اس محصہ سے موں پس اللہ اس سے محبت کرے کا جو حسین (دالفهٔ) سے محبت کرے کا جو حسین (دالفهٔ) سے محبت کرے کا جو حسین (دالفهٔ) سے محبت کرے گا۔ " کرنے گا۔ "

حفرت ابو ہر یرہ دالفنہ سے روایت ہے کہ میں نے حضور نبی کریم میں ہے۔ کو دیکھا۔ آپ مطفظ آ ہے حضرت سیدنا امام حسین دالفنہ کو اٹھا رکھا تھا اور ان کے لعاب دہن کواس طرح چوں رہے تھے جس طرح آ دمی تھجور کو چوستا ہے۔

حضرت زید و و النظامی سے مردی ہے فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم ہے ہیں ہام المومنین حضرت سیّدہ عائشہ صدیقہ والنظام کے گھر سے نکلے اور آپ مطابقاتا کا گزر حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤالفہا کے گھر سے ہوا تو آپ مطابقاتا نے حضرت سیّدنا امام حسین والنظام کے دونے کی آوازسی۔ آپ مطابقاتا ہی وقت حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا

المناسة عمل المرى والتناف كر فيصل المحال الم

ضافینا کے گھر میں داخل ہوئے اور فرمایا۔

"جین! اس کو نہ راایا کرو کیونکہ اس کے رونے سے میرے دل کو تکلیف ہوتی ہے۔"

حفرت عمر فاروق و النفوز سے مروی ہے فرماتے ہیں میں نے دیکھا حضور بی کریم میں ہے دیکھا حضور بی کریم میں ہوتا ہے النفوز نے و کالنفوز نے و کا ایک سراحضور نبی کریم میں تھا۔ حضور نبی کریم میں تھا۔ خص میں خالفوز کے اشارہ پر چلتے تھے۔ میں نے جب دیکھا تو کہا واہ! کیا خوب سواری ہے؟ حضور نبی کریم میں تھا نے فرمایا اتنا ہی عمدہ سوار بھی ہے۔

بیپن میں ایک روز حضرت سیّدنا امام حسن ولائفی اور حضرت سیّدنا امام حسن ولائفی اور حضرت سیّدنا امام حسن ولائفی آپ میں کشتی کر رہے ہے۔ حضور نبی کریم مین ایک حضرت سیّدنا امام حسن ولائفی ہے فرمایا حسن (ولائفی)، حسین (ولائفی) کو پکڑ لو۔ حضرت سیّدہ فاطمہ الزہرا ولائفی نے کہا کہ بابا جان! آپ مین کی کی جمائی کو کہتے ہیں کہ وہ چھوٹے بھائی کو پکڑ لیے۔ حضور نبی کریم مین کی ایک خرمایا کہ جبرائیل (علیائلی) بھی تو حسین اولائی کو پکڑ لیں۔

ایک مرتبہ ایک شخص حفرت سیّدنا امام حسین دالینی کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کرنے لگا کہ اے رسول اللہ منے کی فرزند! میں نہایت مفلس و نادار ہول میری کچھ اعانت فرما ہے۔ آپ دلائی نے اس مخص سے فرمایا کہ تم کچھ دیر بعول میری کچھ اعانت فرما ہے۔ آپ دلائی نے اس مخص سے فرمایا کہ تم کچھ دیر بغومیرارزق ابھی راستہ میں ہے۔ پھر کچھ دیر بعد حضرت امیر معاویہ دلائی کا ایک در باری حاضر خدمت ہوا اور دیناروں کی پانچ تھیلیاں آپ دلائی کی خدمت میں

پیش کیں جن میں سے ہر تھیلی میں ایک ہزار دینار تھے۔ درباری نے وہ دینار آپ
رہائیڈ کی خدمت میں پیش کئے اور عرض کیا کہ حضرت امیر معاویہ رہائیڈ فرماتے ہیں
کہ آپ رہائیڈ انہیں استعمال میں لائیں میں عنقریب مزید حاضر خدمت کر دوں گا۔
آپ رہائیڈ نے وہ پانچوں تھیلیاں اس مفلس شخص کو عطا کرتے ہوئے فرمایا میں تم
سے معذرت خواہ ہوں کہ تہمیں آئی دیر انظار بھی کرنا پڑا اور میں تمہیں صرف پانچ
ہزار دینار دے رہا ہوں۔

حضرت انس بن ما لک رفائی ہے مردی ہے کہ میں ایک روز حضرت سیّد تا امام حسین رفائی ہے گئی ہیں ایک کنیز حاضر خدمت ہوئی اور کھولوں کا ایک گلدستہ پیش کیا۔ آپ رفائی ہے اس گلدستہ کو ہاتھ میں لے کرسونگھا اور کھر کنیز کی جانب اشارہ کرتے ہوئے فرمایا کہ جاد آج سے تم اللّٰہ کی راہ میں آزاد ہو۔ میں نے آپ رفائی ہے دریافت کیا کہ آپ رفائی نے ایک گلدستہ کے عوض اپنی خوبروکنیز کو آزاد کر دیا۔ آپ رفائی نے فرمایا جب کوئی اچھا تھنہ پیش کرتا ہے تو پھر ضروری ہے اس سے اچھا یا پھر اس جیسا تحفہ اسے بھی پیش کرتا ہے تو پھر ضروری ہے اس سے اچھا یا پھر اس جیسا تحفہ اسے بھی پیش کیا جائے یہی وجہ ہے کہ میں نے اس کنیز کو آزاد کر کے اچھا تحفہ پیش کیا۔

حضرت سیّدنا امام زین العابدین و النفو فرماتے بیں میرے والد بزرگوار حضرت سیّدنا امام حسین و الله بین العابدین و اور محتاجوں کی مدد کے لئے ہر وقت تیار رہتے مضرت سیّدنا امام حسین و النفو بین بین اور محتاجوں کی مدد کے لئے ہر وقت تیار رہتے ہے اور ان کے کاموں کی مشقت کو برداشت کرتے تھے یہاں تک کہ آپ والنفو کی بیٹھ برنشان پڑ جاتے تھے۔

منقول ہے ایک مرتبہ حضور نبی کریم مشائظ کے منہ بولے بینے حضرت اسامہ بن زید مطافح کی بیار ہو تھے۔حضرت سیدنا امام حسین مطافع کوجس وقت

النست على المنافئ المائية كر فيعلى المنافئة كر فيعلى المنافئة المائية كر فيعلى المنافئة المنا

خبر ہوئی تو آپ ہوئائیو ان کی عیادت کے لئے تشریف لے گئے۔ جس وقت آپ ہوئی تو آپ ہوئی تو آپ ہوئی تو اس وقت حضرت اسامہ بن زید خطافیا بیاری کی حالت میں فرما رہے تھے آہ! کتنا بڑا غم ہے۔ آپ ہوئائیو نے دریافت کیا کیا غم ہے؟ حضرت اسامہ بن زید ہوئی ہوں۔ آپ حضرت اسامہ بن زید ہوئی ہوں۔ آپ ہوئی نوز نے فرمایا تمام قرض میں اپنے ذمہ لیتا ہوں آپ ہوئی نوز پریٹان نہ ہوں۔ پھر آپ ہوئی نوز نے فرمایا تا م قرض خواہوں کو بلوایا اور ان کا آپ ہوئی نوز کے خطرت اسامہ بن زید ہوئی ہوئی کے تمام قرض خواہوں کو بلوایا اور ان کا سارا قرض ادا کر دیا۔ حضرت اسامہ بن زید ہوئی ہوئی نے آپ ہوئی نوز کے حسن سلوک پر آپ ہوئی نوز کو بلوایا اور ان کا آپ ہوئی نوز کو بلوایا در ویا۔ حضرت اسامہ بن زید ہوئی ہوئی نے آپ ہوئی نوز کو بلوایا میں دیں۔

حضرت سیّد تا امام حسین را بینی کی شجاعت و جوانمردی کے قصے زبان زدو عام ضحے۔ آپ را بینی کی شجاعت کا انداز واس سے مجمی لگایا جا سکتا ہے کہ جس وقت بلوائیوں نے حضرت عثمان غنی را بینی کے کمر کا محاصرہ کیا تو حضرت علی الرتفنی را بینی کی کمر کا محاصرہ کیا تو حضرت علی الرتفنی را بینی کی فرمہ واری سونی نے آپ را بینی اور حضرت سیّد تا امام حسن را بینی کو ان کی حفاظت کی فرمہ واری سونی مقی ۔ اس کے علاوہ حق و باطل کے معرکوں میں آپ را بینی نے نہایت جا ناری اور بہادری کا مظاہرہ کیا اور داد شجاعت حاصل کی۔

حضرت سیّدنا امام حسین دالیّن نے اپ والد برزرگوار سے دینی و دنیاوی تعلیم حاصل کی یہی وجہ ہے کہ آپ دالیّن کی علمی قابلیت کے سب معترف تھے اور وہ جانے تھے کہ حضرت علی المرتفئی دالیّن نے اپنا تمام ظاہری و باطنی علم آپ دالیّن نے اپنا تمام ظاہری و باطنی علم آپ دالیّن نے اپنا تمام نظاہری و باطنی علم آپ دالیّن نے کا ندرسمو دیا ہے۔ ای لئے جب بھی کسی کوکوئی شری مسئلہ در پیش ہوتا تو وہ آپ دالیّن کی خدمت میں حاضر ہوکرا ہے مسئلہ کی بابت وریافت کرتا تھا۔
روایات میں آتا ہے کہ ایک مرتبہ حضرت سیّدنا امام حسین دالیّن کی اپنے

بهائی حضرت محمد اکبرجنہیں محمد بن حنیفہ رٹائنی کا لقب حاصل تھا ہے کچھ ناراضگی ہو گی۔حضرت محمد بن حنیفہ مٹالٹنڈ کے بچھ دوستوں نے آپ مٹالٹنڈ سے کہا اب حضرت ستدنا امام حسین والفنظ مجھی آپ والفنظ سے جمیں ملیس کے۔ آپ والفظ نے اسی وقت ایک خط لکھا جس کامنن تھا براد رعزیز! ہم دونوں کے والد بزرگوارمشتر کہ ہیں اس کے اس میں ہمیں ایک دوسرے پر چھ فضیلت حاصل نہیں۔ ہاں! البتدآب طالتنا کی والدہ ماجدہ حضور نبی کریم مضاعظہ کی دختر تھیں اور میری مال کے پاس تمام دنیا کے کمالات بھی آ جائیں تو وہ پھر بھی آپ را النیز کی والدہ ما جدہ کی شان کے برابر نہیں ہوسکتیں اس لحاظ سے آپ والفنظ کو مجھ برفضیلت حاصل ہے اور آپ والفنظ مجھ سے عمر میں بھی بڑے ہیں اس لئے آپ رہائنے میرے یاس خود آنے میں سبقت كريں كيونكه حضور ني كريم مطيعة كا فرمان عالى شان ہے كه اگرمسلمانوں كے دو گروہوں میں ناچاتی ہو جائے تو جؤ گروہ سلم کرنے میں سبقت کرے گا وہ سب سے پہلے جنت میں واغل ہوگا۔میری خواہش ہےآب دالفن بدفسیات بھی حاصل کریں اور جنت میں داخل ہوئے میں مجھ سے سبقت لیے جائیں۔حضرت سیدنا الم حسين والني في جب آب والغي كا خط يرما تو فورا آب والني سے سلن آن بعجے اور جا کرآپ دالفنہ سے بغلکیر ہو سے۔

حضرت سیّدنا امام حسین ولی نیو کی عبادت میں خشوع وخضوع کا یہ عالم ہوتا تھا کہ آپ ولی نیو جب نماز کے لئے کھڑے ہوتے تو آتھوں سے بہتا شا کہ آپ ولی نیو جاتے ہے اور جسم کا بہتے لگ جاتا تھا۔ دن بھر آپ ولی نیو ورس و تھے۔ تربی میں مشغول رہتے تھے اور جم کا بہتے لگ جاتا تھا۔ دن بھر آپ ولی نیو تھے۔ تربی میں مشغول رہتے تھے اور تمام رات اطاعت اللی میں کھڑے رہتے تھے۔ جس وقت میدان کر بلا میں آپ ولی نیو کا فیڈ پر مصائب کا نزول ہوا اور آپ ولی نیو کا فیڈ کے حس

المناسر على المنافئ ال

خاندان کے افراد کو ایک ایک کر کے آپ رٹائٹو کی نظروں کے سامنے شہید کیا گیا تو

اس وقت بھی آپ رٹائٹو کی زبان مبارک پر قرآن مجید کی تلاوت جاری تھی اور
جس وقت آپ رٹائٹو کو شہید کیا گیا اس وقت آپ رٹائٹو کا سر سجدہ میں تھا۔ آپ
رٹائٹو نے بھی اپنے بھائی حضرت سیّدنا امام حسن رٹائٹو کی طرح بچیس جج با پیادہ ادا
کئے۔

ابن عربی کی روایت ہے کہ حضرت سیدنا امام حسین بٹائن اوصاف جلیلہ کے مالک سے اور علم وحلم عمل وحق کوئی اور راضی برضائے مولی سے۔آپ مالفذا میں صبر و استقلال ، سخاوت و شجاعت اور عاجزی و انکساری کوٹ کوٹ کر بھری ہوئی محى - آب دالفؤ عالم باعمل، زابد ومنقى، صاحب جود وكرم، عارف بالله اور ذات ہاری تعالیٰ کی جست اتمامی منصاور الله عزوجل کی نشانیوں میں سے ایک نشانی منصے۔ حضرت امير معاديه النفيز كا دفت دصال قريب آيا تو انہوں نے اسے بينے یز بدکواپنا جانشین مقرر کر دیا۔ یز بدشراب خور اور زنا کارتھا۔علمائے دین اور اسلامی تعلیمات کا نداق از انا پزید کا شعار تھا۔الغرض ہر برائی پزید میں یائی جاتی تھی اس کئے جب وہ تخت تشین مواتو اکا برصحابہ کرام ری انتخ اور تابعین نے اس کی بیعت سے انکار کر دیا۔ بزید کو اس کے مشیروں نے مشورہ دیا کہ اگر وہ حضرت سیّد تا امام حسین طالفظ کو بیعت کے لئے راضی کر لے تو پھر دیگر اکا بر بھی اس کی بیعت کر لیں گے۔ بزید نے آپ ملافنۂ سے بیعت لینے کے لئے این کوششیں تیز کر دیں لیکن آپ دالنی نے اس کی بیغت سے الکار کر دیا۔اس دوران حضرت عبداللہ بن زبیر بھانچنا کے ہاتھ برکی لوگوں نے بیعت کرلی۔ اس بیعت کا مقصد ان کو خلیفہ مقرر كرنانبيس بلكه يزيد كا الكار تعاران دوران كوف كے كورنرنے آپ والفؤ كو خط

الناسة على الناني الماني المان

کھا اور کوفہ آنے کی دعوت دی۔ آپ ر النظائ کوفہ جانا نہ جا ہے تھے گر حالات کی دولت آپ رالنظائ نے اپنے الل وعیال کے ہمراہ کوفہ کا سفرا فتیار کیا۔
حضرت سیّدنا امام حسین رالنظائ مدینہ منورہ سے روانہ ہوئے اور مکہ کرمہ پہنچ جہاں سے آپ رالنظائ سا ذی الحجہ ۲۰ ھے کو کوفہ کے لئے روانہ ہوئے۔ کر بلا کے مقام پر آپ رالنظائ کا مقابلہ بزیدی فوج سے ہوا جہاں ایک ایک کر کے آپ رالنظائ کے جانار اور گھر کے فرد جام شہادت نوش کرتے رہے۔ ۱۰ محرم الحرام الاھ کو دورانِ نماز آپ رالنظائ کو بھی شہید کر دیا گیا۔ آپ رالنظائ کے فرز مد حضرت سیّدنا امام دورانِ نماز آپ رالنظائ جو کہ شدید بیار تھے ان کے سواکوئی مرد زندہ نہ رہا۔ آپ رالنظائ کی شہادت کی شہادت کی شہادت کی خرصفور نبی کریم مطابقات کے سواکوئی مرد زندہ نہ رہا۔ آپ رالنظائ

روایات میں آتا ہے کہ ایک مرتبہ حضور نبی کریم مضطح اللہ حضرت سیدنا امام حسین دالین کو کود میں لئے بیٹھے تھے کہ حضرت جرائیل علیائی حاضر خدمت ہوئے اور آپ مضطح اللہ است کی۔ آپ مضطح ان کی بات من کر رو دیئے۔ آپ مضطح اور آپ مضطح اللہ است کی۔ آپ مضطح اللہ اللہ مصطح اللہ میں جرائیل (علیائیم) نے جمعے ابھی خبر دی ہے کہ میرے اس فرزندکو شہید کر دیا جائے گا۔

ام المونین حضرت سیّدہ ام سلمہ ذال بھی ہمروی ہے فرماتی ہیں کہ حضور نی کرم مظافی آنے مجھے مٹی دیتے ہوئے فرمایا کہ میں تہہیں وہ مٹی دیتا ہوں جس مٹی میں دکھ اور مصیبت کی ہو ہے اور بیرم رے حسین (داللہ ان کے قل گاہ کی مٹی ہے اس کوتم اپنے پاس سنجال کر دکھنا جب بیمٹی سرخ ہو جائے تو سمجھ جانا میر ہے حسین (داللہ ان کی کوشہید کر دیا گیا ہے چنانچہ جس وقت حضرت سیّدنا امام حسین داللہ کو کر بلا

المناسر على الماني الماني كالمناس كالماني كالماني كالمناس كالمناس كالمناس كالمناس كالمناس كالماني كالمناس كالمناس كالمناس كالمناس كالمناس كالمناس كالمناس كالماني كالمناس كالم

میں شہید کیا گیا ام المونین حضرت سیّدہ ام سلمہ ڈاٹنٹیا کے پاس موجود وہ مٹی سرخ ہوگئی جس سے آپ ڈاٹنٹیا سمجھ گئیں حضرت سیّدنا امام حسین دالٹیا کوشہید کر دیا گیا ہے۔

امام احمد برینانی مند امام احمد میں الوعبداللہ کی ایک روایت بیان کرتے ہیں کہ الوعبداللہ ، حضرت علی المرتفعٰی برائین کا آفابہ بردار تھا۔ صفین کے موقع پر وہ حضرت علی المرتفعٰی برائین کے ہمراہ تھا۔ جب قافلہ مقام نینوئ پر پہنچا تو حضرت علی المرتفعٰی برائین کے ہمراہ تھا۔ جب قافلہ مقام نینوئ پر پہنچا تو حضرت علی المرتفعٰی برائین نے فرمایا اے ابوعبداللہ نے دریافت کیا امیر الموثین المیا المی الموثین المیا بات ہوئی ؟ حضرت علی المرتفعٰی برائین برائین نے فرمایا کہ ایک دن میں حضور نبی کریم مطابق کی فدمت میں حاضر ہوا تو آپ مطابق کی آتھوں دن میں حضور نبی کریم مطابق کی فدمت میں حاضر ہوا تو آپ مطابق کی آتھوں میں آنسو ہے۔ میں نے دریافت کیا یارسول اللہ مطابق آپ مطابق کیوں روتے میں ؟ حضور نبی کریم مطابق کے دریافت کیا یارسول اللہ مطابق کی شابوں نے جمرائیل (طابق کی) اٹھ کی جرائیل (طابق کی المیان کی المیان کی بیات کے جمرائیل المرتفی اور جھے اپنی حاسین (دائین) کوشط الفرات میں تل کیا جائے گا۔ پھر حضرت علی المرتفی دائین برائین برائین نے اس جگہ کی مٹی اٹھا کرسوتھی اور جھے اپنی یاس رکھنے کی بدایت کی۔

حضرت سیّدنا امام حسین دانین کو کربلائے معلی میں سپر دِ خاک کیا گیا۔
آپ دانین کے سرکومبارک کوان زیاد چونکہ بن ید کے پاس لے گیا تھا اس لئے آپ دائین کے سرمبارک کی تدفین کے متعلق مختلف روایات موجود ہیں۔ ایک روایت کے مطابق آپ دائین کے مرمبارک کو دست کے مطابق آپ دائین کے سرمبارک کو دشق میں مدفون کیا گیا۔ ایک روایت کے مطابق آپ دائین کے سرمبارک کو دشق میں مدفون کیا گیا اور ایک روایت کے مطابق آپ دائین کے سرکوم سے جایا گیا جہاں مدفون کیا گیا اور ایک روایت کے مطابق آپ دائین کے سرکوم سے جایا گیا جہاں

الاستراعي الدر المن المان الما

آپ طالقن کے سرمبارک کو مدفن کیا گیا اور اس پرمزارِ باک کی تعمیر فر مائی گئی۔ واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب

حضرت سیّدنا امام حسین والفیّد نے دین اسلام کی خاطر اپی جان قربان كردى اورائيخ خون سے دين اسلام كى آبيارى فرمائى۔آپ طالف كے قاتل آپ وللفن كى شهاوت كے بعد بھى چين كى نيندندسويائے اور جہنم واصل ہوئے۔حضرت عبدالله بن عباس وللفيئز سے مروی ہے فرماتے ہیں کے حضور نبی کریم مضاعین ارشاد فرمایا حضرت بیلی علیاتی کو جب شہید کیا گیا تو ان کے آل کے بدلے میں ستر ہزار افراد مارے محتے جب میرے بیٹے حسین (النین) کوشہید کیا جائے گا ان کی شہادت کے بدلے میں ستر ہزارستر لوگ مارے جائیں کے چنانچہ آپ بنالٹن کی شہادت كے بعد مختار بن التعبيده تقفى نامى ايك مخص جوكه طائف كا رہنے والا تھا وہ ايك لشكر لے كر فكلا اور اس نے يزيد كى ہلاكت كے بعد يزيدى فوج كے تمام ساہيوں كو جومیدان کربلا میں موجود تھے اور بزید کے تمام خاص لوگوں کو جو آپ مالفند کی شہادت میں ملوث منتے جہنم واصل کر دیا۔ یزید بدبخت آپ طالفن کی شہادت کے تین برس بعد ایزیاں رگڑ رگڑ کر مرا اور اس کی موت اس حالت میں ہوئی کہ اس کے کھروالے اس کے نزدیک نہ جاتے تھے۔روایات میں آتا ہے کہ آپ طالتن اور دیمر جا نثاران امام حسین طالفند کی شہادت میں ملوث بہت ہی کم لوگ ایسے متھے جو ن پائے اور وہ بھی سمی مصیبت میں جتلا کئے سے اور ال میں سے کئی کے ہوش وحواس جاتے رہے۔

معرت سیّدنا امام حسین والفنؤ نے روایات کے مطابق پانچ شادیاں کیں حضرت سیّدنا امام حسین والفنؤ نے روایات کے مطابق پانچ شادیاں کیس جو اولادیں ہوئیں۔ آپ والفنؤ کی اولاد میں حضرت سیّدنا پر

المناسبة على المنافعة كالمعلى المنافعة كالمعلى المنافعة كالمعلى المنافعة كالمعلى المنافعة الم

امام زین العابدین طالعی واقعہ کر بلا میں بیار ہونے کی وجہ سے نی محیے جن سے آپ طالعینو کی نسل جلی۔ طالعینو کی نسل جلی۔

حفرت سیّدنا امام زین العابدین والفیز جب واقعد کربلا کے بعد قید و بند کی صعوبتیں برداشت کرنے کے بعد مدینہ منورہ واپس لوٹے تو گوشہ نشین ہو گئے اور اپن تمام زندگی گوشہ نشین میں ہی بسر کی۔

انسانیت کے نام پر کیا کر محصے حسین والنید میں دور کے بلند خیالوں سے پوچھ لو انسان کو بیدار تو ہو لینے دو انسان کو بیدار تو ہو لینے دو ہر قوم پکارے گی ہمارے ہیں حسین والنید

حضرت سيده زينب طالعيا:

المناسرة على المنافقة كي فيعلى المنافقة المنافقة كي فيعلى المنافقة كي في منافقة كي في منافقة كي في منافقة كي فيعلى المنافقة كي في منافقة ك

گرانہ تھا۔ آپ فران ہے اللہ عن اللہ عن وجل کے محبوب ہے۔ آپ فران ہی والدہ خاتون جنت تھیں۔ آپ فران ہی اللہ عن شجاعت، بہادری اور فہم وفراست میں نابغہ روزگار تھے۔ آپ فران ہی شجاعت، بہادری اور فہم وفراست میں نابغہ روزگار تھے۔ آپ فران ہی کے بھائی حضرت سیدنا امام حسن فران ہی اور حضرت سیدنا امام حسین فران ہی جنت کے نوجوانوں کے سردار تھے۔ گھر میں زہد وتقوی اور عبادت امام حسین فران ہی تھونا تھا۔ آپ فران ہی ای تمام صفات میں بے مشل تھیں اور حضرت سیدہ فاطمہ الزہراف ہی کی سیرت پاکھ کا عملی نمونہ تھیں۔ حضور نبی کریم بطان ہی کہ سیرت بالکہ کا عملی نمونہ تھیں۔ حضور نبی کریم بطان ہی کہ کے اسیدہ فاطمہ الزہراف ہی کہ سیرت بالکہ کا عملی نمونہ تھیں۔ حضور نبی کریم بطان ہی کہ کا تھوں کا آبھوں کا آبھوں کا فرانسیں۔

روایات میں آتا ہے کہ جب حضور نی کریم مضطح کا وقت وصال نزدیک

آیا تو حضور نی کریم مضطح کا نے حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤی کی کو بلایا اور فرمایا کہ

میرے بچوں کو لے کر آؤ۔ حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہراؤی کی سیّدہ اور حضرت سیّدنا امام
حسن، حضرت سیّدنا امام حسین، حضرت سیّدہ زینب اور حضرت سیّدہ ام کلوم وی کا تی کو
لیے کر آئی کی تو بیاں نے جب جب اپنے نانا کی کیفیت دیکھی تو رو پڑے۔ حضور
نی کریم میں تی تا ہے ہوئے اور اپنے سینہ سے لگاتے ہوئے ہوئے ہوسے دیا۔

حضرت سیّدہ زینب بڑا گھا کا نکاح اپنے چھا زاد حضرت عبداللہ بن جعفر بڑا گھنا سے ہوا۔ آپ بڑا گھنا امور خانہ داری میں ماہر تھیں اور گھر کالظم ونتی سنجالئے میں اپنی والدہ کے ہو بہوتھیں۔ گھر بلوخرج میں کفایت شعاری سے کام لیتی تھیں۔ آپ بڑا گھنا اپنی والدہ کی طرح صاہر وشاکر تھیں اور پردے کا نہایت تخی سے خیال رکھتی تھیں۔ ایک مرتبہ بچپن میں قرآن مجید کی خلاوت کرتے ہوئے آپ بڑا گھنا کے سرخمبارک سے جا در سرک گئ تو حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا بڑا گھنا نے فرمایا کہ بنی سرخمبارک سے جا در سرک گئ تو حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا بڑا گھنا نے فرمایا کہ بنی سرخمبارک سے جا در سرک گئ تو حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا بڑا گھنا نے فرمایا کہ بنی سرخمبارک سے جا در سرک گئ تو حضرت سیّدہ فاطمہ الز ہرا بڑا گھنا نے فرمایا کہ بنی سر

المنت على المستري المانية كرفيعل المستوع المستري المست

پر جا در کرو کیونکہ تم اللہ عز وجل کا کلام پڑھ رہی ہواوراس کے ادب کا تقاضا ہے کہ عورت کا سر ڈھانیا ہوا ہو۔ بچین کی اس نفیجت کے بعد آپ دائن ہی الی کی تلاوت کے علاوہ ساری زندگی بھی این سرکونگا نہ کیا۔

حضرت سيّدہ نيب بنائينا ويكھنے ميں ام المونين حضرت سيّدہ خديجہ بنائينا ويكھنے ميں ام المونين حضرت سيّدہ خديجہ بنائينا على ماں سے مشابہ تھيں اور حضور نبی كريم مينے بي الله بن عصمت و حيا اور صبر اپنی والدہ كی مثل خديجہ (بنائينا) كے مشابہ ہے۔ آپ بنائينا ميں عصمت و حيا اور مبر اپنی والدہ كی مثل تھا۔ آپ بنائينا نے بھی دنیاوی تھا جبکہ كلام ميں فصدت و بلاغت اپنے والد كی مثل تھا۔ آپ بنائينا نے بھی دنیاوی لذتوں كو فوقيت نہ دى اور و نياوی عيش و آرام كی نبيت آخرت كی زندگی كو ترجيح دى۔ آپ بنائينا كی عباوت و رياضت كا بيا عالم تھا كہ سارى زندگی بھی تبجد كی نماز نہ چھوڑى۔ حضرت سيّدنا الم زين العابدين بنائينا فرماتے ہيں كہ واقعہ كر بلا كے خونی واقعات اور اس كے بعد كے مصائب ان سب كے باوجود آپ بنائينا نے نماز تہجدہ واقعات اور اس كے بعد كے مصائب ان سب كے باوجود آپ بنائينا نے نماز تہجدہ کمھی ترک نہيں كی۔

حضرت علی المرتضی والی خب مدیند منورہ سے کوفہ کی جانب روانہ ہوئے اور کوفہ کو وار الخلافہ مقرر کیا تو آپ والی اس وقت اپنے شوہر اور بچوں کے ہمراہ ان کے ساتھ کوفہ جلی گئیں۔ پھر جب حضرت علی المرتضی والی کی شہادت کے بعد حضرت سیدنا اہام حسن والی نی الی تا می کھر والوں کو لے کر مدینہ منورہ والی آگئے تو آپ والی کا ایک زندگی میں بے شار آپ والی کا ایک زندگی میں بے شار مصائب برواشت کے آپ والی ایکی پی تھیں تو نانا حضور نی کریم مضائب برواشت کے آپ والدہ ما جدہ حضرت سیدہ فاطمہ الز ہر اوائی اللہ ما محل فرما گئے۔ پھر چند ماہ بعد ہی والدہ ما جدہ حضرت سیدہ فاطمہ الز ہر اوائی ما صات فرما گئیں۔ جب جوان ہو کی تو والد بر رگوار حضرت علی المرتضی والی کی شہادت اور سیکس و جب جوان ہو کی تو والد بر رگوار حضرت علی المرتضی والی کی شہادت اور

چر بھائی حضرت سیّدنا امام حسن وٹائٹوئو کی شہادت، ان سب مصائب کی وجہ ہے آپ فرائٹوئوئا کو ام المصائب کی کنیت سے پکارا جانے لگا۔ جب حضرت سیّدنا امام حسین وٹائٹوئو مدین ہوئے تو آپ فرائٹوئا کے شوہر حضرت عبداللہ بن جعفر فرائٹوئو کسی وجہ سے ساتھ نہ جا سکے تو انہوں نے اپنے دونوں بیوں کو مال کے ساتھ بھیج ویا۔ واقعہ کر بلا میں آپ فرائٹوئا کی آٹھول کے سامنے آپ فرائٹوئا کے ہوئوں برجھی صبر و بیوں اور بھائیوں کو شہید کر دیا گیا۔ آپ فرائٹوئا نے اس موقع برجھی صبر و استقلال کا دامن ہاتھ سے نہ چھوڑ ااور ان کی شہادت پرکسی شم کا ماتم نہ کیا۔

واقعہ کربلا کے بعد حضرت سیّدہ زینب بڑا نیٹا کو یزید کے دربار میں پیش کیا تو آپ بڑا نیٹا نے وہاں نہایت فصیح و بلیغ خطبہ دیا جو تاریخ میں سنہری حروف میں رقم ہے۔ آپ بڑا نیٹا نے میں رقم ہے۔ آپ بڑا نیٹا نے کس جگہ وصال فرمایا اس بارے میں کتب سیر میں مختلف روایات موجود ہیں۔ کشرت روایات سیر بین کہ آپ بڑا نیٹا کا حصال میں کہ آپ بڑا نیٹا کا وصال کا رجب الرّ جب ۲۲ ھیں ہوا۔ آپ بڑا نیٹا اس وقت اپ شوہر حضرت عبداللہ بن جعفر بڑا نیٹا کے ہمراہ شام کی جاب سنرفرما ربی تھیں۔ آپ بڑا نیٹا کا وصال دمش کے نزد کیے ہوا۔ جس مقام پر آپ بڑا نیٹا کا وصال وشق کے نزد کیے ہوا۔ جس مقام پر آپ بڑا نیٹا کا وصال ہوا وہ مقام زینبید کے نام سے مشہور ہے اور وہاں آپ بڑا نیٹا کا مراح کا مزاد پاک مرجع گاہ خلائی خاص و عام ہے۔ اس کے علاوہ آپ بڑا نیٹا کا ایک مزار مصر میں بھی بتایا جاتا ہے جبکہ کچھ روایات کے مطابق آپ بڑا نیٹا کا وصال مدید منورہ میں ہوا اور آپ بڑا نیٹا کی قبر مبارک جنت الیقیج میں ہے۔ مدید منورہ میں ہوا اور آپ بڑا نیٹا کی قبر مبارک جنت الیقیج میں ہے۔

حفرت سیدہ زینب ہلی کا زہد و تقوی ہے مثل تھا۔ حضرت سیدیا امام حسین ہلی نی اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ است کرتے تھے کہ اے میری بہن! میں تجھ سے

الانتستاك المستنى المائنة كرفيعل

دعا کی درخواست کرتا ہوں اورتم میرے لئے دعا کیا کرو۔ واقعہ کر بلا کے بعد آپ بنائیا اکثر و بیشتر یہ دعا فرمایا کرتی تھیں الی ! آل رسول الله بطائی کا اس قربانی کو این بارگاہ میں قبول فرما اور ہماری اس قربانی کو رائیگاں نہ جانے دے۔ حصرت سیدنا امام حسین براٹھ کئے کے ساتھ آپ براٹھ کی محبت بے مشل تھی اور آپ براٹھ کا نے اپنے ہمائی کا ہرمشکل گھڑی میں ساتھ دیا اور جب حضرت سیدنا امام حسین براٹھ کی مدید منورہ سے روانہ ہوئے تو جذبہ ایٹار اور محبت حسین (براٹھ کی) کے تحت آپ براٹھ کا ان کے ہمراہ روانہ ہوئے تو جذبہ ایٹار اور محبت حسین (براٹھ کی ان اللہ عزوجل نے قبول فرمائی اور ہوئی میں ساتھ دیا تھی ہے کہ قربانی اللہ عزوجل نے قبول فرمائی اور ہمائی مناقب مراہ روانہ ہوئیں۔ آل رسول اللہ مطائع کی قربانی اللہ عزوجل نے قبول فرمائی اور حضرت سیدہ والی ہو جاری فرما دیا۔

حضرت سيّده ام کلتُوم في النها اور تا تا حضور نبي كريم بطائية اخلاق واطوار بين النها اخلاق واطوار بين النها والده حضرت سيّده فاطمه الزجرافي اور تا تا حضور نبي كريم بطائية المحمد مشابه تفيس - آب في النها قريباً الرحائي سال بي كي تفيس كه والده ماجده وصال فرما كئيس - آب في النها كي ببن حضرت سيّده ندينب في النها الرحية آب في النها الله حيى وجه به كم كر بحر بحى انهول في آب في النها كي تربيت من اور راجتمائي فرمائي - يمي وجه به كم آب في النها كي زندگي مين حضرت سيّده ندينب في النها كاكردار نمايال نظر آتا ہے - حضرت سيّده ام كلتُوم في النها كال حضرت عمر فاروق والني سيّده ام كلتُوم في النها كال حضرت عمر فاروق والني سيد عمر اور وق والنه النه موئي - حضرت عمر فاروق والنه النها كال حضرت عمر فاروق والنه النها كاكردار نمايال نظر آتا ہے - بوا۔ آپ في النها كي حضرت عمر فاروق والنه النها كال حضرت عمر فاروق والنه النها كال حضرت عمر فاروق والنه كي حضرت عمر فاروق والنه النها كال حضرت عمر فاروق والنه كي كو كي اولا و تولد نه موئي - حضرت عمر فاروق والنه كي كو كي اولا و تولد نه موئي - حضرت عمر في النه كال حضرت محمد بن جعفر والنه كي كو كي اولا و تولد نه موئي الله كي كو كي اولا و تولد نه موئي الله و تولد نه موئي الله كي كو كي اولا و تولد نه موئي الله كي كو كي اولا و تولد نه موئي الله كي كو كي اولا و تولد نه موئي الله كي كو كي اولا و تولد نه موئي الله كي كو كي اولا و تولد نه موئي - بحض اب والنه كي كو كي اولا و تولد نه موئي -

المنازع الله المناعظ ا

حضرت سندہ ام کلوم فرائن کا وصال حضرت سندہ زبان کیا ہے وصال سے قبل ہوا۔ آپ فرائن کا مزار پاک ملک شام میں حضرت سندہ سکینہ فرائن بنت سند تا امام حسین بڑائن کا مزار سے ملحق ہے اور مرجع گاہ خلائق خاص و عام ہے۔
سندنا امام حسین بڑائن کے مزار سے ملحق ہے اور مرجع گاہ خلائق خاص و عام ہے۔
آپ فرائن کے دیگر حالات و واقعات اس لئے بھی کتب سیر میں منقول نہیں ہیں کہ آپ فرائن کی عزادہ ما جدہ کے سامیہ عاطفت سے بچین میں ہی محروم ہوگئ تھیں اور آپ فرائن ہیں ہی محروم ہوگئ تھیں اور مملی زندگی میں بھی نہایت جھوٹی عمر میں آگئیں اور ای وجہ سے دیگر خوا تین سے مالیلے کم رہا اس لئے روایات میں آپ فرائن کا ذکر کم ملتا ہے۔
رابطہ کم رہا اس لئے روایات میں آپ فرائن کا ذکر کم ملتا ہے۔

O___O



حضرت سيدنا امام حسن طالعين كا منصب خلافت برفائز ہونا

حضرت علی الرتضای و الفیزی کی شہادت کے بعد اہل کوفہ نے حضرت سیّد نا امام حسن والفیزی کے دست حق پر بیعت کی اور یوں آپ و الفیزی ، حضرت امیر معاویہ والفیزی کے زیر تسلط علاقوں کے علاوہ ویگر علاقوں کے خلیفہ منتخب ہوئے۔ خلیفہ منتخب ہوئے کے زیر تسلط علاقوں کے علاوہ ویگر علاقوں کے خلیفہ منتخب ہوئے۔ خلیفہ منتخب ہوئے کے بعد حضرت سیّد نا امام حسن والفیزیا نے ذیل کا خطبہ دیا۔

"المابعدائم میں سے ایک ایسافخص چلا گیا جس سے نہ آنے والے بڑھ کیس کے اور نہ جانے والے اس کو پاسکیس گے۔ حضور نبی کریم مین کا اپنا علم انہیں عطا فر مایا اور انہوں نے غزوات میں شمولیت اختیار کی۔ وہ کسی معرکہ میں ناکام واپس نہیں لوٹے حضرت میکا نیل و جبرائیل مین ان کے ہمراہ سے اور انہوں نے سات سو درہم تخواہ جوان کی مقررتی کے علاوہ کوئی شے نہیں چھوڑی اور انہوں نے یہ درہم بھی اپنے ایک فادم کے لئے جمع کے شھے۔"

منقول ہے حضرت امیر معاویہ وٹائٹی کو جب حضرت سیّد تا امام حسن رٹائٹیز

المناسرة على المنافئة كالمنافئة كالم

کی خلافت کی خبر ملی تو انہوں نے کوفہ پر فوج کشی کی تیاری شروع کر دی۔ فوج کشی کے ساتھ ساتھ حضرت امیر معاویہ ڈالٹیؤ کے جاسوسوں نے بھی کوفہ اور عراق کے دیگر شہروں میں آپ ڈالٹیؤ کے خلاف لوگوں کو بھڑ کا نا شروع کر دیا۔ اس اثناء میں آپ ڈالٹیؤ پر قا تلانہ حملہ ہوا مگر آپ ڈالٹیؤ اللہ عزوجل کے فضل سے مامون رہے۔ آپ ڈالٹیؤ کی وجب حضرت امیر معاویہ ڈالٹیؤ کی کشکر کشی کی خبر ہوئی تو آپ ڈالٹیؤ کی اور انہیں جنگ کی دعوت دی مگر کسی بھی شخص نے آپ ڈالٹیؤ کی آواز پر لہیک نہ کہا۔

حضرت ابو بکر صدیق والنفوز سے مروی ہے فرماتے ہیں حضور نبی کریم طیف کیا کہ منبر پرتشریف فرما تنے حضرت سیّدنا امام حسن والنفوز اس وفت آپ مطابقیا کے پہلو میں بیٹے ہوئے تنے۔ آپ مطابقیا کے حضرت سیّدنا امام حسن والنفوز کی جانب اشارہ کرتے ہوئے فرمایا۔

"میران بی بینا سید ہے اور اللہ عزوجل اس کی وساطت سے مسلمانوں کے دوکروہوں بین سلح کروائے گا۔"

چنا نچہ جب حضرت سیدنا امام حسن دائینی نے اپنے حامیوں کا بیرویددیکھا تو آپ دائینی نے خلافت حضرت امیر معاوید دائینی کوتفویض فرما دی۔ آپ دائینی کے اس اقدام کے ساتھ ہی مسلمانوں کے دوگروہوں میں صلح ہوئی اور حضور نبی کریم مطابق کا فرمان پورا ہوا۔ آپ دائینی قریباً پانچ ماہ تک منصب خلافت پر فائز رہے۔ آپ دائینی اور حضرت امیر معاوید دائینی کے درمیان ذبل کی شرائط پرصلح نامہ تحریر ہوا۔

حضرت امير معاويد والنفظ قرآن مجيد اور سنت رسول مضاعيمة اور خلفائ

التناسية على المالية ا

راشدین کے طریقہ برعمل پیراہوں گے۔

۲۔ حضرت امیر معاویہ شائنۂ اپنے بعد کسی کو خلیفہ نامز دہیں کریں گے۔

س_ امان بشمول شام، عراق، یمن، حجاز اور دیگر علاقوں کے سب لوگوں کے . لئے ہوگی۔

۳۔ اہل بیت اطبهار بڑگائی حضور نبی کریم مضطح جہاں بھی رہیں ان کی جان و مال اور تاموس کی حفاظت کی جائے گی۔ مال اور تاموس کی حفاظت کی جائے گی۔

۵۔ حضرت امیر معاویہ دائیڈ؛ ، حضرت سیّدیا امام حسن اور حضرت سیّدیا امام حسن رہ کا ہے۔ حسین دی اُلیڈ کو نقصان پہنچانے کی کوئی کوشش نہیں کریں ہے۔ حضرت سیّدیا امام حسن دائیڈ نے خصرت امیر معاویہ دائیڈ سے صلح کے بعد لوگوں سے ذیل کا خطاب کیا۔

"ا ابعد! اے لوگو! میں فتنہ و فساد سے نفرت کرتا ہوں اور میں نے اپنے ناتا کی امت کو فتنہ و فساد سے دور کرنے اور مسلمانوں کے جان و مال اور ان کی آ ہروؤں کو محفوظ کرنے کے لئے سلح کی ہا در خلافت آگر میراحق تھی بھی تو میں نے اپناحق امیر معاویہ (النظیز) کو دے دیا ہے آگر خلافت ان کاحق تھی تو میں ان کاحق تھی تو میں ان کاحق تھی تو ان کاحق تھی تو انہیں ان کاحق مل گیا۔"

حضرت سيدنا امام حسن والفيئو في حضرت امير معاويد والفيؤ سے ملح كے بعد اپنے اللہ خاند، خاندان كے ديكر افراد اور حضرت سيدنا امام حسين والفيؤ كو ہمراه ليا اور مديند منوره تشريف لي محت

O___O



صحيح بخارى مندامام احد متنددك الحاكم سنن ابوداؤ د البدابيه والنهابيه سيرت ابن بشام تاریخ طبری تفسيرابن كثير مشكوة شريف ترندى شريف تفسيرروح المعاني _11 تفسيرخز ائن العرفان _110 سيرت حضرت على المرتضى والثنية سار شرح فقداكبر _10 كنزالعمال

_14

المناسر على المنافعة كي فيمن المنافعة كي فيمن كي فيمن المنافعة المنافعة كي فيمن المنافعة المن

ےا۔ اسدالغابہ

١٨ شعب الايمان

19_ تفسير كبير

۲۰ تفسیرخازن

الاصابه في تميز الصحابه

٢٢ - تاريخ الخلفاء

۲۳ كرامات صحابه متحافيم

۲۲۷ طبقات ابن سعد

٢٥ - صلية الاولياء

٢٧ - نزمة المجالس

عار سنبرے <u>نصلے</u>

۲۸_ الصواعق الحرقه

٢٩ مدارج النوة

٣٠- شوام البنوة

اس رياض النضرة

٣٢ حضرت ابو بمرصد بن والفيز ك فيصلے

٣٣ ۔ حضرت عمر فاروق الخفظ کے فیصلے

مس حضرت عثمان عني الغني كو في الم

O___O

